अथ षट् रागीय भक्तिमाल परिच्छेदमार ॥ ॥

ताल·तीन॥

सोरठा। पुनि विप्रन हरषाई। बोलि लीन बरऊ

वरिन्हप। करि शृंगार सुहाई। ल्याई नियुगाम स

गिव संग निज। ८ ताल·तीन॥ चौपाई। हयग्राम निधि शील

कुमारी। महतम अंग मान रति हारी। मंडप म

ध आय जव राजी। सकल मान मानस निज ला

ध-रा
भ-

ली। सुनि पति चरन नलिन दृग देखी। हरषि
अलिनि इव हृदय बसेखी। बड़ि हरि ज्जन न बर सुव
सब पाई। प्रथम देव गण नाथ पुजाई। बैदवली
न रीन कुल टोई। मँजन प्रीति सकल करि सोई-
सादिर दीन बिसाह पठाई। अलप न्यपति नव उ
र हरषाई। गहिन नविर कमा निज पानी। दीन

२पि २म २ग २रे २सै २म २प २नि ३सै २नि
समर्पि न्रप पहिं मुद मानी । पानि ग्रहण जब भयो

२प २पि २प २म २म २ग २रे २सै २म २प २नि
रसाला । हरषे देव सीस महिपाला । मंगल गा

३सै २नि २प २पि २प २पि २म २ग २रे २सै
न करहिं कल नारी । सुन्दर वदनि नैन म्रगवारी

२म २प २नि ३सै २नि २प २पि २प २पि २म २ग २रे
बाजन लगे विविध परगाजा । भयो हरष वस स

२ग २रे २सै २म २प २नि ३सै २नि २प
कल समाजा । मणि गण खचित विभूषण चा

२पि २प २पि २म २ग २रे २ग २रे २सै २म २प
रु । रज कांचन धन विविध प्रकारु । दासी दास

ध-रा-
भ-

तुरग गज जाना। यथा शक्रदायज न्टप नाना। दी

ना विनय बहुरि मख कीना। मै कृपाल जन सै

पति हीना। काप्रम देखे नाहि कछु लायक॥

प्राणनाथ तव दीन सहायक। मै किंकर तव च

रनन गाया। कीन कृपाल दीन पर दाया। आज

सफल जग जीवन मोरा। देखि दिव्य वर दरसन

नोरा । मोर सदन संजुत परिवारा । भा प्रसाद
जेव पावन सारा । दंपति नाथ जुगल कर जोरी ।
हृदय उनीत भीत नहिं थोरी । इह दासी प्रभु च
रन तुमारी । सुत सम हमकुं प्राणनै प्यारी । इ
हि अपराध जानि परिहरवैा । किंकरि चरन चा
क निज करहौ । प्रम कहि लीन भुवि उरलाई ॥

प्रेम विवस लोचन जल छाई। कहि कहि वदन

रुचिर मृदु वानी। शिक्षा दीन परम हित मानी

षट् राग भक्तिमाल ताल। तीन। सोरठा। ने

व जाविक गण जोय। अंबरीष नृप सकल क

र। मन प्रसन्न अति होय कौन रुचिर परिनो

षत हो १॥ चौपाई॥ नृप दिन भवन प्रति की

२ग २रे २सं २प २धे २म २ग २रे २ग २रे २सं २म
न पयाना। बाजिन विविध प्रकार निसाना। आगे

२प२नि २सं २प २नि २धे २म २प २धे २म २ग २रे २ग
नगर निज सदिन विचारी। रहे जवन प्रपरिज

२रे २सं २म २प २नि २सं २नि २प २धे २म २प
न मारी। कीन विदाय सकल सनमाना। करि

२धे २म २ग २रे २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २नि
प्रबोध मवकर विधि नाना। नहि रानी करहे वड़

२प २धे २म २प २धे २म २ग २रे २ग २रे २सं २म
रि भ्रपाला। रवि नृतन इक भवन रसाला। दी

२प २नि २सं २नि २प २धे २म २प २धे २म २ग
न निवास मदन सम नारी। करि सन मान वि

ध. रा.
भ.

विय नर नाहीं । चाक वैरि सेवक सव दाई । दी
न उविन सैपनी सहाई । नव न्रप पनिनि नवल
ग्रनि मानी । पनि ग्रउसास पाय मद मानी ॥
सूजन भवन वेग चलि आई । प्रेम भक्ति मानस
सरसाई । नहो देखि हरि मूरति जोई । करन प्र
णाम दैउवन होई । पुनि पुनि हरष विवस ग्रउ

२म २५ २पि २म २ग २रे | २ग २२ २मि

रागी। आपन भाग मरा हन लागी। मोहिसम

यस आन नहीं काहू। इह पति परम पीरनि

यजाहू। अस विचारि पति दूना लिलामा॥

तहि दिन देखि भवन चन स्यामा। मगन प्रमो

द सदन चलि आई। तहि उपरोन शेष निसि पा

ई। हरिमंदिर आवत वडभागी। करहिं मार्जन

घ॰रा॰
भ॰

5

मन अनुरागी। सुजय करण ललित सब जोई। पा
वन भक्ति प्रेम जन होई। करि शोधन साद्रि नि
ज पानी। पुनि सब यथा योग जिय जानी। प्रेम
प्रीति जन करन स्थापन। आवहिं वहुरि भवन व
लि आपन। निसि दिन चरन चारु पनि देखा। मन
वच करम निरत सवि सेवा॥ घट राग रूप भक्ति

५

माल काल। ।सोरठा। नव प्रवीन ऋषिराज।
जगल दिवस लग भवन प्रभु। देषत रहे समाज-
हरि सुजन कर बिमल सब।१०। चौपाई। बहुरि
स्थापन निज निज जाहीं। होत समाज भवन हरि
माहीं। तीसर दिवस भूपन्हे जाई। पूछन लगे
मरम समुदाई। इह हरि नारायण कर भवना॥

घ॰रा॰
भ॰

6

कवि समाज भजन प्रभु कवना। संपादन कीरिजा
हिं सिधारी। करहु वदन मोहि प्रकट भजारी। न
व तिन मरम सकल कहि दीना। जे कनिष्ट नव
ग्रीय नवीना। सो तिसि संघ पाय नरवाई। भजगुण
करण तिन समदाई। संपादन करी निज निज
ध्याना। जाहि सुशील निशगणगण खाना। कवि

अस वचन विप्र स्वखराई। नवल पतनि कहे मन
सूर पाई। प्रेम भक्ति रत आप समाना। मानन म
यो भूप निधि जाना। करि पूजन भगवन सवेदा
ई। उठ्यो बहुरि अमदित नर राई। गयो निकट नि
ज नारि नवीना। तासु वदन अस आयस दीना॥
अब तुम आव गमन अस होई। निजहिं निकेत सु

दिन मन होई । परम देव भगवान सुहावा । करहु

रुचिर सुजन मन भावा । मै मेजल इक भवन नवी

ना । तोरे सुजन हैं प्रवीना ॥ षट् रागस्य भक्ति

माल माल । । सोरठा । देहुं विलम विरवाय ।

सवि समाज सुजन सकल । मंदिर महो रावाय-

मै श्रावहुं नियम भनी ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुनि प्रस

बानि भूप भाव रानी । सुंदर सुचि सनेह हित

सानी । जुगकर जोरि हरष बस नाही । करत

प्रनाम प्रीति उर माही । नव नरेस बिधि जन

मन माना । बिरच्यो नगर भवन भगवाना । स

हो अनन्त मोद मन मानी । भक्ति प्रीति संजुत

निज रानी । करहिं नित्य पूजादिक करमा । बढ़

घ॰रा॰
मं॰

8

रि सदन सब भूपन्ह परसा। रमन आदि सब क
रहिं बिलासा। बधून जात निन हरष हुलासा·
ते सुशील सेवन पति लीना। मन वच करम
भक्ति रत दीना। नव नरेस कर हूसर रानी॥
निगुण पकनै पकसयानी। तास प्रेम वस प
तिहिं निहारी। करन विचार परसपर मारी।

२

हम जानैं नहिं कारन काहू। इहिं बस भयो क

वन विधि नाहू। वोली एक वदन सरु वानी।

इह जोई नवल रूप निधि रानी। सदा निरत ना

रायण पूजा। संतन रहन भाव तजि दूजा। भक्ति

विलोकि तास वस राऊ। भयो ग्यान कारन नहिं

काहू। नाम कथन सुनि रानि सुहाई। निज नि

ष·रा·
भ·

9

जे करि विचार समदाई । भई निरन्तर सूजन भगवा
ना । रीझहिं देखि कबहुं पनि प्राना । अस प्रकार
निज मानस गाढी । दिन दि भक्ति प्रीति सविवा
ढी । नव नवीन सीय संगन नरीसा । रमन करन
कछु काल वनीसा । सुता सुशील अलप नृपसो
ई । अवसर पाय गरभ वति होई । षट् मासा

८

भक्तिमाल नाल। ।सोरठा। जब चतुरथ घर
मास। बीते कछुक दिवस नव। रूप सील गुणधाम
ते महिषी जन मन भई ।१२। चौपाई। नव नीं
इ मन हरषि हुलासा। चाह नाम करमा दिक
नासा। संस कार सब शुभ समाना। सब विधि भ
यो करन गुण खाना। किये इच्छ वय विविध नरे

भ·गा
म·

10

सा। द्वितिये दान महि सुरन बसेसा। देविस दिन
सेजन अभि लाषा। श्रीमति नाम रुचिर नहि ए
षा। सकल पदन मसि सदस कसो। भई सब।
फल रूप गुण यसा। योरहि काल मध्य नवसो
ई। जवा वैस करै पापन सोई॥ षट्गग्रास भ
क्तिमाल। नाल। । सोरठा। मङ्गल श्रेणगण

खान। भाव भक्ति गंभीरता। नव वे सिव रमा स।
मान। अरु मोचिन मद मान रती॥ चौपाई॥
प्रेम नहि निधि सील सुजाना। किमि अनन्त
छबि जाय बखाना। नारद अरु परवत मुनि दो
ई। तासु विलोकि प्रेम वस होई। अवरीष पै जा
बिन आये। भगत बदन अस वचन सुहाये। ३२

ब॰ रा॰ भ॰

तुमार जोई सुता समाता । हम कहँ दान करहु महि
पाला । सुनि अस मुनिन वचन नरराई । कहत
वचन नेसुक सिर नाई ॥ दीन कथन कछु अव न वि
न होई । मुनिवर महाराज तव दोई । कसो एक
मोर विथि वामी । इह कस वनहिं वात अव स्वा
मी । तोते विनवऊँ वारंवारा । करहु कृपाल आप

सईकारा। षट्रागा भक्तिमाल माल ॥ ॥
सोरठा। स्वयंवर विधि ज्ञान पाल। इहिकार रव
ङ्के विवाह्मे। परहिंजास उरमाल। तहि देवङ्के
संशय नहीं। चौपाई ॥ सुनि अस वचन भूपभु
खसोऊ। पृथक पृथक करि मति वर दोऊ ॥
गये नवत वैकुंठ सिधारी। हरि सामीप सोच उर

घ॰ रा॰
भ॰

12

भारी। प्रथम जाय नारद परवीना। हरिहि प्रणा
म दंडवत कीना। बहुरि मनोरथ आपन जोई॥
मादिर कहिस मुदित मन होई। मुहि मेडिलपर
दीनदयाला। गावन करत मै देखि रसाला॥ क
न्या श्रेवरीष जशिषाई। रूपराम निधि सील सु
हाई। सोमानी मन मोर स्नेना। नवमे कहिस

12

भए मन चैना। इह संदरि मोहि कहैं न्रप देही।

आसिख मोर सुदिन मन लेही। कहा भए नव

वदन वुझाई। स्वयं बर विधि संजत मनि गाई।

रवड़े विवाह भाव निज जोई। सो प्रसन्न मानस

जहि होई। स्वयंबर माल देहिं अर आगी। देऊ ह

रष जन नाह कुमारी। अस विचारि जिय जन ष

ब·रा·
भ·

नगामी। आवा पारण तोर प्रभु स्वामी। ते नर
स वर सहना प्रवीना। सेवन भक्ति तोर प्रभु ली
ना। जहि प्रस दीन याल भगवाना। मन वच
करम रुचिर गुण गाना। हरि स्वरूप पावन ज
ग जोई। मोरे होहिं ललित वर सोई। तोते वि
नय मोर जन पाला। प्रति वचित निज रूप रसा

ला। देहु देव मोहि आउ समाना। मागउँ नाथ
जोरि जुग पाना। बहुरि आय मुनि परम ज्ञानी
जिमि नारद मुख विनय बखानी। तिमि य
रि यदपि सीस गनि दीना। विनय बडाइ विवि
य मुख कीना। मुनिन वचन सुनि श्रवण सु
हाये। कौतुकि रमानाथ मुसकाये। निज स

घ.रा.
भ.

14

हंश नव मेजुल काया। दीनाघाल दीन कीर दा
या। नहिंमै मरम एक उनि राखो। आनन भ
ये मनिन म्रग माखो। घटराग स्य भक्तिमाल
नाल। ॥ सोरठा॥ प्रेम प्रदभुत जब कीन
नव मनि हरि सरश रुचिर। मवि सरूप निज बी
न। नायसीस गावने मदित॥ चौपाई। जहांभू

प स्वयंबर बिरचाना। जस्यो समाज ललित बि
चिनाना। पाखिल रमा नाथ स्वरव शाला। म
न रूप निज धारि अनूपा। आये अखिल भवन
कर भूपा। हरन कोटि छवि मनमथ काया। पुं
डरीक लोचन निधि दाया। नील जल यडुति
नि दरन वरना। चित वनि हृदय भक्त भ्रम हर

घ.रा.
भ.

15

ना । भुज आजान मान खल गंजन । ध्यानव
चित्र मलिन मन रंजन । चंदन तिलक भाल क
ल राजा । कच कुंचित जन मधुप समाजा । क
लित कीट भव भीत निवारन । पावन अरन
चरन जल जारन । षट्‌रागास्य भक्तिमाल ना
ता । सोरठा । अस सरबंग सहाय । बैस

५

किसोर रूप निधी। किमि छवि बरनन जाय।
नख सिख रूप अनूप प्रभु ॥ चौपाई। भूमि भू
प जहं तहं समुदाये। बैठे निज निज रूप सजा
ये। नव संदर अवसर गुन सारी। नहिं नृप श्री
मति नाम कुमारी। सैनम निरख चरन भगवा
ना। लिये माल स्वयंबर निज पाना। सभामध्य

बा. रा. भे.

16

संकोच विहाई । नागन लाज हरषन चलिआई-
प्रथमहिं देखि रूप भगवाना । मनुज भेष अद
भुत मन माना । करत प्रणाम मनहिं मन क
मा । रूप अनूप शील निधि रमा । स्वयंबर मा
ल ललित कर जोई । डारि दीन भगवन उर सोई-
जैजै शब्द देव समुदाई । करहिं प्रसून व्योम वर

षाई। तब नहि लिये संग भगवाना। सदिन की

न निज भवन पयाना। ते नारद परवन सुनिसे

ई। हृदय विचार करत निज सोई। रमा नाथ वै

कुंठ निवासी। चिदानंद सद भवन प्रकासी। य

वि निज मनुज भेष प्रभु धारी। करि वचित्र कौतु

क निज मारी। कन्या भूप रूप निधि जोई। लिये

घ॰रा॰
भ

17

आपु गवने प्रभु सोई । अस बिचारि जब आनन देखा । बलि मन रूप दुगन निज लेखा । उप जा हृदय रोष नव धाये । हरिके भवन गवन करि आये । असीय वचन कठिन रिस भीने । बद न देव ऋषि हरि सन कीने ॥ षट् रागरूप भक्ति माल । ताल । । सोरठा । सनत्कुमार श्री

१५

ईस । जहि प्रकार छल कपट करि । हमसन सब

ना महीस । हरिलै आयो निडर तब । तसहिं

ववन ग्रवमोर । जेनमार पतनी प्रीया । अस्हर

वीर् वलघोर । हरिलै जाहिं प्रवेउ रिए ॥ चौपई

संशय नाहिं सनहु भगवाना । नहि उपदेत व

चन मम आना । कीन हमहु मरकटमाव जोई

ध॰रा॰
भ॰

१४

नहि परिणाम प्रकट अस होई। वानर करहिं स
हाय तुम्हारी। सब विधि बनहिं मीत हित का
री। तुम उनकर रक्षा रण लैहो। मोर वचन स
तत सब पैहो। सुनत श्रवण नारद मख शापा।
बोले हरन जगत संतापा। विनय युक्त अति
कोमल बानी। मंजुल मधुर सुखद हित सानी॰

मुनि नायक जब सत्य बखाना। कछु संशय
नाहिन विधि ज्ञाना। भावी कारज कर गरवाई-
आपहि हमउं अवश मनि गाई। पै मनहौ
जब मुनिवर धरमा। इहजोई अंबरीष रूप क
मा। सुनि शिक्षा निज भाव सनेही। याहिम
हृदय रुचिर अस पही। बिन हरि आन नाहिं

घ॰रा॰
भ॰

वरमोरा। प्रेम नेम कछु हृदय नथोरा। इहिमे मोर परम प्रण जोई। सव विधि नमहि विद न मुनि सोई॥ घट रागस्य भक्तिमाल ना॰ सोरठा। जे सेतन नर भाम। मोहि कहे भजहि स प्रेमजुत। मै पुर वङ्क नहि काम। सत्य वच न संशय नहि॥ १८। चौपाई। उन्हिते सो क

19

१९

न्या पति यचना । बह्मान उचित न्हमहिं मति वर
ना । इह अपराध तोर मति नाया । मै जोई कीन
तमङ्ग करि दाया । रहे तमार जवन वश मोई॰
सरब तला वचन मम होई । मुनि अस वचन
वदन भगवाना । हृदय आनंद अगाल मुनि मा
ना । विविध भाँति अस तनि माल गाये । नाय

घ॰रा
भ॰

20

सीस निज भवन सिधाये। विश्वनाथ नहि

पतनि समेता। राजे निज वैकुंठ निकेता॥

इह प्रनीत वर चरित सुहावा। मैं न्रप ग्रेव

रीध मन भावा। कीन यथा मति कथन र

साला। श्री गुरु देव दीन जन पाला। हल

कलेस शोक बिन सावन। मेजुल भक्ति

२०

प्रेम प्रद पावन । अति उत्कृष्ट स्वाद सब
काहू । पावहिं प्रीति जन अवगाहन जाहू ॥
सोरठा ॥ पावहिं सोभन काम । कष्ट दोष
दारिद मुकत । भक्ति यमा प्रति राम । नहि
उर संतन होहिं हष्ठ ॥ इति षट्रागस्य भक्ति
माल परिच्छेद अंबरीष चरित्रे समाप्तम् ॥

21

21 31

२१

दोहा। पीन उन्नू उच अंक मिलकी जे मोह निहाल
हरनाषी सिव सिवाकी सोभा हरी विसाल। हमीस
मिथ्यादृष्टी नव मिली सम्भजाप सार महामोह ह
ष ताहिको निजमष करे उवार। अहो प्यारी संगत
वलह्यो वमाइन सार। जवाइका गार मेटि पुन जो
वन भयो उदार। सवैया। पूरव जोनव जोवनमै।

रा॰टी॰ समनोज वकारभयो वलकारी। चीन मध्ये उद आनंद

यो सम और पदारथ्थे सुषकारी। चीन इकागर

ता जरदापनते सुष वेद असीस निवारी। संगमते

नव जो वनमे अव फेर भयो नव प्रेम उवारी।८।

दोहा। नरुनापन भजि विषे सुष वहु दिन भजे स

रति जरदापन विनभाग सद स्रवती मदन विकार।

स

रागिनीटोडी ताल । सवैया । महाराज कहो इकवा
त सुनो जिह उपर होतकृपाल । पीयो जगपूरण ता
हि मनोरथहै कछुचाहत नावढु । ओर वलीयो नवजो
वनते संग मोह लयो विन सेवनते किरकामजीयो
कर आइ सुवेगकरो भरना ममजाहि निमित सुयाद
कीयो । सवैया । तोहि चिता रतहो निस वासर वाम

रा॰टो॰ उरझ सनिप्यारी मोहप्यारी माहिदिवार यथा पुतली तिमनीति वसो ममचीत मफारी चीतविषे नव प्रेम रह्यो ममनीनयिरे ममनो जकीवारी मिथ्याहष्ट प्र संनभई सब्रमादिकयो मुषप उचारी ।।६७।। रागिनी टोडी ताल । दोह्रा। श्रौर कह्यो दासी सना सरयासी ति सज्ञान हनीभई विवेककी पत्रलिषे मदमान उ

प्र २

पनिषत विवेक मिलाप ह्रितभई ऊठएगी जोइ जि

ह्रिवियह्रोइ मिलापनह्रि करौपाइ सकोइ एक उ

पाइ सभै कह्रो वह्री करौ मनयार सरथाजो उपनि

षतकी सो श्रव देहु निवार अज्ञलीनी प्रतिह्रल म

म सरथा पापन नारिके मनने गह्रि नाह्रिको देहु

पषंड मतियार। रागिनीटोडी ताल। चौपाई।

रा॰टो॰ यह कारनकी चिंतनकीजे। समवचननते भयो पिषी
जे मेरावचन सुने नवरंडी तजे वेदपथ भजे पषंडी
मेरो जीवन जवलगहोई वसे पषंड ग्रहने पदयो
ई मिथ्याधरम मिथ्या मुकति मिथ्या वेद भया श्रुत
ति। रागिनीटोडी ताल। दोहा। याविधि मेरे वचन
सुनि तजे वेद पथ सोइ जन वेदन सरया मिटे क

3

प्र ३ प्र २

ह्रि उपनिषदनमैं होइ। रागिनीटोडी ताल। सवैया।

जद्दुषान सुघानन ती सुषदै वद मोषकह्यो कत

श्रावतकामा परलोकनही सुषहोइकहां उलटे

सतनारि जावतयामा जगवंचनके छितवयो तव

वी जनहरत वेदधरे तिननामा मरथा सुनियो

पथिवेदतजे सुप षंडनके वसहै वहवामा ॥५५॥

रा॰टो॰ रागिनीटोडी ताल। चौपाइ। ऐसेकरे प्यारी जब
ही मेरी इष्ट सिधि जगतवही इमकहि प्रेमभ।
यो अधिकाई मुषहुमयो गाढि कंठलगाई। रागि
नीटोडीताल। दोहा। ऐसे मुषो वषानकै गए अ
षाडो त्याग पिष भूपति विसमैभयो शुल्लावसिंव
वड भाग ककण सषी समेत श्रुति मांनि सुसील

५४

उदार जैहै सरया सोय हित जग मम पंथ मकार

रागिनीटोडी ताल । दोहा। जिहिविधि कलियुग

फैलयो सगल अमाप लोइ गुलाव सिंघ न्दप सभा

मो प्रगट दिषावनसोइ। रागिनीटोडी ताल । सवै

या। नेइह मानिगप जवही तव सांति नथा ककरण

नहि आई अव भुलावनहो जननी मम ऊतर देहि

रा॰टो॰ कह्हा मम माई। सांनि म्हैनै नैननीरवहे कहिमातग

ई नहि देत दिषाई तो विन जीवन मोह कह्रो अव

प्रानतजो सूलगे इषदाई। रागिनीटोडी ताल ।

सवैया। म्रगरंजित कानन प्रीति इनी जल मैलन

मै नवप्रीतनई अति पावन घ्यान न प्रीतइती नप

सांतन मैलि वलीन भई जिम भीन वंडाल गइ

5

कपला तिसमान पर्षडन ह्वायगई अवजीवन मा

नको होत कहां तउ डार इहां यमलोकगई। सवैया

विन मोहि पिषे नहिनावतथी अहनाहि कछुजन

नी मुषपाय नहि सोवनमोहि विना कविहो नहि

मोहि विना पयिमाहि सिथाय सरथा विनु मोहि पि

षे मरती नहि एक मह्रूरति प्राण रहाय अवतो वि

रा॰टी॰ न्न जीवन मोहि विडंवन प्राणवने यम थाम सिधा

6

प करणे सजनी अव सांति मदे जगतें मम देह वि

ता स्रवनाई अव मोहि विलंव सहातनहो तनु देउ

ऊतासन माहि जलाई जन चीत निवा सतजो सज

नी तहि जाउ जाहां सगाई ममभाई सुनि सांत विला

प महां करुणा द्विगनीर वयह यो सलई गललाई

। सवैया। सजनी इह भाँति कहे सुष अंबर ज्वाल स
नोम्ह दवानलकी सनि प्राण विलात ठरात नह्री उ
र मोहि भयो मकुली थलकी ससुह्र दनि प्राणपरो
सुष कंज प्रसन नहो ह्रलकी अब सोय लहे जगमे
सरथान सई कछु वानि भई कलिकी इत ओउन पु
न अरं न्दपिछि सुन अश्रम जो ह्रतपो वनमाई नठ

रा॰टो॰ गोमतीके यमुना नटमेंकि वसी सुभगी वथीके नट

माही सुकदादिन मोहू सहीयडरी छपजाइ वसी

गिर कंदरमाही उरजंगलकै सघ सालनमें सरथा

कहूं जाइवसी जगमाही। रागिनीटोडी ताल ।दोहा

सषी निहारेगी कहां सरथा कथानलेस मैंऊकषेत्र

गोमती ओैरपिछे समदेस। रागिनीटोडी ताल ।

सवैया। सरता तटमै बहुभांतिषिषे तपसी जिनमं
हि अनेक सहाए पुनि मोहि सिमांसक यामषिषे व
ससाकट रूपस्थान वनाए पुनि श्रम चार निहार र
ही दिन कोटिन कोटि सुजान गनाए नहीघात सुनी
कहूं काननमै सरथा सजनी कहि ठोर बनाए।१।
रागिनीटोडी ताल। चौपाइ। सषी कहा सरथाहै

रा॰टो॰

जोई। पषइनके वस पैन सोई जे अति पुंनिवती जगनारी तेयी विपतिन लहि पिआरी। रागिनीटो डी ताल। दोहरा। सषी कहोइ बात सुनि जोयाता प्रतिकूल करो असंभव कोनगति वै सब अपदामूल। ११ रागिनीटोडी ताल। सवैया। जनकाननजा अ हरावणके सबसी हुइभांति अनेकभरे वसदान

८

५८

व वेदचर्इ सुमर्इ तिन जाइ रसातल वासकरे स्रुति गं
धर्वकी दुहिता पति दैतहरी सुमदालस रूपवरे वि
थ वांम भए जगमै सजनी कछ्र आपदको नन सीस
धरे। रागिनीटोड़ी ताल। दोहरा। तांनेचले पंचडश्र।
ह सथानहो निहोइ करुणाकरुहो यो सबल सखी
दुमकहि वालीटोइ।।४।। रागिनीटोडी ताल। सवैया।

रा॰टो॰ कमएग नहि श्रग्र विलोकइरी सजनी ममराघम नैन

निह्नारे। सवैया। उनि सांतिकडूयो कहि रात्तसहै क

हएग नव पीठइ पीठ उवारे। सवैया। मलपंषगिरे अ

षदंतनते ननमै डुरगंय भयानकभारे मुकता क

ढि कछू मलीन महाइह मूड पिसंग सुफंडषिलारे।

रागिनीटोडी ताल। दोहरा। बुद्धिसिघंड मकवबि

९

५२

धे आवनहै इतश्रोर नैन निझावनमै सकोचीत इव
तहै मोर सांति कहयो राषमनही पुदगलहै वल
हीन। रागिनीटोडी ताल । दोहरा। कहणकहे ह
कोन पुनि ऐसो परम मलीन। दोहरा। सांतिकहयो
ह्रपिशाव यहि ऐसे मोमनआइ। दोहरा। ककण
कहि पिसाच नहि वहि तिसमै प्रगटाइ सरजमाहि

रा॰टी॰ प्रकासमै किरण प्रकासे लोइ। ऐसे समै पिशाचका
कहि प्रवकास सहोइ। दोहा। सांतिकह योज्ञ पिसा
च नहितो यह पापी आहि निकसयो अवही नरकते
आवतहै पथमांहि वहुरो सांति विचारकरि अवमै
लषयो नितांत महामोह पठयो अयो यह जगजैन
सियांत याको दरसन हर नदियह अतिपति निम

10

प्र॰

लीन ऐसे भांति बषान फिरवाली मुषदीन। दोहा
संषी महूरति थिर रहो सरथा लेहि निहार यही
पषंडी भाषय मति याभो न मकार गुलावसिंघ
इमभाषकरि दोनो षरी इकान नवरूपसभा प्र
वेशाकर वोलयो जैन सिधांत नमो नमो अरहंत भ
नजे जन चले उदार भगत सकति दोनो लहै मै

रा॰टो॰

अब करौ उचार। रागिनीटोड़ी ताल। कवित। नवहै

उया रतन भोनके मझार धुनि अनम प्रकास दीप

तांहि मै सुहाइहै जैनवर भाषयो सियांत सुइकोन

यह गहै जन जोई जग सुष मोष पाइहै। कवित।

अरे सुनि श्रावक सुवाकमै वषानो तुम मलय पर

गते सुदेस उपजा इहै सुफनर सुयकरै सीनजल

सीसधरै होवतन सुयजल कोटिन नवाइहै। रागि
नीटोडी ताल। दोहा। आतम विमल सुभावहै विष
सेवनिहु गयान विषसेवा कैसी करो सुनञ्ज करो व
धान। रागिनीटोडी ताल। सवैया। हरहते पदपंकज
को प्रभिवंध सीस निवाइकरी भोजन जो मिष्टानम
हां निनहि जिवा वञ्जु औरकरो वरभीतर जोविष।

रा॰टी॰

वासकरे मनमें नाहि रंचक रोषधयौ गोपङ्कतो मत

बोल कह्यो इह भांतिकरो भव सिंधतरो श्रुतिने

पथ्य और विलोक कह्यो सवये इतश्चाउकह्यो चिर

लाप ककएंचन हि सोनानि ह्रादतयी इन पेषत कोन

कलांत ह्रलाप मरयातहि आइ समाज वरी श्रुति जे

न समान ह्रवेस वताप कहि आइ ह्रमोह ह्रवेगक

12

प्र
१२

री सति संत ऊषी मनमैं मुदफापा।रागिनीटोडी
ताल ।दोहा।श्रावग निषल ऊटंवको मरथे तुं ग
हि आज कवहूं महरनन नजी सिथ छोहि ममकाज
दोहा।जोहाइस सोईकरो गन ऊलीन महान इ
मकहि निकसेवै दोऊ ककरण संत वषान।दोहा।
सषी पयारी थीर यरकाहै तंडरपाइ नाम मात्र सर

रा॰टो॰ था कहेहैं कछु और वलाइ। रागिनीटोडी ताल ।

चौपाई। अहिं सादेवी मोह सुनाई पषंडयाम सरसा

इकपाई पर वड अंवा तेहै आन तामसी सरथाकरे

वषान। रागिनीटोडी ताल । दोहा। तांते सरया

तामसी यह तें कौं डरपाइ ऐसे ककरण भाषयो अ

व पुनि संतअलाइ।।८।। इतिप्रवोधचंद्र परिछेदः

1.4

13

प्र
१२

अथटोडीरागिनी सूरसागर परिछेदमाह रागवि

लावल सूरदासकृत रागिनीटोडी ताल।३। चलन

पैयां सिषावत गोपाल। पूरयूत तनअज ननैन नि

वलत अटपटीचाल।उमगगात छबिपरत पानिप

र भुज भ्राजत नंदलाल।जौसुर सिजवर जानि अयो

रा॰ सो॰

मुख इंदु बिन होत सु नाल। लये लगाइ अंग गुरिया गवा
रनि सुंदर स्याम तमाल। जनु पशु थरि उपजी बि सरी
गति बिहरत बाल मराल। अलक तिलक अरु चारु
चबैंडा सुठ सोभा भू भाल। सूरदास ऐसो सुख निर
खत जग जीजै बहु काल। ७७ राग रामानट सूरदास

क्रत रागिनीटोडी ताल।३। वलि जांव वाल चरित सुरा

व। पाइनुपुर चलन कनझुंन नंदवजावन ताल। कवहूं

हरि के पकर अंगुरी चलन सिषावन ग्वाल। कवहूं

छतियां लाइ चूमत विहस अंचर डारि। कवहू हरिन

नको पचि नवन कवहूं धावति गारि। कवहूं नील पट

रा॰टो॰ मैं डरावति पनहो हिवन वारि। कवहूं हरषि वनाइ भूष
न राई लोन उतारि। सूर सूर मनि सिद्ध मोहि देषि यह श्र
तु हारि।७०। राग विलावल सूरदास कृत रागिनी टोडी
ताल।३। गहैं अंगुरिया ल्लवन की नंद चलन सिषावत।
अर वराइ गिर परत हैं कर टेक उठावत। वार वार वकि

स्याम सों कछु बोल बुलावत। हैंया हैं दै तली वती मुख

श्रुति छवि पावत। कवहूं कान्ह करि छाड नंद पग हेक

रिं गावत। कवहूं घर नि पर वैठि जात मनमैं कछु श्राव

त। कवहूं उलटि चलें धामकौं घुटरनि करधावत। सूर

स्याम मुष देष हैं हरष मन नंद वडावत। ॥ ४॥ रागायना

रा॰टो॰ सिरी सूरदासकृत रागिनीटोडी ताल।३।कान्हू चल

त पग द्वैद्वै धरनी। जोमनमै अभिलाष करतहो सो

देषत नंदघरनी। रुनक झुनक नूपुर छुनवाजत

यह अतिहै मनहरनी। वैठि जात पुनि उठतितु रतही

सोछ्ब विजातन वरनी। ब्रजजुवती सबदेषि थकितभ

3

सू॰३

ई सुंदरताकी सरनी। विरची यौन सुधाको नंदन सू
रदास केनरनी ।८०। रागगौरी सूरदासकृत रागिनी
टोडी तालाउ। भीनरते वाहर पुनग्रावत। घरग्रागन
ग्रतिचलन सुगम भये देहरीमे ग्रटकावत। गिरगि
र परतन जात उलंघी ग्रति श्रम होतल यावत। हूंठ

रा॰टो॰ पैढवसुधा सवकीनी धाम अवध भरमावत। मनहीम
नवल वीर कहतहैं ऐसे रंग वनावत। सूरदास प्रभु
अगनित मेहिमा भक्तनिके मनभावत।८।रागध
नासिरी सूरदासकृत रागिनी टोडी ताल।३।वहवल
कहां भयौ भगवान। जिह्विवल कमठ पीठ गिरराख्यौ

सू
५

सिंधुहि मथिकोनी परिमान। जिहबल मीन रूप ज
लयाहीं लये निगम श्रति असुर पिरान। जिहिं बल
रूप बराह दरसन परराषी धरनी पछूप समान। ज
हि बलि बलि बंधन करि पट पीछे पद ब्रह्ममापी ज्ञ
निदान। जिहि बल हिरन कसिपु उरफाहीं भए भग

रा॰टी॰ नके कृपानिधान। जिहिं बल विप्र तिलक दै थाप्यौ अ्रा

पकरी उछाछुटर्यौन। जिहिं बल रावन के सिर काटे कि

यौ विभीषन्न नृप तिनिधान। जिहिं बल जामवंत अ्रतिरा

छ्यौं जिहिं बल भूप विनय सुनी कान सूरदास प्रभु दा

नकी देह रीच ढन सकत प्रभु धरे अ्रजान।८३। रागवि

स्त
५

लावल सूरदासकृत रागिनीटोडी ताल।३। छुटरनिच

लत स्याम मन आगन मातपिता देऊ देषतरी। कवऊक

किलकिता नमुष हेरत कवऊं जननि मुषपेषतरी। म

निगन लटकन ललित भालपर काजर विंद भ्रव उपर

री। जेंसी भानि नानि देखवत हूँ सोसोभान हिंतिऊ पुरी

रा॰टो॰

कवङ्क। कहौ रखुटक वनिरैं गात गिवत उठत फिरि था

वतरी। उततैं नंद बुलाइ लेतहैं इततैं जननि बुलावत

री। दंपत हो डकरत ग्राछु समै स्याम खिलौना किनो

री। सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन सुत हित करि डुहूं

लीनो मोरी। ८४। रागग्रसावरी सूरदासकृत रागिनी

६

टोडी ताल॥१॥ आनंद प्रेम उमगिज सोदा गोपालरा

इखिलावैरी। असथरा मिल सकुन कीनौ मनमैं मो

द वढावैरी। सिव सानकादि सुकादि ब्रह्मादिक

घोजत अंतनन पावैरी। गोदलियें जसुदा झुल गावै

त नरेवाल बुलावैरी। कवहूं तालवजावत गावत

रा॰टो॰ राग अनूप मल्या वैरी। कवहूं कर पल्लव जगहा वत
भोगन मोंकरिं गावैरी। मोहे सुर नर किन्नर मुनिज
नर विरथ नोंहि चला वैरी। मोहलई ब्रजकी वनता
जिहिं सूरदास जस गावैरी। ५। राग धनासिरी सूर
दास कृत रागिनी टोडी नाल। ३। हरि हरि हसत मे

८

रो मायैया । देहरि चढत परत गिरगिर कर पल्लव गहे
नहैं रैमया । भक्त हेत जसुदा कैआगे चरन धरत विरद
अरतैया । जिहिं चरन निछलियो वलिराजा नषप्रस्वेद
गंगा जवहैया । जिहि सरूप मोहे ब्रह्मादिक रवि ससि
कोटि उगैया । सूरदास प्रभ तिहि चरननके वलिवलि

रा॰टो॰

वलिमैमैया ।८६। रागविलावल सूरदासकृत रागि॰

नीटोडी ताल ।३। नंदधाम षेलत हरि डोलत । जसुम॰

ति करतिर सोई भीतर आपु निकिल कत बोलत । ढीरि

उठीज सुमति मोहन कहि आवहु चरन चलाई । वात

सुनत माता यहि बानी चले सुटुरू वनि थाई । लैउवाइ

४

सू॰
८

अंचल गहि पीढौ धरभरी सवदेहा । सूरज्ज प्रभु जस
मति रज्जया रानिकहां भरीहै षेया । ८७ । रागिधनासि
री सूरदासकृत रागिनीटोडी ताल । ३ । आंगन षेल
त नंद कोनंदा । जदुकुल कुमुद सुषदज सचंदा । संग
संग वल मोहन सोहैं । सिस भूषन वहुको मनमोहै ।
तनदुति मोरचंद्र ज्यौं फलकै । उमगि उमगि अंग अं

रा॰टी॰ ग छवि झलकै। कटिकिंकिनि पगपैंजनि बाजै। पंक
ज पानपङ्क वियां राजैं। कंठला कंठ बघन हियांनीको
नैन सरोज मीन सरसीको। लटि कन ललित लिला
ट लहरी। देषति दोइ दंत लियां हरी। मुनमनि हर
त मंजुमसि बिंदा। ललित बदन बलि बाल गोविंदा
झलही चित्र विचित्र झगूली। निरषज मोदा रोहनी
९
रा॰ ९

फूली। गहि मनि षंभ देह उगाडे लै। कलबल वचनतो

तरे वोलै। निरषत झुक झांकत प्रतिझाई। देत परम सुष

पित अरु माई। ब्रजजन निरषत हीं हुलसानें। सूरस्या

म महिमा को जानें। ७७। रागधनासिरी सूरदासकृत

रागिनीटोडी ताल। ३। आंगन स्याम नचावई जसुमति

नंदरानी। तारी दैदै गावहीं मधुरी सुरवानी। पाइनन्

रा॰टो॰ घुर बाजई कटि किंकनी कूजै। नान्हीयेहे अरुन नाफल

बिंवन पूजै। जसु मति गान स्रुनै श्रवन नव आगुंही गा।

वै। तारी बाजत देषके पुनि आप जावै। कोहर नष उर

पर वने सुठ सोभा कारी। मानों स्याम घन मध्यहै नव

ससि उजपारी। गुरूवारे सिरके सोहै वनेघूघरवारे। ल

टकन लटकत भालपर विधु मधि गनतारे। कंठला

सू॰ ८

कंठ चिबुक तरें मुष दसन विराजै। षंजन विधि मुक

आनिकैं मनि पड्यो डुराजै। जसमति सुत हिन चावही

छवि देषति जियतें। सुरदास प्रभु स्यामके मुष टरत

नहियतें। ८९। रागआसावरी सूरदासकृत रागिनीटो

डी ताल ३। त्यौंत्यौं मोहन नाचैरई को चमरको होइरी

तैसियै किंकिनी धुन श्रक पग नूपुर रहिस मिले सुर

रा॰टो॰ टोइरी। कंचन मनि मुक्ता हल विचविच वाय नषी हवि

पोइरी। निरष निरष मुषकमल नैनको सूरमुनो ग्रानं

द होइरी। कहन नवनै सुन तनहीं ग्रावै उपमा कोंन।

हीं कोइरी। सूर भवनको निमरन माथो वलिगई जन

निज सोइरी। ४५। रागग्रसावरी सूरदासकृत रागिनी

टोडी ताल। ३। ग्रदभुत एकचितैयो सजनी नंद महरके

रू
११

ग्रंगनरी। मैंमैं निरषग्रपन पोंषौं पौंगई मयनिपा मो

गनरी। वालदसा मष कमल विलोकन कछु जननी

मोबोलेरी। प्रगट हसन दंतियां मनुदा मिनि दुरी दस

कदल ओलेरी। सुंदर भाल तिलक गोरोचन मिल मसि

विंदु कालाग्यौरी। मनो मकरंद अचै हवि कै अलि साव

क सोई नजा ग्यौरी। कुंडल लोलकपोल नयलके म

रा॰टी॰ नुदरपनमैं छाईरी। रहे विलोक विचारि चारु छवि परमति कतहूं न पाईरी। मंजुल तारन की चपलाई। चित चितरानन करषैरी। मदमु मक चित वनज्ञ वनि ननन मन मथको उनवर षैरी। जल थिय कित जिय का गपींतजौं कूलन कवहूं आयोरी। नाजानो के हिं अंगम गनमन वाहर होन हो पायोरी। कहा लगक

12

५२

हों वनाइ वदन छवि निरषति गति मति हारीरी। सूर स्यामके एक रोंम पर देंउ प्रान बलहारीरी।२१। राग सारंग सूरदासकृत रागिनी टोडी ताल।३। आज गई हो नंद भवनमै कहा कहों गृह चैनरी। चहूं ओर चत रंग लछमी कोटि कहू छियत येनुरी। हंसमरही जित केत दधि मथुनी सुनित मेघ धुनि लाजैरी। वरनों

रा॰टी॰

13

कह्हा मदनकी भावै ऊंद हूनै राजैरी। बोलिनई नवव

धू जानिजहां षेलत ऊंवर कन्हाईरी। मुषदेषत मो

हनी सीलागी रूपनव रन्यो जाईरी। गोरोचनको

तिलकनकटह्री काज रविंडुकालाग्योरी। मनो कम

लको पियपराग अलिसावक सोईनजाग्योरी। नैंन

न अंजन षंजन मोहिना सालटकन मोतीरी। मानो

सोम साथ करि लीनो जान आपनोगोतीरी। लटक

न लट करहीं भ्रु ऊपर रंग रंग मनिमनि पोपरी।

मानोगुरु सनि सक्र पकहै लाल भालपर सोपरी।

अंबुज माल स्याम उर ऊपर बचनहि यांब विछाई

री। उतिय सरद चंद्रमा प्रगट्यौं उपमा कहीन जाई

री। सोभाकों सिंधु अंग अंग प्रतिवर्न तनाही ओर

रा॰टो॰ री। जिनदेषी मनभयी तिनही को भयो भरी को चोरसी।
इतीकहीं जिनत्नी मति मेरी क्योरीं री को जलयामरी। ला
ल गुपाल बालवर्नन छवि कवि कलकरि हैहामरी।
जो मेरे नैन निरषनाङ्कती कहती रूपवनाईरी। विर
जीयोज्ञ समनिको छोटा सूरदास बलजाईरी। ४२।
रागविलावल सूरदासकृत रागिनीटोडी ताल। ३।
१४

बलि गुपाल षेलौ मेरौ तात। बलि बलि जांउ मुषार

विंदुकी अमृत वचन बोलो ततरात। छोटौ माटमथ

निया मोहन उबटि हृद तन अन्हात। मानो मुकुतागि

ज मरकत पर सोभित सुभग सांवरे गात। जननी अ

ति मांगत मनमोहन दैमाष नरोटी उठिषात। लोटत

सूर भूमि सुंदर घनचारि पदारथ जाकेहाथ।९३।

रा॰टो॰ रागअसावरी सूरदासकृत रागिनीटोडी ताल ।३। तुम

जिन मोहन गहो मथानी । दही बिलोवन देहु नंद

सुत मान ववा की आनी । कवहूं अंग निरपतिन पावत

कवहूं मिलि माषन रुचिमानी । कवहूं मुनिजन ध्या

न निपावत कवहू षिला वतिहै नंदरानी । कवहूं तीन

उपजैउ भवमापन कवहूं देहरी उलंघन जानी । सूर

सू॰
१५

दास वलिवलि विनोदके रूप राम रचना वज्रदानी।१४

रागविलावल सूरदासकृत रागिनीटोडी ताल।३।

जव दथ मथ नीनेक डरे। आरकरत मटकी गहि मोह

न वास वस भइरै। मंदर उरपि सिंधु पुनकों पति पु

न जिन मथनकरै। प्रलयह्ने इननिगाह्ने मायानी प्र

भु मरनाद टरै। सूरप्रभु प्रसुर घरे सवचित वतनैन

रा॰टो॰ निनीरछ्करै। सूरदास प्रभु सुमय जसोदा सुष दषि विड कर्ै।१४। रागविलावल। सूरदासकृत। रागिनीटोडी ताल।३। नंदजूके बारे कान्ह छांडिदै मथनियां। नैक रहो माखनदे उमेरी प्रान धनियां। आरजिनकरो बा लिगई हों तोपरवैी कनियां। सुरनर जांको ध्यानधरै ब्रह्मामनि जनियां तांको नंदरानी सुष वमनतैले का

त १८

नियां। बारबार कहत मातजसु मति सोवनियां। सेस
सहंस आनन गुनगावत नहीं वनियां। सूरस्याम दे
षि फूलै गोपयनियां। ५८। रागविलावल सूरदास
कृत रागिनीटोडी तालाउ। जसुमति दधि मथन
करत वैठी वर धाम अजर ठाढे हरि हसित नान्ही
सीदतियनि छवि छाजे। चितवति चितलेत चुराइ

रा॰टो॰ सोभावर। नीनजाइ ज्ववतिनके मनहरनको मोह

नी दलमाजै। जननि कहतिना चौतमदेहौनो नी

तमोहन रुनक झुनक चुलतपाइ नचाइन न्हप

रवाजै। गावत गुन सूरदास जव माथवभये वि

काम नाचतजै लोकनाथ माधनकेकाजै। १८।

रागगौरी सूरदासकत रागिनीटोडी तालाइ।

सू
१८

तहिमाखन जसुदाल्याइ। मैमथकैं अवही धरिरा।
ख्यौ तुमरे कारन कुंवर कन्हाई। मांगलेहु या विधि
कर मोहनमो आगैं तुमखाहु। वाहर कहूं कहुं जि
नखैहो दीठिलगै जिनकाहु। तनक तनक कछुखा
हु लाडिले ज्यौवढि आवैदेहु। सूरस्याम अवही हुम
याने सखनके संगखेहु॥९०॥ रागअसावरी सूरदास

रा॰टो॰ रूप रागिनी टोडी ताल ३। आजु सखी हौं प्रात समै दधि

मथत उठी अकुलाई। भरि भाजन मनि खंभ निकट य

रि नैन लियो करि जाई। सुनत सब्द तिहि छिन समीप

मम हरि हसि आपप्राय। मोहीलाल विनोद मुदित

अंत नैन निरखत दिखाई। चितवत चित हरयो चंचल

छवि चितै रहे चितलाई। पुलकित मन मित विंवदे।

स्व॰
१८

घकै सबही अंगसुहाई। माखन पिंडविभाग हूह कर

मिलत सुघसुमकाई। सूरदास प्रभुता सुतके सुषम

कैन हृदेसमाई॥११॥ रागकेदारा सूरदासकृत रागि

नीटोडी ताल॥३॥ मोहन तनक सोवदन तनक सेकर

भुजतनक करनि पर तनक सोमाषन। तनक सीबाते

कहत तनक सेतन कहिरी यत तनक सेकर भुजत

रा॰टो॰ नक जसोथन। ननक कपोल ननक सीदंति पांनन
कही हसि हरि लेनन कमन। ननकिहि ननक सूर
रैं गनहैं ननक कृपाकरि दीजै ननक सरन॥१॥
रागविलावल सूरदासकृत रागिनीटोडी ताल।३।मा
थवनन कचरन अरुननक ननक भजनन कवदन
करिननक सेवोल। ननक कपोल ननक सीदंति पां

19

सू १६

तन कहू मन पर लेत हौ मोल। तनक कर निपर तन
कसो माखन देखि यतन्ना के अखिल भवन। तनक
ह्वैनेज सलहत परम गति तनक कहत को ऊनंद
सवन। तनक रीक परदेत सकल तनतन कविते
वितकित हरन। तनकहि तनक सरवाछिग आयो त
नक कहं दीजै तनक सरन।।१।। रागकेदारा सरदा

रा॰रो॰ सहकन रागिनीटोडी ताल।३। सषीरे नंद नंदनदेषि

धूरि धूसरलटफंदूली हरियैरै हरिभेष। जल

जमाल गुपाल यहिरै कहाकहीं वनाइ। मानोगं।

गा गौरचौरीलई कंठलगाई। नीलपाट सरोइ म

निगन फनगयोधैं जाई। झुनझुना करलिये मो

हननच नडमर वजाई। केहरी नषदेषि हिरदै।

स्व
२॰

रह्यौ नारि विचारि। बालससि मनौ भाल तैलै उदय
ह्यौं त्रिपुरारि। निरष अंग अनंग लजित नंद बछ
ह्वि जाति सूरहरि दैवतनि यहस्याम सिवकोध्या
न।५। रागसिरी सूरदासकृत रागिनी टोडी ताल।३।
हरिहरि संकर नमोनमो। करुणामयनै नमोन
मो। अहिसाई अहिअंग विभूषन अमितदान वल

रा॰टो॰

विषहारी। नीलकंठ वरनीलके वर प्रेम परम परह्न तहारी। चंद्रचूड सिषचंद्र सिरोरुह जमुनाप्रि गंगा धारी। सुरभिरेन तनभस्म विभूषन वाहन वनवष्ठ चारी। अजअनीत अवबुद्धि पकरम यहै अधिकप अव नारी। सूरदास समनाम रूपगुन अंतर अनुचर अनु सारी। रागसारंग सूरदासकृत रागिनीटोड़ी ताल

21

सू
२१

।३। वालविनो दषरेहो भावत। मुषप्रति विंवपकरवे।
वा-- त। हतहसि हसि हलसि चुहुक वनियावत। नंद
सुवन माषन मांगतहै ग्वालनि सैन वजावत। सवे
जोरल्यो चाहतहै प्रगट वचन नहि आवत। कोषत्र
ह्मांड षंडकी महिमासि सुनामां फुदरावत। सूरदास
स्वामी व्रजवासी नैननिको फलपावत।४। रागकान्हडा

रा॰टो॰ सूरदासकृत रागिनीटोडी ताल।३। भावत हरिको बा
ल विनोदा। लैलैगोद निरषमुष हरषत सुदित रोहनी
जननिजमोदा। अंजन अंगराग तनसोभत चलनलोत
पुनित्र ‍उरमोदा। अतिसय चपल सकल सुषदायक
निसदिन रहित कलेवरसओदा। परमसनेह बडावत बा
ननरंगरंगकैवेदनिगोदा। सूरदास प्रभु अंबुजलोच

सू
२२

न ब्रजजन चितवत फिरिफिरि कोदा ।५। रागदेवगं

धार सूरदासकृत रागिनीटोडी ताल ।३। कहनला

गे मोहन मैयामैया । नंदमहरसोंबाबाबाबा अरुहल

धरसोंभैया । ऊंचे चढि चढि कहतिजसो मतिलैलै

नामकन्हैया । हूरघेलन जिन जाऊ लालमेरे मारैगी

काहूकेगैया । गोपीग्वार करत कौतूहल घरघर ब

रा॰टो॰ फनि वँधैया। सूरदास प्रभुतुमरे दरसकौं चरननि प

रवलजैया।८। रागरामकली सूरदासकृत रागिनी

टोडी ताला।१। हरिअपने अंगन कछु गावत। तन

क तनक चरननिसौंना चतमनहीं मनहि रिझावत।

बांहिउठाइ काजरी धौरीगै यनि टेरि बुलावत।क

वहूंकवा वानंद मुकारत कवहूंक घरमैं आवत मा

सू॰
२२

षन ननक लेत कर अपनैं ननक वदनमैं नावत।
कवङ्क चितै प्रति विंव षंभकौं लीनोलियें धावत।
डुरदेषत जसमति यहलीला हरषि आनंद वडा
वत। सूरस्याम केवाल चरित नितही देषत भावत
।१८। राग विलावल सूरदासकृत रागिनीटोडी ताल
।३। हों वलजांव मधुर सुरगावङ्क। हेरिदेङ्क पिताके

रा॰टो॰ आगे प्रेम प्रीत उपजावहु। अवके वीरलइते लालनने
दहि नावदिषावहु। कटिकिंकन पाइनमैं नूपुरवाज
त अतिछुं विपावहु। वांहपसार कान्हकीनाई धौरी
धैन वुलावहु। कनकषंभ वित कंकन कर अंगिद
आपे जाइव जावहु। मन मघ षंभ प्रतिविंव विलो
कत नितं नवनीत षवावहु। परमानंद स्वरके उ

स्व
२४

रनैं यह छवि अनतन जावहु। ८। राग बिलावल स
रदा मक्त रागिनी टोडी ताल। ३। देख्यौं दधि सुतमैं
दधिजात। एक अंचभो सुनरी सजरी रिपु मैरि पुज
समात। दधिपरकीर कीर पर अंबुज पंकजके द्वै
पात। यह आचरज देषय मृपाल का फूले अंगनमात
बारं बार बिलोकि लोच चित जसुमति अतिमुसिका

रा·टो·

न। यहै ध्यान मन अनस्यामको सूरदास वलिजान।।५

रागमहो विलावल सूरदासकृत रागिनीटोडी तालः

मनमै आंगन नंदके षेलत दोऊ भैया। गौरश्यामजो

री वनी वलऊंभर कन्हैया। लटकन ललित हरियां

म सिविंदुका गौरोचन। हरि नष उर अति राजही से

तन दुध मोचन। संगासंग जसुमति रोहिनी हितका

25

रनमैया। चुटकी देहिन चावही सुतज्ञानननैया।
नीलपैत पटपीइनी देषत जियभावै। वालविनो।
द आनंदसो सुरज्जनमगावै॥१॥ रागकान्हडा सूर
दासकृत रागिनीटोडी ताल।३। इनआंषिनितें प
कौ पलजिनहो हुनियारे। बलिवलि गई मुषार
विंदके तरसतहैं नैननि केतारे। औरैंमषा तुला

रा॰टो॰ ड़ आपने हरि आंगनषे लो मेरोवारे। चित वतरही
फनगकी मनिञ्यौं सुंदर वाल विनोद तुमारे। मधु
मेवा पकवान मिठाई व्यंजन मीठे षारे। सूरस्याम
जोईजोइ तुमचाहो सोईसोई मांगालेउ मेरेप्यारे।
॥१॥ रागविलावल सूरदासकृत रागिनीटोडी ताल
३ गोपाल राइ दधिमांगे अरुरोटी। माषन वहुत

सू
२८

देऊ मेरी मैयाहू पकरु कोमल मोटी। प्रातकाल उ।
टिदेउं कलेऊ मघ चुपरें अरु चोटी। कतहैं प्रार कर
त मेरो मोहन कतहैं भूमहि लोटी। जोमांगौ सोदेउं
मनोहर यहै वातहै षोटी। सूरदास ठाकुरकौ भाव
त हाथ कटिया छोटी। ।१। रागविलावल सूरदासकृ
त रागिनीटोडी तालाः३। मैयामोहू वडोकर लैरी।

रा॰टो॰ हथिहथी हूत माधन मेवाजो मोगी सोदरी। कछुहे

व मराधो जिनमेरी जोजो मोहि मचेरी। दोऊ मवल

मवनि मैजेसें मदारहो निरभैरी। रंगाभूम मैंकं।

म पछारें केमवहाऊनैरी। सूरदास स्वामी की

लीला मथुरा राधोजैरी॥१३॥ रागसारंग सूरदासकृ

त रागिनीटोडी ताल॥१॥ मैयामेरी कववाढै गीवो

सू
२

टी। किते दिवस भये हूधि पिवावत यह अजहूं अ।
ति छोटी। तूंजु कहति बल कैसी बैनी ह्वै है लांबी
मोटी। यह तो गुहत न्हा न नागनि ज्यौं करि है भू
महि लोटी। पूत पूत मोह हधि पिवायौ दई न मा
खन रोटी। सूर बाल रस त्रिभुवन मोहि हरि हल
धर की जोटी।।१४।। राग बिलावल सूरदास कृत।

रा॰टो॰ रागिनी टोड़ी ताल।३। दोऊ भैया जसुमत मैयापैं मां

गत दैरी माखन रोटी। सुनि भावति यह बात सुतन की

छूटयाम के काम अगोटी। बल गह्यौं अग्र नासिका

मोती कान्ह कुंवर गही हठ कर चोटी। मानो हंस मो

रभख पावत कवि बरनी उपमां कछु छूटी। यहि

सुखनंद देखि आनंद त मगन होत प्रेम रस लोटी।

सू
२८

सूरदास मन मुदित जसोदा भागवडे कर मनिकी
मोठी ।१५। राग बिलावल सूरदासकृत रागिनी टोडी
ताल ।३। नैजरहौं माषन देऊं तुमकौं। बातनकहूंकी
पूछत स्यामहि फेरकरनि महतारी। करत बात
हरि कछू नहि झूठेहू भरनऊंकारी। सूरदास प्रभु
के गुनतु रनहि भूलिगई नंदनारी।।१६। बातनहू

29

रा॰टी॰ सुनिलाय लियौ। तबलों दधिमथ्य जननिज सोदा मा
षन कर हरिहाथ दियौ। लैलै अधर परस कर जेंव
त देषत फल्यौ मानहियौ। आउहि षान प्रसंसिन आ
पुहि माषन रोटी बजत सियौ। जो सुष सिव सनकादि
क दुर्लभ सुतहित जसुमति नंददियौ। यह सुष नि
रषत सूरज प्रभुको धन्यधन्य पल सुफलजियौ १०

रागअसावरी सूरदासकृत रागिनीटोडी ताल।३।

जसुमति जबहीकह्यौं अन्हवावनरोइगए हरिलो

टतरी। लेतउवटलौदीनी आगेथरि कहूनहीं हम

छोटतरी। मैव लजांवन्हा वमेरे मोहन कतरी वन

वेकाज। पाछैंथरि राख्यौं छुराइ कैंउवटनोनेल स

माज। महरि वहूत विनीट करि राषति माननहीं

रा॰टो॰ कन्हाई। सूरस्याम प्रतिहारी बिरहाते सरसति अंत
न पाई।।१८।। चंदनदिषावत रागकान्हरा सूरसा
गरहजत रागिनीटोडी तालाश्च ढाढी जसुदा आज
र आपुने हरिलियै चंद दिषावत। रोवत कतबलि
जाउ तुमारी देषोंधों भरिनैन जुड़ावत। चितैरहे त
व आपुन ससितन अपने करलै लैजु बतावत मे।

स॰
३॰

30

टीलगत कियौं यह षादो देषति अतिसुंदर मनभाव
त। मनही मनमैं बुद्धिकरत हरिमातासौं काहितादि
मंगावत। लागीभूष चंद मैंषैहौं देहुदेहु रिसकारि
विरुझावत। जसुमति कहति कहामैं कीनौं रोव
त मोहन अतिदुष पावत। सूरस्याम कोजसुमति
वोधति गगन चिरया उडत दिषावत ।।१९।। रागका

रा॰टो॰ ~~त्रज~~ ~~सूरदासकृत~~ रागिनीटोडी ताल ३। किहिं वि
धि करकान्है समझौंहौं। भूमीभल वंद दिषरायौ
ताहि कहत मुहि देषैंहौं। अनहोनी कहूं होत कन्है
या देषै मनेन बात। यहतौ आदिषिलौना सवको
षान कहतती हिंताल। यहै देत निनलौनी मोकौं छिन
छिन सांझसवारै। वारवार तुममाषन मांगत देऊ क

त्र
३१

ह्मंते प्यारे। देषत रह्योंषि लोना वेदहि आरन करोक
न्हाई। सूरस्याम लिये हसि हसि निज मोदानंद हि
करत बुकाई॥१४॥ राग कान्हड़ा सूरदास कृत रागि
नी टोड़ी ताल। वारवार जसुमति सुतवोधति आ
उ चंद तोहि लाल बुलावै। मधु मेवा पकवान मिठा
ई आपुन षैहै तोहि षवावै। हाथहि पर तोहि लीने षे

रा॰टो॰ लैने ऊनहीं घरनी वैठावै। जलवासन करकेंज

उठावत ताही मैंतं तनधरि आवै। जलछुट आनि

घरनि परराख्यौं गहि आन्यौं वहचंद दिषावै। सू

रदास प्रभु हंस मुसकाने वारवार दोऊ करनावै

॥६॥ रागकानडा सूरदासकृत रागनीटोडी ता॥

ल ।लैले मोहन चंदलै। कमल नैन वलिजाउ

सुवितकै नीचैनी कवितै। जाकारन तैं सुनि सुंदर
सुतिकीनी इतीअरै। सोईसुधा करकिरन मनोह
र भाजन मांह्रिपरै। नभतै निकट आनिराख्यौहै
जलपुट जतनजुकै। अपने हाथ करिकाढि म
नोहरजा भावैनादै। गगन मंडलतै मांगि पठायौं
पछी पकपठै। सूरदास प्रभु इती बातकौंकत मे

रा॰टो॰

मेरो लालकषे ।३३। रागबिलावल सूरदासकृत रा
गिनीटोडी ताल ।३। अबकैंपौरी मेरो बाल गोविंदा।
करपल्लव गहिगहि दिष रावत षेलनकों मांगैंचं
दा। भाजनमैं जलधारि जसोमति इहिं विधि चंद
दिषावै। रुदन करत ढूंढतनहीं पावत चंदयरन
कैसें आवै। मधुमेवा पकवान मिठाई मांगलेऊ

सू॰
३३

मेरेछौना। चकई फूलपातके लटकन लेहु मेरे ला
ल षिलौना। मंत्रउचारन अम्रहर संचारन हूवकरन
दुषदेंदा। सूरदास बलिगई जसोमत उपज्यौ कंस
निकंदा।२३। रागकेदारा सूरदासकृत रागिनी टो
डी ताला३ जसुमति लैपल कापौढावति। मेरोला
ल अतही विरजानी यहकहि मधुरौं सुरषें गावत।

रा·टो· पौढगई आछुन हरुवैं करि अंग मोरत वहरि जमुहा

ने। करसौंढो किसुतहि डुलरावति चटपटाइ वैठे अ

तराने। पौढौलाल कथाइक कहिहौं अतिमेटी श्रव

ननिको प्यारी। यह सुनि सुरस्याम मुनि हरषे पौ

ढिगए हंसि देतहुंकारी।२४। रागमारंग सूरदास।

कृत रागिनीटोडी नाल।३। सुनिसुत एककथा क

ह्रीं प्यारी। कमल नैन मन आनंद उपज्यौं वतर सिरे मन देतडूं कारी। दसरथ न्रपतिडुते रघुव सीताके प्रगट भये व्रतचारी। तिनमैं ऋषी राम सों कह्रियत जनक सुता तांकी वरनारी। तातवचन लगि राजत ज्यौं तिनअनु जवर निलै भये वनचारी। यावतिकन क म्रगाके पाछे राजि वलोवन परम उदारी। रावन

रा॰टो॰ ह्रत्न सियाको कीनो नव नंद नंदन नीदनिवारी।
चापचाप कहि उठि स्रर प्रभु लछमन देऊ जननि
भ्रमभारी।।५५।। रागकेदारा स्ररदासकृत रागिनी
टोडी ताल।३। जसुमति मनमन यहै बिचारति।
झिझकि उठौं सोवत हरि अबही नवनव तनके
ताप निवारत। घेलनमे काहूडीठ लगाई लैलै

राई लोन उतारत। सों कहि ते ग्रति ही विरचानों

नंद हि देखकरी ग्रति ग्रारति। वारवार कुलदेव म

नावति दोऊ करजोरि सिरहि लैधारति। सूरदास

जसमति नंदरानी निरख वदन झलप निवारति।

२६। प्रातसमै जसगावन। रागकली सूरदासकृत

रागिनी टोड़ी ताल। नाहिनै जगाइ सकत सुनस

रा॰टी॰ बात सजनी। अपने ज्ञान अजनहूं कान्ह मानतहै रज
नी। जबजबहीं निकट जात लाग रहित लोभा। त
नकी सुधि बिसर जातनिर षत सुषसोभा। बचन
निकों बऊत करति सोचति जियगाढी। नैननति
बिचार परत देषत सबवाढी। इहिबिधि बदनार बिं
द जसु मति जियभावै। सुरस्याम सुषकी रासका

36

सू
२८

पै कहि आवै। २१। राग बिलावल सूरदास कृत रागिनी

टोडी ताल ३। जागौ ब्रज राज कुंवर कमल कुसुम

फूले। कुमुदिनि मुषम कुचरही भृंग लताफूले।

तम चरघ गासोर सुनो बोलत वनराई। रांभित गऊ

मधुर नाद बछरा संगधाई। ससिमली नर विमका

स गावति ब्रजनारी। सूर श्री गुपाल उठे अंबुज क

रा॰टो॰

रथारी ।२८। रागविभास सूरदासकृत रागिनी टोडी

ताल ।३। भोरभये देषत हरिको मुष मुदित जसोम

ति नंद। दिनकर किरन नलिन ज्यों विकसत उरउ

पजत आनंद। वसन उघारि जगावति जननी जागो

मेरी आनंद कंद। मनोमथत सुरसिंधु फेरफाटि द

ई दिषाई चंद। जाको जस ब्रह्मादिक मुनिजनने

ननैन कानि छंद। श्रीव्रजमैं सूरज प्रभु प्रगटे पूरन

परमानंद।२५।रागविलावल सूरदासकृत रागिनी

टोडी ताल ।३। जागियै गुपाल लाल आनंद निधि नं

द लालजू जमति कहै वारवार भोरभयौ प्यारे। नैन

कमल दल विशाल प्रीतिवापि कामराल मदन ललि

त वदन ऊपरि कोटि वारडारे। जगत अरुन विगत

रा.दो. सर्वरी संसाक किरनही नदीनदी घमलिन छीन

इनि समोहतारे। मनोज्ञान घन प्रकाश बीते सब

भव विलास आसत्रास तिमर तोकन सनतेजजारे।

बोलत घग निकर मुघर मधुरहै प्रतीत सुनो पर

म प्रान जीवन धनमेरे तुमवारे। मनोवेद वंदी जन

सूत वृंद मागध गन विरद वदित जयजय जयजै

ति कैटिभारे। विगसत कमला वलीवलेप्र पुंजवंच
रीक गुंजत कलकोमल धुनि त्यागि कंजन्यारे। म
त्रु वैराग सकल पाइ सोग कूप गेह विहाय प्रेमम
त्र फिरत स्तव गुनति गुन निहारे। ह्वनत ववन शि
यदमाल लागी अतिसै दयाल भागे जंजाल जालदु
घ कदंम टारे। त्यागि भ्रम फंद द्वंद निरषकै सुषार

रा॰टो॰ बिंद सूरदास प्रति आनंद मिटे डुंडु भारे ।।१३।। रागन
ट सूरदासकृत रागिनीटोडी ताल ।।३।। प्रातसमै
सोवत उठ सूतको वदन निहाऱ्यौं नंद । वहितनस ।
कै प्रातिसै अकुलाने विरहि निसाके द्वंद । स्त्रछ सैंज
मैंते सुष निकसन गए तिमिर मिटि मंद । मनुपयनि
धि सूर मथि तेफे निफटि दई दिषाई चंद । याएवत

39

सू
३५

रचकोर स्तरस विस्तनि स्तनि सषा सछंद।रस्तीन स

रत सरीर थीरमन पियत किरन मकरंद।।३।।रागवि

लावल स्तरदासकृत रागिनीटोडी ताल।।३।।जागो

जागो नंद कुमार।सोवह्र कह्यासिदा माताढे संग

सषा सबग्वाल।रविहूव ढोंरै निसवति चटी उन्न

देसकल किवार।वारिवारि जल पियौज सोदाउठि

ग॰टो॰ मेरे प्रानप्रयार। घरघर गोपी दह्यौं विलोवै कर कंकन झनकार। सूरदास गिरधर की लीला महिमा अगम अपार। ३१। इति टोडी रागिनी सूरसागर परिछेदा समाप्ता॥

सू॰
५॰

अथ रागिनी टोडी भक्तिमाल परिछेदमाह ताल॰

ति॰॥दोहा॥ कमल चरन रति दायनी हरन सकल

भ्रम भीत। करन मोद मंगल महा बरनउं कथा

पुनीत। विप्र जनार्दन नाम इक निपुण भक्त

भगवान। तहि हरि वंस पुराण मथ कथा श्रव

ण सावदान। चौपाई। ब्रह्म दत्त इक भूप मथी

रा॰टी॰
भ॰

रा। बसहिं सात्व नगर गुण खीरा। धरम निरत इंद्रय जित ज्ञानी अनेक जग्य कारक जग मानी। महिखी रही नाम कल दोई। सुमति सुशील निश्चल गुण सोई। भूप मित्र इक विप्र रहावा। जासु सह मित्र नाम जग गावा। न्रप अरु विप्र मित्र सह काहीं। दीन नदैव सुवन रहहु माहीं। न्रप

ति कीन चिर राज अभंगा। विश्वमित्र ज्ञत हृदय उमंगा

अवसर एक पुत्र उत्व मानी। नृपति यज्ञ वैस्नव हवि

ठानी। हैत प्रसन्न शंभु भगवाना। मत्व वैस्नव नृप

कीन महाना। विश्वमित्र सह तिमि निय जानी। हस

प्रसन्न हैत सत्व मानी। वेद वहीन पुनीत अचारा। क

रि कीन्यो वैस्नव मत्व भारा। नृप दुज भक्ति प्रेम दृढ़

जाना। भे प्रसन्न हरि हर भगवाना। गये नरेस यज्ञ

ससि भाला। आये काम विप्र मख शाला। दोहा॥ न

र नायक हर पगन पर वर माग्यो कर जोर। देहु

प्रबंड प्रताप पर प्रभु मोहि जुगल कशोर॥१॥ चौपाई

विप्र मित्र सह तिमि हरि पांही। माग्यो वर भावत जि

य कांही। निज अनन्त सेवक जस माता। देहु सवन

महि कृपा निधाना। अस हर रूपहिं दीन सुत दोई
अमर समर धीरज ध्रुत सोई। तिमि सुत उजाहिं दीन
भगवाना। विषय विरक्त भक्त गत माना। भेरूप सु
त जग प्रवल अपारा। नाम हंस डिंभक तिन धारा।
राख्यो नाम जनार्दन तासा। विप्र सदन जोई सुवन
प्रकासा। दुज सुत कररूप सुजन संगा। वन्यो परस्प

रा॰टी॰
भ॰

3

र नेह अभंगा शास्त्र शास्त्र पढि भये प्रवीना। तब त
प हेतु गवन वन कीना। कीन उग्र तप भूप कुमा
रन। करि निज हृदय शंभु पद धारन। जाविन भ
क्ति भक्त हित कारी। कीन उग्र तप विप्र मुरारी का
नन पंच वरष लग तीन्यो। विधि पूर्वक हरि हर
तप कीन्यो। न्टप सुत रहे करत तप जाहां। आये

३

हर प्रसन्न मन नाहीं॥दोहा॥ मागहु मागहु भक्त

वर महि प्रसन्न जिय जान। तब कीन्यो तप कहि

न मम तजि भरोस जग आन॥२॥ चौपाई॥ भूप

स्रवन सुनि संकर बानी। मानहुं तप निद्रा तें जागी

उठे हरष पूरित जगभाई। हर पद परे दंड वत जा

ई। अस्तुति लगे करन बहुभाती। जै ति जै ति हर

त्रिपुर अरारी। जै प्रभु भाल चंद्र सव सारी। जै हर ह
रन त्रास संसारा। जैति जैति शंकर भगवाना। जै
ति वृषभ पति कृपा निधाना। जै उमीस गौरीस ग
रीसा। जैति जैति आभरन अहीसा। जै गंगाधर जै
ति पिनाकी। जैति भीम भगवान इकाकी। जैजै
नंदि नाथ वरदाता। जैति भसम सित मंडित गाता।

रा॰ दो॰ भ॰

जैति जैति चरमंचर धारी। जैजै मदन दहन दुख
हारी। जैजै करन विश्व संघारा। जैति जैति प्रभ
भक्त उधारा। जैजै भूत चराचर सेवा। जैति जैति
मंडिन उज देवा॥ दोहा॥ इस प्रकार प्रभ तुति
करत तिन मांग्यो वर राउ। हम कहं संस्तृति श्र
स्त्र सुर जीति सकै नहिं केउ॥३॥ चौपाई॥ दीजै

रा॰टी॰
भ॰

दिव्य अस्त्र हमकाहीं। आवहिं मीच निकट रण ना
हीं। एव मस्तु कहि शंभु कृपाला। दीने अस्त्र सम
र अरि साला। बज्रहि कृपा जन बचन उचारे। सदा
संग तुमरे रखवारे। रहिहैं सुभट जुगल रण मो
रे। अरि कौ जीति सकैं नहिं तोरे। इह तुमरे जन स
दा सहैया। रिपु कहं काल रूप दरसैया। कंडोदर

५

विरूपाक्ष बखानी। विदन नाम निज रक्षक जानी।
असकहि अंत्र ध्यान सिव भयेऊ। हृदय हंस डिंभ
क सब ह्वयेऊ। संभु प्रसाद कवच करि धारन।
पानि परसु गहि शोक निवारन॥ दोहा॥ जुगल
वीर गवने भवने भवन भीम संग गए दोऊ॥ सद
न आय वंदी चरन जनक नंम्र वत होऊ॥४॥

रा·टो·
भ·

6

चौपाई ॥ ललित लिलाट त्रिपुण्ड्र विराजत । भसम
रेख तन चांदनि लाजत । रुद्राक्षन स्रज अंगन
याहू पिंगल सीस देवसरि वाहू । अष्ट जाम शि
व शिव धुनि बाजे । बागंबर अंबर तन साजे । अ
स नकेत निज निवसन लागे । रूप सत प्रबल
जुगल बड़भागे उन जनार्दन त्रिभुन निवस्यो ।

हरि प्रसन्न हित कीन तपस्या। हरे राम रघुवर रघु

राई। केशव कृष्ण जनन सुखदाई। रटत रुचिर

रसना इज राहू। प्रेम वारि दृग वारि नलेहू। सथि

सरीर सगरी विस राना। भजत नरंत्र कृष्ण भगवा

ना। पंच वरष इहि भांति बिताया। हरि हरि रटत

दिवस निसि जाया। प्रवरिल भक्ति प्रेम उज जाना

रा.टी.
भ.

प्रकटि प्रसन्न भये भगवाना। बिप्र देखि प्रभु कहई
अकुलाई। पर्यो लकुट इव चरनन जाई। अस्तु
ति कह्यो अनेक प्रकारा। जैजै जन्तु वर कृपा अगा
रा। तुमहिं दीन उद्धारन हारे। तुमहिं शरण गत
हरिख निवारे। तुमहिं विप्र सुर मेदनि गैया। दीन
याल उरे त्रास हरैया। असरन सरन तुमहूं जग

जाने। तुमहूं गरीब निवाज कहाने। तुम आधार

सकल जगकेरे। तुमहूं भक्त जन सुखद घनेरे॥

दोहा॥ मुनि तीय तारन तुम विदत वारन शोक

निवार। तुमहूं उबारन प्रजा मल तुम तारन वसुबा

र। द्रुपद सुताकी लाज तहां तुमराखी जदुराय।

तुमहूं भये प्रह्लाद कर यर नरसिंह सहाय।

रा॰टी॰
भं॰

५॥ चौपाई॥ असप्रकार असतुति सबगाई। भगति
प्रेम दृग वारि वहाई। तब प्रसन्न भग वन अस का
हा। मागहु भक्त जवन मनचाहा। तब तिस कप
ट कीन सिवाई। मैं प्रसन्न तुम पैं दुजराई। तब दुज
जोरि जुगल कर भाषा। अब मोहि नाथ कवन अ
भिलाषा। जोगि सिद्ध तापस मुनि ज्ञानी। करहि ज

जतन करठ अनक अमानी। तव दरसन हित मन उ

वारी। नाना लेहिं वपुल डुल भारी। तिनकहं ध्यान

मात्र भगवाना। आवत कवहुं न कृपा नियाना। मो

र भाग्यकर कवन वडाई। जो प्रतक्ष प्रभु सनमुख

आई। मांग मांग वर दैव उचारा। मोहि सम कवन

धन्य संसारा। जहि गोचर हग त्रिभु वनराई। कामाग

रा॰टी॰
भ॰

ॐ अव भक्त सहाई। पै मोपं प्रभु जो अनुकूला। तो
मोहि देहु सकल सुख मूला। चरन कमल निज
भक्ति सहाई। अवदिल प्रेम संतसिव काई॥ दोहा
इहदायानिय देहु मोहि नहिन आन कछु काम।
बोले सुनि तुज वचन अमरमारमन अभि राम॥६॥
चौपाई॥ मै निज भक्ति संत सिव काई। तोरे दीन वि

१

५

प्र सुषदाई अस कहि सजल नैन भगवाना। इजहिं
लीन निज हृदय जुड़ाना। बहुरि बदन निज विभ व
न गाया कह्यो इजहिं अस हरित दाया। कछु दिन
भक्त प्रवर करि सेवा। मोर धाम तव शेष अभेवा। अ
स कहि कल अंत दिन भयेऊ। विप्र सुदिन आश्रम मनि
जगायेऊ। तव तें राढ़ रुचिर वन धारा। ताको कुसल वर

रा॰टी॰
भ॰

10

न आधारा। उदय कुंड ममतिक कलमोहिना। द्वादश
तिलक श्रंग मन मोहिता। सुचिवनमाल कंठकर
लीला। सरल सुभाव सनेह सुशीला॥ दोहा॥ अस
डिंभक अरु हंस जुत विप्रजनार्दन जोय सालव नगर
निवसत भये सुदित सुजस रत होय॥७॥ चौपाई॥ ए
क समय न्रप सुत जुग बीरा। सैन सुजाय सुदित रण

धीरा। लिये जनार्दन दुज कर संगा। कानन गये करन
मृग भंगा। तहां वराह व्याघ्र मृग नाना। हने कीन
स्नानन नाना। जुगल जाम विहरत वन माहीं।
बीतिगये दुज न्टप हत काहीं। श्रम समेत पियत
भये भारी। तब आये पुस्कर तट सारी। करि जल पा
न कियो विस्रामा। तहां वसहिं तापस मुनि नाना।

रा०रो०
भ०

सुनत बेद श्रुति सैन नयागो। नृप सुत इजन दरस अ
नुरागो। विप्र मीत निज संग लिवाई। गवने जहं मुनि
मंदिर छाई। मुनि दरसन करि नृप सुत तेही। बंदि
चरन सुभ आसिष लेहीं। बहुरि नम्र बचन कहत उचा
री। मुनि कृपाल अस बिनय हमारी। पितु करि राज
सुय माख काहीं। बिनय करन सब मेदनि जाहीं। हम

॥

१८

जब करि हूं निमंत्रण तोरे। तब ऐहौं तुम मुनि उर मोरे
॥दोहा॥ अस प्रकार सब मुनिन सन विनय करत
कर जोर। आश्रम आश्रम मुनिन के फिरत नरेस कशो
र॥१०॥ चौपाई॥ करि दरसन परसन सुख पायो। मुनि
गण तिन सो वचन अलायो। करहिं जज्ञ जब जनक
कुमारा। तब आवन उत होहिं हमारा। इहि विधि सन

रा॰टो॰
भ॰

न कथनतिन काहीं। गावने जुद्धवासा मुनि जाहीं। हविर

सहस दस सिखन मझारा। राजत अनल रूप जनु था

रा। जासको पदव भवन उर्दंडा। जरत महासुर सोप प्र

चंडा। अंबर अकन दंड कर धारी। जारन जगत अव त्रा

कारी। लोयन लाल भसम वपु छाजे। सेत सीस जट

जूट विराजे। मन हूं काल मूरति मुनि राई। देखन कों

12

नवि कल्लहै जाई। डिंभक हंस निकट नहि आये। जोरि
पानि चरनन सिर नाये। हृद्धि कुसल मानस हर धाई
मुनि समीप बैठे जुग भाई। विप्र जनार्दन मुनि पग
लागे। कुसल भक्त लखि मुनि अनुरागे। मुनिनाथहिं
विरक्त जीय जानी। भूप सुतन अनुचित चित मानी ॥
दोहा॥ कह्यो कठिन कटु वचन अस काल रूप मुनि

रा टी
भ·

13

काहिं चौर ग्रहस्त तजि कत वन्यो संन्यासी जग माहिं ॥
८॥ चौपाई॥ प्रथम यरहिं सन्यस्त नकोई। ग्रहस्त श्रा
श्रम विधि व्रत दृढ होई। पहिरे रक्त वसन पावेरी
मूरख वन्यो मत्वा तव दंडी। कहितें रीत वेद प्रति कू
ला। लीनी प्रथम ग्रहस्त पथ भूला जामें श्रतथि संत
उज देवा। सब विधि होत रुचिर रुचि सेवा। ग्रहस्त

३

आश्रम शंकर मन माना। दायक नरन विश्व क
ल्याना। जब कपटी कर दंड धराये। दीनसि धरम
करम विसराये। धुसकर नट वक ध्यान लगाई
वैसो जन वंचन हित आई रे विहूप उनमत म
ति हीनो। तैं जड हथा दास हरि लीने। गता वार
अज्ञान रताना। भसम रमत सठ लाज न माना।। ति

रा॰टी॰
भ॰

पट अमंगल रूप बनायो। दुरवासा जम नाम कहा
यो। अस पाखंड निरत सठ कोरी। पकरत देत दंड
हम जोरी। वांयऊं अवहिं वेद नहीं काहा। गावति
भवति भवन इहि करव विवाहू॥ दोहा॥ गृह आ
श्रमी बनाय इही करि विधी वेद अजास। संसकार
करवाय उनि करऊं निरत सन्यास॥१०॥ चौपाई॥

अस भनि जाय अवधि मुनि पासा। बैठे जुगल जनङ्

वल रामा। तहाँ वझरि कटु वचन प्रकासा। रे सठ

दंभ निरत उर वासा। नहिन मूढ कछु ज्ञान तमा

रे। हृथा सहस दसविप्र विगारे। मूरख आउ विना

सन ओरे। अव लग भयो न ससा सन तोरे। को पापी

दंभी नहीं तोसो। तोहितें वसत परम सत कोसो।

रा·टी·
भ·

15

उज हमार तव। लेहु सिखावन पैहौ अवश नाक
सुख भावन। करि पुरव गृह आश्रम कोरी। बान
प्रस्थ पद लेहु बहोरी। ब्रह्म वर्ज यति धुनि मन्या।
स्या। लेहु विप्र वर परम प्रकासा। जो हमार अस कथन
न करहीं। तो दुख पाय विपुल बहु मरहीं। मुनि निनहि
समय मौन जपलीना। सुमरत ध्यान हृदय पद दी

ना। श्राप बचन नहिं सके उचारी। भयो कोप मुनि मानस भारी। घोर अनर्थ जनार्दन जाना। भूप हतन मन बचन बखाना॥ दोहा॥ नहिं सेवा ढुढन कियो नासत संग उपास। मुनिहि बृथा उर बचन कहि करि लीन्यो कुल नास॥११॥ चौपाई श्रब तब लेब मरा डाव दोई। कियो कुबाद काल

रा॰टी
भ॰
66

बस होई। शिव अवतार पुंज तपछाये। दुरवासा
मुनि संहति गाये। डरपत लोक कोप जहि की
रा। मुनि सन्मुख विदत सिर मोरा। तुम तिन कहं
दुर वचन उचारे। अब नहोहिं कल्यान तुमारे। वे
ग गहहु उन कर पद जाई। जो अपराध छिमहिं
मुनिराई। सिख यनतैं तुम संग सहाई। वही पर

स्पर प्रीति मिताई। बाहित देखि बिनास तुमारा।
उपज्यो मोहि सोक दुख भारा। मरउं खाय बिष
की तजि जाऊं। गिरितें गिर ऊं कि बारि डुबाऊं। सु
नत विप्र सुभ गिरा उचारी। बोले भूप सुवन हं
कारी। देउज करउ कथन कत त्रासन। कोकर श
क्ति हमार बिनासन तुमऊं पत उनकर जढ़ना

रा॰ टी॰
म॰

17

ना। लग्यो हमहूं उपदेस सिखाना। असतिन कथ
न सुनत उरवासा। कोप अनल मनु कीन प्र
कासा॥ दोहा॥ निकसी रिस ज्वाला ज्वलत रोम
रोम मनि थाय। वंक भ्रकुटि तिन तन चित्यो मद
न भीम जिमि भाय ॥१॥ चौपाई॥ प्रबल कोप दव
हगन दिखाई। मानहुं प्रलै अवहिं नियराई॥ आ

य हंस डिंभक ढिग नाहीं। कपट कोपविवस भ
निनाहीं। दीन्ह्यो बीर श्राप अस लागी। दोउ भसम
तव जुगल अभागी। मुनी कुपट यद्यपि अस का
हा। पै नहिं श्राप सकी करि दाहा। डुरवासा तव
अचरज माने। बिलखि बिकल अस वचन बखाने
जाहु मोहि सन सब त्यागी। यावन जोग नतु

रा॰टी॰
म
18

महं अभागी। तुम ते जानि पाप हंकारा। करहिं नाम भगवान तुमारा। भगवन नाम तुनत त तराई। हृदय कोप कीन्यो अधिकाई। कर कोपी न दीन मुनि नाथा। पहिरायी वर वस गहि हा था। अस मुनि वर कर दसा निहारी। हाहा करत भगे सिष जारी। उर वामा अपमान करायो। लगे

वलन हसि हंस विठाये। नवकं जनार्दन वक्र स
मुफायो। मन्यो नमृढ कालनिय रायो। दोहा॥
नव प्रमन्न ग्रन विप्रपें दुरवासा मनि होय। कयो
वहहिं जानत मदा कम्स देव पीय तोहि। योवहिं
दिनमथ तमहिं उज मिलहिं मुकंद कृपाल। इन
प्रथम नकर संग नव तजहु मानि वम काल॥३

रा॰टी॰ चौपाई॥ उजकर ग्रह मुनि वर कर देखी। हंस मित्रता
हृदय वसेखी। भाख्यो ग्ररे उष्ट उस जाती। मुनि कर
वन्यो मृढग्रव नानी। ग्रायो मोष निकट तव जानो
जो ग्रव निजनीको कुल मानो। तजि हमकहं कटुक
हऊ नवागी। नतर कादिहं ग्रव नीह ग्रभागी। सुन
त जनार्दन हृदय उखारी गयो मौन निज सदनासि

19

धारी। इत कोपे नृप सुतउग्र बीरा। जारि दीन स

ब मुनिन कुटीरा। दंड कमंडल भाजन भरी। तोरि

फोरि सब कीनसि हूरी। पकरि मुनि मुनि सिष मा

रे। करि डर दसा विविध विधि मारे। डरवासा न

कि चले पलाई। मानत हृदय त्रास सुत राई। कीन

जढ़न अपमान महाना। विधि मति फेरि काल

रा॰टी॰
भ॰

२०

निय रानी। जाति जटा पट जोगिन केरे। कानन व
हिर दीन सब फेरे। इहि विधि जतन अनर्थ प्रका
सा। मुनिन निवास कीन सब नासा। दोहा। कबहुं
नइत कानन हुतो मानहुं मुनिन निवास। अस क
रि उतरे ताहि थल हरषि जुगल अगारामा।४९।।
चौपाई। तहां करत अम संवादि अहाहा। वले सुविव

त पुनि भवन सिधाए। आगम गये हरि उरवासा।
वधे जवन छिष विकल विहाला। मिले जाय क
रि रुदन विसाला। मुनि प्रबोध करि विविध सि
खाये। धीरज धरहु विप्र समुदाये। ३९ विदलन
दीनहितकारी। बसत द्वारिका कंसखरारी। सो ह
मार रछकवार सहाया। असरन सरन विदत जहि गा

रा॰टो॰
भ॰

वा। हने तास श्रम खल जग कारी। भने विदन तव ना
म खलोरी। श्रम करि सावधान सिष सारे। लिये
संग स्वारि कासि धारे। सरण गत पालिक जउना
था। कस हमारा सिर धरहिं नहाथा। श्रम धीरज म
ति सिखन उचारी। चले जात पथ श्रमत उरवारी।
सहस पंचसिष संग रहाने। पंच सहस रूप सन

२८

न हृत्याने। दोहा। पहुँचे जस नसकैं निकट द्वाराव

ति मुनि कारि। फटे कटे पहिरान पट करि मना।

न सभवारि॥५॥ चौपाई॥ कीन प्रवेस नगर अभि

रामा। कस्स देव दरसन मन कामा। ठाढे द्वार दहि

र प्रभु जाई। द्वार पाल सन कह्यो बुझाई। देऊ ज

णाय वेग प्रभु पासा। आये मुनि दरसन तव आ।

रा॰टी॰
भ॰

२३

सो द्वारप दुरवासैं मुनि जानी। हरि मन नाय क
ह्यो सुभवानी। ठाढे द्वार मुनी दुरवासा। लावऊं
जीपावऊं अन्नसासा। कह्यो कुमल लावऊं दुत जाई।
तब द्वारप मुनि वरपैं आई। मंदिर गयो लेन गहि
हाथा। देखि मुनिन नाय जदुनाथा। महा वीर जदु
वंसिन संगा राजमान मन मोद उमंगा। उग्रसैन

महाराज सहाये। कनकासन राजत छवि छाये। म

णिगण रचित सिंहासन नाहा। सोभित जडुवर कृपा

अगाहा। तिन समीप वलराम विराजै। मनङ्ग कोटि

छवि सुरपति लाजै। दच्छिन वाम विराजत वीरा।

हरि के उद्धव सात्यकि वीरा॥ दोहा॥ कृत वरमा अक्रू

र ज्ञत आन सुभट वलधाम हरि भ्राता गद लो सक

रा॰टी॰
भ॰

23

ल बैठे सभा तिलाम ॥९॥ चौपाई। विलत नरद सा
त्यकी संग। दीन याल उर हरष उमंग। बालक ज
वा जटिर समुदाये। वसु देवादि सकल सुख छाये।
वार वार सुनि मानस मोहन। चित वत कमल नयन
छवि सोहन। श्रसप्रकार प्रभु त्रिभुवन राये। बैठे सुख
निज सभा सजाये। जिमि सुग्रीव संग रघुराई। विले।

विद्रुथ खिल स्वदाई। तिमि सात्यकि संग झल्ल बिला
से। देखि देखि सब लोग झलासे। श्राये सभा सुभ्र उर
वासा उठे बिलोकि सुभट वस त्रासा। दीना घाल ल
खिन सुनि काही। छाडि तुरत निज केलि तहांही।
लिये करन कल गोलप खेला। सहित वीर वलराम
सुहेला। चलि आगल सुनि वरपग लागे। श्रति प्रसन्न

मानस अनुरागे। पुनि आइक रूप कीन प्रणामा। परे
चरन सब जादव नामा। पंच सहस्र सिष मुनि वर संगा
ते आसिष सब देत अभंगा। दोहा। राम कुल वसुदेव
कहं आइक भूप समेत। आसिष दीन प्रसन्न मन मु
निवर कृपा निकेत। १। चौपाई। शिषन सहित मुनिव
र कर देखी। दीन याल दुरदशा वसेखी। केते तन वा

पल बिधनाने। केतन कर जट जूट जराने। टूटे फूटे
दंड कमंडिल। बिथुरे केस बिथन मुनि मंडिल। कोपी
नादि बसन तन फाटे। हाय हाय अस मुनि सब राटे।
फरकत अधर अरुन दृग नाहीं। कालहुं काल मन
हुं मुनि नाहीं। जादव देखि सकल अस भाखि कवन
हेत मुनि नायक माखि। उरपत ठाढ सकल कर जो

रा॰टी
म॰

25

री। चिंताकल चितवत मुनि ओरी। कनक संघासन बे
ग मंगाये। तापर मुनि महाराज बिठाये। पद पखारि
पूजन मुनि कीना। चरन बारि प्रभ सिर धरि लीना।
यथा उचित सब मुनिन कुलासन। दीना द्याल दीन
शुभ आसन पुनि कर जोरि कहस प्रभ काहा। को अप।
राधि नाथ तव रहा आये कवन हेत मुनि नाथा। का।

मोहितें कछु भई अवज्ञा। दोहा। हम अनन्य सेवक
सकल मन वच करम तुम्हारा। कस आये मति
नाथ फिरि घोरहिं कालम कार।। ८।। चौपाई। तब
अगमन मोहिम्ह जस बड़ाई। पै कारण कछु लखो
नजाई। अस कहिअर्घ पाद्य मनमाना। कीन्यो अतिक
व कृपानिधाना। प्रभु के मत कारन मनि काही। उप

रा॰टी॰
भ॰

ज्यौ कोप उरगन मन माहीं। अरुन नयन कंपत थर॰

थरहीं। चितवत भस्म मनहुं मुनि करहीं। फेरत द

ग चहुं कित रिस छाये। लोक विलोकि सकल अकु

लाये। निकसत वचन कोप बस नाहीं। अनमिष न

यन तकत प्रभ काहीं। जस तस कै पुनि कोप संभारी।

बिलखि वदन मुनि गिरा उचारी। तव भरोस हम दी।

२९

न उवारे। विचरत पवति ज्ञास गत सारे। जो हम कहें
अव तुमहिं विसारयो। तौ जग आन कवन आधारयो
हुकुत जनहु अज्ञान समाना। हम कारन कछु नाहि
न जाना। विश्व वृतांत विदत प्रभु काहीं। इह कार
न जानत कस नाहीं। हगन देखि उदक्षण हमारी॥
पुछहु आगम हेत मरारी। करहु हासि मोहि उचित

रा॰टी॰
भ॰

27

त विचारी। भेतव विभ्रविवस हंकारी। विप्र पाल निज
विरद सुहावा। उपजत मद कहं दीन विसरावा॥ दोहा॥
सूझत मोहि अजान से घट घट जानन हार। कहि न
सकऊं कछु लाज वस निज उर दशा विचार॥११॥ चौ
पाई॥ यद्यपि तुम जानत सब भेदैं। तद्यपि शठके पर श्र
म कैहैं। डिंभक हंस भूप सुत पापी। साल्व नगर ज

ग बसहिं प्रनाथी। गुहकर बसन हमार सहाना। तिन

जड़ जाति कीन अपमाना। मुनि आश्रम सब जारिउ

जारी। भये हनन शिषविपुल हमारे। तोह्रो दंड क

मंडल फारी। पट कोपीन दीन सब फारी। इह अब

रज तव उछन अपारी। कैहैं अस उर दशा हमारी। अ

व तम राइ जगल अग थामा। जो नहिं किये हनन सं

रा॰दो॰

28

ग्रामा। तौ हमार छर संजुत बंसा। देत शाप सब करहुं
बिध्वंसा। अरु जन भीषम तव भट जोई। इन कहुं
जीति सकैं नहिं कोई। तुम बिनु कवन तिनहुं जग
हंता। जिनहुं कीन तप शंभ अनंता। दुष्ट प्रबल ज
ग सुभट अघानी। मारहु बेग इनहुं यदि जानी। तौ
हमार वर बंस बचै ही। होहिं अवश्य सकल नत छै

ह्री। दोहा। दुरबासा कर कथन सुनि कह्यो कुसल म
सकाय। लघु कारज वश नाथ अस कस मानसरीस
खाय। १। चौपाई। कवन बात डिंभक अस हंसे। आ
पु मरहिं दुज होहिं प्रसंसे। यद्यपि हर वरिं विकि।
ना आई। करहिं समर तिन कोटि सहाई। वरुण कुबे
र मेर जम काला। इन कर वनहिं सकल रखवाला

रा॰ टी॰ म॰

29

यदपि सखा सब होहिं सहैया। तदपि हृ तहूं तव व
रन उहैया। तजहु मनी सशोक सब भाती। अब न
बबहिं तव उछ अराती। सपत स्वर्ग अरु सपत प
ताला। सपत सिंधु महि मंडल शाला। इव महिं कु
लस भवन कि नाजाई। कौन सकहिं मुनि नाथ बखा
ई। सुनि प्रभ बचन उग्र इहि भाती। भयो मुनीस

कोप कठ्ठ भंजी। लछो वदन प्रसन्न ती उचारन। दीना

याल दीन दुख हारन। जैजै चक्र पानि भगवंता। जै

मुकंद जैजै स्री कंता। जैति क्रसन जै भक्त उवारन। जै

महि हरण भार जग कारन। जैति विप्र सुर संत सहै

या। जैजै मात भक्त भव दैया। जै अनन्त जै अजर मरा

री। जैति जैति दीनन दुख हारी। जैजै जैति वरावर

रा॰ टो॰
भ॰

30

ज्ञाता। जैजै दलन दुष्ट संघाता। अस प्रकार अस्तुति प्र
भु गाई। मुनिवर लीन शांति सुखपाई। तव प्रभु कहो
छिमहु मति नायक। छमा धरम सन्या सन लायक।
दोहा। अस कहि कमल कृपाय तन तन धन व्यंजन वनवा
या। दुरवासैं मुनि मतिन जुत प्रमुदित दीन जिमाय।
कै संतन्ह प्रसन्न मन पुनि पुनि आसिष देत मुनिनाय

३

क सब मुनिन ज्ञन गावने कविरनकेत।५१।। चौपाई।।

उतै हंस डिंभक जुगभाई। पित पैं जाय चरन सिरनाई। बारंबार हरष ज्ञत होई। बोले वदन ववनअस दोई। करि अब राजसूय मखकाहीं। लीजै जनक सुजस जगमाहीं। हम जीतव महि मंडल सारा। होहिं जनक मख सफल तुमारा। समर सुरासुर सुभट सबाहीं।

रा॰टी॰
भ॰

हम जीतब संशय कछु नाहीं। विदत हमार हेत रघुबा
री। निज गण ज्ञगल दीन त्रिपुरारी। सहि महीप क
र जीतन जेहु। हम कहं सहज सुगम पित राहु। ब
ल दल सुनि सुनन बखाना। परम हरष निज मान
स माना। कह्यो तमहुं लायक सुत दोई। सब संभा
र सुजन अब होई। असतिन कथन श्रवण निजधारी

३१

बिप्र जनार्दन भक्त मुरारी। कहत बचन भूपति मन

कीनी। का हियरो तव भयो मलीना। पापी उभै ग्रथ

म सुन तोरे। भाषत बचन गरल जनु बोरे। मरिहैं

आशु तोहि पुनि मारहीं। स्रवा मंद सुव बचन उ

चारहीं। जनि न्रप करहु भजन इन केरा। कैहैं नत

र नरक तवडेरा। अगम हीन राजसु मखराजु। आ

रा.टी.
भ.

32

खेहुं सत्य भूप गुण गेहू। सुनि अस विप्र कथन सत रा
ई। बोले वचन रोष सरसाई। दोहा। मत्वेनिवर्ण कर
कवन उज देहु नवेग जणाय। अवहिं सीस कटि ता
स हम धरहूं अथ पित ल्याय।।१।। चौपाई। विप्र जना।
दन नवहुं उचारे। तृष्णा काम सर्व हृदय नमारे। औष
स देव जीयत जग माही। जीतन समर सुरासुर काही

जीवन जरासिंध भुवधीरा। नहि सन कवन समर थिर

वीरा। जादव सकल प्रबल अति भारे। जिनकुं इमन श्र

रि समर वडारे तिन मध कंस खलन दै कारी। तासन

कवन करन रणरारी। सज्जन हार खलंड निकाया।

अज अनन्त अनभव पति माया। जहि बलराम नाम गु

रु भ्राता। हलधर सुभट सुरवितताना। सुर सब सुरस य

रा॰ टो॰
म॰

रनि सिरधारा। भनत वेद फनपति श्रुतधारा। सुम
रत जासु नाम अग जाला। सकल लोक आधार कृ
पाला। महाबीर सात्यकि अभिरामा। जीतव तासु
कवन संग्रामा। प्रवल सुभट इनजीतन काहीं। तव
अभिमान हृया मन माहीं। दोहा। मुनिन नाथ अपमा
नतें तुमऊं भाग गत होय। ब्रह्म ग्यान सम पातकी

33

भयेविदत जगदीपा। उरवाससंजत शिपन उरिवत

निरदरपाया। करूनि कथन नव करनहितगये शर

ण जडरायार३। चौपाई। सनत हंस बोल्यो रिसमा।

नी। उज कम करत भीति वस वानी। भीषम निरवल

जठिर अनीती यनुष यरत कुछ लावहिं नवीती। म

मरठाढ हम सतमाव मोई। तीनकाल उज कवहुं न

रा॰टी॰
भ॰

होई। भने तुमहूं जादव बर जेते। निबलदीन कायर
सब तेते। बीर धीर तिन कवन उबारा। हरे समर मारा
य बहुबारा सात्यकि से ऊरुभट किमि जोरा। भीकवि
पुत्र जानत सब लोगा। इहबालक बरहीं केबाढे। परे
काहू संगर नहिं गाढे। राम बीर तुम जवन बखाना।
सो सुनि श्रव रज होत महाना। वा करीण मन रहत नित

सोई। चतुरब चरन नहि ज्ञान न कोई। जाहि कृस्न का
हं ईश्वर लेखो। सो कवतें भ्रम नमहिं वसेखो। नंद
गोप कर सवन कहावा। हमरे कवहूं नमन मख
आवा। पांडुक मित्र मोर पति चरना। तां की करन गो
प भ्रत्र कवना। दोहा। चरन चरम चरनी विदत जरा
सिंध घन वोय। मोर सहाय कहोहिं सो करहिं नवैर

रा॰टी॰
भ॰

35

विरोध।२४।चौपाई। नवकंज जनार्दन प्रकट वखाना।
म्हफदवप वश परहिं न जाना। भीष्म देव पाडव कुरु
वंसी। जीयन सकल जादव रिपु ध्वंसी। कहि विधि रा
जसूय नव होना। ऊखर धरनि बीज जिमि बोना। हंस
ग्रनय कछु गिरा न मेरी। नवमति दीन प्रकट विधि फे
री। बोल्यो हंस ऊपत ग्रधिकाई। जाय न विष मोर जद्ध

३५

ताई। पुनि पुनि मनहु प्रबल रिपु काहीं। जानहु निबल हमहिं मन माहीं। इहु अपराध छिमा हम कीना। जानि दीन जाचिक मति हीना। पै अब सासन मानि हमारी। बिप्र जाहु द्वारिका सिधारी। नंद गोप सुत मन गत आसा। मोर कथन अस करहु प्रकासा। रच्यो राजसू जनक हमारे। हमहु सकल महि जीतन हारे। तुमरे देस लव

रा॰टी॰
भ॰

36

ए अधिकाई। चलहु लेन वहु हषम भराई। आन दंड न
मतें नहिं लेहू। देहुं न कछु यन हेत कलेसू। दोहा। जो
अनुमासन हंस ल्य तव नमीस धरि राहु। सो कहियो
कुल सकल तव हरिहिं विगत संदेहु। ३५। चौपाई।।
हंस कथन सुनि दुज वर ज्ञाना। भये सहाय कुसल मति
ज्ञाना। सोहि मनीस वर दीन सिजे हुए। अव फुर भये। क

वन संदेहू। उपज्यो हृदय विषु हाव भारी। चल्यो प्रवाह

जात ह्गवारी। निकसत ववन हरष वस नाहीं। कुल

देव मानिमिले तहांही। वोल्यो वङुरि हंस प्रसगाया

मेरी सपथ तोहि दुज नाथा। मैजस कह्यो तहां तस

कहूना। भीतिविवसकछु मोनतहहूना। सुनत जनार्द

न ववन वखाना। सुनहु नरेस श्रवण शुन खाना। तक

रा॰टी॰
भ॰

नदेस द्वारिका सिधारी। वरनन करऊं कथन त
व मारी। अब मैं करउं सदन निजजाना। होहिं
सदिन सभ पूछि पयाना। अस कहि विप्र हर
ष उर छाये। चल्यो भवन मन संपति पाये। क
रत विचार जात जीय तेहू। निश्चय भये का।
ल वश गेहू। पै मोहि मन त्प हंस भलाई

३७

६०

कीनी वदन कहि नकछु जाई। दोहा। वहो जनम

तें लालसा करत दरस रघुवर श्रैन। भई सफल

अब भाग वस देखहुं भरि भरि नैन। २६। चौपाई

अस गुनि जाय भवन निसि सोयो। नतक नवै

न नींद वस होयो। चल्यो प्रात उठि वाजि अरूढ़ा

प्रभु दरसन अभि लाखत गूढ़ा। जेठ मास जिमि

रा·टी·
म·
38

पथक पयासा। थावत सर पीवत जल आसा। तिमि
उठ चल्यो द्वारिका थाई। लीनसि मनहु कलप द्रु
म पाई। तरगहिं वेगयदपि बहुदीना। तदपि मंद
गति मानस चीना। क्षुधा तिखा दिन श्रम कछु व्या
पा। पथ विश्राम पायो नहि सका। कबपहुं चहुं द्वा
रावति थामै। देखहुं कमल नैन घन स्यामै। मोहि

मन हंस कीन उपकारा। दरसायो वसुदेव कुमारा।
आज कवन संसार महाना। धन्य धन्य मोहि सह
श आना। जहि इन नैनन दोहि सुहावा। नंदला
ल दरसन मनभावा। भयो विदत दाहन मोहि
धाता। देखव चरन केज जग त्राता। दीन दयाल दर
सनते काहू। नहिन अधिक संसृति उतसाहू। दो

रा॰दो॰ हायरङ्गं उपायन कवनीपै प्रभु सनमुख अवजाय।
भ॰ करवनिछा वर प्राण मन तन चरन नसिर नाय।
39

कवित। भयोएक मेरोई जनम जीवन सफल मे
रोई सुभाग जागी जाने जग जानहैं। मेरोई प्रभा
व प्रत्य सुरसो उदित सूर हषण उलूकहूर दार
द दरानहैं। मोकोयत्य भयेवेको भयो नप्रसंग

भव अवलों विताये अपदा मैं दिन रात हैं। आज वि
थिदा हन विचार कै निहा हैं नाय राधावर स्याम
ल सलोने जौने गात हैं। मंडित मणिन मनी मा
नस हरन क्रीट कुंडिल सनम क्रुत कानन विरा
जै नास। हीय पै विसाल पै लसित वनमाल नाथैं
कौ सनम नाल उ रमाल मुख मंद हास। नीरज

ग-टी-
भ-

नवल नैन कोटि छवि मैन दैन सांवरे वरैया थैन
कानन करन वास। अहो भाग कल्याण निधान भ
गवान आज अैसो ध्यान गोचर विलो कव दगन
दास। दोहा। समरन रूप अनूप कल कुसम देव भ
गवान। मोहि आगल जन चतुर भज वलन होत
अस भान। पैइक वडो कलेस मोहि उपज पद्यो जी

४.

य माहिं। हंस ऊंमांगन लवन कर कस कहिहौं प्रभ
पाहिं। जो नकहहुं अब उत्र तब करहुं कवन मख जाय
उत कठोर अति हंसइत अति कोमल जउराय। पेम
म हृदय भरोस इह दीन बंधु भगवान। जन हीय
की जानत सकल यदपि अजोग बखान। परम हत
अक मीनको प्रीत रीत संसार। छकत भलहिं कृपाय

रा॰ दो॰ नन श्री वसुदेव कुमार। दीन नाथ कहूं कपट गन मिलहिं जो मनभाव जाय। तांकर दोष न गनहिं कछु अति उदार जदुराय। तांते जाऊं अस कैसे यद्यपि हंस पठेऊ। मेरो दोष न गनहिं कछु जदुपति दीन सनेऊ। गुनत मनहिं मन विप्र अस गयो सरित पति तीर। उतरत पार प्रवेस पुर कियो सुमरि जदुवीर।

५८

सवैया। बहुरि विचार करै इन मानस जहि हित जो
गि जनी व्रतधारि। संभु समाध अगाध धरैं ऊंक
रैं हठ कोटि तपी ब्रह्मचारी। आवत ध्यान नते भ
गवान धके सब अंतहुं नेति उचारी। आज सुगंम
मैं नैनन जाय सदेविहुं रूप अनन्त मुरारी। दोहा
भूरि भाग मोहि सरस जग आन नहू जो कोय। वि

रा.टी.

५८

न अजाम जाके सुगम कुल मिलावा होय। अस प्र
कार दुज गुनत मन धन प्रमोद सुख पाय। आयस
धन हरि द्वार थिर भयो नम्र सिर नाय।२७। चौपाई।
द्वारपाल तहां देव समाना। पहिरे मुकत माल म
णिनाना। तिन सों विप्र रूप हरषाई। नम्र वदन अ
सगिरा अलाई। मैं दुज जानि जनार्दन नामा। सा

ल्व नगर द्वारप मम थामा। हंस भय मन मोर मिता

ई। आवा करन दरस जउबाई। अव तव कृपासिंधु पें

जाई। मोर खवर सब देहु जनाई। द्वारप सुनत विश

वर भामा। हरषत गयो दौरि प्रभ पामा। जोरि जुग

ल कर विनय प्रकासी। साल्व नगर वर विश्वनिवा।

सी। कहत जनार्दन नाम सुहावा। प्रभ तुमार दरस

रा·टी·

43

न हित आवा। जो नरेस कहगानिथ होई। तो आवहिं
प्रभु मन भाव सोई। कृपासिंधु सुनि वचन उचारा।
लावहु हन डुजहिं दरवारा। प्रभु नरेस वस द्वारप
माहीं। लावा डुजहिं सभासद माहीं। हरिछवि देखि
विप्र मन हरनी। आकुल पत्यो दंडवत धरनी। दोहा
हृथि संभार पुनि उठो डुज लखि सनाथ निज का

हिं। चिंतवत श्रनमिव हुलस नत करि चिंतन मनमा
हिं। फलना छंद। जाहि है ग्रीव यर हूप संवासु रैं
करत वयवेद श्रुत्य निकाह्यो। मच्छ श्रीकच्छ व
पु यरत कीन्यो चरित सुजस विमनवत सुरनर उ
वाह्यो। होत मृगराज नर हृयो प्रहलाद उवदी
न गजराज हृज दीन टाह्यो। कोल कत हूप भवक

रा॰टी॰ भ॰

पभय इवन हरि चरित निज परन परनी उवाह्यो

दोहा। सोई मग वर रघुवर सोई जड़ वर जग

गाय। कीने अग तिन चरित प्रभ यदि नाना नि

ज काया। अस मानस निज गुनन इज भगवन स

भा सहाई। छवि अनूप लोकन लग्यो प्रेम हरष

समसाय। २८। चौपाई। नावरही अपसर गणना

४५

ना सुनि गंधर्व करहिं कलगाना। सुन वंदि मागा

थ सुभ वानी हरि जस करहिं कथन सुसमानी।

उग्रसैन महाराज विराजे। विभ विलोकि जाहि सुर

पति लाजे कनक संघासन सुखद सुहाये राम कु

स मंजुल छवि छाये। सात्यकि अक उद्धव अभिरामा

सोभित जुगल दिसन घन स्यामा। जादव आन सुभ

रा·टी·
भ·

45

भ सब विदाये। प्रबल उदार सिंह जन भाये। पट अमोल
कल आयुध धारे। प्रभु कहं सकल प्रान तें प्यारे। फूल
न चमर विजन छवि देहीं। सकल प्रमोद परस्पर ले
हीं। राम कमल छवि कनक संचासन। मनहुं मेरु रवि
चंद्र प्रकासन। पीत स्याम पट अंग विराजे। जिनहिं वि
लोकि मदन छवि लाजे। लोल कपोल कुंडलन सोभा

गीरवान मुनि मान मलोभा। तकत मौहिं प्रभ वीर प्रवं

डा। मामन होतकवन कहि डंडा। दोहा। तव नारद क

हूं निकट लखि हसि हसि कृपा अगार। उरवासा कर

विथा सव भाखिस वदन उचार। २१। चौपाई। सुनत

जनार्दन प्रभ अमवानी। मानस मकल लोक सुखमा

नी। पह्यो लकट इव दौरि सिथाई। चरन कंजमंजुल

रा॰ टी॰
भ॰

46

जउ गई। प्रेमा जल तन न चेत बिसारी। चल्यो प्रवाह जा
न दृग वारी कछुक बेर पाछिल जब चेत्यो। अम्यो दे
खि छबि कृपा न केत्यो पुनि धरि धरनि सीस अनुरागा
जै जै जैति उचारन लागा। हे भगवान मान प्रद स्वामी
अखिल लोक विश्राम निमामी। कर आकर सामर्थ्य कृ
पाला। तुज सहर धरनि थेन प्रतिपाला। मदादीन रत

४८

क भगवंता। अनभव अजर अनादि अनन्ता। मैं तुअं व
सऊं मालव कलगाऊं हंस भूप कर मित्र कहाऊं ज
न क जनार्दन नाम धरावा। तुमरे दरस हेतु इत आ
वा अधम अपावन दुरमति भाहा। अना चारन वि
षय विकाह्न पैं तव पतित पुनीत कृपाला। दे दरस
न मोहि कियो निहाला। अब मैं वरन मरन अभली

न्यो।जनम सफल निज संद्दति चीन्यो मोहिजानिये
अव आपन वाला। रासिविये कृपा दृष्टि नंदलाला॥
दोहा। नव उठि उजहिं कृपायतन लीनसिहृदयजा।
डाय।वारवार प्रक्षन ऊसल हरष वार हगकाय।३॰
चौपाई।पुनि संग्रामन विदाई लीन कनकसंगार सं
गाई।उजकर दीन याल अनुरागे निजकर वरन प

खारन लागे। निचरणोदिक विप्र महाना। कृपासिंधु मुनि
जसीस चढ़ावा। करि पूजन विधि संजुत सारी। दीनदया
ल स्तुति गिरा उचारी अहो भाग्य तव उजवर आई। जो
मोहि दीन दरस सुखदाई जनहुं आज मैं सरबस पा।
यो। धन्य धन्य संसार कहायो तव उज नाथ आए श्री
य मेरो। मोहि जिय मरम विदित सब तेरो। अब न होहिं

रा॰टो॰
भ॰

नमरे संभारा। सत्यवचन तुज स्हष्ट हमारा। सुनत जना
र्दन प्रभु सखवानी सकललोक मानस सुखमानी।
जोरि जुगल कर विनय अलायो मैं जडु नाथ हनवत
आयो। प्रभु सिंहासन लीन विठाई इह नउचित मोरे ज
डुराई तुज आसन सोभित मरिमाहीं। हृदय राखि प्रभु
वरनन काहीं। दोहा। अब अनुचित कछु विनय मम

४८

कहि नमकहुं जउराय। जहि हित हंसन रेस इन पठो

सि हून वनाय।३।। चौपाई। कामाखिउं कहणा निय

तोही। होत मजव श्रति भावन मोही विहसि वोले

प्रभु हनहिं वानी। नहिं अयोगय जानत बुधज्ञानी क

हो हंस डिंभक जगमाई। अैहिं उसल कछु खवर नया

ई अभय मजवगत उजवर होई। वरनऊ हंस कथा।

रा॰टी
भ॰

49

न अब सोई। इहि मे तुम अदोष उनभाई जनिराख

हू कछु मरम दुराई। मोरतोर कछु अन्तर नाही त

व अनन्य सेवक मोहि काही। हनसत्य जे भनहि न

वागी सो अति होहि पाप कर भागी। ताते हंस भन

न सब आज्ञ मोहि सन करहु कथन उजराज्ञ। सक

वि उजनव दुजवर दीन्यो। अस जळताई हंसअभा।

कीन्हि जस अप मान कीन दुरवासा तमहिं विदन म

वविस्व प्रकासा। वज्ररि हंस जव मदन सिधावा नव

मोहि मन अस वचन अलावा जाइ विप्र द्वारा वति।

माहीं कहहु कथन मम जडपति काहीं। दोहा। पि

त हमार माव राजसु करत हरष सरसाय। हम जीत

व निज भजन वल सकल प्रवल महिराय। तुमरे

रा·टी·
भ·

देस बसिषकर उपजत लवण अपार। सो तम हमक
हं दंड इह पटक्क हुषमबक्क भार॥३॥ चौपाई। जो तम
कबक्कं लवण इह लीनो माव मंडिल आवन नहिं कीनो।
तो निस्चय इह बात हमारी होहिं हनन जादव
कुलसारी। अस इरवाद हंस जदताई औरङ्गे कथन
कियो नहिं जाई। सुनि हरि हंस कथन मुसक्याने।

५·

तेज्जग भ्रातका लवस जाने। उजसन कह्यो ववन
जउराई हंस वखान सत्य सव भाई। हमतो लवण
दंडकर जोगू भलहिं विदत जानत सव लोगू। उज
तुम जाय हंस सन कहियौ अव हम देत दंड तुम
लहियौ। सुनत वचन वलराम खरारी विहसे वदन
दै दै करतारी। अस अविलोकि स्याम वलराई हसी

रा·टो·

सभा जादव समुदाई। विप्र जनार्दन लजत महाना
बार बार मानस पछताना। कहत हत बनि मै कत
आयो। प्रभु कहं कनकाद्र वचन सुनायो। पावक ज
वहं किवारि बुझाऊं। प्रभुहिं वदन कहि भांति दिखा
ऊं॥ इतिरागिनी टोडी भक्तिमाल परिछेदः समा
प्ताः ॥ ॥

(51)

रागिनी बंगाली लोरी नाल। । लोरी लालको
देऊं माई कबकी ठेरी ठेरी परचाऊं। कुन किन
कुन कार गाऊ बजाऊ अगर चंदनका फूला फु
लाऊं। लालकौ देहो सखी सभ लोरीओ। अग
र चंदनका फूला फुलाऊ रेशम दीओ वटो डोरी
ओ॥ फूलना॥ नवल हरेहोर ना माई फूलासी

गा॰ ७

गोकुलचंद । केवनको दोयम गाजपे नगानजड
न वडरंगा । आनंद भेप नंदजीके ड्यारे मेरा गं
द लियाई मालन । कुल कवरने जनम ली
योहै नंदमहरघर पालना ॥ रागिनी बेगाली
जगतचंद नाल । —। तेरा अटल रहीनो राजपि
यारे महमद शाह पीया जम जम नित नित ॥

तखेन बैठके इन मिल काज । गाइन शगीओ न
न्द बरीलवा सभ सखी प्रन मिल करन जबब स
दा रंग मिल गाऊ बजाऊ नोन नेहूर मदोल रो
साज ।। रागिनी बेंगाली नराना ताल । ।दानी
उदे ताना दिरना दीम दिम तनानानाना नानाना ना
नादीमदानी नादिर दिर तूम दिर दिर तूम दिर

ग॰बे

दिर दीम तदर दानी। यालाली याली याला लोम याला लालाले लोम यालाले लोम यालाली याले दिर नोम नोम ननाना नोम नाना नाना नानाना दिर दिम तनाना दिम नान नाना दानी। रागि नी बेगाली [illegible] सादरानाल। । बडो बडबीरब पीरगाड लेकको संगलकमें बडो धनुषधारी। पद्म

२

दल ग्रह माझे जोधा वली लीए एकते एक बल अधिक भारी। मेम घरनी घमा सुर वादर छीपि ऊे हाथ पैखोन लीए पखोरी। रोव वज्र श्रीर जब मार लंका लई सकल संसार जैजै पुकारी जन। न बेली अकेली वली स्याम मथ मानी ले गर जाऐ। गागर भर भर धर आवै मोरा कहु

रा॰ बे

ना विमाज पीड़ा मरूप साबरे होशे नेमनमेंभरो

रागिनी बेंगाली टोना मात। । टोना कामन

कर समझावरे कारू देमना जावरे। जंत्र मंत्र

डार माबीरी हकेनीको पीड़ा गर लावरे ॥

इति रागिनी बेंगाली लोरी फूलना जगलछंद

नराना सादरा जन टोना समाप्तम् ॥ शुभे

समदाई क्रमत सदैव नाथ हम सारे । पै
कृपाल अब दरस निहारे । भये भीत गत
गत शोक निवरना । हृदय आनन्द जात न
हिं वरना । तव मनीस एक आन प्रबीना । १
बोल्यो वचन प्रेम रस भीना । नाथ धन्य इह
भावति रसाला । जहि सा निद्र ताई कर ।

रा
भ·

घाला मुनि मातंग जोगनि निधि ज्ञाना। ताग
हमइँ कौन ग्रुप माना। तेहि शबरी कर अज
र खरारी। हम उपासना करहिं तिहारी। बो
लो अवर एक मुनि ताहां। सुनहु कृपाल।
मनुज मर नाहीं। मोरे उर दाहन भ्रम छाया।
करहु न हृत नाथ करि दाया॥ ।

सोरठा एक समान जल जोय। ताहि ज-
लासय विमलकर। कमी इधर उत होय।
कहि कारन हषत भयो। रागनी बंगा
ली चौपई ताल । सम्यक नाथ्य कवन
विधि होई। विमल मलल इह सोवर जो
ई। सुनत नाम सब गिरा सहाई। बोले

रा
भ०

४

लषन वदन मम कहाई अहो तुम्हार धन्य मु॰
नि करनी। महिमा मंद न जाय किमि बरनी।
सदा निरत व्रत तप तुम जोई। विषय स
खादि सकल बसु खोई। कानन बसहु विग
त सब कामा। संत तलीन भजन प्रभु रामा।
तुव प्रभाव तप मुनिसिष जाता ॥

धातो धरनि लोक विख्याता। त्रेम गण मा
हिं एक गुण धामा। महनि मा तेग जाम।
श्रम नामा। श्रान गरह कारि तहि निधि ता
ना इह हशील जोई शबरि सुजाना। भई
भक्ति मारग रत सोई। अभय अमल चित उ
रमति छोई। तहि पर दरसन आज तुम्हारा।

रा
मं॰

भयो नाथ भ्रम भीत निवारा। धन्य भाग मे
जल पति राजू। जास अजर तव मनिन स।
माजू। संजुत राम लोक वैरागा। राजहिं हृद
य हरष अति छाया। अरु हूपत तहि सोव
र नीरा। कहा जवन तव मनि वर धीरा। सो
मनीस चर नन पर जोरी ॥ ।

९

परी छाय शावरी तन कोरी। उपज्यो रिस मा
नस मुनि ज्ञाना। निदरि कीन तहि अति ।
अपमाना। बहुरि सनान देत तहं गयऊ।
सलिल मलीन रुधिर तब भयऊ। कारन
एकसुनउ मुनि पहा। अह एक बहुरि आ
न संदेहा राम भक्त मुनि परम प्रवीना।

रा
भ०

तुम विद्वेष ताहि सन कीना। ऐसे भयो ता
स अप माना ताहि पर मुनि तुमार अभि माना।
इन अकाज कर विसद सवारी। कमी पुरुष भा
शोणित खारी॥ सोरठा अरु पुन दिन कर बात
मुनि मातंग कर सिषन सन तब मुनीस
विख्यात॥ रहे करत विद्वेष मय॥

रागिनी बंगाली चौपई ताल ॥ उचित

हमहिं अब सुनहु सुजाना। करहु जाय

तिनकर मन माना। ग्रह निज पंकति माहिं

मिलावहु। द्वेष भाव जिय सकल मिटावहु।

ईहां शाबरी नहि ओबर नीरा। करहिं सपर

स जाय मति धीरा। पूरब हल्प विमल जल

रा
म॰

सोई करहिं राम संसय नहिं कोई । सुनत
लषन सुधागिरा सुहाई । चले भरत सुनिवर
समदाई । सुनि मातंग शिषन कर नाना । क
हि सठ बचन कीन । सन माना कहा तुम
ऊ तुमरे अपराधू । तुम सुशील कोमल वि
त साधू । उत शावरी हिय भूरि उलासा ।

पाय राम लषमन गुनग्रामा । श्रीरघुवीर हेत
जल ल्या वन चली करन जन्न श्रोवर पावन ।
जाय स्पर्श नाह जव कीना । सम्पक विम ।
ल सौलल नव चीना । सोरठा । नव शावरी
हृगदेवि मेञ्जल भक्ति प्रभाव निज नीर पात्र
सम भेवि भरि गवनी हरषत भवन ॥ ।

रा
भ॰
12

चौपई रागिनी बंगाली ताल ॥ सोजल ले न राम पैं आई । प्रेम मगन तन दसा भुलाई देखि घाल तहि प्रेम अलोका । बोले बचन हरन भव शोका । हे सुशील तव भक्ति निहारी मै प्रसन्न निज मानस भारी ॥ पीरि हरि सुकृत मांग वर मोही । नहि अदेव

मोरे कछु तोही। ऐसे सुनत राम प्रभु बानी।
सुनत सुखद करुणा रस सानी। नमत शव
रि पानि जुग जोरी। बोली बदन प्रीति नहिं।
थोरी। इहितें परे नाथ वर आना दीनयाल
मोहि परहिं नजाना। नीच जाति सब विधि
अति हीना। सपव मलीन मंद मति हीना।

रा
मं०

पूरन ब्रह्म रूप प्रभु जोई । सो प्रतछ मम मन

मुद होई उरलम दास दीन भगवाना । धन्य मो

र सम आज न आना । तदपि करउं जाचना

याल । इह बर देहु दीन प्रति पाल । नाथ त

मार भक्ति वर जोई । संतन हृदय मो

र हृढ होई ॥ अव जीवन १ ।

13

इछा जोई जोई करह्यौं अब नाथ पहि सेसति म
रहौं तांते अस अवसर मोहि स्वामी। मिलहिं न
कबहुं भक्त अनगामी। अस विचारि मोरे।
मन माहीं। इछा नाथ जियन जग नाहीं।
करुणा करहु पाल अब सोई। छूटहिं काय
पातिक मम जोई। सुनि अस वचन तास भ

रा
भ॰

गवाना । एव मस्त निज वदन बखाना । अस बर लेत शावरि मद मानी । परम प्रेम मय गद गद बानी । सोरठा । करि प्रसन्न अति मख गान तजि काया सुर लोक कहं सन म ष रवि कुल भान ध्यान करत भई हरत निज । रागनी बंगाली ताल ॥ चौपई

देषत सवन शावरी सव खोना । हूदै ग्रहहफ

वर रुचिर विमाना । दिव्य लोक कहं जवहिं

सिधायो । विसमय परम मुनिन मन छा ।

यो । अदभत चरित देषि सव तासा । निज

निज करहिं वकन संभासा । नहिं अपरंत ।

गम हर नाहां । करि संचित इंधन प्रभु ताहां ।

रा
भ॰

चिता बनाय दग्ध तेहि काया । कीनसि
भक्ति विवस रघुराया । सादर वड़ीर ति
लांजलि दीना । मृतक करम प्रभु ते सब
कीना । ऐसे दसा देखि भगवाना । प्रति
मृ चरज मुनि जन मन माना । डरा चार इह
कहां मलीना । सदानिवास विष्णु जेहि कीना ।

15

दीन नीषिद पोच रत हषन । कहो राम जै लो
क विभूषन। दुरलभ मुनिन सरन कहं जोई ।
इन्हि करे भये सुलभ प्रभु सोई । इह मुनीस
आचरज वसेषी । जायन राम परम गति ले ।
खी । सदा भक्त वस राम गुसाईं । कछु असाध
जग भक्तन नाहीं । अस कहि वदन विप्र सम

रा
भं॰
16

दाई। लषन सहित सब नाति बधुराई। ब॰
ह्न विधि गाय गाय मनि धाये। निज निज
भवन प्रेम उर छाये। ईहां समीर हर विप॰
न पयाना। कीन ग्रन्जन। जत रवि झल॰
भाना। श्रा श्रम मनिन मरत सर पावन।
नहां नहां रह्यो सुभ्र मन भावन सादि।

(६

र जाय राम सब देखहिं। ते निज जनम सफ
ल जग लेखहिं। ऐसे भक्ति महातम सोहा।
भीलन शावरि मानिन मन मोहा। कथन
कीन निज मति प्रन सारा। राम भक्ति प्रद
विविध प्रकारा। इह पुनीत वर कथा सुहा
ई। जेनर करहिं श्रवन मन लाई। पावहिं

रा
भं॰

परम सभ्र गति होई। लोक प्रलोक सज
स सख होई। नामहि कुमति रोग भ्रम भा
ह। उपजहिं राम चरन रति चाहु। दोहरा
सरव सखेट इह चरित वर भीलन सावरि
प्रवीन। मैनिज अलप यथा मती ललित
कथन कछु कीन। रागिनी बंगाली। ताल

सोरठा नेमत नाभा दास। नाय सीस पंक

ज चरण। गुरु वर ज्ञान प्रकास। कथा ग्रंजा

मल ललित तर। कह्यो सफुट जहि मा।

हिं। श्री भगवान जनार्दन। नाम महातम।

काहिं। महो मनि नमादिर वदन। चौपई

रागिनी बंगाली ताल ॥ सो नाभा

रा
भ.

जन कथा सुहाई। संजुत प्रीति भक्ति मख

गाई। अति आश्चर्ज चरित बर चारु। संकुल

शोक मोच भ्रम हारु। अम्बर वेदि देस जो

ई गावा। तहां एक जन विप्र सुहावा। पु

रण कोश इव्य मय जासा। संज्ञा का न कु

वज जग तासा मखव धरम गत प्रथम।

18

ग्रचारी । ग्रम प्रसिद्ध उज जहू तहं सारी ।
वेस्या निरत मांस मद पाना । करहिं क्रक
रम विश्व प्रति भाना । ग्रैसे विवस उसेना ।
ति होई । जाती धर्म सकल निज खोई ।
पावन विस्व नाम भगवाना । सोइ विसारि
दीन ग्रभि माना भयो मलेच्छ मंद हती ।

रा
भ॰

जबहीं। बधु बरग संकुल मिलि तबहीं॥ निज पंकतितें कीन नयारा। करि अपमान तास बहु बारा॥ अरु सामी पबहिर तब जाई। नूतन ललित भवन बिरचाई॥ निज त्रिय सहित कीन तहं बासा। अति अन्त जुत हृदय उलासा॥ यद्यपि भयो नीच

19

हति सोई। तदपि भवन नवल निज जोई।
विप्र नकेन सरस सभ राखा। जायन स
विव चित्र कछु भावा। वेस्या जाति नाम
त्रिय जोई। सो प्रमन्न मानस निज होई।
रहिहें सभ भवन मन भावन। पति स
मेत राव हिं नित पावन ॥ सोरठा।

रा
भ

ऐसे जब हिं सरान कछुक काल निवसत
तहां करत मांस मद पान विषय निरत
वेस्या रमत । रागिनी बंगाली । ताल ।
चौपई । एक दिवस तहि ग्राम रसाला ।
विस्व भक्त इक संत कृपाला । परम सुसी
ल संगति हति वारा । सालिग्राम सिला ।

कर धारा । करत प्रजटन श्रुतिपथ बन ग्रा

वा । जाति लपत कल भाव सुहावा । र

हा एक तहं द्विज जन कोई । तहि कहे श्र

तिपथ संत वर सोई । निसि विस्राम हेत

कहि बदना । देव भवन कल पावन सद

ना । एका जवहिं कूट जत तामा । मूफ

रा
भ

मंद मति वचन प्रकासा। वहिर ग्राम धर
मातम भारी। वसहिं विप्र वर सुभ अचारी।
नाम अजामल जहिं जग जाता। अतिथि
संत निरधन द्विज त्राता। पुर वहिं सो नमा
र मन कामा। करडु जाय दरसन अभिरा
मा। असन वसन धन जथा निहारी ॥

देहिं सो विप्र भक्त ब्रत धारी। सबकर स

दा करत पापा हावा। रैहिं न काहू द्वार त

हि भावा। अस कहि कौन तासु सठ प

याना। उत मुनीस बर ज्ञान निधाना।

आश्रम तासु पूछि चलि आये। देखि स

दन मानस हरषाये। सनमुख द्वार ठाडि

रा
भ॰

मुनि नाहीं। आशीस बदन अमामल काहीं।
तब जीय नाम कहत मुनि बोला। आई ब
हिर हार निज खोला। मुनिहिं देखि पूछ
त भल बाता। कहितें आप संत हाल दा
ता। इहि सन कवन काज प्रभु तोरे। कर
ऊ कृपाल कथन अब मोरे। मुनि नाहि।

२२

वचन सुनत उन रागा निज हनोत सुत व
रनन लागा। सोरठा। साधु अतिथि गत
मान। भामनि निसि विश्राम। हित पथ
क आव करी ध्यान। हुते सिद्ध तोरे नगर।२।
इति रागिनी बंगाली भक्ति माल परि १
छेद: ॥

ग
म.

23

18

अथ रागिनी सैंधवी प्रबोध चंद्र नाटक परि

२नि २स २रे २ग

छेद माह ।। सवैया ताल ।३। रति जो ऊलना

२म २ध २प २नि २प २ध २म २ग २रे २स

स प्रविरति भए वहि पापकरे नहि पाप उ

२स २म २ध २नि ३स ३ग ३रे ३स २नि २प

पाय । स्वबनीत मलीन रहे जिनको उपजे

२ध २म २ग २रे २स २नि २स २रे २ग २म

निज तात स्वात्मजाय । बलपावक धूम स

२ध २प २नि २प २ध २म २ग २रे २स

मेघभयो फिर धूम पुंजे हन आप विपाप ।

जल कंटक ग्राहि विवेक हनो नित पापक
रे नहि रंच लजाप ।३॥ सवैया ताल ।२ । ग्राहि
ड़ात्म कामकलेक हतो परमातम ग्राप ग्र
लापाते ग्रचवेत ह पापकरे इम भाष ग्रची
हमको सठगाप । नाहि लषो मन नात म॰
नो जिम मफमनोज हनो चितलाप । नात

भयो सुत मोह ग्रथीन सु मारग वेद ऊ हराम

लाप ।३२। सवैया ताल ।३। कारन और अका

रजको गुरनोन पिषे उरमै गरवाप । वेद १

विहय सुपंथ विषे मनमे मद कै जब पाउ

दिकाप । त्यागको सुवेद कहे मनसि म

तमै पुनि पङ्ड वताप । बीच पुरातन वयास

रा
५

कहे रिष पूरब ले प्रति पहू बलाय ।३३। दोहा

पिता गुरु मति त्याग कर बड भागी पहिलाद।

भक्ति पाइ बंधन तजे हरि के सेव सुपाद ।।क

वित । तात जो हमारो है अहंकार के अधीन

भयो कारय अकार्य न रंच को विचारियो । ज

गत को पति जो परमातम सुजात निज ना

ह्रिको संबंध जग सिंधल मै डारियो । मोहम
दमान निस दिन मन मान कर छोडनो सु
हर बंध हफ विसतारयो । ऐसो मन तात
जोई हत पत दोष कोई करयो । हम त्याग
नहि ताहि मनो धारियो । सवैया ताल ।
इह ऐसर काम विलोकन कै रति के प्रति

रा
प्र

3

पहु सुवाक सुनायो। हमरे जलमैं सुप्रधान ब
डो मतिसंग मिलायो। सु विवेकरु आयो गं
ज गामनि आवत है इत ओर चले मगके पति
नैंग इलमायो। सिवज्यौं नहिना चलको न
नयामति संग मिले इह भांति सुहायो।३४
दोहा। रागादिक जिन वसकीए कीरति १

वेत उदार। अरु अति कोप यो मानयत मनो

निरायर यार। सवैया ताल । तन हवर प

ड़ विवेक पिषो रति चीत कठोर महाउ घ

टाई। कलषी मनमाहि ह यै लसकै तहि

ना नरजो ससदेत दिषाई। ३५। दोहा। सुनी

प्यारी कान नव काम वटो मद वैन॥ हमै पषा

रा
म्र

ने पापकत उह्यातम यह मैन। आरयमत नि
ज दोषको जानत नाहि सकोइ। दोष बषाने
औरको सभी जगतके लोइ। ३८। सवैया ता
ल । चित आनंद नीत निरंजन जोजग ना
इक जाहि स आगम गापा मद काम हे का
र परायणते तिनको जग भीतर वेयन पाप।

8

अति दीन दसा तिनकी सुकरी पुनि सुहु॰
त वंत सुश्राप कहाए। हमताहि छुडावन
माहि लगे अघवंत अहो घल मोह अलाए
।३१। सवैया ताल ।सत आरच जो परमा
तमहै। सहिजानंद सुंदर वेद उचारे। वह
नित प्रकास महा रवि सो सु विभौ नन मा

रा
प्र.

हि सताहि प्रचारे। इह भांति हनो परमे स
र मै किह भांति इने तिन बंधन डारे। इछ
सिंधमै ग्रानम डार दए किम ताहि तजे गु
ए आप उदारे॥ ग्रति दैर्यवंत उदार वडो उर
भांति सदा गुण सिंध। सगायो सबकसदा
उर नीत। वसे स महालछमी सिर छत्र फ

5

लायो। मति पैरय मीत तजे षिनमे हुनि ॰
भामनि नारि न जाहि भ्रमायो। अब और
की बात कहा कहीये निज नारि परातम
आप भलायो ॥ इति रागिनी सैंधवी प्रबो
ध चंद्र नाटक परिछेदः ॥ ॥ १

6

अथ आवरी चरित्रे रागिनी रामकली ॥

भक्तिमाल परिछेद चौपाई ताल ३ ॥

२म २पि २ध २सै २ध २पि २म २ग २रे २सै २ध

नक्षत्र नाय सीम गुरु चरणन ॥ ना

२पि २म २ग २रे २ध २पि २म २ग २रे २सै २म २ध

भादाम लाग भाव चरणन । मैं कृ

२नि २सै २नि २ध २पि २म २ध २पि २म

पाल जम श्रवणन कीना । चरित वा

२ग २ध २पि २म २ग २रे २सै २म २ध २नि २सै

रु वर आवरि प्रवीना । भक्ति महात्म

रा॰भ॰

नाम रसाला। कहूं मोर मति यथा कृपा

ला। कथा शुभ्र अदभुत मन भावन।

किलष कलेस शोकविन सावन। रा

म याम सुख भक्ति प्रवर्धन। मंगलल

लित करन भ्रम मर्दन। शुभ्र दंड का

रन्य मकारा। सुनि मातंग मंज आकारा

आश्रम निकट तास सुचि धामा। बसि
है भील शावर इक नामा। तास पुत्रि
निधि सील सुहाई। शावरी नाम विदि
त जग गाई। पती पुत्र वरजित सुभ
चारी। सब विधि निपुण सुभ ब्रत धा
री। समय सु एक दैव गति पाई। सु

गा॰भ

नि मातेंगा दरस सुखदाई। करि सना
न जब प्रात हिं काला। आवत रहे ल
लित निज आला। देखि जनेंद्र रूप अ
नुरागी। पुनि सेकोच बस पाछिल भा
गी। मैं मुनि दरस योग्य नहिं दीना।
अस तिन हृदय सोच निज कीना ॥

नीव मलीन भेद भ्रम नासा। श्रवन भ

क्ति कवन विधि नासा। करउं मोर।

लालस मन माहीं। पुनि उपाय कछु

सूझत नाहीं। एक परे ग मोर मन

भाव हीं। जहि पथ मति सनान हि

न जाव हीं॥ सोरठा॥ मेजुल मारग।

रा·भ· मोय। युक्त केटक धारकरा॥ मोपै कब

झे कि होय। तासु मारजन निसि सम

य॥ रागिनी रामकली चौपाई ताल

धरु डेयन सुनि कानन ल्याई। निक

ट मेजु मनि आश्रम जाई। आब झे छा

डि नित रुचि मोई। तो अनीत मेवा क

3

छु हाई। या विध करत काल कछु से

वा। हो हिं प्रसन्न कब ह्वै मुनि देवा ॥

अस विचार निज मानस धारी। सावधा

न ह्वै सभ्य अचारी। नित्यम प्रती सेष।

निसी पाई। मुनि पथ करत मारजन

जाई। अरु कानन आनि इंधन गाडी।

आश्रम निकट आव मुनि छाडी । त्रैमेक
छुक काल जब बीता । तब स प्रीति मुनि
परम पुनीता । पूछन लगे सिषहिं नि ।
ज बाता । कवन मनान मोर पथ ताता
नित्यम प्राति मार्जन करता । प्रक आश्र
म नित इन्धन धरता । देवकु कवन ।

तात तुम जाई। तव सुशील सिष आय
म पाई। द्वै अलोप गति बैठ निहारन
तहाँ शाबरी इन्धन कृत धारन। आई
समय जानि निज सोई। ईंधन आरि
पंथ सुनि जोई। मंदिर करन मार्जन
लागी। हरष विवश मानस अनुरागी

रा॰भ॰ बहुरि भवन जब चली पराई। तब म
नौस शिष बदन बुलाई। पूछो सुन
हु सुशील प्रवीना। तव जोई काय क
मे मन लीना। श्रम भ्रम करहु नित्त
निसि धाई। हेतु कवन मोहि देहु ज
नाई। सोरठा। कवन तोर विश्राम।

6

कानन बसहु कि ग्रान कित । कवन
जाति अरु नाम । को तुमार जननी
जनक ॥ रागिनी रामक चौपई ताल
देखि अनन्य भाव तव सेवा । भये अ
मत्र मोर गुरु देवा । चाहत तुमहिं अ
देखन नैना । दीना घाल ज्ञान गुन से

रा·भ·

ना। परि हरि बिमल चलइ अब नाहीं।
राजे मुनिन नाथ अभ जहाँ। अस मुनि
आवति भीत मन मानी। केपत प्रेम ।
बिबस अकुलानी। अति सुसील भ
क्ती रत सोई। मुनि पै आई सकुच ब
स होई। तब मुनीस तहि हृदया नि हा

हो। करुणा युक्त वचन उच्चारेहो ।

कवन हेतु तव पंथ सवारहु। अरु

ईंधन मम आश्रम डारहु। सुनत शा

वरि श्रम मन अनुरागी। करि प्रणा

म मधुर भाषण लागी। भीलन नीच

जाति अघ रासी। मन वच करम चर

रा·भ·

न प्रभु दासी। विपुन निवास भाग गत

दीना। शावरी नाम मंद मति हीना।

एक दिवस प्रभु दरसन दाखी। धन्य

भाग जीवन निज लेखी। लालस उ

पजि अत से जिय मोरे। सेवऊं चरन

नलिन प्रभु तोरे। सोरठा। पुनि विचा

र उर कौन। नाहिन सेवा योगपमै।
नीच भेद कुल हीन। सब विधि दी
न मलीन मति॥ रागिनी रामकली
चौपई। ताल ॥ ग्रस विचारि डेय
न पद्य सेवा। लागी करन तोर ख्यानि
देवा। इहि मै जबन मोर ख्यानि राया

रा॰भ॰ मा अपराध तमङ्ग करि दाया। मुनि

मातेग सुनत तहि बानी। मधुर वनी

त प्रेम रस सानी। दया युक्त मानस

अनुरागे। मुदित सिष हिं निज भाष

न लागे। अब तुम मानि मोर अनुसा

मा। इहि कहे इहो मदन सिष वासा

देहु प्रतीत जानि प्रति दीना। सरल।
सील छल कपट वहीना। पट भोज
न लाषि किंकरि पहीं। देत रहहु स
त परम सनेही। करुणा प्रीति प्रेम
मय वचना। सुनि सुनीस साव मंजुल
रचना। नेग्रत पावरि युक्त कर दोई।

रा·भ·

करत प्रणाम दंड वत होई। बहुरि ह

रष उत मन अत रागी। वचन वनी

त भनन भाव लागी। इह प्रभ मास

कवन प्रभ कीना। भोजन प्रक निवा

म हित दीना। मोरे तम ज्ञ नाथ प्र·

म एहा। प्रणत पाल प्रभ दीन सने

हा॥ सोरठा॥ अब कृपाल अविलोक।
दरस दिव्य करुणा मये। विगत का
म सब शोक। भई कृतार्थ नाथ मै ॥
रागिनी रामकली चौपड ताल ॥
मोरे प्रीये नाहिं संसारा। संपति कोश
द्रव्य भंडारा। एक आशीरवाद प्रभु।

रा॰भ॰

वाहे। जहि तें परम शुभ गति पाहे।
अस कहि लाणक मूंदि हग मुनियो।
बोले रुचिर मधुर मृदु धुनियो। तोरे
सरव काल कल्याना। सत्य वचन इ
ह मोर सुजाना। संसय शोक भीत स
व त्यागी। विचर हु विपुन निपुन बड

भागी। आसिष देत मेज मुनि राया।
गवने भवन मोद मन छाया। कीरि
इहां ग्रावरि हिय हरष बढाई। करि
प्रणाम निज आश्रम आई। सकुच मो
च भय त्यागी। ह्वै निधडक तहे आव
न लागी। सेवा दरस दिव्य विधि राई।

रा॰भ॰

12

करि सजा हिं निज भवन पराई। अस
प्रकार कछु काल वतीसा। तव स॰
देउ कारण मुनीसा। जहां जहां रहे
आन वन जवना। देखि अगमन ता
म रिषि भवना। अति अपमान सहि
त साव निंदा। निज निज लगे करन

सुनि हेदा। सोरठा। पंकति सभा मझा
र। कौन निरादर तासु अती। सुनि
गण सकल विचार। नाना चरचा क
रहिं सुख॥ रामकली रागिनी चौपा
ई ताल ॥सुनि मातेश शोणि निधि
नाना। यद्यपि मरम सकल प्रभु जाना

रा·भ·

तदपि लोभ क्रोध मन माहीं। रिंचकमा
त्र कीन मति नाहीं। जानि शुद्ध निज।
हृदय प्रवीना। तिन पर क्षमा सकल
विधि कीना। ऐसे जब कछु काल स
राना। तब मनीस सचि लाभ निधाना
संतत जोग हृष्टि मय देखी। समय सरी

13

र पात निज लेखी। कृष्ण मेंगाय मेज्ञ।

करि आसन। इसाथित भये जोग मेंचा

मन। तव सिषनि कर देषि मानि ध्याना

करि विलाप रोदन भाव नाना। लगे

करन पूजन समुदाई। गुण गण ना

म विविध भाव गाई। धावरी तब हिं

रा॰भ॰

रुदन सुनि श्रवना। आई तहो तुरत क
रि गवना। रुदन करत सनमुख मुनि
ज्ञाना। स्थित भई जारि ज्वाल निज।
पाना। मुनि मातंग देखि गति तासा
रे शबरी अस वचन प्रकासा। रुदन।
कलेस शोक परि हरिहौ। मम उपदे

१४

स सत्य जिय यरहौ। राम चंद्र खल खं
डिन स्वामी। अग जग नाथ जनन अ
उ गामी। रमा सीस वैकुंठ निवासी।
चिदानंद सद भवन प्रकासी। अवध
ग्राम दसरथ न्रप सदना। भे अव तरन
ललित विधु बदना। पाय देव गति सो

रा॰भ॰ जन घाला। आव हि ईहो विपन साव।

घाला। सोरठा। तुम ह्रे ग्रनथि सतकार

करि हैं तिन कर वचन मम। तव तोहि

सरव प्रकार। हो हिं कुसल संशय न

हीं॥ रागिनी रामकली चौपाई ताल

जोलो दीन घाल प्रग गेजन। राम प्र

काम खनिन मन रंजन। कानन ईहो
भवन तव माही। आवहिं रमा रमन प्र
भ नाही। तोलो आन ओर वृति त्यागी।
रह इ समरण तिन हिं नित लागी।
राम नाम पावन जग जोई। भाषण क
र इ रजनि दिन सोई। मोर ललित से

रा॰म॰ वा फल पहू। तेरे हो हिं मन द्रृ सभगे

हू। अस उपदेस तास मुनि बरनी। शि

ष्या जवन शिषन निज करनी। सो स

मदाय करत मुनि ज्ञाना। दिव्य लोक

कहे बहुरि पयाना। आपन कीन रुचि

र मुनि नागर। राम भक्ति निधि ज्ञान।

18

उजागर। तब ते शबरी परम प्रबीना।
राम नाम सुमरण भई लीना। स्वास
स्वास नित राम चितारहिं। पथ सुगम
न सद भवन निहारहिं। कंदमूल फ
ल करहिं अहारा। सुचि संतोष शील ब
त धारा। रामचंद्र प्रभ दसरथ नंदन।

रा.भ.

17

कब कृपाल दनुजात निकंदन। आवहिं
ईहा हगान भरि देखवहे। धन्य भाग जी
वन निज लेखवहे। प्रम प्रकार चिंतत
करि शबरी। श्री रघुवीर नलिन पद
भ्रमरी। पुनि पुनि उठहिं प्रेम रस पा
गी। इकटक होहि पंथ प्रभ लागी ॥

मेजल लिंड वदरि फल मूला। जानि

मधुर पावन अनु कूला॥ सोरठा॥

प्रभु अतिथी सतकार। करवे हेत अ

मल मन। सेजत प्रेम अपार। सो से

भार रावत भई॥ रागिनी रामकली

चौपाई ताल ॥ अरु कुटीर निज क

रा॰ म॰

18

चिर सवारी। पावन कीन सिंचि रुचि
वारी। रचना विविध भांति विरचाई
जहे तहे कीन मनो हर ताई। कस
लय तरु कुसुम छवि नीके। उंजन
भृंग भाव श्रीय जीके। ऐसे करि वि॰
चित्र सब रचना। प्रेम सयान सावधा

दगद वचना। उठि सथाव मग श्राव

वहोरी। राम दरस उर प्रीति नथोरी

स्याम जलधि तन जलज विलोचन

भाव समू हचै ताप विमोचन। विस

रत सो कृपाल ताण नाहीं। पावन प्रे

म प्रनसे मन माहीं। भनिन प्रबइक

रा॰भ॰

19

समय सुनाहो। सुनि अगामन कानन

सुरनाहो। निकट आवरि आश्रम नव

आई। करत अगामन कथन रघुराई।

ते सुशील सुनकर तिन वानी। प्रेम

विवस मानस अकुलानी। इत उत

अटन करन डुत लागी। लै फलमूल

केद अनुरागी । गावि वहोरि सलिलहि

न धाई । रोम रोम रह्यो हरष समाई ।

सोरठा । तब मारग लियि ज्ञान । स

नी एक तहि कर मिल्यो । आवा सुभ

सव दान । करि सनान सरवर वि

मल ॥ इति रामकली रागिनी भक्ति

गा.भ. मालपरिच्छेदः॥ ॥ ॥

20

25

रागिनी रामकली ताल ३ विस्तुपद ॥ हरिगुन
भवति ज्ववति वडभागी ॥ इतिगुरुस्थाई राधा रसि
क नंद नंदनके सुख निधि चरण कमल अनुरागी॰
इत्यंतरा ॥ अथआभोग॰ कोक कला संगीत निपुन
सखि पिय संगम रति रस निसि जागी ॥ हुलसदा
स प्रभु गिरिधर पिय मुख देखत नैंन ठगा ठगी लागी॰

रा॰रा॰
२४

रागिनी रामकली ताल ३ विसनुपद ॥ वेसइयो
मेरी रैनि विदा होन लागी ॥ हतिगरुसाई जदिगाईजो
नि मेद भये तोरे फल वासना पागी ॥ इन्येनरा प्रथा
आभोगः सोरह सिंगार वतीस आभूषन अपनैं प्रीत
म सेवा जागी ॥ सूरदास प्रभु तिहारे मिलनकों
कुसम हमारे अनुरागी ॥ रागिनी रामकली ताल

बधैरी बिलपद आज लाडिली लालहि जगाइ जागी
रतिश्रम्याई सकल निसि कुंजवसि ग्रिये वल वाहु
कसि विलसि अंग अंग अन राग रागी ॥ इअंतरा
अथ आभोग: रोम रोमनि ग्रह क्लिस कनि नेकन
खरकि अति अधर मधुर रस प्रेम पागी ॥ विहार नि
दा सिस कांम गौर श्याम स्याम चितै चित वसि जा

रा॰रा॰
२५

मल ननि लागी ॥ रागिनी रामकली ताल १
विसपद ॥ आवन ललन पीया रंग भीने ॥
२
इनि अस्याई ॥ सिथल अंग उगाम रात वरणा गा
ति मोतिन हार उर छीने ॥ अंतरा । अरथआभो
गः । पाटि जान मंदार माल लपटान मधुप मधु
पीने ॥ गोविंद प्रभु पीयत हौ जाऊ जहां अधर रस

रागिनी रामकली लोरी लाल। १ लोरी लाल
को देऊ माई कबकी ठाड़ी ठाड़ी परचाऊ। छन
किन छन कार गाऊ बजाऊ अगर चंदनका झू
ला झुलाऊ। लालको देखो सखी सब लोरीओ।
अगर चंदनका झूला झुलाऊ देशाम दीओ वदो
शोरीओ। झूलना। नवल हेदोर ना माई झूला

रा॰रा॰ श्री गोकुलचंद। कंचनको दोयम गाइये नगानज

डत वडुरंग। आनंद भये नंदजीके दुआरे सेरा

गहेद लियाई मालन। हुसन कवरने जनम ली

योहै नंदमहर घर पालना॥ रागिनी रामक

ली जगलकंद ताल। । मेरो अटल रहीलो रा

ज प्यारे महमद शाह पीया जम जम नित नित

नरवन वैठके हन मिल काज। गाइन गणीय्रो नन्द
वहीलवा सभसषी म्रन मिल करन जबव सदा
वेग मिलगाऊ वजाऊ तोन नेहूर मदील गेसाज।
रागिनी रामकली नरानानाल। । दानी उदे नाना
दिरना दीम दिम नना ना ना ना नाना ना ना दीम्
दानी नादिर दिर नम दिर दिर नम दिर दिर दीम

रा॰रा॰

नदेर दानी । यालाली याली याला लोम याला ला

लाले लोम यालाले लोम यालाली याले दिर

नोम नोम् ननाना नोम् नाना ना ना ना ना ना

दिर दिम ननाना दिम नान नाना दानी । रागिनी

रामकली सादरा ताल वडो रघुवीर रघुवीर गाउ

लेकको संग लक्ष्मन वडो धनुष धारी ॥ पद्म

दल ग्रह माझे जोधा वली लीऐ एकाने एक बलआ
धिक भारी । सेस धरनी धस्यो सूर बादर छपिऐ
हाथ पैंवान लीऐ पाखारी । होर वज़ श्रोर जब
मार लेका लई सकल संसार जैजै भ्रकारी । जत
नवेली अकेली चली स्याम सथ माती लेगारजा
ऐ ।। गागर भर भर धर आवै मोरा कन्हना वि

रा॰रा॰ साज पीआ सरूप सावरे टोनो नैननमैं भरो ॥ रा

३

गिनी रामकली टोना ताल । । टोना कामन

कर समजावरे कान्हू टेमना जावरे ॥ जंत्र मंत्र

डार सावीरी हलके नीको पीआ गर लावरे ॥

इति रागिनी रामकली लोरी कूलना जगालके

टे नराना सादरा जन टोना समाप्तम् ॥

रागनी भैरवी ताल थीमा तिताला ॥ फुली
सेजों विंये खब हारदावे सोंणा सोंणील
गदा मावडा जानी यारदा । घोरी हा जार
गल नाफर माणी दे सदके कीती सदके
जनी ॥ रागनी भैरवी ताल थीमा तिता॰
जानी जीय रातें वाजवे मीयों मोडे महर

भै॰ रा॰ दानीबी मेभालवे। ओखी लड खिटकदी

२२८

भटकदा दिलकीताल कलेजरे पारवे।

रागनी भैरवी ताल धीमा तिताला॥ मोरे

पीयाने भैंगजैवन वारें आवन होय अब

न वारें मिल लोग मोंए सावी सहेली।

फिरनवनीहै मिलन वारी मोरे पीयाने।

अथ राग ललित प्रबोध चंद्र नाटक परिछे

द मारू । सवैया ताल झंप । हत आशय जो त

महा इ बडे रविको नहि ब्रह्मादिसकै श्रुति ।

सोई तिम आतम नित प्रकास महा जिन

के सम हमर औरन कोई । सुष सागर नी

त उजागर है अज्ञान कहो किह भात सहो

रा
५

ई अब हरकरो कहणा करकै इह सेक बडी
उर अंतर सोई । कवित्त । विना विचार सिंध
असिध वार योषिता समान नाम माया वि
लासनी वषानीये । मण सफटके यथा
सदेव उजले सरषा सहाव भावके अवंचना
स नाटिये । नाहिके ससंगते अमंगताज ।

देवकी सरूप सिय नितहै मनाक नाहि हो
नियै। तथापि गाढ संगतें प्रसंग विक्रिया
भई छुटी सुधीरता नवै प्रधीरता सुजानियै। १२३।
दोहा। कारण कौन सुभावयै जाकर करै
विकार। प्रश्न पुरातन सो उ हुजाको वर॥
न उदाहार१२४। दोहा। मायाकारण काज॥

गा
ष

को चाहत नाहि सकोइ। नारी जाती पि१
सोचनी यही सभाव सहोइ।२५।सवैया
ताल ।मोहत है कबहू अबला मदमोस
विडंबन फिरकरे॥ कबहू पुनि नाउत है अब
लाहसकै कबहू पुनि अंकभरे॥ सविषाद
करे।कबहू अबला अतिदीन मनो रिदमा१

२

ह्रिबरे। हगवाम कटाछनकै ग्रबला कड़ कौ
ननचीत ह्रे।५। दोहा। है कछु कारण कोऽ
न पति कह्रो मनो ग्रब मोइ। डराचार इनविऽ
नवियो करो विचार मकोइ। सवैया ताल।
ग्रब जोवन मोह विलाइ गयो युनिदेव पुग
ननहै जगायो। ग्रब मोह विषै रस ग्राहि।

रा
प

कह्यो रमवे मध जोबन मैनरमायो। अब और
उपाइ बनेन कछू मन पूत बने अबराज दि
वायो इह मातम जो सविचारमने मनपूत त
वै निजतात मिलायो ।२५। नवद्वारनके पु
रिमाहि रचे मन आप सनो तिनबीच बसाई।
एकरूप हुतो परमातम जो बहुभांतिनकै

पुरमाहि फसाई। सकरे मन कारय आप जि
ते परमातमके पुनिमाहि ठहराए। सजपा
ऊसहमे मणि माहियथा हनखेतगएे गए
लालदिखाए। ५१। दोहा। आरय हत या लो।
कमै जैसीमातप्रवीन ताको सततै सैभयो
कहो देव कत कीन। सवैया नाह। तब

गा
१

चीतको पूत हंकारबडे नपिता परमातम।
को जगगायो।अति तोतल बैनगयो फिर।
जो हमकै परमातम कंठ लगायो। तब भू
ल परमातम आपगयो।भव मोहिभयो इम
आप चलायो।यह तात इहै मम मात अहे इ
हवेत इहै सकलित सुहायो। यह ७३ स॰

४

मित्र अरात बडे पुनि या बसुधा बल आहि हमा

रेगज अस्व पसू यडु कोस अहे पुनि पडु सरीद

सबंध पिआरे। चितको फरणै जिह भांति भ

यो तिम देवपरातम आपनपारे। अज्ञान मई ब

हनीदभई सुपना बहुभांत न भांत निहारे। ५३।

दोहा। आराय सत परमेस्वर दीरघनीद विकार।

ग।
५.

5

बोय जनम कि भांति पुनि होवै मोह उचार।
सनित विवेक महीपको लाजभई उरभार।
कौन भयो मारवतासमै परनी औरनिहार।
आरय सत किह हेनते गरब लज्जा मोह। २
निम सकंदरते भई भाषा कारण मोह ॥
दोहा। नारिनको बड ईरषा होवत जगम-

कार। सापराध जन आपहिष करो न तोह

उचार। इस प्रविरति को परम हित करै को

कछु पतिप्राण। वह औरै जग जोषिता करै

काज निहहान। दोहा। मति प्यारी इक

औरहै मानन मेरी नारि। उपनिषत सुना

म वषानीये सुंदर रूप उदार। चौपाई ताल ४५।

रा
प्र०

इति राग ललित प्रबोध चंद्र नाटक परिच्छेदः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

6

27

६

अथ राग ललित भक्तिमाल परिछेद मात्र

चौपाई ताल जलद ३। परम प्रेम मय वचन सुहा

ये। नमत गरुड राम मन भाये। अनन्य भाव

नहि प्रीति निहारी। कोमल भये भक्त उर

व हारी। करुणा रोम रोम तन छाई। सज

ल नैन पावन रघुराई। कौन स परम ताह।



ग निज पाना। मरो नरंत बिद श्रम बाना। राम

म राम तब हृदय बिचारी। गयो गुरु बैकुंठ सिधा

री। जब जटा ऽ निज प्राण तयागे। नवरघु

बीर हृदन करिलागे। बिरह भक्त कर पीड

न भारी। लौकिक करानि कीन प्रभु सारी।

ईंधन बिपुन लावन ज्ञानि लाये। राम कर

न निज विता वनाये। सलिल सनान देत

रघुराया। कीनसि दग्ध भक्त निज काया।

सादिर वहुरि तिलां जलि दीना। विधि वत

म्रतक करम शुभ कीना। दंडक विपन जा

वन भाति रहे डौ। दीव चरित विसमय स

व भयेडौ। नीच गृद्ध खग मांस अहारी। हौत

रा
म

भक्ति वस जास खरारी। अति कृपाल प्रभु सद
गति दीना। राम प्रभाव जाय नहिं चीना। ज
प तप जोग जतन बहु साधन। गति अनन्य
भगवान अराधन। करहिं जोगि मुनि सिद
अग्यानी। संत साध द्विज तपस प्रमानी। तै
भगवान भाव नहीं आना॥ सोरठा। सो प्रत

यद्यपि करहि यतन हठ नाना॥ सं०१

२म २ग २रे २ग २मा २प २म २ग २रे २सा
त भगवान। स्थित मन मख निज देखि ह॰

२सा २नि २प २म २मा २ग २रे २ग २मा २ग
ग। तजत गरह वर प्राण सद गति कहे प्राप

२रे २सा २सा २मा २प
त भयो। १। चौपाई ताल २ । इहि सम ना

२म २ग २रे २सा २मा २प २नि २प २म २मा
हिं ग्यान बड भाग्यो। दर मत राम प्राण ज

२ग २रे २सा २मा २प २नि २सा २रे २नि २प २म
हि त्यागयो। परम प्रवति दसरथ न्रप रहे।

२प २म २ग २रे २ग २रे २सा २मा २प
उै। उदय भाग प्रम ताह न भयेउै। तातै।

रा
म

२नि २सां २रे २नि २प २म २प २म २ग २रे २ग २म २ग
साख जीव ह्राव दाई। राम भक्ति वर ह्विर ह

२रे २सां २मं २प २नि २सां २रे २नि २प २म २प २म २ग
ह्राई। नीच नषिद गृह खग जाती। क्रिया ता॰

२रे २ग २मं २ग २रे २सां २मं २ध २नि २सां २नि
सा रघुवर सब भाती। ग्राप्त कीन संज्ञत सन॰

२प २म २प २म २ग २रे २ग २मं २ग २रे २सां २मं २प
माना। भक्तिविवस ठाकर भगवाना। उचनी

२नि २सां २नि २प २म २प २म २ग २रे २ग २रे
च कौ रामन भाखा। केवल भक्ति प्रेम म्राख

२सां २मं २प २नि २सां २ग २रे
राखा। सोरठा। ग्रम कहि म्रनि सम्मदाय।

गइहिं विवय प्रसंसि मख। निज निज चले।

सियाय। हमरि राम सिय लखन मन। १८।

सोरठा। गुरवज्ञान प्रकास। नाय सीस पंक

ज चरन नेमरत नाभा दास। अंबरीष पावन

कथा। चौपाई ताल । सादिर कहत वदन

निज गाई। महाराज इह कथा सुहाई। भी

रा
भ

न कलेश शोक भ्रम हरनी। सघा भक्ति विव
रधन करनी। मंगल मूल मूल सव हारी। से
वति सजम भरन सव कारी। इरव पक य
न्यथा माहीं। सरव सावद सव जीव काहीं।
रहो महान राज रूप नागर। अंवरीष जहि
नाम उजागर। सु कीति सजस रूप जग ता

ना। निरयन परानि येन उजचाना। दयानि

धान नीति मति नागर। विभो प्रचंड सक

ल गुण सागर। प्रजा समूह जास महि पा

ला। संकुल। हद नहण ग्रह वाला नित्य १

नेम इत्यादि सुकरमा। सख परायण नि

ज निज धरमा। एका दशि व्रत पावन जोई।

रा
भ

5

राखहिं सकल भक्ति रत होई। हिंसा कूट क
पट छल त्यागी। रहहिं समर्पे राम नित ।
लागी। समय एक छिन पति उप कारी।
एकादशि में जल हत धारी। बैठि अपो ल
त भगवन मेंहा। निज कुटंब जन परम
परीन्हा। भयो करत जागत निसि सारी।

4

वैस्नव भक्त भूप व्रत धारी। द्वादसि दिवस।
प्रात जब भयेऊ। उठि सनान हित स्रोवरग
येऊ। नित्य नेम मज्जन करि ताहीं। वहुरि
मंदु आयो नर नाहीं। सोरठा। सहित प्रीति
सनमान। हरि पुनीत पद सदम रत। बैठि
महीप सुजान। लाग्यो सचि भूजन करन।१७।

रा
भ

6

चौपाई ताल ।पावन प्रेम प्रीति मन माहीं। परिहरि ध्यान ध्यान गति नाहीं। साये काल समय तब ताहीं मुनि गण निवृत प्रवर मु नि नाहीं। इरवासा मुनि ज्ञान निधाना। शि ष गण लिये संग निज नाना। आय भवन वर प्रापत भयेऊ। पूजन करत नृपति जहां

रहेउ। निकट सिषघन जुत मुनि कहँ देखी।
उठे भूप उर हरष विसेखी। पूजन कीन पंच
उपचारा। प्रेम भक्ति जुत विधि वत सारा।
नेमत वसिष्ट जुगल कर जोरी। कहत वचन
उर प्रीति न थोरी। महाराज कछु आयसु क
रहौ। मन वच करम दास अनुसरहौ। धन्य

रा
म

भाग मोरे जग आजु। जासु भवन तव मुनिन समाजु। आय दीन मोहि सुजस बड़ाई। इह। तुमार करुणा मुनि गाई। दोहा। वचन वनीत स प्रीति रत सुनत वदन मांहि पाल। बोले परम प्रसन्न मन मुनि सत्यम जनपाल। ।२। चोपई नाल । पूरब दिवस सुनउ ऋषि

राजा। सहित निकर निज शिषन समाजा।
एकादशी व्रत पावन जोई। निराहार था
हयो हम सोई। तहितें आज विभूषत सारे।
अन्न जाचन हेत तुमारे। आय भवन करि
गवन नरिन्दा। करहु प्रतोष बाहु मानि
हन्दा। सुनि मुनि वचन भूप अव रागे।

नेम्रत वचन भनन ग्रस लागे। ग्रहो भाग
वड मोर क्रपाला। प्रभ करहरण निज कीन
विशाला। ग्राये भवन मोर ग्रव जावडु। क
रि सनान संध्या दिक ग्रावडु। भोजन सप
दि नाथ वनि जाई। जेवड्ड शिषन सहित
प्रभ ग्राई। न्रप माव सन्यो वचन ग्रस जवंहो।

गवने मुनि सनान हित तवहीं। ईहां नृपति

निज सोई। बोलि महीप वदन समुझाये।

व्यंजन रचहु विविध मन भाये। तिनहु नृप

ति अनसासन लीजे। भोजन रुचिर अमि

य सम कीने। तव नरेस अपरोहित आयो।

तास वदन अस वचन सुनायो। छिति पति

रा
म

9

आज द्वादशी थोरी। ताते सुनहु विनति अस
मोरी। आपु सपदि व्रत पारन करहो। मोर ब
चन निश्चय जिय धरहो। नतर जाय हत ध
र्म हमारा। साधन भजन जनत जप सारा।
धरम शास्त्र कर आयस एहू। एकादशी ब्र
त धारत जेहू। ओदशि कहूं पारन जब हो

ई। तिस फल जाय तास हत सोई। सोरठा

अंबरीष महीपाल। सुस सुपरोहित वचन

सुनि। बोल्यो वदन रसाल। सुनहु विप्र

वर वचन सम। ३। चौपाई साल।   । कहि

प्रकार हत पारन करहीं। आपन धर्म ना

हिं परिहरहीं। इरवासा ऋषि ज्ञान निधाना।

रा
भ

मुनि सत्तम तप पुंज समाना। लिये संग शि
ष जन समुदाई। भये अतथि वन पावन आ
ई। मो मै कीन निमंत्रण तासा। गये सना
न हेतु तप रासा। ताते अब विन तिनहिं
जिमाये। मोपैं भोजन कियो न जाये। इ
हि मै जवन बात कल्पाना। हाखद रुचिर

10

१०

हित मोर सुजाना। सो कृपाल उरमें लहिं

विचारी। मोरे करहु कथन व्रत धारी। अप

रोहित मुनिव्रित पति वचना। परम शुक

में ज्ञल मरु रचना। कहा सुनहु महि प

ति पहि माहीं। सत्य कथन तव संशाय

नाहीं। विप्र जिमाय मुनि भोजन करना।

रा

भ

नाहिंन उचित तुमहिं पति धरना। पै नरेस
रता व्रत कारी। पादौदिक हरि हाथ नि
वारी। पावन पान करहु तव सोई। तो घ
तीत पावन व्रत होई। इहितें जाहिंन धरम
तुमारा। होहिं सचिर हित सरव प्रकारा।
अपरोहित सुनि वचन प्रतीती। सादर

बरन राउ रत नीती। पावन पदोदिक ह्
रि जोई। किंचित कीन पान न्टप सोई।
ताहि काल मुनि सत्पम श्राये। देखि भू
प गति हृदय रिसाये। जाना न्टपति क्रो
य मुनि कीना। नेम्रत जोरि जुगल कर
दीना। कहत कृपाल छमउ अपराधु।

रा
भ

सदा सुशील नमउं जग साथु। सोरठा।
मै व्रत रखा हेतु। इह हरि चरणामृत रु
चिर। सुनहु मुनिन कुल केतु। कौन पा
न किन्हन प्रभु। ५। चौपाई। ताल। ।
सुनि मुनि नृपति वदन मृदु वानी। को
पित कठिन दंड गहि पानी। भुजा उठाय

12

भूप पैं आया। क्रोध विवस कंपत सब का
या। समय नाहि नृप भवन मझारा। भ
भयो अंतर्से कोला हल भारा। अंबरीष त
व जग कर जोरी। नेमत विनय कीन न
हिं थोरी। बहुरि थिर निज आसन होई।
बैठ्यो हृदय छोभ रिस खोई। तव नरना

रा
भ

य करन रखवारी। चक्र चाह हरि भीत नि
वारी। आय भयो आपन नहि काला। दे
खि रूप मनि नाह कराला। डरपत वि
यत करत अनुमाना। निश्चय हतहिं मोर
इह आना। अस विचारि मनि चलो पना
ई। वहिर मंड तव भूपति आई। देखा जा

13

देखा जाहिं अग्र मनि भागा। पाछिल चक्र
जात हरि लागा। सो प्रचंड जनु काल समा
ना। ग्रासत सकल चराचर नाना। देखत
नाम ग्राम मनि पाई। भयो शरण विधि श्री
पत जाई। पाछिल नाम चक्र हरि जोई॥
धावा तेज पुंज जनु सोई। विधि पावक म

रा
भ
14

मत्तामह निहारी। मुनिहिं ग्रथ निज लीन
विहारी। होत न हत्य नाहिं जब देखा। चक्र
रूप धृत भीम वपेखा। तब चतुरा नन क
रत विचारा। मुनिहिं लेत वै कुंठ सिधारा।
सोरठा। रमानाथ तव जान। चक्र त्रास व
स मुनि विथत। तहि रचा जीय मान। ले

आये इन कमल भव ।५। चौपाई । ताल । ।
नव इंद्रापति अग जग नाथा । प्रथमहिं
कहिस ललित मख गाथा । सुनहु वरि
रिचि चक्र वलवासा । अति प्रचंड गति पुंज
प्रकासा । इह मोपें नहीं जाय निवारा ।
यद्यपि कारइं यतन किन भारा । इहि कहे

रा॰ पूरब मोर जाया। जेमम भक्त वचन मन का

भ॰ या। मोहि कहं भजहिं आन हति त्यागी।

रहहिं ममगुण मोर नित लागी। वयो भरो

स नाहिं जिय नीके। सदा सहाय रहहुं त

म ताके। चक्र मोर आयस वसहोई। रक्षा

भक्तमम भूपति जोई। रक्षा हेत नाम नि।

15

यि शीला। कोपित चक्र कीन अस लीला।
तद्यपि करहु जतन अस तोरे। लिये संग
मुनि संजन मोरे। राजहिं अंबरीष नृपजा
हो। चलहौ वाँच सकल मिलि ताहो।
द्विमिहं ते मुनीस अप राधू। नृप संतोष
शील रत साधू। चक्र महान वेग विस दा

रा
भ०

हण। सोई नृपति बर करहिं निवारण॥
हनि याता कमला पति बानी। हृत्र हाव
द कहाण हित मानी। हरि समेत बैकुंठ
तयागी। आय धरनि तल मनि हित लागी।
आथे मरेस द्वार थिर आई। याता वक्र विसम
मनि गाई। ताहां नृपति मंजल हति सेता।

16

१६

नाहि ध्यान तद काल प्रजेता। पारि हारि डाँवि

त ग्रह वारी। रह्यो हचिक मनि पंथ निहारी।

जव लग सो मोरे ग्रह ग्राई। मन प्रसन्न भोज

न नहीं पाई। सोरठा। तव लग जेवडं नाहि

मै भोजन श्रण सत्य मम। अस विचारि मन

माहिं। अग्र विलोको राउ जव। मनि संज

रा०
भ

त नव ठाऊ। कमला पति ग्रह कमल भव।
परम हरष उरवाक। देखि हगन ऋषि राज
कहे ॥६॥ चौपाई ॥ताल। ।करि प्रणाम न र
प कीनसी पूजा। संजुत भक्ति भाव तजि दू
जा। हनउ भूप नव भगवन काहा। इह
मनीस कथ्यानर राहा। ताम हेत तोहि

मारन धाया। रहा चक्र तब जवन सहाया।
सो मुनीस पाछिल दिसि लागा। अब बिरं
चि शरण मुनि भागा। तब चतुरानन सो
पैं आवा। कहि वृतांत निज सकल सुना
वा। अब मैं लिये तिनहुं निज साथा। तो
पैं आव त्रिभुवन नृप नाथा। हम है हरि

रा
म

18

मुनीस अप राधू। तब सदैव कहहुए रत सा
धू। चक्रवेग दिस शोति करावहू। मुनि।
मानस उव ग्राम मिटावहू। भोजन करहु
आप महि गाई। अरु मुनीस कहं लेहु जि
माई। पुनि तब करहु अकंटिक राजू। स
हित मंत्र निज सकल समाजू। इह सर

वर बरिंचि महि पाला। आव तमहिं वरदे

न रसाला। मागहु जवन भाव मन तोरे।

सेतत मानि वचन नृप मोरे। हानि हरि

वचन भूप अनरागा। करि प्रणाम मन भ

भावत लागा। धन्य भाग बड दीन कहा

ये। प्रभु पद पदम मदन मम पाये। दोहा।

रा
भ

भयो कृतारथ आज मैं दिव्य दरस प्रभु देखि।
इहितें उत्तम कवन वर संस्रति आन विसे
खि॥ ॥चौपाई ताल॥ ॥मोहि कछू ना
थ जानि नहीं परहीं। जावत जाम दास
सेव करहीं। इन नैनन भरि निज गृह मा
हीं। गोचर तुम्हहिं विलोकि गुसाईं। जीव

न सफल जगत निज जाना। मांगहु कव
न नाथ वर आना। पुनि उदार प्रभु त्रिभुवन
राया। जो मो पै निज कीनसि दाया। तो कृ
पाल मांगहुं वर एही। चाहु भक्ति तव दी
न सनेही। अविरल हृदय मोर दृढ होई।
व्याधि उपाधि भीति भ्रम खोई। भूप वचन

रा
भ

हुनि अज भगवाना। एव सब कहि कौन
पयाना। निज निज भवन हरष उर छाये।
तब छिन नाथ मुदित मुनि गाये। भोजन
रुचिर अमिय सम नाना। सो जिमाय संज्ञ
त मनमाना। करि पूजन सनकार सुहा
वा। संज्ञत भक्ति रुचिर मन भावा। सोरठा।

२०

वड्ड विधि विनय बखानि करि प्रणाम जुग
जोरि कर साहित शिषत मानि ज्ञानि कि
ये विसर जन नृपति नव। ८। इति रागल
लित भक्ति मालपरिछेदः ॥ ॥

रा
म

21

अथ रागिनी सैंधवी भक्तिमाल परिछेद मा

२नि २सा २रे २ग २म २ग २रे

ह चौपई ताला ३। हेदरि जाइ वेग तुम ता

२सा २नि २सा २नि २प २पि २म २ग २रे २सा २म २पि २नि २सा

ह्वो। राजे राम धाम प्रभु जाहो। मै सरोज प

२ग २रे २सा २नि २प २पि २म २ग २रे

द पावन नामा। करम वचन मन सेव क

२सा २म २पि २नि २सा २ग २रे २सा २नि

दासा। उचित नाहिं दिति नंदनि मोरे। य

२प २पि २म २ग २रे २सा २म २पि २नि २सा २ग

द्यपि पठो राम प्रभु तोरे। ते सामर्थ आश्र २

रा
म

२रे २सा २नि २प २प २म २ग २रे २सा २म

बल धामा । करिहैं सफल तोर मन कामा ॥ सु

२प २नि २सा २ग २रे २सा २नि २प २प २म

नत न देस लषन ग्रस सोई । प्रभु पें ग्राई मद

२ग २रे २सा २म २प २नि २सा २ग २रे २सा

न बस होई । तव रघुबीर बदन ससकाई ।

२नि २प २प २म २ग २रे २सा २म २प

दीन लषन पें बहुरि पठाई । ग्रैसे ता १

२नि २सा २ग २रे २सा २नि २प २प २म २ग २रे

सु गाता गत माहीं । उपजा क्रोध शांति क

२सा २म २प २नि २सा २ग २रे २सा

छु नाहीं । जाय न भीम भेष तहि बरना ।

२म २प २नि २सं २ग २रे २सं २नि २ध २प २म

दीरघ दमन करन हग ग्ररना। घोर ज्ञान धना

२ग २रे २सं २म २प २नि २सं २ग २रे

वन ग्रति जीहा। विवक कराल विकट नि

२सं २नि २ध २प २म २ग २रे २सं २म

श्री हा। भुजा पसारि वदन निज वाई। भत

२प २नि २सं २ग २रे २सं २नि २ध २प २म २ग

ए करन हेत सीघ धाई। भ्यावन घोर रूप १

२रे २सं २म २प २नि २सं २ग २रे २सं

तहि देखी। सीघे मानि उर त्रास विसेखी।

२नि २ध २प २म २ग २रे २सं २म २प २नि

पाहि पाहि रघु नाथ पुकारी। कंपत गाथ १

रा
म

विषत मन भारी। सोरठा ताल ३। लखन कोप
नव कीन। खड़ग निकासन ज्ञान ग्रह। श्रव
ण छेद नहि लीन। करि प्रवीन कौतुक ह १
विराधा चौपई ताल ३। अंग हीन भई भया वन
भारी। विकट रूप नहीं जाय निहारी। खर दू
षन पें तबहिं कराला।। जाय कीन १

२प २धि २म २ग २रे २सा २म २धि २नि २सा तानतान २ग २रे २सा

जड़ हदन विसाला। सकल कहिस विदाता।

२नि २प २धि २म २ग २रे २सा २म २धि २नि २सा

आये विह्नन तपस दी आता। नारि एक तिन

२ग २रे २सा २नि २प २धि २म २ग २रे २सा

संग सुहाई। इमत रूप कवि वरनि। नजाई।

२म २धि २नि २सा २ग २रे २सा २नि २प २धि

स्वत मण्डल अंग ड्रति। दामनि। निदरत र

२म २ग २रे २सा २म २धि २नि २सा २ग

मा रूप जनु भामनि। सोमै देखि आत ख्व

२रे २सा २नि २प २धि २म २ग २रे २सा

लायक। सुन्दर वदनि नयन मृगसायक।

रा
म

3

पेरत भई जबहिं जीय तासा। तव लघु भ्रात

लषण बल रासा। नासिक श्रवण भलहिं क

रि हीना। प्रति उर दशा मोर तहिं कीना। आश्र

म बहिर दीन पुनि छेदी। अंग निसंग भंग म

म केदी। अस अप मान मोर भयो जाहो।। व

लहो वंधु वेग तम ताहो ।। तिनहिं ।१

२नि २सा २ग २रे २सा २नि २प २प २म २ग २रे
विदारि नारि वर जोई। ललित विचित्र रूप रति

२सा २म २प २नि २सा २ग २रे २सा २नि २प
सोई। आनन्द नवहिं मोर मन कामा। पूरन

२प २म २ग २रे २सा २रे २म
होहिं भ्रात अभि रामा। दोहा ताल ॥३॥ निज भ

२प २नि २प २प २म २ग २म २प २म २ग २रे २सा
गनी कर वचन श्रम श्रवण सुनत दन जात।

२नि २प २प २म २ग २रे २म २प २म २ग २रे २सा
भये अरुन दृग कोप रत थर थर कंपत गात। ॥

चौपाई ताल । संजुत भनी नवहिं खर दूषन।

रा
म

प्रबल प्रचंड दनुज कुल भूषन। लिये संग ग्र
नि विविध प्रकारा। चले सु करत मार धर मा
रा। कवच कुदंड बान। धनु पानी। मुदगर मु
ल शक्ति रिपु हानी। खड्ग पास अरि त्रास
बढावन॥ लिये अनेक आयुध मन भा
वन॥ आय समर तिन राम ॥ ९ ॥

प्रचारयो। कोपि कठिन मुख वचन उचारयो।
सुरवीर भट आसुर प्रचंडे। प्रबल प्रतापि धी
र रण मंडे। सोरठा ताल । इन मधीर रघुराय।
देव असुर गण अनुज कहूं। भाषिय वदन
बजाय। सिय पें रहहु सजगग तुम। ६। दोधा
छंद ताल । मैं इन खल दल केरि समर।

रा.
म
5

वल जाय निहारइं। करि वानन पर हार वि

विध परकार प्रचारइं। अस कहि श्री रघुवीर

वृषभि ध्वज सुमरन कीना। जटा मोर हढ वां

धि विक यत्न पानन लीना। कीनसि जव टं

कार प्रथम साव सार सगारा। सुनि रव श्रवण

प्रचंड वपर भयो श्री दल मारा। जव संधान

न बान विकट भग बान विशाला । कीनसि म
चित प्रचंड खंड भ्रमरन सर पाला । लागे खल
दल जाय धराणि भरक्काय पराने । रही सरीर
नदीर वीर व्याकुल अकुलाने । नव खर हष
न देषिव विषत निज सेन सबाही । गरजे म
हिराण सुभट क्रोध दाहन मन माही । प्रभ

रा
भ

पैं विविध प्रकार बान संधान प्रहाक्यो। सो
आवत रघुवीर तरन निज सरन निवाक्यो।
बहु विधि समर लिखाय। प्रबल अस्मरन र
घुराजा। अन्त विदारन कीन अजित जन
सकल समाजा। अस तिन कर हत देखि
देव नभ मन अनकूला। जय जय शबद

उचारि हरषि उर बरषि सफूला। सोरठा। षर

प नाषा नव देषि। षर दूषन कर मरन नहै।

अति बिसमय जिय लेषि। है निरास ब्याकुल

चली।७। चौपाई ताल । रुदन करत रव

न पै आई। बिलपत सकल हतांत सुनाई।

नाथ दंड कारण्य मझारा। षर दूषन बान क्षत।

रा

म

राज कुमारा। आये नृपस भेष धरि दोऊ। प्र
बल प्रचंड सहर रण कोऊ। जीये एक तिन सं॰
ग सहाई। रमा रूप कवि वरनि नजाई। ख
रहषण मम भ्रात पधारे। तास लायवे हेत
सिधारे। तोरे ग्रंथ सुनउ श्रीय भ्राता। सो ति॰
न नृपस समर विख्याता। संजुत ग्रनी २

कीन हृत प्राना। अह लखु भात तपस वलावा
ना। नासिक श्रवण मोर सण छेदी। कानन
वहिर दीन पुनि खेदी। तोरे जियत मोर अप
माना। भयो भात नहिं जात बखाना। अब ज
गजियत मोर भृग भयऊ। का हेन दैव प्राण
हरि लयऊ। दोहा। रोष वका वन वचन १

रा
भ

नही सुनत दनुज पति कान। उठि धावा मा
रीच पें निपट कपट की खान। ८। चौपाई ता
ल ।निज छल ताह सकल समुझावा।
लिये संग दंडक वन आवा। कपट कुरंग ॰
ताह कल कीना। भेष अतिसय आप धरि ली
ना। सोमारीच नीच मृग काना का देखत हगन

पुनि नृप जनका। इत उत करहिं अटन वन मा
हीं। मगन प्रमोद त्रास कछु नाहीं। कहा राम
मन वदन बुझाई। देखहु दीन घाल रघुराई।
सुभत हेम वरन मृग चारु। लिये ओट द्रुम
विपन विहारु। हनहु कृपाल छाल इहिनी
के। मंजुल मडुल मोर ग्रीव जीके। सिय हरे

रा
भ

विमान भान्न कुल भाना। गहिकर चाप वान
संधाना। अन्न जहिं विविध भांति सम काई।
कानन फिरहिं अमर गण भाई। एकल सि
यहिं छाडि वन भवना। जनिनिज करहु ।
आन नव गवना। सोरठा। अस प्रकार रघु
राय। लछन हिं बहु विधि वदन कही ।

९

५

वले प्राश पुनि धाय पाछिल कपट करेंग प्रभु ।२५।
चौपाई नाल प्रग टत उवत विपन म्रग नाई।
हरहिं हर घाल मृगवाई। जब सामीप भये भग
वाना। तरत प्रहार कीन तव वाना। परचो धर
नि प्रभु सायक लागे। कपट भेष निज दीन
हि त्यागे। तब तहि समय श्रेंत बड़वाग। लष

रा
भ

न लावन भाव शवद उचारा। सो रव सुनत सी
ये शकुलाई। कहा लावन मन वदन बुझाई।
शंकट परयो भ्रात तव भारे। लावन लावन र
व वदन उचारे। सपदी जाइ तात तम तारो।
कीन समर्थ तोर प्रभु जाहो ॥ सी
य सुव सुनत वचन श्रहि राई ॥

10

बोले सनहु जननि सब दाई। एकल छाडि
बिपिन इत तोरे। आयस दीन नाहिं प्रभु मोरे।
ताते तजउं नाहिं तोहि माता। तब सिय क
हिस मरम कछु बाता। सोन ब्याल पति स
के सहारी। चले बिपुन प्रभु सरण सिधारी।
तब दस बदन सून गह देखी। आवा हृदय १

रा
म

हरष ग्रव मेखी । दोहा । करि निज कपट
नरेंत सह पंथ गगन थरि जान । हरि लैग
योसि अतिथि वनी सियहिं भ्रमर अभिमा
न ।१०। चौपाई ताल । नव सीय विपथ को
म पथ जाती। रोदन करत परम बिलपाती।
हा पति प्राण लवनहा प्यारे । अस सीय।

करत विकल मन मारे। गगन पंथ नव सुन
ने विलापा। दारुण खेद सूल संतापा। रहा
रहा जटायु भक्त हरि जोई। सीय कहे देखि
विपथ नभ सोई। हृदय विचार करत अनु
माना। इह वर पतति राम भगवाना। लिये
जात पति लंक सुरारी। अति प्रचंड रावण

रा
भ

12

भटि भारी। दसरथ मित्र भक्त रघुराई। सोज
टाउ नभ मारग आई। रोकत भयो दनुज
पथ वीरा। आव जबहिं मन भाव खल धी
रा। करि निन्दा भाव विविध प्रकारा। खे
ग जटाऊ अस वचन उचारा। अहो बात।
विसय अति भारी। उपज ब्रह्म कुल नमड़े

खरारी। कहि प्रलमत कर पौच उजागर। वेद
पुराण कठिन श्रुति नागर। नीति मरम सब
जानन हारा। इह कु करम कम कीनसि भा
रा। लखन राम विन देखि खरारी। हन म
दन सीय जगत महतारी। हरिलै चल्यो उ
चित नहिं कीना। राम प्रताप प्रबल नहीं ॥

रा
म

13

चीना। मल गरह मांक स्वान हवि जैसे ॥
लिये चराय जात तुम तैसे। न्रप वदेह क
न्या सीय माता। चोर चुराय थाय विख्याता।
लिये जाउ तुम मूफ हेकारी। सूफ१
त नाहिं राम दल जारी। अस कहि ना
स हट परचाको ॥ रेमठ कपट ॥१

भेद मति वारयो। सोरठा। आज अमृत जत घा
न। मैं तोरे हनहौं समर। ग्रह भंजन करि जान
दीय कहहे देइंन जानि अब।।११।। चौपाई ताल।
करहु मोहि सन समर लराई। जेतव सर सुभ
ट खलराई। यद्यपि जरा ग्रसत गत प्राना। शा॰
कि मूल आयुध नहिं पाना। सव विपि दीन ॰

रा हीन खग जाती। तदपि लरउं समर यदि
भ भ्राती। सीयहिं जानि नहिं देउं खरारी। रा
म प्रताप प्रबल उरधारी। अस कहि उड्यो ग
गन खग धीरा। हृदय कृपाल सुमरि रघु
बीरा। तहां चरन खल सीस प्रहार्‍यो। का
लित कीट धरनी पर डार्‍यो। गिरे मुकट

तब रावण क्रुद्धा। लागेउ करत गरुड़ सन युद्धा। प
विबान संधान कराला। छाडित भयो दनुज बल
घाला। लागे गरुड़ राज तन जाई। भेदन अंग की
न समदाई। यद्यपि भयो खेद श्रमवाना तदपि ह
दय वीर नहि माना। दारुण कोप करत नभ जाई।
तीव्र समीर वेग अधिकाई। चरण तुंड नख आयु

रा
म
15

य संगा । लग्यो करन भारथ महि रंगा । सोरठा । कीरि प्र
चंड बल वीर । धरनि गिरायो भंजि रथ रावण सुभ
ट रणधीर । देखि अमर विसमय भयो ॥ ११ ॥ भुजंग प्रया
त छंद । कठिन कोप कर सर प्रहारत प्रचंडा । अ
नात फेंक रत स जनु वज्र खंडा । अगिन बान प
धीप अमर रूप प्रहारे ॥ सो करि ॥ १ ॥

क्रोध खग बल सकल सर निवारे। वज्री ल
लेउ निज वज्र गति कोप मारी। भुजा हीन
कीन्यो दनुज प्रबल कारी। जठिर गरुड कर
परम प्राक्रम सुहावा। बिलोकत सकल
लोक कर चकित छावा। रिस्यो दनुज जब
निज भुजा खंड देखी। करी प्रकट नूतन

रा
भ

नरत वल वसोवी। अनल वान संधान यत्न
नव प्रहाखे। दशाय पंख लग हृद करि यत्
न डारखे। सोरठा। चल्यो आपु धुनि धाय।
सीय कहे सिंघन राखि निज। इत विहंग म
रझाय। प्राण कंठ गत विपत मन। ।१३। चौ
पाई नाल । आवहिं कव क्रपाल रघुराई।

16

तिन कहे सकल वृतांत सुनाई। तजहु प्रा
ण अस हृदय विचारहीं। प्रभु आगमन प्रति
स्वास चितारहीं। तव रघुवीर सहित निज
भ्राता। आये विप्र वेष धर त्राता। सो जतन सी
य हिं विपुन दृढ वीरा। सिथल सरीर विकल
गात पीरा। सोरठा। दोहा लखन प्रवीन। वे॰

रा
भ

या चल गिरि शृंग पर। रहइ पंख बल हीन।
मारग परयो अशक्त गती॥४॥ चौपाई ताल ।
सोच विचार करत कर त मन माहीं। कहत
महनऊ प्रभु राम गुसाईं। कौक वेय गति व १
पुव कराला। परयो रोकि मारग जन याला।
निकट ताम जब लखन सियाको। राम १

राम सखा रटत निहारो। जाना राम भक्त इ
हकोऊ। तहिंपैं आय भ्रात चलि दोऊ। जान
अजान निपुण रघुबीरा। पूछन लगे कवन
तव धीरा। इहि थल परयो हेतु कहि भाई।
देहु वृतांत सकल समझाई। घायल प
क्ष हीन अति दीना। अस उरदशा तोर ।

रा

भ

कहि कीना। राम वचन सुनि श्रवणन नीका।

बोला गरुड विघन प्रीति जीका। सोरठा। तुम सै

कवन प्रवीन। एकल कानन फिरउ जग। त

व अनन्त सुख कीन। वरणन सकल वृतान्त

निज। १५। चौपाई ताल । सुनत लखन सुख

वचन सुहावा। परम आनन्द गरुड उर छावा।

बोले नैन थारि उर धीरा। सुन सावख देखि घाल
रघुबीरा। कहा गरुड प्रभुमै वर हीना। पावक बा
ए ग्रसत श्रुति दीना। शाह प्रमाण शक नहिं
गावहे। तद्यपि कछु संक्षेप करि भावहे। ना
म जटाउ गरुड खग जाती गगन पंथ सठ दे
व अराती। रावण सीयहिं जात लिय देखा।

रा
म

रत अभिमान कपट धरि भेखा। विलपत वि
थत विदत डरव भारी। मै कृपाल सोय मात
निहारी। उडत व्योम मख मलहिं प्रचारयो। क
ठन खेच निज नाम पञ्चारयो। सिंथन भंजि २
कीन भुज हीना। परयो धरणि मरवकित खल
दीना। नतन तरत वाड रवि मफा। मारयो २

१९

अनल बान मोहि गृफा। जरे पक्ष तव धरनि
गिराना। सीयहिं लेत सठ गगन उड़ाना। ग
यो लंक कहं धाय सुरारी। मै प्रभु मानि बान
श्रम भारी। परयो विकल मरछित महि मा
हीं। मोरे प्रान डं नाथ सेष नाहीं। चलत वे
र विथत सीय माता। विलपत कहिम वद

न श्रम बाता। प्रभु पें गइ हउ तम कहिऊँ ओहे
रघुवीर मोर हृयि लहिऊँ। इह वृतांत कहे
एण निधि मोरा। धन्य भाग दरसन प्रभु तो
रा। दुरलभ संत दरसन मुनि जोई। सो कहँ आ
ज सुलभ भयो सोई। अब कृपाल निज किं
कर जानी। मन भावे रहऊ मोर धन पानी॥

सोरठा। देखत दरस तुमार। नाथ तजउं नि
ज प्राणमै। तव मोहि सकल प्रकार। होहिं
कुशल संशय नहीं।इति रागिनी सैंधवी
भक्तिमाल परिछेद:॥ ॥ ॥

अथ रागिनी मधु माधवी भक्तिमाल परिछेद ।

मार चौपाई ताल रूपक । वहिर ग्राम पडे चौजं

व आई । एक सजन मोहि कहा बुझाई । विप्र

अजामिल कर तव थामा । करइ जाय जामनि

विश्रामा । सुनत तास मात विप्र बडाई । क

रि विहार विविध जोई गाई । नवमे ईरा गवन

रा
म

करिग्राया। सोइज कहो संत साव दाया। स
नि मति वचन निपुन चिय जोई। सादिर प्रीति
प्रसन्न मन होई। मानिहं निज भवन देत नि
वासा। वदन वनीत वचन प्रम भासा। इज
पोर्ह समय संत गृह नाहीं। आवसि जवहिं
भवन निज माहीं॥ सादिर वंदि चरन

२स २नि २प २म २रे २म २प २नि २स २नि २प २म २रे २म

नवसेवा। सब विधि करहिं सनइ महि देवा।

२म २प २नि २स २रे २रे २स २नि २प २म २रे २म २प २नि

सैसेदेत मुनिहिं तहं वासा। करत मदन दी

२स २नि २प २म २रे २म २म २प २नि २स २रे २स २नि

पादि प्रकासा। चाहु प्रभाव लाय पुनि दीः

२प २म २रे २म २प २नि २स २नि २प २म २रे २म २म २प २नि

ना हे कर जक विनति अस कीना। इह समी

२स २रे २स २नि २प २म २रे २म २प २नि २स २नि

प रूप मुनि राया। पावन अमल सलिल स

२प २म २रे २म २म २प २नि २स २रे २स २स २नि २प २म २रे

म छाया। पाव आदि प्रभु मे सब देवहु। आगु

ग
भ

निकारि कोरि न्हव लेवहू। मैं न्हव अवन योग्य
न स्याय्। तुम हू कृपाल मोर अपनाय्। अति
न नाति अधम अति रेका। नहिते कौन ना।
थमैं सेका। सुनि अस वचन तास मनिरा
या। भये प्रसन्न हाथ उरलाया। बहुरि सदा।
न स्राव सेवत होई॥ लेपन ललित।

कृत्य निज जोई। स्वछताई जन सो सव कीना।
तव वनाय भोजन मनि लीना। प्रथम हरिहिं
नैवेद सुहावा। सादिर प्रीति भक्ति जन लावा।
सोरठा ताल । वहुरि कीन तहि आपु भोजन
न परम प्रसन्न मन॥ पनि हरि स्वम संतापु भयो
सयनरत मगन होव।३। चौपई ताल । विन

रा
भ

सी तहं अर्थ निसि जवहीं। वाकहीं मत्र विथि
त मन जवहीं। आव अजामिल निज गृह माहीं।
लोभ मोच मानस कछु नाहीं। वेस्या नास
मत मद चीना। त्वरत प्रवीन पानि गहि ली
ना। जाय भवन निज सयन करावा। भयो प्रा
त जब रैन बिहावा। जागा तब मनीस बर ज्ञानी।

राम राम पावन मुख बानी। बरयन समर्थ द्वार

डग आई। कह्यो अजामिल वदन अलाई। सुत

नि रव श्रवण अधम द्विज जोई। पूछन लग्यो

तियहि निज सोई। इह अस कवन ठाड मम

द्वारा। नव हतोंत तिय वर निस सारा। कहि

स वडरि तव चरन मनीसा। नंम्रत विनय य

रा
म

रनि धरि सीसा। जाय प्रणाम करउ कछु से
वा। तव प्रसन्न मानस मुनि देवा। सोरठा
नाल । देव तुमहिं वरदान। कबहुँ कि मन
ऊ प्रवीन पती। तव मांगउ जनि ज्ञान। वि
न मोरे उपजत स्रवन। ५। चौपाई नाल
। प्रमदा वचन सुनत दृग दीना ॥

मुनिपैं आय दंड वत कीना। सनमुख ठाड जो
रि जुग पानी। बोले तब मुनीस वर ज्ञानी।
परम प्रसन्न जानि नृप मोही। मांगहु विप्र दे
उं वर तोही। देखि प्रजा मिल मुनिहिं कृपाला।
नाय सीस पद वचन रसाला। कहिस सुनहु
भगवन हितकारी। सब विधि करुणा नाथ

रा
भ

नमारी। पुनि संतान रहित नव दीना। जो
हु पाल करुणा निज कीना। तो प्रभु देहु
रुचिर वर पहा। देखिहु पुत्र नैन भरि नेहा।
सुनि अस वचन तास मुनि राया ॥ वो
ले एव मस्त कारि दाया ॥ होईहें ॥ ह
वन सभ गरह तोरे ॥ जानडु ॥

सत्य वचन इज मोरे। शवड़ देवि भनि दिवस
पवित्रा। नारायण नरहिनाम वि वित्रा। अस
वर देत मंत्र मुनि गवना। ईंद्रां अज्ञा मिल आ
पन भवना। आ वा परम हर्ष उर छायो। जीय
कहे सकल वृतांत सुनायो। सोरठा ताल।
सुनि अस वचन सुहाव। उपजा हरष प्रसन्न

रा
म
6

मन। तव कछु काल बिहावा। भई गरभ व
ति सो जीये। ५। चौपाई नाल । बीत्यौं दस
म मास जब आई। सरव ग्रेग सुन्दर अधि
काई। जन्म्यो पुत्र परम सुख दाता। अम
दिन भई देखि हग माता। जानि चाहत वर
दिवस सुहावा। नारायण नहि नाम रखावा समय

सोई वाला। भयो तरुण वर रूप रसाला। तव
नहि जनक आज्ञा मिल सोई। निरवल सिष
अंग सव होई। भयो खेत कच हड सयाना।
तदपि तास मोम मद पाना। त्याग्यो नाहिं क
छु वल हीना। भयो रोग वस आरत दीना।
पर्यो रहत निज भव न मझारा। ते स्वसील

रा
भ

जीय विविध प्रकारा। सेवा करहिं सदन महँ ले
ठानी। सत जीय धरम करम मन बानी। थै
से नव कछु काल बिहावा। मत्स समय ज
ठिर निज रावा धरम राज तब कहा बुलाई।
विकट। हत निज निकट बुलाई।
अन्तर वेदि नगर मध जोई ॥

कान कुबज संत द्विज सोई । निरदत स्वपच अ
जामिल नामा । सव विधि भेद अधम अग या
मा । कठिन पास मन नाहि बंधाई । ढंग भीत
विधि विविध दिखाई । सोरठा ताल । नत न
ए डारहु जाय । कठिन घोर श्रुति नरकमय ।
मनभाव होनन पाय । मोरे सो पापी प्रबल ।९

रा
भ

चौपाई नाल । परम राज ग्रन्थ मासन पाई।
कोप रूप चले सिपाई। चंड पास आरुप क
र पालो। भीम भेष किमि जाय निहालो।
दीरघ दसन ग्रहन हगभारी। आये नीव वे
ग जन्त पारी। देखा प लो ग्रजा मिल भव
ना। नव जम हृत पास निज जवना।

कोपि नाम जव गीव प्रहारी। मानत भयो त्रास उर भारी। कंपत गात विथत मन दीना। हृदय समर्पण प्रेत निज कीना। कर ऊ नात रहा पहि काला। भ्रम देखत करि खावर विसाला। नारा यण नहि नाम सु हावा। विविध वार उज वदन अलावा ॥

रा
भ

सोरठा ताल । सो भगवन ग्रसनाम रङ्गो १
नाम वङ्कवार जव । तब सुन्दर वल याम । वि
स हत तत लाए उठे । १ । चौपाई । ताल ।
संख चक्र भूषित वन माला । चले पवन य
रि वेग विसाला । आये तहां देखि जम हता ।
अति विकाल रूप भय भूता । तब हरि हत

तिनहिं त्रिस कारा। बार बार अस बदन उचारा।
करहुं जम लोक पयाना। इहि कहुं हम बै
कुंठ पठाना। हनि त्रिस कार हत जम बैना।
कोपे परम अरुण करि नैना भई परस्पर क
ठिन लराई। बैसव हत अन्न बर पाई। निद
रत बिनहिं अरुढ बिमाना। ताहि कराय।

रा
म

10

कीन निज ध्याना। आय लेत वै क्रोड मझारा।
करि पवित्र कौतक अस भाषा। तव जम दूत
निरादर पाई। अंग हीन निज चले पराई॥
रोदन करत धरम नृप पासा। आ
य वृतान्त सकल सव भासा॥
सोरठा ताल॥ पदहो विनडं॥

विचार। चित्र गुप्त तुम हमहुं महीं। तब अ
पमान हमार। होईहैं विविध प्रकार तहें।
८। चौपाई ताल । आयस पाय नाथ हम
जबहीं। पहुंचे भवन अजामल तबहीं।
कठिन पास सन ताहु बंधावा। आय हुत
हरि तुरत छुडावा। यद्यपि युद्ध परस्पर भ

रा
भ

40 //

यउ। तद्यपि प्रबल हत हारि रहे औ छिन्न
भिन्न करि अंग हमारे। लेत ता सु वैकुंठ
सिधारे मानि तिन वचन यथम नृप जोई।
चिंतन हृदय रोख वस होई। चित्र गुप्त १
कहं लीनसि टेर्यो। करम। क्रतव्य ग्रजा
मिल केह्यो। पुन्य पाप जम शंकित भयउ।

देवन विन गपत ग्रस कहेउौ। भवनें ग्रादि।
मरण लग ताह्। कीनना पुन्य करम सभ
काह्। भीम दंड जव जमन निहाझो। मान
त भयो त्रास उर भाझो। ह्वै व्याउल निज सु
तहिं बुलावा। नारायण जाहि नाम सुहावा।
नाहिन कछू जगधीस विनाझो। उज कैव

रा
म

लनिज सुतहि उछाहा। ते भ्रम मानि हतउ
हि धाये। गये तासु बैकुंठ लिवाये। चित्र
गुपत भाव गिरा सुहाई विस बस श्रवण सुन
त जम राई। लिये हत निज संग सिधारा।
हरि समीप बैकुंठ अगारा। नारायण कहं दे
उ प्रणामा। जाय कीन नोरित जग पाना।

12

कहा हत जम नम सरगाया। कीउ लेचन मोर र
गाया। दोहा नाल । विप्र अजामिल रह्यो ज
ग महां उरत रत याल। नाम्ह लायवे हेतमे
पठे हत विक्काल। २१। चौपाई नाल ।ताहि का
ल हतन प्रभ्भ आई। कीन तिनउं सन विविय
लगाई। अन्त लेत वैकुंठ मफारा। मोहि नदेस

रा
म
1.3

अब कवन उदारा। हानि अस धरम राज सब गा
या सखि समरह प्रभु चित्र वन नाया। सिमित
हास जुत वचन मृदुला। मंजुल मधुर प्रीति
जन मूला। बोले ललित वदन भगवाना।
धरम राज तव सत्य बखाना। इह प्रति नि
रत किलष अपराधू॥ पे पावन ॥

मम नाम अगाधू। तहितें मोर हत उज नाघू।
लाय दीन बैकुंठ निवासू। अब न्रप धरम १
हनउ मम बैना। जहितें मनुज परम अगाधे
ना। सकहिं न कठिन देउ तब पाई। सोअ १
भाव मम नाम कहाई। सोरठा। अस सेतत
मम नाम। अरु देवी महा देव कर। यद्यपि १

रा
म

जन अग धाम। सुमरहिं तिहि कर निजइ॥ नम।१०। चौपाई नाल । ते जन देइ योग्य नव नाहीं। वसहिं भक्त मो रे मन माहीं। मोर सुमरण करत नित जोई। तजिहैं काय काम ग त होई। अरु जोई सदा देव हरि तीरा। करहिं निवास सुचिर मति धीरा। त्यागहिं तहां मेज

निज काया। सो ग्रर पंग मोर जम राया॥ग्रस ने

होहिं निरत मम सेवा। पूजन जोग देवि ग्र

ह देवा। तव जम राज सुनत हरि वानी। सु

चि उप देस सुखद हित मानी। ग्रेगी कार की

न सुद मानी। करत प्रणाम जोरि जुग पानी।

जमन सहित निज लोक सिधाये। ग्राये

रा
भ

15

भवन हरष उरछाये। दीन याल उपदेस सु
हावा। निज हतन कहं वदन सिखावा। सि
र धरि हरि नदेस जम राजा। भयो निरंत नर
त निज काजा। दोहा ताल । इह चरित्र का
ल अजामिल भक्ति महातम जोय। ललि
त नाम सामर्थ जत संत सविद भव सोय। ताहि

र इहि कहे प्रेम ज्ञत जेनर श्रवण करंत। है

क नेनग पाव ही मेज्ञ भक्ति भगवंत।११।

गगिनी मधु माधवी जटाऊ चरित्रे चौपाई

ताल । नाथ सीस गुरु पद अनुरागो। ना

भा दास कथन सब लागो।नाथ ग्रंजा मिल

चरित सुहावा। जहि प्रकार मोरे मन भावा।

रा
म
16

सो सादर निज मति अनुसारा कीन कथन मैं दीन उचारा। अब जटाक वर कथा पुनीती। वरणन करहुं याल जत प्रीती। सुनहु स्रवण अदभुत मन भाई। मंगल करन भक्त सुखदाई। अवध नाथ दसरथ नृप नामा। रघुकुल प्रवर तेज॥ बल धामा॥ १

गो द्विज त्रात त्रात जग सारी। महो प्रताप॥ उदित उपकारी। जेहु पुत्र जहि राम सुहाये हरि अवतार वेद जग गाये। राजः अभिषेक देत तहि घाला। कीन आरंभ जबहिं महिपाला। मिं थ्रा नाम तबहिं अग गामी। रही एक कयकै कर दासी। कुबरी कुटिल मंद म॥

रा
भ

ति हीना। अन हित मंत्र जास नहि दीना।
सो सोंति श्रवण भवन अग रानी। संतत
हृदय रुधिर हित मानी। दोहा नाल ।
राम राज अव षेकतें दसरथ नृप कहे १
सोय। भई निवारन करत जफ हृदय वज्र
गति होय।१। चौपाई नाल ।याती गाव जन वरदा

17

ना सो मांगउं अब नृपति सुजाना। संजुत प त
ति राम ब्रत धारी। विचरहिं विपुन वर्ष दस
चारी। राज अभिषेक भरत कहं होई। इह कृपा
ल मागउं वर दोई। वक्र उक्ति भव धनु समा
ना। वचन कठोर विसिक जनु वाना। होत
हिं मचित नृपति उर लागे। मुरछित परयो

रा
भ

धरनि सुधि त्यागे। तब प्रभु राम धाम गुण सा
ना। संज्ञत प्रेम प्रीति सन माना। सावधान
करि पितहिं बिठारा। कहि मृदु बचन विवि
य परकारा। नाथ धरहु धीरज जिय माहीं। ग्र
न हित जननि कहिस कछु नाहीं। कानन
विहरि बरष दस चारउ ॥ बहुरि ॥

88

आय प्रभु दरस निहारऊं । अस कहि राम च
रन जल तरना लोचन जलज स्याम घन
वरना । जनक परम संतत प्रतिपाला । हर
नर संत सखद जन याला । सीये लख नम्र
न मदित महाना । कौन देउ कारण पया
ना । सोरठा ताल । तहां जाय रघुवीर । प्र

रा
म

वल विकट यन्न जातगण। कौन समर वय
धीर। निज भुज दंड प्रचंड वल।२। चौपाई ता
ल ।समय एक दंडक वन आई। गोथा वरि
समीप रघुराई। पंच वटीमै अग जग ज्ञा
ता। राजे सीये सहित निज भ्राता।
तहां सुपच दन्न जन जल दयनी। रही

69

जवन खर हन भगानी नाम प्रसिद्ध स्वरूप न
ख जासा। विकट रूप निज नाम प्रकासा।
धरि हरि भीम भेष सठ भारी। लीनसि छवि
र रूप निज धारी। आय राम तहि हगन नि॰
हारयो। जहिपर कोटि मदन छवि वारयो।
नेमन्त वदन मनन भ्रमसलागी। संजन प्रीति

रा
भ
२०

रीति अनुरागी। असो नाथ मोहि मंमन॰
पीडा। तम मन चाहुं रमन रति क्रीडा। करुए
करि कृपाल मोहि वरहो। किंकरि चरन चारु
निज करहो। तव सरूप सथन दृग देखी। नि
ज पहि वात सफल जग लेखी। हंसि र
घु नाथ नाम सब वानी। बोले वचन ॰

ह्रट रस सानी। मै सपतनि मे जल ममवी
रा। सोनिसीक सुनद्ध मति धीरा। तहिपैं
जाइ वेग तम भामा। पुर वहिं सो नमार म
न कामा। दन्न जंनि सुनत वचन सुराई।
हरषत हृदय लषनपैं आई।। सोरठा ताल
। कहिस मनोरथ जोय। तिन आपत

रा
भ

प्रमुदित हृदय। लषन श्रवण हनि सो
य विहसि बोले मव वचन प्रस ।। ३ ।।
इति रागिनी मधुमाधवी भक्ति माल प
रि छेदः ।। ।। ।। ।।

५

ल मन भाए। सुनि नृप जासु बिमुख पछुताहीं। जासु
भजन बिनु जरनि न जाहीं। भए तुम्हार तनय सोइ स्वा
मी। रामु पुनीत प्रेम अनुगामी॥ दोहा॥ बेगि बिल
म्ब न करिअ नृप साजिअ सबै समाज। सुदिन सुमंग
ल तबहि जब रामु होहिं जुवराज।५। चौपाई॥ मुदित
महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत बुलाए॥

रा॰ग्र॰
रा॰

कहि जय जीव सीस तिन्ह नाए। भूप सुमंगल बचन सु

नाए। प्रमुदित मोहि कहेउ गुरु आजू। रामहि राज देहु

जुबराजू। जौं पाँचहि मत लागै नीका। करहु हरषि

हियँ रामहि टीका। मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी॥

अभिमत बिरवँ परेउ जनु पानी। बिनती सचिव कर

हि कर जोरी। जिअहु जगतपति बरष करोरी। जग मं

रा॰
५२

ग मल भल काज विचारा । वेगहि नाथन लाइये वारा ॥
नृपहि मोद सुनि सचिव सुभाषा । वढ़त विटप जनु ल
ही सु शाषा ॥ दोहा ॥ कहहि भूप मुनिराज कर जो जो आ
य सु होइ । राम राज अभिषेक हित वेगि करहु सोइ सो
इ ॥ ६ ॥ चौपई ॥ हरषि मुनीश कहेउ मृदु वाणी । आन
हु सकल सु तीर्थ पानी । औषधि मूल फूल फल पाना ।

करहि नाम नाणि मंगल नाना। चामर चर्मबसन बहु
भांती। रोम पाट पट अगणित जाती। मणि गण मं
गल वस्तु अनेका। जो जग जोग भूप अभिषेका॥
वेद विहित कहि सकल विधाना। कहेउ रचहु पुर वि
विध विताना। सकल रसाल पूगफल केरा। रोपहु
वीथीन पुर चहु फेरा। रचहु मंजु मणि चौंके चारु॥

करहु बनावन बेगि जाहू। पूजहु गणपति गुर
कुलदेवा। सब बिधि करहु भूमिसुर सेवा। दोहा
ध्वज पताक तोरण कलश सजहु तुरग रथ नाग॥
सिर धरि मुनि वर वचन सब निज निज काजहिं
लाग॥ चौपई॥ सुनि सुमंत्र मन अति हरषाना।
जीवन जन्म सफल करि माना। जहँ तहँ धावन

रा॰ त्र॰ रा॰

24

कोटि प्रताप। मंगल द्रव्य सकल लै आप। कनक कल
श साजि धौरे द्वारे। गज रथ तुरग अनेक सवारे। बंदेवि
धि बांधे वचन वारा। धज पताक मणि बसन अपारा॥
वना नगर नहि वरणि जाई। सकल लोक सोभा परछा
ई॥ नैरस्यानकतेपकहै॥ चौपई॥ जेहिं मनी षाजो आ
यस दीक्षा। भोजन काज प्रथम नेर कीक्षा॥ विप्र सा

भु सब सुजन राजा। करत राम हित मंगल काजा। सु
नत राम अभिषेक सुहावा॥ बाजे गहगहे अवध बधा
वा। राम सीय तन सगुन जनाए। फरकहिं मंगल
अंग सुहाए। पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं। भरत आ
गमन सूचक अहहीं। भए बहुत दिन अति अवसेरी।
सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी। भरत सरिस प्रियको

रा॰ अ॰
रा॰

25

जगमाहीं। यहै मगण फल हमरे नाहीं॥ रामकहि सो
च बेध दिनराती। भ्रेइनि कमठ हृदय जेहि भांती॥ दो
हा॥ इहि अवसर मंगल परम सुनि रहसेउ रनिवास।
शोभित लखि बिधु बढ़त जनु बारिधि बीचि बिलास।
८॥ चौपाई॥ प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाए। भूष
ण बसन भूरि तिन्ह पाए। प्रेम पुलक तन मन अनु

रागी। मंगल साज सजन सब लागी। चौकें चारु सुमि
त्रा पूरे। मनि मय विविध भाँति अति रूरे॥ आनंद म
गन राम महतारी। दिए दान बहु विप्र हँकारी॥ पूजे
ग्राम देव सुर नागा। कहे उ बहोरि देन वलि भागा॥
जेहि विधि होइ राम कल्याना। देहु दया करि सो वरदा
ना॥ गावहिं मंगल कोकिल वयनी। विधु वदनी मृग

रा॰ग्र॰
रा॰

पावक नयनी। दोहा। राम राज अभिषेक सुनि हिय हरषे नरनारि। लगीं सुमंगल सजन सब बिधि अनुकूल बिचारि। ९। चौपाई॥ तब नरनाह बसिष्ठ बुलाये॥ राम धाम सिख देन पठाये। गुरु आगमन सुनत रघुनाथा। द्वार आइ नायेउ पद माथा। सादर अर्घ देइ घर आने। षोडश भांति पूजि सनमाने। गहे चरण सिय

20

ग
२६

सहित बहोरी। बोले राम कमल कर जोरी। सेवक सद
न स्वामि आगमनू। मंगल मूल अमंगल दमनू॥
तदपि उचित जनु बोलि सप्रीती। पठइय नाथ काज
असि नीती। प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू। भयउ पु
नीत आजु मैं गेहू। आयसु होइ सो करौं गोसाईं।
सेवकु लहै स्वामि सेवकाई॥ दोहा॥ सुनि सनेह सा

कै बचन मुनि रघुबरहिं प्रशंश। राम कस न तुम कहहु अस हंस बंस अवतंस ॥९॥ चौपाई॥ बरनि राम गुन सील सुभाऊ। बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ। भूप सजेउ अभिषेक समाजू। चाहत देन तुमहिं जुबराजू। राम करहु सब संयम आजू॥ जौं बिधि कुशल निबाहै काजू। गुरु सिख देइ राउ पहिं गयऊ। राम हृदय जनु बिसमय

भयऊ । जनमे एक संग सब भाई ॥ भोजन शयन के
लि लरिकाई । करनि बेध उपवीत बिवाहा । संग संग सब
भयउ उछाहा ॥ बिमल बंश यह अनुचित एकु । बंधु
बिहाइ बडेहि अभिषेकू । प्रभु सप्रेम पछितानि सु
हाई । हरहिं भक्त मन की कुटिलाई ॥ दोहा ॥ तेहि
अवसर आए लषण मगन प्रेम आनंद । सनमाने

प्रियबचनकहि रबि कुलकैरवचंद ॥ ९ ॥ चौपई ॥ बा
जहिं बाजन बिबिध बिधाना। पुर प्रमोद नहिं जाइ बखा
ना। भरत आगमन सकल मनावहिं। आवहिं बेगि
नयन फल पावहिं। हाटबाट घरगली अथाईं। कह
हिं परस्पर लोक लुगाई। कालि लगन भलि केतिक
बारा। पूजहिं बिधि अभिलाष हमारा। कनक सिंहा

सन सीय समेता। बैठहिं राम होइ चित चेता॥ सकल

कहहिं कब होइहि काली। बिघन मनावहिं देव कुचा

ली। तिन्हहि सोहाइ न अवध बधावा। चोरहि चांदनि

राति न भावा। सारद बोलि बिनय सुर करहीं। बार

हिं बार पाय लै परहीं॥ दोहा॥ बिपति हमारि बिलो

कि बडि मातु करिअ सोइ आजु। रामु जाहिं बन राज

रा.
अ.रा.

तजि होइ सकल सुर काजू ॥ १२॥ चौपाई ॥ सुनि सुर बि
नय ठाढ़ि पछितानी । भई उ सरोज बिपिन हिमरानी
देखि देव पुनि कहहिं निहोरी । मातु तोहि नहिं थोरिउ
खोरी । बिसमय हरष रहित रघुराऊ । तुम जानहु सब रा
म प्रभाऊ । जीव कर्म्म बस सुख दुख भागी । जाइय अ
वध देव हित लागी । बार बार गहि चरन सकोची ॥

29

चली विचारि विबुध मति पोची। ऊंच निवास नीच
करतूती। देखि न सकहिं पराइ विभूती। आगि
ल काज विचारि बहोरी। करिहहिं चाह कुशल कवि
मोरी। हरषि हृदय दसरथ पुर आई। जनु ग्रह दसा
दुसह दुखदाई। दोहा।। नाम मन्थरा मन्दमति चे
री कैकयि केरि। अयश पिटारी ताहि करि गई गि

रामहि फेरी ॥१३॥ चौपई ॥ देखि मन्थरा नगर बना
वा ॥ मंगल मंजल बाज बधावा । पूछेसि लोगन्ह
काहु उछाहू । राम तिलक सुनि भा उर दाहू ॥ करै
बिचारु कुबुद्धि कुजाती । होइ अकाजु कवनि बिधि
राती । देखि लागि मधु कुटिल किराती । जिमि
गव तकै लेउ केहि भांती । भरत मातु पहिं गइ बि

ल खानी। का अनमनी हँसि कह हँसि रानी। उतर
देइ न लेइ उसासू। नारि चरित करि ढारति आँसू।
हँसि कह रानि गाल बड तोरें। दीन्ह लषण सिष अस
मन मोरें। तबहुँ न बोलि चेरि बडि पापिनी। छाडै
स्वास कारि जनु सांपिनी॥ दोहा॥ सभय रानि क
ह कहसि किन। कुशल राम महिपाल॥ भरत लष

रा॰ग्र॰
गं॰

गरिष्ठ दवनहनि भाजुवरीउरषा ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ कन
शिखदे इन्ह महिं कोइ माई। गाल करब कहि करबल
पाई। रामहिं छाडि कुशल केहि ग्राजू। जानिनरेश
देन युवराजू। भाकी शालपहिं विधि अति दाहिन ॥
देखत गर्व रहत उरनाहिन। देखउ कसन जाइसव
शोभा। जो अवलो किमोरमन लोभा। सुन विदेषा

३१

रा॰
३१

न शोच तुम्हारे। जानति हौं वश नाह हमारे। नींद ब
हुत प्रियसे जतुराई। लषहु न भूप कपट चतुराई। सु
नि प्रिय वचन कुटिल मन जानी। कुकि कुवरी मन
कहु अरगानी। पुनि अस कवहुँ कहसि घरफोरी॥
तौ धरि जीभ कढावौं तोरी॥ दोहा॥ काने खोरे कू
वरे कुटिल कुचाली जानि। तिय विशेष पुनि चेरि क

रा॰अ॰
रा॰
32

हि भरत मात सम सकानि। १५॥ चौपई॥ प्रियवादिनि
सिख दीन्हेउँ तोही। सपनेहुँ तो पर कोप न मोही। सु
दिन सुमंगल दायक सोई। तोर कहा फुर जिहिं दिन
होई। जेठ स्वामि सेवक लघु भाई। यह दिनकर कुल
रीति सुहाई। राम तिलक जौं साँचेहुं काली। मंगदेउं
मन भावत आली। कौशल्या सम सब महतारी॥

रामहिं सहज सुभाव पियारी ॥ मोपर करहिं सनेह
विशेषी । मैं करि प्रीति परीक्षा देखी । जौं विधि जन्म
देइ करि छोहू । होहिं राम सिय पूत पतोहू । प्राणतें
अधिक राम प्रिय मोरे । तिनके तिलक छोभ कस तोरे ·
दोहा ॥ भरत शपथ तोहि सत्य कहु परिहरि कपट
दुराव । हर्ष समय विस्मय करसि कारण मोहि सुनाव

रा॰गु॰
रा॰

३३

नाव।९॥ चौपाई॥ एकहिंवार आशमसवहजी॥
सव करुकर वजीभकरिहजी। फोरे योगकवार
सभागा। भलोकरहन उरवैगैरे ऊंलागा। कहरउ
डकरवात वनाई। तेश्रिय नमहिंकरमौंभाई॥
हमऊकरहव श्रवहकर सोहानी। नाहिनमोनरह
वदिनरानी। करिकहप विधिपरवशाकीन्हा।वो

वासो लनिय लहिय जो दीन्हा। कोउ न्रप होउ हमैं का

हानी। चेरी छांडि न होउ ब रानी। जारइ जोग सुभा

व हमारा। अनभल देखि न जाइ तुम्हारा। तातैं क

छुक बात अनुसारी। छमब देबि बडि चूक हमारी॥

दोहा॥ गूढ कपट प्रिय बचन सुनि तीय अधरबु

धि रानि। सुरमाया बश बैरिनिहिं सुहृद जानि पति

रा.अ.
रा.

आनि।।१६।। चौपाई।। सादर पुनि पुनि पूछति ओही।
शवरी गान मृगी जनु मोही। तस मति फिरी रहै ज
स भावी। रहसि चेरि घात भलि फावी। तुम पूछहु मैं
कहत डेराऊं। धरेहु मोर घरफोरी नाऊं।। सजि प्रती
ति बहु विधि गढि छोली। अवध साढसाती तब
बोली। प्रिय सिय राम कहा तुम रानी। रामहि तुम

विषमो जरवानी । रह्माञयम दिनमो खववीने । सम
य पाइरिव होरिहिं पिरीने । भानु कमल जल पोषनि
हारा । विनजल जारि करै सोइ तारा । जरिनह्मारि
चहु मवति उखारी । हृयङ्करि उपाइ वरवारी ॥
इति रागिनी ज्ञणकली रामायण परिच्छेद: ॥
समाप्त: ॥ ॥ ॥

ग॰सु॰
ग॰

35

71

ग॰
३५

मकरनहाये। सबमस आश्रमनिसिधाये। याज्ञबल्क

मुनि परम विवेकी। भारद्वाज राखेउपदटेकी। सादर

चरणसरोजपखारे। अतिपुनीत आसन बैठारे। करि

पूजामुनि सु यश बखानी। बोलेअति पुनीत मृदुबानी।

नाथएक संशय बड़मोरे। करतल वेदतत्व सब तोरे।

रा॰ रा॰स॰

कहतमोहि लागत भयलाजा। जोनकहौं बउहोइ अका
जा॥ दोहा॥ संतकहहि असनीतिप्रभु श्रुतिपुराणजो
गाव। होइन विमल विवेकउर गुरुसन किये दुराव॥
चौपई॥ असविचारि प्रगटौ निजमोहू। हरहुनाथ करि
जनपर छोहू। रामनामकर अमित प्रभावा। संतपुराण

६५

६४

उपनिषदगावा। संतत जपत शंभु अविनाशी। शिवभ
गवान ज्ञान गुणराशी। आकर चारि जीव जग अहहीं
कासीमरत परम पदलहहीं। सोपि राम महिमा मुनि
राया। शिवउपदेश करत करिदाया। राम कवन प्रभु
पूछौंतोहीं। कहहुबुझाइ कृपानिधिमोही। एकराम ९

रा॰
रा॰म

अवधेशकुमारा। तिनकर चरित विदित संसारा। नारि विरह दुखलहेउ अपारा। भयेउरोषरण रावणमारा।

दोहा॥ प्रभुसोइ रामकि अपरकोउ जाहि जपत त्रिपुरारि। सत्यधाम सर्वज्ञतुम कहहु विवेक विचारि॥

चौपई॥ जैसेमिटै मोरभ्रमभारी। कहहुसो कथानाथ।

6S

६५

बिस्तारी। याज्ञवल्क बोले मुसुकाई। तुमहि बिदित र
घुपति प्रभुताई। रामभक्त तुममन करवानी। चतुराई
तुम्हारि मैं जानी। चाहहु सुनै रामगुण गूढा। कीन्हेउ
प्रश्न मनहु अति मूढा। तात सुनहु सादर मनलाई।
कहहु रामकी कथा सुहाई। महामोह महिषेश बि

रा॰
रा॰म

षाला। रामकथा कालिका कराला। रामकथा शशिकि
रण समाना। संतचकोर करहिं तेहिपाना। ऐसेसंशयकी
न्हभवानी। महादेव तव कहा बखानी॥ दोहा॥ कहौंसो
मति अनुहारिअव उमाशंभु संवाद। भयउ समयजेहि
हेतजेहि सुनिमुनि मिटहि विषाद॥ चौपई॥ एकवार

66

५५

त्रेतायुगमांही। शंभुगयेकुंभज ऋषिपाहीं। संगसती

जगजननि भवानी। पूजेऋषि अखिलेश्वरजानी। राम

कथामुनि वर्यवखानी। सुनीमहेश परमसुखमानी।

ऋषिपूछा हरिभक्ति सुहाई। कहीशंभु अधिकारीपाई।

कहतसुनत रघुपति गुणगाथा। कछुदिन तहांरहे

रा.
रा.स.

गिरिनाथा। मुनिमनविदा मांगिपुरारी। चलेभवन सं
गदक्ष कुमारी। तेहि अवसर भंजन महिभारा। हरिर
घुवंशलीन्ह अवतारा। पिता वचन तजिराजउदासी॥
दंडक वन विचरत अविनाशी॥ दोहा॥ हृदयविचारत
जात हर केहिविधि दरशन होइ। गुप्तरूप अवतरेउप्रभु

८७

९७

गयेजानसबकोई ॥ सो॰ ॥ शंकरउर अतिछोभ सतीन

जानहि मर्मसोई । तुलसीदरशन लोभ मनउर लोच

नलालची ॥ चौपई ॥ रावणमरणमनुज करनाचा । प्र

भुविधि वचन कीन्ह वहसांचा । जोंनहिजाउंरहै पछ

ताबा । करत विचार नवन नवनाबा । इहिविधिभये

रा॰

रा॰स

शोचवशाईशा। ताहीसमयजाइ दशसीसा। लीन्हनीच
मारीचहि संगा। भयउ तुरत सोइ कपटकुरंगा। करि
छल मूढ हरीवैदेही। प्रभुप्रतापउर विदितननतेही॥
मृगवधि बंधु सहित हरिआये। आश्रम देखि नयन
जलछाये। विरह विकल नरइव रघुराई। खोजत वि

68

चितै फिरत दोउ भाई। कबहु योग वियोग न जाके। दे

खा प्रगट विरहु दुख ताके॥ दोहा॥ अति विचित्र रघुप

ति चरित जानहिं परम सुजान। जे मति मंद विमोह बस

हृदय धरहि कछु आन॥ चौपई॥ शंभु समय तेहि राम

हि देषा। उपजा अति हिय हर्ष विशेषा। भरि लोचन छ

रा॰ विसिंधु निहारी। कुसमयजानिन कीन्ह विन्हारी। जयस
रा॰म॰ चिदानंद जगपावन। असकहि चलेमनो जनसावन। च
लेजात शिव सती समेता। पुनिपुनिपुल किन कृपानिके
ता। सतीसो दशा शंभुकीदेषी। उरउपजासंदेहविशेषी॥
शंकरजगत वंद्यजगदीसा। सुरनर मुनिसव नावतसी

65

६५

सा। तिनन्नृप सुतन्हि कीन्ह परनामा। कहि सच्चिदानंद

परधामा। भये मगन छवि तासु बिलोकी। अजहु प्रीति

उर रहत न रोकी॥ दोहा॥ ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अ

कुल अनीह अभेद। सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जान

न बेद॥ चौपई॥ बिष्णु जो सुर हित नर तनु धारी। सोउ स

रा॰
रा॰म॰

र्वज्ञ यथा त्रिपुरारी। खोजनसो कि अज्ञइव नारी। ज्ञान
धाम श्रीपति असुरारी। शंभुगिरा पुनि मृषान होई।
शिवसर्वज्ञ जानसबकोई। अससंशय मनभयउ अपा
रा। होइन हृदय प्रबोध प्रचारा। यद्यपि प्रगटन कहेउ
भवानी। हरअंतरजामी सबजानी। सबहुसती नव ॰

70

नारिसुभाऊ। संशय असन धरियउरकाऊ। जासुकथा
कुम्भज ऋषिगाई। भक्तिजासुमैं मुनिहि सुनाई। सोइ
ममइष्ट देवरघुवीरा। सेवतजाहि सदामुनिधीरा ॥
छंदः॥ मुनिधीर योगी सिद्ध संतत विमल मनजेहि ध्या
वहीं। कहिनेति निगम पुराण आगम जासु कीरतिगा



रा॰
रा॰स॰

वही। सोइ राम व्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति मायाधनी
अवतरेउ अपने भक्त हित निज तंत्र नित रघुकुलमनी ॥

सो॰॥ लाग न उर उपदेश यदपि कहेउ शिव वार बहु ॥
बोले बिहसि महेश हरिमाया बल जानि जिय ॥ चौपई।
जो न तरे मन अति संदेहू। तौ किन जाइ परिक्षा लेहू ॥

तवलगि वैठिरहौं वटछांही। जवलगि तुम ऐहहु मोहि पाहीं। जैसेंजाइ मोह भ्रमभारी। करहु सोयतन विवेक विचारी। चलीसती शिव आयसु पाई। करहिं विचार करौं कामाई। उहांशंभु अस मन अनुमाना। दक्षसुता कहंनहि कल्याना। मोरेहुं कहेन संशयजांहीं।

रा॰ विधिविपरीत भलाईनाहीं। होइहै सोइजो रामरचि राखा

रा॰म कोकरितर्क बढावहिंसाखा। असकहिलगे जपन ह

रिनामा। गयीसती जहांप्रभु सुखधामा॥ दोहा॥ पुनि

पुनि हृदय विचारकरि धरिसीता करिरूप। आगेंहोइ

चली पंथनेहि जेआवन नरभूप॥ चौपई॥ लछमण

८२

दीख उमाकृतवेषा। चकित हृदय भ्रमभयउ विशेषा।
कहिनसकत कछु अति गंभीरा। प्रभुप्रभाव जानत
मतिधीरा। सतीकपट जानेउ सुरस्वामी। समदरशी
सब अंतरजामी। सुमिरत जाहिमिटै अज्ञाना। सोइस
र्वज्ञ राम भगवाना। सतीकीन्ह चहतहहुंदुराऊ। दे।

रा॰ रा॰स॰

विहसनारि सुभाव सुभाऊ। निजमाया बलहृदय बखानी। बोलेविहसि राम मृदुवानी। जोरिपाणि प्रभुकीन्ह प्रणामू। पितासमेत लीन्ह निजनामू। कहेउ बहोरि कहो हृषकेतू। विपिन अकेलि फिरहि केहि हेतू॥ दोहा

राम वचन मृदुगूढसुनि उपजा अति संकोच। सती

सभीत महेशपहं चलीहृदयबड़सोच ॥ चौपई ॥ मैंशंक
र करकहानमाना । निजअज्ञान रामपहंआना । जाइउत
र अवदेहौंकाहा । उरउपजा अतिदारुणदाहा । जानारा
मसती दुखपावा । निजप्रभाव कछु प्रगटि जनावा । सती
दीखकौतुक मगजाता । आगेंराम सहित सियभ्राता ॥

रा॰
रा॰स

फिरिचितवा पाछें प्रभु देखा। सहित बंधु सिय सुंदर वेषा॥
जहंचितवहि तहं प्रभु आसीना। सेवहि सिद्ध मुनीश प्रवीना। देखे शिव विधि विष्णु अनेका। अमित प्रभाव एक ते एका। बंदत चरण करत प्रभु सेवा। विविधि वेष देखे सब देवा॥ दोहा॥ सती विधात्री इंदिरा देखी अमित

अनूप। जेहिजेहि वेष अजादिसुर। तेहितेहितन अनुरू
प॥ चौपई॥ देखेजहँ तहँ रघुपति जेते। शक्तिन सहित
सकल सुरतेते। जीवचराचर जेसंसारा। देखेसकल
अनेकप्रकारा। पूजहिंप्रभुहिं देव बहुदेषा। रामरूप
दूसर नहिं देखा। अवलोके रघुपति बहुतेरे। सीता

रा॰ सहित भवेष बनेरे। सोइ रघुवर सोइ लछमणसीता॥ दे
रा॰स॰ खिसती अति भयी सभीता॥ हृदय कंपतन सुधिक छु
नाहीं। नयन मूंदि वैठी मग माहीं। बहुरि विलोके उन
यन उघारी। कछु न दीखत हं दछकुमारी। पुनिपुनि
नाइ रामपद सीसा। चली तहां जहं रहे गिरीसा॥ दोहा

गयी समीप महेशतब हंसि पूछी कुशलात। लीन्ह प
रीक्षा कवन विधि कहहु सत्य सब बात। चौपाई॥ सती
समुझि रघुवीर प्रभाऊ। भयवस शिव सन कीन्ह दुरा
ऊ। कछुन परीक्षा लीन्ह गोसांई। कीन्ह प्रणाम तुम्हा
रिहि नाई॥ जो तुम कहा सो मृषा न होई। मोरे मन प्र

रा॰
रा॰स

नीति असमोई। नव शंकर देखे उपरि ध्याना। सती जो की
न्ह चरित सब जाना। बहुरि राम मा यहि सिर नावा। प्रेरि
सतिहि जेहि झूठ कहावा। हरि इच्छा भावी बलवाना ॥
हृदय विचारत शंभु सुजाना। सती कीन्ह सीताकर वे
षा। जो अब करौं सती सन प्रीती। मिटै भक्ति पथ होइ

७६।

अनीती ॥ दोहा ॥ परम प्रेम नहिं जाइ नजि किये प्रेम बड़
पाप । प्रगट न कहत महेश कछु हृदय अधिक संताप ॥
चौपई ॥ तवहिं शंभु प्रभु पद शिर नावा । सुमिरत राम
हृदय अस आवा । इहिं तनु सतिहि भेट मोहि नाहीं । शि
व संकल्प कीन्ह मन माहीं । अस विचारि शंकर म

रा॰ तिधीरा। चले भवन सुमिरत रघुबीरा। चलत गगनभै
रा॰स॰ गिरा सुहाई। जय महेश भलि भक्ति दृढाई। अस प्रण
तुम बिनु करै को आना। राम भक्त समरथ भगवाना॥
सुनि नभगिरा सती उर सोचू। पूछा शिवहि समेत सकोचू। कीन्ह कवन प्रण कहहु कृपाला। सत्य धाम प्रभु

66

दीन दयाला। यदपि सती पूछा बहु भांती। तदपि न
कहेउ त्रिपुर आराती॥ दोहा॥ सती हृदय अनु मान
किय सब जाना सर्वज्ञ। कीन्ह कपट मैं शंभु सन नारि
सहज जड़ अज्ञ॥ सो॰॥ जलपय सरिस बिकाइ देखहु
प्रीति कि रीति भल। बिलग होइ रस जाइ कपट खटाई

रा॰ धरनही ॥ चौपई ॥ हृदय सोच समझत निज करणी।

रा॰स॰ चिंताअमित जाइ नहि बरणी। कृपा सिंधु शिव परम
अगाधा। प्रगट न कहेउ मोर अपराधा। शंकर रुख
अव लोकि भवानी। प्रभु मोहि तजेउ हृदय अकुलानी।
निज अघ समझिन कछु कहि जाई। तपै अवाइव उर

28

अधिकाई। सतीहि ससोच जानि वृषकेतू। कहेउ कथा
सुंदर सुखहेतू। वरणत पंथ विविध इतिहासा। विस्व
नाथ पहुंचे कैलासा। तहं पुनि शंभु समुझि पण आपन।
बैठे बट तर करि कमलासन। शंकर सहज सरूप स
म्हारा। लागि समाधि अखंड अपारा। दोहा॥ सती ब

रा॰ सहिं कैलाश तव अधिक सोच मन माहिं। मर्मन कोऊ जा
रा॰ स नकछु युगसम दिव सम जाहिं॥ चौपाई॥ नित नव सोच
सती उरभारा। कवजैं हों दुख सागर पारा। मैं जो कीन्ह
रघुपति अपमाना। पुनि पति वचन मृषा करि जाना॥
सो फल मोहि विधाता दीन्हा। जो कछु उचित रहा सो

७१

कीन्हा। अब विधि अस बूझिय नहिंतोही। शंकर विमु
ख जिआ बहुमोही। कहिन जाय कछु हृदय गलानी।
मनमहिं रामहि सुमिरि सयानी। जोप्रभु दीन दयालु
कहावा। आरति हरण वेदयश गावा। तौं मैं विनय ६
करौं कर जोरी। छूटै वेगि देह यहमोरी। जोमोरे शि

रा॰ वचरण सनेहु। मन क्रम वचन सत्य व्रत एहू॥ दोहा॥

रा॰स तौसम दर्शी सुनिय प्रभु करौ सो वेगि उपाइ। होइ मर

ए जेहि बिनहि श्रम दुस्सह विपति विहाइ॥ चौपई॥ इ

हि विधि दुखित प्रजेश कुमारी। अकथनीय दारुण दु

खभारी। बीते संवत सहस सतासी। तजी समाधि शं

८०

८॰

भु अविनाशी ॥ राम नाम शिव सुमिरण लागे । जा
ने उमती जगत पतिजागे । जाइ शंभु पद वंदन कीन्हा ।
सनमुख शंकर आसन दीन्हा । लागे कहन हरि क
था रसाला । दक्ष प्रजेश भये तेहिकाला । देखा वि
धि विचारि सब लायक । दक्षहि कीन्ह प्रजापति ना

रां
रा.स

यक ॥ बड़ऋषि कार दल जब पावा । अति अभिमान हृ
दय नव आवा । नहिकोउ असजन मेउ जग माहीं । प्रभुता
पाइ जाहि मदनाहीं ॥ दोहा ॥ दललिये मुनि बोलि सब
करण लगे बड़याग । नवते सादर सकल सुर जेपाव
त मखभाग ॥ चौपई ॥ किन्नर नाग सिद्ध गंधर्वा । बधु

(8)

टा

नसमेत चले सुरसवी ॥ विस्नुविरंचि महेश विहाई । च
ले सकल सुरयान बनाई । सती विलोके गगन विमा
ना । जातचले सुंदर विधिनांना । सुर सुंदरी करहिं क
लगाना । सुनत स्रवण छूटहि मुनि ध्याना । पूछेउतव
शिवकहेउ वखानी । पितायज्ञ सुनिकै हरषानी । जोम

रा॰ हेतु मोहि आयसु देही। कछु दिन जाय रहौं मिस येही॥

रा॰म पति पदि न्याग हृदय दुखभारी। कहै न निज अपराध वि

चारी। बोली सती मनो हर बानी। भय संकोच प्रेम रसमा

नी। दोहा॥ पिता भवन उत्सव परम जो प्रभु आयसु होइ॰

तौं मैं जाऊं कृपा यतन सादर देखन सोइ॥ ॥

82

समझि सो बातनि हिंमौ अति क्रोधा। बहु विधि जननी कीन्ह प्रबोधा॥ दोहा॥ शिव अपमान न जाइ सहि हृदयन होत प्रबोध। सकल सभहि हठि हटकि तब वोली ववन सक्रोध॥ चौपाई॥ सुनहु सभा सद सकल मुनिंदा। कही सुनी जिन्ह शंकर निंदा। सोफल तुरत

२नि २प २म २ग २म २प २म २ग २रे २ग २रे २सं २म २प

गा॰ लहव सवकाहू। भली भाँति पछिताय पिताहू॥ संत

२नि २सं २नि २प २म २प २म २ग २रे २म २रे

गा॰स शंभु श्रीपति अप वादा। सुनिय जहाँ तहँ अस म

२सं २म २प २नि २सं २नि २प २म २ग २म २प २म

र्यादा॥ काटिय ता सु जी भ जो ब सोई॥ श्रवण

२ग २रे २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २नि २प

मूंदि नहि चलिय पराई॥ जग दाता महेश

२म २प २म २ग २म २ग २रे २ग २रे २सं

पुरारी॥ जगत जनक सबके हित कारी॥

२म २प २नि २सं २नि २प २म २प २म २ग २रे २ग २रे २सं
पिता मंद मति निंदत तेही। दक्ष शुक्र संभव यह देही॥

२म २प २नि २सं २नि २प २म २प २म २ग २रे २ग २रे
तजि हौं तुरत देह तेहि हेतू। उरधर चंद्र मौलि वृष

२सं २म २प २नि २सं २नि २प २म २ग २म २प २म २ग
केतू। अस कहि योग अगिनि तनु जारा। भयउ स

२म २ग २रे २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २रे २सं
कल मख हाहाकारा। दोहा॥ सती मरण सुनि शंभु

२नि २प २म २ग २म २ग २प २म २ग २म २ग २रे २प
गण लगे करण मख खीस। यज्ञ विध्वंस विलोकि भृ

रां

रा॰स

२भा २ग २रे २ग २भा २ग २रे २नि

ग रचा कीन्ह मुनीस ॥ चौपई ॥ समा चार जब शं
कर पाये। वीर भद्र करि कोप पठाये ॥ यज्ञ विध्वंस
जाइ तिन्ह कीन्हा। सकल सुरन्ह विधि वत फल दी
न्हा। भइ जग विदित दक्ष गति सोई। जस कछु शंभु
विमुख की होई ॥ यह इतिहास सकल जगजाना।

8

तातें मैं संक्षेप बखाना। सती मरन हरि सन बर मा
गा। जन्म जन्म शिव पद अनु रागा॥ तेहि कारण
हिम गिरि गृह जाई। जनमी पारवती तनु पाई। ज
बतें उमा शैल गृह आई। सकल सिद्धि संपत तहं
छाई॥ जहं तहं मुनिनन्ह आश्रम कीन्हे। उचित

रा०

रा०स

बास हिम भूधर दीन्हे ॥ दोहा ॥ सदा सुमन फल स
हित सब द्रुमन वनाना जाति । प्रगटी सुंदर शैल प
र मणि आकर बहु भांति ॥ चौपई ॥ सरिता सब पु
नीत जल बहहीं । खगम्रग मधुप सुखी सब रहहीं ।
सह जबयर सब जीवन त्यागा । गिरि पर सकल

८७

करहि अनुरागा। सोइ शैल गिरिजा गृह आयें। जि
मि जनु राम भक्ति के पायें। नित नूतन मंगल गृह
तासू। ब्रह्मादिक गावहिं यश जासू। नारद समा
चार सब पाये। कौतु कहि मगिरि गेह सि धाये।
शैल राज बड़ आदर कीन्हा। पदप खारि वर आस



रा॰ नदीन्हा। नारि सहित मुनि पद सिर नाया। चरण स

रा॰स॰ लिल सब भवन सिंचावा। निज सौभाग्य बहुत गिरि

बरणा। सुता बोलि मेली मुनि चरणा॥ दोहा॥ त्रिकाल

ज्ञ सर्वज्ञ तुम गति सर्वत्र तुम्हारि। यहहु सुताके दोष

गुण मुनि वर हृदय विचारि॥ चौपई॥ कह मुनि बिह

84

सि गूढ सङ्खवानी। सुता तह्मारि सकल गुण खानी।
सुंदरि सहज सुशील सयानी। नाम उमा अंबिका भवा
नी। सबलक्षण संपन्न कुमारी। होइहि संतत पिय
हि पियारी॥ सदा अचल एहि कर अहिवाता। इहितें
यश पैहहि पितुमाता। होयह पूज्य सकल जग माहीं

रां.
रा.स

इहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं। इहि कर नाम सुमिरि
संसारा। त्रिय चढ़िहहिं पति ब्रत असि धारा। शैल सु
लक्षण सुता तुह्मारी। सुनहुज अब अव गुण दुइ चा
री। अगुण अमान मात पितृ हीना। उदासीन सब संशय
छीना॥ दोहा॥ योगी जटिल अकाममन नगन अ

89

अमंगल भेष। अस स्वामी इहिं कहं मिलिहि परी हस्त असरेख॥ चौपई॥ सुनिमुनि गिरा सत्य जिय जानी। दु ख दंपतिहि उमा हरषानी। नारद हूं यह भेद न जाना। दशा एक समुझत बिलगाना। सकल सखी गिरिजा गिरि मयना। पुलक शरीर भरे जल नयना। होइ न

रां॰ सषा देव ऋषि भाखा। उमा सो वचन हृदय धरि राखा।

रा॰स॰ उपजेउ शिव पद कमल सनेहू। मिलन कठिन मन यह

संदेहू॥ जानिकु अव सर प्रीति दुराई। सखीउ छंगवैठी

पुनि जाई॥ झूठिन होइ देव ऋषि वानी। सोचहिं दंपति

सखी सयानी॥ उरधरि धीर कहैं गिरि राऊ। कहहु ना

10

य का करिय उपाऊ॥ दोहा॥ कहु मुनीश हिमवंत सुनु
जो विधि लिखा लिलार। देव दनुज नरनाग मुनि कोउ
न मेट निहार॥ चौपई॥ तदपि एक मैं कहौं उपाई। हो
इ करै जो दैव सहाई॥ जस वर मैं वरणे उं तुम पांही। मि
लि हि उमहि कछु संशय नांही। जेजे वरके दोष वखाने

रा.
रा.स

तेसव शिव पहं मैं ग्रन माने ॥ जो विवाह शंकर सनहो
ई। दोषौ गुण सम कह सब कोई। जो ग्रहि सेज सेन हरि
करहीं। वुधकछु तिन कहं दोषन धरहीं। भानु कृसानु
सर्व रस खाहीं। तिन कहं मंद कहत कोउ नाहीं ॥ सुभ
अरु असुभ सलिल सब वहहीं। सुर सरि कोउन अपा

वन कहहीं। समरथ कहं नहि दोष गुसांई। रवि पा

वक सुर सरि कीनांई॥ दोहा॥ जो रो सहि ईर्षा करहि

जड़ विवेक अभि मान। परहिं कल्प भर नर्क महिं

जीव कि ईश समान॥ चौपई॥ सुर सरि क्त्न यश वा

रुणि जाना। कबहुन संत कर हिं तिहि पाना। सुर

रा॰ सुरि हृत न यश वारुणि जाना। कबहुन संत करहिं तिं
रा॰स॰ हि पाना॥ सुर सरि मिले सु पावन जैसे। ईश अनी सुहि अंतर तैसे॥ शंभु सहज समरथ भगवाना। इहि विवाह सब विधि कल्याना॥ दुराराध्य पै अहहि महेसू। आशु तोष पुनि किये कलेसू॥ जो तप करै कुमा

रि नसारी। भावीउ मेटि सकै त्रिपुरारी॥ यद्यपि बर

अनेक जगमांही। इहिं कहं शिव तजि दूसर नांही॥

बरदायक प्रणतारति भंजन। कृपासिंधु सेवक मन

रंजन॥ इच्छित फल बिनु शिव आराधें। लहइ न को

टि योग जप साधें॥ दोहा॥ अस कहि नारद सुमिरि

रां
रा॰म

हरि गिरि जहि दीन्ह असीस। होइहि यहि कल्याण अब
संशय तजहु गिरीस॥ चौपई॥ कहि अस ब्रह्म भवन
मुनि गयेऊ। आगिल चरित सुनहु जस भयेऊ। पतिहि
इकांत पायक ह मयना। नाथन मैं समुफेउ मुनि बय
ना॥ जोघर बर कुल होइ अनूपा। करिय विवाह सुता

अनुरूपा॥ नतकन्या वरु रहौ कुमारी। कंत उमा म
म प्राण पियारी॥ जोन मिलि हिवर गिरि जहि योगू।
गिरिजड़ सहज कहहिं सव लोगू॥ सो विचारि पतिक
रहु विवाहू। जेहिनव होरि होइ उर दाहू॥ अस कहि
परी चरण धरि सीसा। वोले सहित सनेह गिरीसा।

रा॰
रा॰स

बरु पावक प्रगटै शशिमांही। नारद वचन अन्यथाना
ही॥ दोहा॥ प्रिया सोच परिहरहु सब सुमिरहु श्रीभग
वान॥ पारवती जिन निर्मयउ सोइ करिहहि कल्यान॥
चौपई॥ अब जो तुमहि सुता पर नेहू। जो अस जाहि सिखा
वन देहू॥ करैसो तप जेहि मिलहिं महेसू। आन उपाय

९४

न मिटिहि कलेसू ॥ नारद वचन सगर्भस हेतू । सुंदर

सव गुण निधि वृषकेतू ॥ अस विचारि तुमतजि सवशं

का । सवहि भांति शंकर अकलंका । सुनिपति वचन

हर्ष मनमांही । गयो तुरत उठि गिरिजा पांही ॥ उम

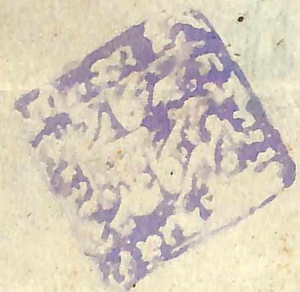
हि विलोकि नयन भरिवारी । सहित सनेह गोद वैठा

रा॰
रा॰स

री ॥ वारहि वार लेति उर लाई । गदगद कंठन कछु कहि जाई ॥ जगत मात सर्वज्ञ भवानी । मातु सुखद वोली मृदुवानी ॥ दोहा ॥ सुनहु मातु मैं दीख अस सपन सुनाऊं तोहि । सुंदर गौर सुविप्रवर अस उपदेशेउ मोहि ॥ चौपई ॥ करहु जाइ तप शैल कुमारी । नारद कहा सो

८५

सत्य विचारी ॥ मातुपिता हि पुनि यह मत भावा। तप
सुख प्रद दुख दोष नसावा। तप बल रचै प्रपंच विधा
ता। तप बल विष्णु सकल जगत्राता ॥ तप बल शंभु
कर हि संहारा। तप बल शेष धरहिं महि भारा ॥ तप
अधार सब सृष्टि भवानी। करहु जाय तप अस जिय



रा॰
रा॰म॰

जानी। सुनत बचन बिस्मित महतारी। सपन सुनाये उमिरिहि हंकारी॥ मातपितहि बहुबिधि समुझाई। चली उमा तप हित हरषाई॥ प्रिय परि वार पिता अरु माता। भये बिकल मुख आवन बाता॥ दोहा॥ वेद सिरा मुनि आइ तब सबहि कहा समुझाइ। पारवती

९६

५६

महिमा अनंत रहे प्रबोधहि पाइ ॥ चौपाई ॥ उरधरि उमा

प्राण पति चरणा। जाइ विपिन लागी तप करणा। अति

सुकुमारि न तन तप योगू। पतिपद सुमिरि तजेउ सब

भोगू। नित नव चरण उपज अनरागा। बिसरी देह त

पहि मन लागा। संवत सहस मूलफल खाये। शा

रा॰
रा॰स

कछुक शत वर्ष गवांये ॥ कछु दिन भोजन वारिवतासा

किये कठिन कछु दिन उपवासा। बेलपात महि परे सुखा

ई। तीनि सहस संवत सोखाई। पुनिपरि हरेउ सुखाने

उपर्णा। उमानाम तव भयेउ अपर्णा ॥ देखिउ महि तप

छीन शरीरा। ब्रह्म गिरा भयी गगन गंभीरा ॥ दोहा ॥

भयेउ मनोरथ सफल नव सुन गिरि राजकुमारि ।प
रिहरु उसहु कलेश सब अब मिलिहहिं त्रिपुरारि ॥
चौपई ॥ असतप काहुन कीन्ह भवानी । भये अनेक
धीर मुनिज्ञानी । अब उरधरहु ब्रह्म वरवनी । सत्य
सदा संतत शुचिजानी ॥ आवै पिता बुलावन जब

6

रा॰ हीं। हर पहि हरि चर जाय छन वहीं॥ मिल हितम
रा॰स हिं जव सप्त ऋषीशा॥जानेछ्र नव प्रमाण वागीशा॥
स्नन्त गिरा विधि गगन बखानी। पुलक गात गिरि
जा हरषानी॥ उमा चरित मैं सुंदर गावा। स्वनञ्ज शंभु
कर चरित सुहावा॥ जबतें सती जाइ तनु त्यागा। तब

ते शिव मन भयेउ विरागा ।। जपहिं सदा रघु नायक
नामा । जहं तहं सुन हि राम गुण ग्रामा ।। दोहा ।।
विदा नंद सुख धाम शिव विगत मोह मद काम ।
विचरहिं महि धरि हृदय हरि सकल लोक अभि
राम ।। चौपाई ।। कतहुं मुनिन उपदेशहिं ज्ञाना ।

रा॰
रा॰स

कतहुं राम गुण करहिं बखाना। यदपि अकाम तदपि भगवाना। भक्त विरह दुख दुखित सुजाना। इहि विधि गयेउ काल बहु बीती। नित नव होइ राम पद प्रीती। नेम प्रेम शंकर कर देखा। अविचल हृदय भक्ति की रेखा। प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला। रूप शील निधि

११

५५

नेज विशाला ॥ बहु प्रकार शंकर हि सराहा । नम
विन ग्रस ब्रत को निर वाहा ॥ ग्रति पुनीत गिरिजा की
करणी । विस्तर सहित कृपा निधि वरणी ॥ दोहा ॥
ग्रव विनती मम सुनहु शिव जो मो पर निजनेहु ।
जाइ विवाह हु शैल जहि यहमोहि मांगे देहु ॥ चौ

रा॰
रा॰ स॰

पई॥ कह शिव यदपि उचित अस नाहीं। नाथ वचन पुनि मेटन जाहीं। सिरधरि आयसु करिय तुम्हारा। परम धरम यह नाथ हमारा॥ मातु पिता गुरु प्रभु की वानी। विनहि विचार करिय शुभ जानी॥ तुम स व भांति परम हितकारी। आज्ञा शिर पर नाथ तुम्हा

100

री। प्रभुतोषेउ सुनि शंकर वचना। भक्ति विवेक धर्म

युत रचना। कह प्रभु हर तुह्मार प्रण रहेऊ। अव उर

राखेहु जो हम कहेऊ॥ अंतर ध्यान भये अस भाखी

शंकर सोइ मूरति उर राखी॥ तवहि सप्त ऋषि शिव

पै आये। वोले प्रभु अस वचन सुहाये॥ दोहा॥ पारव

रा॰स
री

ती पहं जाइ तुम प्रेमपरीक्षा लेहू। गिरिहि प्रेरि पठये
हु भवन हरकरेहु संदेहू॥ चौपई॥ ऋषिन गौरि देखी
तहं कैसी। मूरति वंत तपस्या जैसी॥ बोले मुनि सुन
शैलकुमारी। करहु कवन कारण तप भारी॥ केहि
आराधहु का तुम चहहू। हम सन सत्य मर्म सब कहहू

10

१०१

ह॥ सुनत ऋषिनके वचन भवानी। बोली गूढ मनो
हर वानी॥ कहत मर्म मन अति सकुचाई। हंसिहहु
सुनिह मार जर ताई॥ मन हठ परान सुनै शिखावा।
चहत वारि पर भीति उठावा॥ नारद कहा सत्य सोर
जाना। विनपंखन हम चहहिं उडाना॥ देखिय मनि

रा॰ रा॰स

अविवेक हमारा। चाहतपति शंकर अविकारा॥ दोहा॥
सुनत वचन विहंसे ऋषय गिरि संभव तवदेह। नारद
कर उपदेश सुनि कहहु वसे कोगेह॥ चौपाई॥ दक्षसु
तन्ह उप देशान जाई। तिन फिरि भवन नदेखा आई॥
चित्र केतु कर घर उन घाला। कनक कशिपु कर पु

10

१-२१

नि अस हाला। नारद शिषजे सुनहिं नरनारी। अवशि
भवन तजि होहिं भिखारी। मन कपटी तन सज्जन ची
न्हा। आप सरिस सबही चह कीन्हा। तेहि के वचन मा
नि विस्वासा। तुम चाहहु पति सहज उदासा। निर्गु
ण निलज कुवेष कपाली। अकुल अगेह दिगंवर व्या

गं
रा॰स

ली॥ कहहु कवन सुख अस वर पाये। भल भूलिहु ठग के बौराये। पंच कहे शिव सती विवाही। पुनि अवडेरि मराइन ताही। दोहा॥ अब सुख सोवत सोच नहि भीख मांगि भव खांहि। सहज एका किनके भवन कबहु कि नारि खटांहि॥ चौपई॥ अजहूं मानहु कहा हमारा॰

107

१०३

हमतम कहु वर नीक विचारा। अति सुंदर सुचि सु

खद सुशीला। गावहिं वेद जासु यश लीला। दूषण

रहित सकल गुण रासी। श्रीपति पुर वैकुंठ निवा

सी। अस बरत महिं मिला उव आनी। सुनत विहसि

कहु वचन भवानी। सत्य कहहु गिरि भवमनपहा।

रा
रा॰स

हठन छूट छूटे वरु देहा। कनकौ पुनि पषान तें होई
जारेउ सहज न परि हर सोई॥ नारद वचन न मैं परि ह
रऊं। बसौ भवन उजरौ नहि डरऊं॥ गुरुके वचन प्रती
तिन जेही। सपने हु सुगमन सुख सिधि तेही॥ दोहा॰
महादेव अव गुण भवन विस्नु सकल गुणधाम। जे

105

१०५

हि करम नर मज्जाहि मन ताहि ताहि मनकाम ॥ चौपा
ई ॥ जो तुम मिलितेउ प्रथम मुनीसा । सुनतेउ शिख त
स्हारि धर सीसा । अवमैं जन्म शंभु हित हारा । को गुण
दोषहिं करै विचारा ॥ जो तुम्हरे हठ हृदय विशेषी ।
रहि न जाइ विन कि ये वरेषी ॥ तौ कौतुकि अन्ह आल

रा
रा·म·

सनाहीं। बर कन्या अनेक जग मांही। जन्मकोटि लगि
रगरि हमारी। वरौं शंभु न तरहौं कुमारी। तजौं न नारद
कर उपदेसू। आपु कहहिं सत बार महेसू॥ मैं पा परौं
कहै जगदंबा। तुम गृह गवनहु भयउ बिलंबा॥ देखि
प्रेम बोले मुनि ग्यानी। जय जय जय जगदंब भवानी॥

105

के हृदय मदन अभिलाखा। लतानि हारि नव हिनरु

शाखा। नदीउ मगि अंबुधि कहंथाईं। संगम करहिं त

ला वत लाईं॥ जहं अस दशा जड़न की वरणी। कोक

हि सकै सवे तन करणी॥ पशुपक्षीन भजल थलचा

री। भयेकाम बस समय विसारी॥ मदन अंध व्याकु



रा॰
रा॰स॰

ल सबलोका। निसदिन नहिं अब लोकहिं कोका॥ देव दनुज नर किन्नर व्याला। प्रेत पिशाच भूत वैताला॥ इनका दशान कहेउ बखानी। सदा कामके चेरे जानी। सिद्ध विरक्त महा मुनि योगी। तेपि काम बस भये वि योगी॥ छंद:॥ भये काम बल योगीश तापस पा मरन

110

१२०

रुचिर ऋतुराजा। कुसुमित नव तरु राज विराजा। बन उप

बन वापिका तड़ागा। परम सुभग सब दिशा विभागा।

जहं तहं जनु उमगत अनुरागा। देखि मुएहु मनमन सि

जजागा॥ छंदः॥ जागेउ मनोभव मुएहुं मन बन सुभग

तान परै कही। शीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अन

रा॰ लसाखा मही। विकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल

रा॰स मधुकरा॥ कलहंस पिक शुक सरस रव करि गान नाच

हि अपसरा। दोहा॥ सकल कला करि कोटि विधि हारेउ

सेन समेत॥ चलीन अचल समाधि शिव कोपेउ हृदय नि

केत॥ चौपई॥ देखि रसाल विटप बर शाखा ॥

112

तेहि पर चढ़ेउ मदन मन माखा ॥ सुमन चाप निज शर संधा
ने। अति रिस ताकि श्रवन लगि तानि ॥ छाड़े विषम विशि
ख उर लागे। छूटि समाधि शंभु तब जागे ॥ भयउ ईश म
न छोभ विशेषी। नयन उघारि सकल दिशि देखी ॥ सौर
भ पल्लव मदन विलोका। भयउ कोप कंपेउ त्रय लोका।

रा॰ तव शिवती सरनयन उघारा। चितवत काम भयउ ज

रा॰स॰ रि छारा। हाहाकार भयउ जग भारी। डरपे सुर भये

असुर सुखारी॥ समुझि काम सुख सोचहिं भोगी। भये

अकंटक साधक योगी॥ छं॰॥ योगी अकंटक भये पति गति

सुनति रति मूर्छित भयी। रोदति वदति बहु भांति करुणा

113

करति शंकर पहँगवी । अति प्रेम करि विनती विविधिजो

रि कर सन्मुख रही । प्रभु आसुतोष कृपालु शिव अबला

निरखि बोले सही ॥ दोहा ॥ अबतें रति तव नाथ कर हो

इहि नाम अनंग । विनु वपु व्यापिहि सबहि पुनि सुन निज

मिलन प्रसंग ॥ चौपई ॥ जब यदु वंश कृस्न अवतारा ।

रा॰ रा॰म
होइहि हरण महामहि भारा ॥ कस्स तनय होइहि पति
तोरा । वचन अन्यथा होइ न मोरा ॥ रतिगावनी सुनि शं
कर बानी । कथा अपर अब कहौ बखानी ॥ देवन समा
चार सब पाये । ब्रह्मादिक वैकुंठ सि धाये ॥ सब सुर विस्न
विरंचि समेता । गये जहां शिव कृपा निकेता ॥ पृथक्
115
114

पृथक पृथक तिनकीन्ह प्रशंसा। भये प्रसन्न चंद्र अवतंसा॥ बो

ले कृपा सिंधु वृषकेतू। कहहु अमर आये केहि हेतू।

कह विधि तुम प्रभु अंतरजामी। तदपि भक्ति बस विन

वउं स्वामी॥ दोहा॥ सकल सुरन के हृदय अस शंकर

परम उछाह। निज नयनन्हि देखा चहहिं नाथ तुम्हार

रा॰ बिबाहू ॥ चौपई ॥ यह उत्सव देखिय भर लोचन । सोक
रा॰स॰ छु करिय मदन मद मोचन । काम नारि रति कहँ वर
दीन्हा । कृपा सिंधु यह अति भल कीन्हा ॥ सासति करि
पुनि करहिं पसाऊ । नाथ प्रभुन कर सहज सुभाऊ ॥
पारवती तप कीन्ह अपारा ॥ करहु तासु अ
ब अंगीकारा ॥ सुनि विधि वचन समुझि ९

११५

प्रभुबानी। ऐसोइ होइ कहा सखमानी॥ नव देवन उंड

भी बजाई। बरषि सुमन जय जय सुर सांई॥ अव सुर

जानि सप्त ऋषि आये। तुरतहि विधि गिरि भवन पठाये

प्रथम गये जहं रही भवानी। बोले बचन मधुर छल

सानी॥ दोहा॥ कहा हमारन सुने हु नव नारद कर उ

रा॰
रा॰स
पदेश॥ अबभा छूट तुम्हार प्रण जारेउ काम महेश॥
चौपई॥ सुनी बोली मुसुकाय भवानी। उचित कहेउ
मुनि वर विज्ञानी। तुम्हारे जान काम हर जारा। अ
वलगि शंभु रहे सविकारा॥ हमरे जान सदा
शिव योगी। अज अनवद्य अकाम अभोगी॥ जो

116

११६

मैं शिवसे येउं अस जानी। प्रीति समेत कर्म मन बानी॥
तोहमार प्रण सनहु मनीशा। करिहहि सत्य कृपा नि
धिईशा॥ तुम जो कहा हर जारेउ मारा। सोअति बड़
अविवेक तुम्हारा॥ तात अनल कर सहज सुभाऊ। हि
मतेहि निकट जाइ नहि काऊ॥ गये समीप सो अव

रा॰
रा॰स

शिवसभाई। असमन मथ महेश की नाई ॥ दोहा ॥ हिय हरषे मुनि वचन सुनि देखि प्रीति विस्वास। चले भवानि हि नाइ सिर गये हिमाचल पास ॥ चौपई ॥ सब प्रसंग गिरि पति हि सुनावा। मदन दहन सुनि अति दुखपावा ॥ बहुरि कहेउ रति कर वर दाना ॥

117

११८

सुनि हिमवंत बहुत सुख माना ॥ हृदय विचारि शंभु प्र
भुताई। सादर मुनि वर लिये बुलाई ॥ सुदिन सुनख
त सुघरी सुहाई। वेगि वेद विधि लगन धराई ॥ पत्री
सप्त ऋषिन सोइ दीन्हा। गहि पद विनय हिमाचल
कीन्हा। जाइ विधिहि तिन दीन्ह सो पाती ॥ बाचत प्रीति

गं
रा॰स

न हृदय समानी ॥ लगन बांचि अज सबहि सुनाई । हरषे मुनि सब सुर समुदाई ॥ सुमन दृष्टि नभ बाजन बाजे । मंगल कलश दशहुं दिशि साजे ॥ दोहा ॥ लगे सवांरन सकल सुर बाहन विविधि विमान । होहि स गुण मंगल सुभग करहिं अपसरा गान ॥ चौपई ॥

118

११८

शिवहि संभु गण करहिं सिंगारा। जटा मुकुट अहि

मौर संवारा। कुंडल कंकण पहिरे व्याला। तन विभू

ति पटके हरिछाला॥ शशि ललाट सुन्दर शिर गंगा।

नयन तीन उपवीत भुजंगा॥ गरल कंठ उर नर शिर

माला। अशिव भेष शिव धाम कृपाला॥ कर त्रिशूल

रां
रा॰म

अरु डमरु विराजा। चले वसह चढि वाजे हिं वाजा॥ दे
खि शिव हिं सुर त्रय मसुकाहीं। वर लायक दुलहिनि
जग नाहीं॥ विस्नु विरंचि आदि सुर व्राता। चढि च
ढि वाहन चले बराता॥ सुर समाज सब भांति अ
नूपा। नहिं बरा त दूलह अन रूपा॥ दोहा॥

117

बिस्व कहा ग्रस बिहंसि नव बोलि सकल दिसा राज । बि

लग बिलग होइ चल हू सब निज निज सहित समाज ।

चौपई ॥ बर ग्रन हार बरा नन भाई । हसी करै हर हू पर

घर जाई ॥ बिस्व वचन सुनि सुर मस्त काने । निज नि

ज सेन सहित बिलगाने । मनही मन महेश मसका

रा॰
रा॰स

न्ही। हरिके अंग वचन नहि जाही॥ अति प्रिय वचन सुनत हरि केरे। भृंगी प्रेरि सकल गण टेरे॥ शिव अनुशासन सुनि सब आये। प्रभु पद जलज सीस तिन नाये। नाना वाहन नाना भेषा। विहंसे शिव समाज निज देषा॥ कोउ मुख हीन विपुल मुख काहू। विनु पद क

१२०

१२०

रकोउ बहु पद बाहू ॥ बिपुल नयन कोउ नयन बिहीना

रिष्ट पुष्ट कोउ अति तन्न खीना ॥ छंदः ॥ तन्न खीण को

उ अति पीन पानकोउ अपावन तन्नुधरे । भूषण कराल

ल कपाल कर सब सद्य शोणित तन्नु भरे ॥ खरस्वान

सुअर सृगाल मुख गण भेष अगणित कोगनै । बहु

दो॰ जिनिस प्रेत पिशाच योगिनि भाँति बरन न नहि वनै।

रा॰म सोरठा॥ नाचहिं गावहि गीत परम तरंगी भूत सब॥

देखत अति विपरीत बोलहि बचन विचित्र विधि॥

चौपई॥ जस दूल्ह तस सब नीब राना। कौतुक विविधि

होहि मग जाना। इहाँ हिमाचल रचेउ बिताना॥

१२१

बिताना। अति बिचित्र नहि जाइ बखाना॥ शैल सकल
जहं लगि जग माहीं। लघु बिशाल नहि बर निसिरा
हीं। बन सागर सब नदी तलावा। हिम गिरि सब कहं
नेव नप रावा। काम रूप सुंदर तनुधारी। सहित समा
ज सहित बर नारी॥ गये सकल तुहिमा चल गेहा॥

गावहिं मंगल सहित सनेहा ॥ प्रथमहिं गिरि बहु
गृह सब गये। यथा योग जहं तहं सब छाये ॥ ९२
शोभा अव लोकि सुहाई। लागे लघु विरंचि निपुणा
ई ॥ छंद ॥ लघु लाग विधि कीनिपुणता अव लोकि
पुरशोभासही ॥ वन वाग कूप तड़ाग सरिता

रा॰
रा॰म

सुभग सब सककौ कहीं। मंगल विपुल तोरण पताका

केतु गृह गृह सोहहीं॥ दोहा॥ जगदंबा जहं अवतरी

सो पुर वरनि न जाइ। ऋद्धि सिद्धि संपत सकल नित नितू

तन अधिकाइ॥ चौपई॥ नगर निकट बरात जब आई

पुर खरभर शोभा अधिकाई॥ करि बनाव सजि वाहन

रा.

रा.स.

न नाना। चलेलेन सादर अगवाना॥ हिय हरषे

सुर सेन निहारी। हरिहि देखि अति भये सुखारी

शिव समाज जब देखन लागे। विडरि चले वाहन

सब भागे॥ धरि धीरज तहां रहे सयाने। वालक

सबले जीव पराने॥ गये भवन पूछहिं पितु माता

123

कहहिं वचन भय कंपित गाता। कहिय कहा कहिजा

इन बाता। यम कर धार किधौ बरियाता॥ बरबौ राह

बरद असवारा। ब्याल कपाल विभूषण छारा॥ छद

तन छार ब्याल कपाल भूषण नगन जटिल भयंकरा

संग भूत प्रेत पिशाच योगिनि विकट मुख रजनीचरा

रा॰ जो जियत रहिहिं बरात देखत पुण्य बडतेन्ह कर ६

रा॰म॰ सही। देखिहि सो उमा विवाह घर घर बात अस

लरक नकही॥ दोहा॥ समाचार महेश समाज स

बजन निजनक ममकाहि। बाल बुझाये विविध वि

धि निडरहो उडर नाहिं॥ चौ॰॥ लै अगवान बरातहि आये

124

(२६

दियेहि सब हि जन बास सुहाये। मैंना सुभ आरती संवा
री। संग सुमंग गावहिं नारी॥ कंचन थार सोह वर पा
नी। परिछन चली हरहिं हरषानी॥ विकट भेष जब
रुद्र हि देखा। अबलन उर भय भयेउ विशेषा। भागि भ
वन पैठी अति त्रासा। गये महेश जहां जन वासा॥ मय

रां॰ ना हृदय भयेउ उछवु भारी । लीन्ही बोलि गिरीश कुमा
रा॰स री ॥ अधिक सनेह गोद बैठारी । श्याम सरोजन
यन भरि बारी ॥ जेइ विधि तुमहि रूप अस दीन्हा ।
तेइ जड़ बर बावर कस कीन्हा । छं॰॥ कस कीन्ह बर बौरा
ह विधि जेइ तुमहि सुंदरता दई । जो फल चहिय सुरतरहिं सो

रागिनी सैंधवी। ताल ३॥

चौपई॥ तव नारद सवही समझावा। पूरव कथा प्रसंग
सुनावा॥ मयना सत्य सुनहु मम वानी। जग देवा तव
सुता भवानी॥ अजा अनादि शक्ति अविनाशिनि। स
दा शंभ अरधंग निवाशिनि। जग संभव पालन लय
कारिणि। निज इछा लीला वपु धारिणि॥ जनमी प्रथ

रा

रा.स

म दन गृह जाई। नाम सती सुंदर तनु पाई ॥ तहहुँ
सती शंकरहिं बिवाही। कथा प्रसिद्ध सकल जग मा
ही ॥ एक बार आवति शिव संगा। देखेउ रघुकु
ल कमल पतंगा ॥ भयउ मोह शिव कहान कीन्हा।
भ्रम बस भेष सीय कर लीन्हा ॥ छंद ॥

128

सिय भेष सती जौ कीन्ह तेहि अपराध शंकर परि हरी ।
हर विरह जाइ वहोर पितुके यज्ञ योगा नलजरी ॥ अ
वजनमि तुम्हरे भवन निजपति लागि दारुण तप कि
या । अस जानि संशय तजहु गिरिजा सर्वदा शंकर प्रि
या ॥ दोहा ॥ सुनि नारद के वचन तब सब कर मिटा ।

रा॰ विषाद ॥ छण महं व्यापेउ सकल पुर घर घर यह

रा॰स संवाद ॥ चौपई ॥ तब मय नाहि मवंत अनंदे । पुनि पु

नि पारवती पद बंदे ॥ नारि पुरुष शिसुयुवा सयाने ।

नगर लोग सब अति हर षाने ॥ लगे होन पुर मंग

ल गाना । सजे सबहिं हाटक घट नाना ॥ भांति अने

क भई जेंवनारा। सूप शास्त्र जस कछु व्यवहारा॥ सोजें

वनारि किजाइ बषानी। बसहि भवन जेहि मातु भवानी।

सादर बोले सकल बराती। विस्नु विरंचि देव सब जाती।

विविधि पांति वेठी जेंवनारा। लगे परोसन निपुण सुआ

रा॥ नारी वृंद सुर जेंवत जानी। लागी देन गारि मृदु वा

गे

गा·स·

नी ॥ छंदः ॥ गारी मधुर स्वर देहि सुंदरि व्यंग वचन सुना

वंही । भोजन करहिं सव प्रति विलंब विनोद सुनि स

चुपावहीं । जेंवन जो बढ्यौ अनंद सो मुख कोटि हून परै क

ह्यौ । अचवाइ दीन्हे पान गवने वास जहं जाको रह्यौ ॥

दोहा ॥ बहुरि मुनि नहिम वंत कहं लगन जनाई आइ ।

130

२रे २ग २म २ध २प २नि २प २ध २म २ग २रे २स

समय विलोकि विवाह कर पठये देव बुलाइ ॥ चौपई।

२नि २स २रे २ग २म २ग २रे २स २नि २स २नि २प २ध २म

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे। सबहिं यथो चित आ

२ग २रे २स २म २ध २नि २स २ग २रे २स २नि २प २ध २म

सन दीन्हे॥ वेदी वेद विधान सँवारी। सुभग सुमंग

२ग २रे २स २म २ध २नि २स २ग २रे २स २नि

ल गावहि नारी॥ सिंहासन अति दिव्य सुहावा। जा

२नि २प २ध २म २ग २रे २स २म २ध २नि २स २ग २रे

इन बरणि विरंचि बनावा॥ बैठे शिव विप्रन्हि शिर

३सं २नि २प २प २म २ग २रे ३सं २म २प २नि ३सं

रा. नाई । हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई ॥ बहुरि मुनीश

३ग ३रे ३सं २नि २प २प २म २ग २रे २सं २म २प २नि

रा.स न उमा बुलाई । करि सृंगार सखीं लै आई ॥ देखत रूप

३सं ३ग ३रे ३सं २नि २प २प २म २ग २रे २सं २म २प

सकल सुर मोहैं । बरनैं छवि अस जग कवि को है ॥ जग

२नि ३सं ३ग ३रे ३सं २नि २प २प २म २ग २रे २सं

देबिका जानि भव भामा । सुरन मनहिं मन कीन्ह प्रणामा ।

२म २प २नि ३सं ३ग ३रे ३सं २नि २प २प २म २ग २रे २सं

सुंदरता मर्याद भवानी । जाइ न कोटि हु बदन बखानी ।

छंद ॥ कोटिहुं बदन नहिं बनै बरणत जग जननि शोभा
महा । सकुचहिं कहत श्रुति शेष सारद मंद मति तुल
सी कहा ॥ छवि खानि मात भवानि गवनी मध्य मंडप
शिव जहां । अव लोकि सकहिन सकुचि पतिप कमल
मन मधुकर तहां ॥ दोहा ॥ मनि अनु सासन गणपति

रा॰स ९२

हिं। पूजे शंभु भवानि। कोउ सुनि संशय करै जनि सुर अनादि जिय जानि॥ चौपई॥ जस विवाह की विधि श्रुति गाई। महा मुनिन सो सब करवाई॥ गहि गिरिश कुश कन्या पानी। शिवहिं समर्पि जानि भवानी॥ पाणि ग्रहण जब कीन्ह महेशा। हिय हरषे तब सकल सुरेशा॥

वेद मंत्र मुनि बरउच्चरंही। जय जय शंकर सुर करंही

बाजहिं बाजन विविध विधाना। सुमन वृष्टिनभ भै वि

धि नाना॥ हर गिरिजा कर भयउ विवाहू। सकल भु

वन भरि रहाउ छाहू॥ दासी दास तुरंग रथ नागा। धे

नु बसन मणि वस्तु विभागा॥ अन्न कनक भाजन भ

रा०
रा०म०

रि जाना। दाइज दीन्हन जाइ बखाना॥ छंद॥ दाइज दि
यो बहु भांति पुनि कर जोरि हिम भूधर कह्यौ। कादेउ
पूरण काम शंकर चरण पंकज गहि रह्यौ॥ शि
व कृपा सागर ससुर कर परि तोष सब भांतिन कियो।
पुनि गहे उपद माथो जम घना प्रेम परि पूरण हियो॥

१३२

दोहा ॥ नाथ उमा मम प्राण सम गृह किंकरी करेहु ॥

छमेहु सकल अपराध अब होइ प्रसन्न वर देहु ॥ चौपई

बहु विधि शंभु सास समझाई । गवनी भवन चरण

सिर नाई ॥ जननी उमा बोलि तब लीन्ही । लैउ छंग सुंद

र सिखदीन्ही ॥ करहु सदा शंकर पद पूजा । नारि धर्म

रां.
रा.स

पति देवन हज्जा ॥ नचन कहति भरि लोचन बारी । ब
हुरि लाइ उर लीन्ह कुमारी ॥ कत विधि शिरजि नारि ज
ग माहीं ॥ परा धीन सपनेहुं सुखनाहीं ॥ भै अति प्रेम वि
कल महतारी । धीरज कीन्ह कुसमय विचारी ॥ पुनि पुनि
मिलति परति गहि चरणा । परम प्रेम कछु जाइ न वरणा । सबनारिन

मिलि भेटि भवानी। जाइ जननि उर पुनि लपटानी॥ छं॰

जननिहि बहुरि मिलि चली उचित असीस सब काहूं

दई। फिर फिर विलोकति मातु तन नव सखीं ले शिव

पहं गई॥ याचक सकल संतोष शंकर उमा सहित भव

नहि चले। सब अमर हरषे सुमन बरषि निसा ननभ

शं०
रा०म

वा जहिं भले ॥ दोहा ॥ चले संग हिम वंत तब पहुंचावन अति हेत । विविधि भांति परितोषकरि विदा कीन्ह वृषकेत ॥ चौपई ॥ तुरत भवन आये गिरि राई । सकल शैल सर लिये बुलाई ॥ आदर दान विनय बहु माना । सब कर विदा कीन्ह हिम थाना ॥ जबहि शंभु कैलाश

१३५

हि आये। हर सब निज निज लोक सिधाये॥ जगत मात
पित शंभु भवानी। तेहि सिंगार न कहौं बखानी॥ कर
हि विविधि विधि भोग बिलासा। गणन समेत बसहि कैलासा॥ हर गिरिजा विहार नितनव यऊ। इहि
विधि विपुल काल चलि गयऊ॥ तब जनमे षट् बद

न कुमारा। तारक असुर समर जिन मारा॥ आगम नि
गम प्रसिद्ध पुराना। षट मुख जन्म कर्म जग जाना॥ छं
द॥ जग जान षट मुख जन्म कर्म प्रताप पुरुषारथ महा।
तेहि हेतु मैं वृषकेतु सुत कर चरित संछेप हिं कहा॥ य
ह उमा शंभु विवाह जे नर नारि कहहिं जे गावहीं॥ क

ल्याण काज विवाह मंगल सर्वदा सुख पावहीं ॥ दोहा ॥

चरित सिंधु गिरिजारमण वेद न पावहिं पार । बरणे तु

लसी दास किमि अतिमति मंदगवार ॥ चौपई ॥ शंभु चरि

त सुनि सरस सुहावा । भारद्वाज मुनि अति सुखपावा ॥

बहु लालसा कथा पर वाढी । नयन नीर रोमावलि ठा

रां॰
रा॰म॰

ष्टी॥ प्रेम विवस मुखे आवन वानी। दशा देषि हरषे मुनि ज्ञानी॥ अहो धन्य तव जन्म मुनीशा। तुमहिं प्राण सम प्रिय गौरीशा॥ शिवपद कमल जिनहिं रति नांही। रामहिंते सपने ह्न न सुहांही॥ विनुछल विश्वनाथ पदनेह। राम भक्त कर लक्षण येहू॥ शिव समको रघुपति व्रतधारी।

137

बिनु अघनजी सती असि नारी॥ प्रण करि रघुपति भ
क्ति दृढाई। को शिव सम रामहिं प्रिय भाई॥ दोहा॥ प्र
थम कहे मैं शिव चरित बूझा मरम तुह्मार। सुचि सेव
क तुम रामके रहित समस्त विकार॥ चौपई॥ मैं जाना
तुह्मार गुण शीला। कहौं सुनहु अब रघुपति लीला॥

रा॰ सुनि मुनि आज समागम तोरे। कहि न जाय जस सुख
रा॰स मन मोरे॥ राम चरित अति अमित मुनीशा। कहि न स
कहिं शत कोटि अहीसा॥ तदपि यथा श्रुति कहौ बखानी।
सुमिरि गिरापति प्रभु धनपानी॥ सारद दास नारि सम
स्वामी। राम सूत्र धर अंतर जामी॥ जेहि पर कृपा करहि

138

जन जानी कवि उर अजिर नचावहि बानी ॥ प्रणऊं सोर

कृपाल रघुनाथा। वरणउ विशद तासु गुण गाथा ॥

परम रम्य गिरि बर कैलासू। सदा जहां शिव उमा नि

वासू ॥ दोहा ॥ सिद्ध तपो धन योगि जन सुर किन्नर मु

नि वृंद। वसहिं तहां सुकृती सकल सेवहिं शिव सुख

रा
रा॰म

कंद॥ चौपई॥ हरि हर विमुख धर्म रत नाहीं। तेनरत
हं नस पनेहु जांहीं॥ तेहि गिरि पर वट विट पवि शाला
नित नूतन सुंदर सब काला॥ त्रिविध समीर सुशीतल
छाया। शिव विश्राम वि ठ पश्रुति गाया॥ एक वार ते
हितर प्रभु गयऊ। तहु विलोकि उर अति सुख भयऊ॥

निजकर डासि नाग रिपु छाला। बैठे सहजहिं शंभ कृ

पाला॥ कुंद इंदु बर गौर शरीरा। भुज प्रलंब परिधन मु

निचीरा॥ तरुण अरुण अंबुज सम चरणा। नखदुति भ

क्त हृदय तम हरणा॥ भुजग भूति भूषण त्रिपुरारी।

आनन शरद चंद्र छविहारी॥ दोहा॥ जटा मुकुट सुर

रा॰
रा॰ स॰

सरित सिर लोचन नलिन विशाल। नील कंठ लावन्यनिधि सोह चाल विधु भाल॥ चौपई॥ वैठे सोह्ह कामरिपु कैसें। धरे शरीर शान्तर सजैसें॥ पारवती भल अवसर जानी। गई शंभु पहं मात भवानी॥ जानि प्रिया आदर अति कीन्हा। वामभाग आसन हर दीन्हा॥ वैठी शिव समीप

१५०

१६

हरषाई। पूरब जन्म कथा चित आई ॥ पतिहिय हेतु अ

धिक अनुमानी। बिहंसि उमा बोली प्रियवानी ॥ कथा

जो सकल लोक हित कारी। सोइ पूछन चह सैल कुमा

री ॥ विश्व नाथ मम नाथ पुरारी। त्रिभुवन महिमा विदि

त तुम्हारी ॥ चर अरु अचर नाग नर देवा। सकल कर

रा.म.

हिं पद पंकज सेवा ॥ दोहा ॥ प्रभु समर्थ सर्वज्ञ शिव स
कल कला गुणधाम । योग ज्ञान वैराग्य निधि प्रणत कल्प
तरु नाम ॥ चौपई ॥ जौ मोपर प्रसन्न सुखरासी । जानिय
सत्य मोहि निजदासी ॥ तौ प्रभु हरहु मोह अज्ञाना । क
हि रघुनाथ कथा विधि नाना ॥ जासु भवन सुर

२५१

नरु नर होई। सुह कि दरिद्र जनित भव सोई॥ शशि भूष

ण अस हृदय विचारी। हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी॥

प्रभु जे मुनि परमारथ वादी। कहहिं राम कहुं ब्रह्म अ

नादी॥ शेष सारदा वेद पुराना। सकल करहिं रघुपति

गुणगाना॥ तुमहु निराम नाम दिन राती। सादर जप

रा॰
रा॰स

ह्रु अनंग अराती ॥ राम सो अवध न्टपति सुत सोई । की
अज अगुण अलख गति कोई ॥ दोहा ॥ जौं न्टप तनय तौ
ब्रह्म किमि नारि विरह मति भोरि । देखि चरित महिमा
सुनत भ्रमत बुद्धि अति मोरि ॥ चौ॰ ॥ जौ अनीह ब्यापक विभु
कोऊ । कहहु बुझाइ नाथ मोहि सोऊ । अज्ञ जानि रिसि जनि उरधरहू

142

जेहि विधि मोह मिटै सोइ करहू ॥ मैं बन दीख राम प्रभु

ताई। अति भय विकल न तुमहिं सुनाई ॥ तदपि मलि

न मन बोधन आवा। सो फल भली भांति मैं पावा ॥ अ

जहूं कछु संशय मन मोरे। करहु कृपा विनऊं कर जो

रे ॥ प्रभु तव मोहि बहु भांति प्रबोधा। नाथ सो सम

रा॰
रा॰स॰

कि करहु जनि क्रोधा ॥ तव कर अस विमोह मोहि नाहीं ।
राम कथा पर रुचि मन मांही ॥ कहहु पुनीत राम गुण
गाथा । भुजग राज भूषण सुर नाथा ॥ दोहा ॥ बंदौ पद धरि
धरणि सिर विनय करौं कर जोरि । बरणौ रघुवर विश
द यश श्रुति सिद्धांत निचोरि ॥ चौपई ॥ यदपि योषिता अन

143

अधिकारी। दासी मन क्रम वचन नरनारी॥ गूढो तत्वन

साधु दुरा वहिं। आरत अधिकारी जहं पावहि॥ अति आ

रति पूछौं सुर राया। रघुपति कथा कहहु करि दाया॥

प्रथम सो कारण कहहु विचारी। निर्गुण ब्रह्म सगुण व

पुधारी॥ पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा। बाल चरित पु

रा॰ रा॰स

नि कहहु उदारा ॥ कहहु यथा जानकी विवाहा । राजतजा

सो दूषण काहा ॥ बन बस कीन्हे उ चरित अपारा । कहहु नाथ जिमि रावण मारा ॥ राज वैठि कीन्ही बहु लीला । सकल कहहु शंकर सुख शीला ॥ दोहा ॥ बहुरि कहहु करुणा यतन कीन्ह जो अचरज राम । प्रजा सहित ।

144

१४४

रघुवंश मणि किमि गवने निज धाम ॥ चौपई ॥ पुनि प्रभु

कहहु सो तत्व बखानी । जेहि विज्ञान मगन मुनि ज्ञानी

भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा । पुनि सब बरणहु सहित

विभागा ॥ औरौ राम रहस्य अनेका । कहहु नाथ अति

विमल विवेका ॥ जो प्रभु मैं पूछा नहि होई । सोउ दया

रा॰ ल राखे उजनि गोई ॥ तुम त्रिभुवन गुरु वेद बखाना । आन
रा॰म
जीव पामर का जाना ॥ प्रश्न उमा की सहज सुहाई । छल
विहीन सुनि शिव मन भाई ॥ हरहि राम चरित सब आ
ये । प्रेम पुलकि लोचन जल छाये ॥ श्री रघुनाथ
रूप उर आवा । परमानंद अमित सुख पावा ॥

145

राग ललित। ता. ३। २सं २म २प २म २म २ग २म २प २म २ग २रे २सं

दोहा ॥ मगन ध्यान रस दंड युग पुनि मन बाहिर कीन्ह।

२मउ २म २प २म २ग म २प २म २ग २रे २सं

रघु पति चरित महेश तव हरषित बरणै लीन्ह ॥ चौप

ताल ३। २म २ग २म २ग २रे २सं २नि २सं २रे २म २म २ग २ग

ई ॥ झूठौ सत्य जाहि विनु जाने। जिमि भुजंग विनु रजु प

२रे २सं २म २प २नि २सं २नि २प २म २ग २रे २ग

हि चाने ॥ जेहि जाने जग जाइ हराई। जागे यथा सपन

२म २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २नि २प २म २ग २रे

भ्रम जाई ॥ बंदौं बाल रूप सोइ रामू। सब विधि सुल

२ग २मा २ग २रे २सं २मा २प २नि २सं २नि २प

रा म जप तज सनाम॥ मंगल भवन अमंगल हारी।

२मा २ग २रे २ग २मा २ग २रे २सं २मा २प २नि २सं

रा.स. द्रवो सो दशरथ अजिर विहारी॥ करि प्रणाम राम

२नि २प २मा २ग २रे २ग २रे २सं २मा २प

हिं त्रिपुरारी। हरषि सुधा सम गिरा उचारी॥ धन्य ध

२नि २सं २नि २प २मा २ग २रे २ग २मा २ग २रे २सं २मा

न्य गिरि राज कुमारी। तुम समान नहि कोउ उपकारी॥ पूछे

२प २नि २सं २रे २नि २प २म २ग २रे २ग २मा २ग २रे २सं

हु रघु पति कथा प्रसंगा। सकल लोक जग पावनि गंगा.

186

२मा २प २नि २सां २नि २प २म २ग २रे २ग २मा २ग

नम रघुवीर चरण अनुरागी। कीन्हेउ प्रश्न जगत हि

२रे २सां २सां २रे २नि २प २म २ग २रे २ग २रे

त लागी॥ दोहा॥ राम कृपाते पार्वती सपने हु तव मन

२सां २प २म २मा २ग २मा २प २म २ग २रे २सां

माहिं॥ शोक मोह संदेह भ्रम मम विचार कछु नाहिं॥

तीनताल २नि २सां २मा २म २ग २रे २सां २प २म २मा २ग

चौपाई॥ तदपि अशंका कीन्हे हु सोई। कहत सुनत सब

२रे ग २रे २सां २मा २प २नि २सां २नि २प २म

कर हित होई॥ जिन हरि कथा सुनी नहि काना। श्रव

गं
ग॰स

२मा २ग २रे २ग २रे २सा २मा २प २नि २सा २नि
एरंध ग्रहि भवन समाना ॥ नयनन संत दरसन हिं

२प २म २मा २ग २रे २ग २रे २सा २मा २प २नि २सा
देखा। लोचन मोर पंख कर लेखा ॥ ते शिर कटुतूम

२नि २प २म २मा २ग २रे २ग २रे २सा २मा २प
रि सम तूला। जे नन मन हरि गुरु पद मूला ॥ जिनह

२नि २सा २नि २प २म २मा २ग २मा २ग २रे २सा
रि भक्ति हृदै नहि आनी। जीवन सब समान ते प्रानी ॥

२मा २प २नि २सा २नि २प २म २मा २ग २रे २ग २रे
जे नहि करहि राम गुण गाना। जीह सदा दुर जीह स

१४७

१४

माना ॥ कुलिश कठोर निठुर सोइ छाती । सुनि हरि च
रित न जो हरषाती ॥ गिरिजा सुनहु राम कर लीला । सु
र हित दनुज विमोहन शीला ॥ दोहा ॥ राम कथा सुर धे
नु सम सेवत सब सुख दान । संत सभा सुर लोक सम
कौन सुनै अस जान ॥ चौपई ॥ राम कथा सुंदर कर ।

रा॰ नारी। संशय विहंग उड़ावन हारी॥ राम कथा कलि वि

रा॰स॰ टप कुठारी। सादर सुन गिर राज कुमारी॥ राम नाम

गुण चरित सुहाये। जन्म कर्म अगणित श्रुति गाये॥ य

था अनंत राम भगवाना। तथा कथा कीरति गुण नाना॥

तदपि यथा श्रुति जस मति मोरी। कहिहों देखि प्रीति अति

148

२रे २सा २मा २प २नि २सा २रे २नि २प २म २ग २रे २ग २मा २ग

तोरी॥ उमा प्रश्न तव सहज सुहाये। सुखद संत संमत मो

२रे २सा २मा २प २नि २सा २नि २प २म २ग २रे २ग २रे

हिभाई॥ एक बात नहि मोहि सोहानी। यदपि मोह वस क

२ग २रे २सा २मा २प २नि २सा २नि २प २म २ग २रे

हे हु भवानी॥ तुम जो कहा राम कोउ आना। जेहि श्रुति

२ग २मा २ग २रे २सा ताल ३॥ २प २म २मा २ग २मा २प

गाव धरहि मुनिध्याना॥ दोहा॥ कहहिं सुनहिं अस अ

२मा २ग २मा २ग २रे २सा २मा २प २नि २सा २नि २प

धमनर ग्रसेजे मोह पिशाच। पाषंडी हरि पद विमुख

रा०
रा०स

जानहिं झूठन साच ॥ चौपई ॥ अज्ञ अको विद ग्रंथ अभागी। काई विषय मकुर मन लागी ॥ लंपट कपटी कुटिल विशेषी। सपने हु संत सभा नहि देषी ॥ कहहिं ते वेद असंमत बानी। जिन हिं न सूफ लाभ नहि हानी ॥ मुकुर मलिन अरु नयन विहीना। राम रूप देखहिं कि मि दीना

१४९

२४५

जिनके अगुण न सगुण विवेका। जल्पहिं कल्पित वचन अनेका॥ हरि माया बस जगत भ्रमाहीं। तिन हिं कहत कछु अघटित नाहीं॥ वातुल भूत विवस मतवारे। तिन हिं बोलहिं वचन संभारे॥ जिन कृत महा मोह मद पाना। तिन कर कहा करिय नहि काना॥ सोरठा॥ अस निज

रा०
रा०स

हृदय विचारि तजि संशय भजु राम पद। सुनु गिरि रा
ज कुमारि भ्रम तम रवि कर वचन मम॥ चौपाई॥ सगु
णहिं अगुणहिं नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुराण बुध
वेदा॥ अगुण अरूप अलख अजजाई॥ भक्त प्रेम बस सगुण
सो होई॥ जो गुण रहित सगुण सो कैसें। जल हिम उपल

156

१५०

विलग नहिं जैसें। जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा। तिहि कि

मि कहिय विमोह प्रसंगा॥ राम सच्चिदा नंद दिनेशा। न

हितहं मोह निशाल वलेशा॥ सहज प्रकाश रूप भगवा

ना। नहि तहं पुनि विज्ञान विहाना॥ हरष विषाद ज्ञान

अज्ञाना। जीव धर्म अह मिति अभि माना॥ राम ब्रह्म व्या

रा॰ रा॰म॰

पक जग जाना। परमानंद परेश पुराना॥ दोहा॥ पुरुष प्रसिद्ध प्रकाश निधि प्रगट परावर नाथ। रघुकुल मणि मम स्वामि सोइ कहि शिव नाय उमाथ॥ चौपई॥ निज भ्रम नहिं समुझहि अज्ञानी। प्रभु परमोह धरहिं जड़ प्रानी॥ यथा गगन घन पटल निहारी।

15

ऊंपेउ भाव कहहिं कवि चारी ॥ चितवत लोचन अंगुलि

लायें । प्रगट युगल शशि तेहि के भायें ॥ उमा राम विष

यिक अस मोहा । नभत मध्र् मधूरि जिमि सोहा ॥ विष

य करण सुर जीव समेता । सकल एक तें एक सचेता ॥

सब कर परम प्रकाशक जोई । राम अनादि अवध प

रा·म

नि सोई॥ जगत प्रकाश्य प्रकाश्यक रामू। मायाधीश

ज्ञान गुण धामू॥ जासु सत्य तातें जड़ माया। भास स

त्य इव मोह सहाया॥ दोहा॥ रजत सीप महं भास जिमि

यथा भानु कर वारि॥ यदपि त्रषा तिहु काल सोइ भ्रम

न सकै कोउ टारि॥ चौपई॥ इहि विधि जग हरि आश्रि

152

न रहई। यदपि असत्य देत दुख अहई॥ जौं सपने सिर का

टै कोई। विनु जागें दुख दूरि न होई॥ जासु कृपा अस भ

म मिटि जाई॥ गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई॥ आदि अंत

कोउ जासु न पावा। मति अनुमान निगम अस गावा॥

विनु पद चलै सुनै विनु काना। कर विनु कर्म्म करै वि

रा०
रा०म

थि नाना॥ आनन रहित सकल रसभोगी। बिनुबाणी वक्ता बड़ योगी॥ तन बिनु परस नयन बिनु देषा। ग्रहै घ्राण बिनु वास अशेषा॥ अस सब भांति अलौकिक करणी। महिमा जासु जाइ नहि बरणी॥ दोहा॥ जेहि इमि गावहिं वेदबुध जाहि धरहिं मुनिध्यान। सोइ दशरथ सुतभक्तहित॰

१५३

कोशल पति भगवान ॥ चौपई ॥ काशी मरत जंतु अव

लोकी । जासु नाम बल करौ विशोकी ॥ सोइ प्रभु मोर

चरा चर स्वामी । रघु वर सबउर अंतर जामी ॥ विवश

हु जासु नाम नर कहहीं । जन्म अनेक संचित अघ दहहीं

सादर सुमिरण जो नर करहीं । भव वारिधि गोपद इ



रा॰ वतरहीं ॥ रामसो परमातमा भवानी। तहं भ्रम अति अवि
रा॰स॰ हित नव वानी ॥ अस संशय आनत उरमाहीं। ज्ञान विरा
ग सकल गुण जाहीं ॥ सुनि शिवके भ्रम भंजन बचना।
मिटिगइ सब कुतर्क की रचना ॥ भइ रघुपति पद प्रीति प्रती
ती। दारुण असंभावना बीती ॥ दोहा ॥ पुनि पुनि प्रभ पदकमल

154

१५८

गहि जोरि पंकरुह पानि । बोली गिरिजा बचन बर मन

हुँ प्रेमरस सानि ॥ चौपई ॥ शशिकर सम सुनि गिरा

तुह्मारी । मिटा मोह शरदातपभारी ॥ तुम कृपाल स

ब संशय हरेऊ । राम स्वरूप जानि मोहि परेऊ ॥ नाथ

कृपा अब गयेउ बिषादा । सुखी भईउं प्रभु चरण प्रसा

रा
रा॰स

दा॥ अब मोहि आपनि किंकर जानी॥ यदपि सहज जड़ना
रि अयानी॥ प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू। जो मो पर प्र
सन्न प्रभु अहहू॥ राम ब्रह्म चिन्मय अविनासी। सर्व रहि
त सब उर पुरवासी॥ नाथ धरे उ नर तनु केहि हेतू। मोहि
समुझाइ कहहु वृषकेतू॥ उमा वचन सुनि परम विनी

155

१५५

ना। राम कथा पर प्रीति घनीना॥ दोहा॥ हिय हरषे का

मारिनव शंकर सहज सुजान। बहु विधिउ महिं प्रशं

सिघनि बोले कृपा निधान॥ सोरठा॥ सुन सुभ कथा

भवानि राम चरित मानस विमल। कहा भुसुंडि बखा

नि सुना विहंग नायक गरुड़॥ सोइ संबाद उदार जेहि

रा॰
रा॰स

बिधि मा आगें कहब॥ सुनहु राम अवतार चरित पर
म सुंदर अनघ॥ हरि गुण नाम अपार कथा रूप अग
णित अमित॥ मैं निज मति अनु सार कहौं उमा साद
र सुनहु॥ चौपई॥ सुनि गिरिजा हरि चरित सुहाये।
बिपुल बिशद निगमा गम गाये। हरि अवतार हेतु जे

156

२५६

हि होई। इद मिथ्या कहि जा इन सोई॥ राम अतर्क बुद्धि मन

बानी। मत हमार अस सुनहु भवानी॥ तदपि संत मुनि बे

द पुराना। जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना॥ तस मैं

सुमुखि सुनावउं तोही। समुझि परै जस कारण मोही॥

जब जब होइ धर्म की हानी। बाढहिं असुर अधम

रां॰ अभिमानी ॥ करहिं अनीति जाइ नहिं बरणी । सीदहिं विप्र
रा॰स धेनु सुर धरणी ॥ तब तब प्रभु धरि विविध शरीरा । हरहिं
कृपानिधि सज्जन पीरा ॥ दोहा ॥ असुर मारि थापहिं सुर
न्हि राखहिं निज श्रुति सेतु । जग विस्तारहिं विशद यश
राम जन्म कर हेतु ॥ चौ॰ ॥ सोइ यश गाइ भक्त भव तरहीं ॥

157

146

कृपा सिंधु जन हित तनु धरहीं ॥ राम जन्म के हेतु अनेका । परम विचित्र एक तें एका ॥ जन्म एक दुइ कहौं ब
खानी । सावधान सुनु सुमति भवानी ॥ द्वार पाल हरि
के प्रिय दोऊ । जय अरु विजय जान सब कोऊ ॥ विप्र श्रा
पतें दोनौ भाई । तामस असुर देह तिन पाई ॥ कनक क

रा॰ रा॰म

शिव अरु हाटकलोचन। जगत विदित सुर पति मद मोचन॥ विजयी समर वीर विख्याता। धरि वराह वपु एक निपाता॥ होइ नर हरि दुसर हम मारा। जन प्रहलाद सुयश विस्तारा॥ दोहा॥ भये निशाचर जाइ ते महावीर बलवान॥ कुंभकर्ण रावण सुभट सुर विजयी जगजान॥

1558

१५८

चौपई ॥ लक्षन भये उ हते भगवाना । तीन जन्म द्विज ब

चन प्रमाना ॥ एक वार तिन के हित लागी । धरेउ शरी

र भक्त अन रागी ॥ कशयप अदिति तहां पितु माता । द

शरथ कौशल्या विख्याता ॥ एक कल्प इहि विधि अव

तारा । चरित पवित्र किये संसारा ॥ एक कल्प सुर दे

रा॰ सं॰

वि उबारे। समर जलंधर सन सब हारे॥ शंभु कीन्ह संग्राम अपारा। दनुज महा बल मरै न मारा॥ परम सती असुरा धिप नारी। तेहि बल ताहि न जीत पुरारी॥ दोहा॥ छल करि टारे उतासु ब्रत प्रभु सुर कारज कीन्ह। जब तेइ जाने उमर मतव ॥

159

१५५

श्राप कोप करि दीन्ह ॥ चौपई ॥ तासु श्राप हरि कीन्ह

प्रमाना । कौतुक निधि कृपाल भगवाना ॥ तहां जलंध

र रावण भयऊ । रण हति राम परम पद दयऊ ॥ एक

जन्म कर कारण एहा । जेहि लगि राम धरी नर देहा ॥

प्रति अव तार कथा प्रभु केरी । सुनि मुनि वरणी कवि

रा॰
रा॰स॰

नचनेरी। नारद श्राप दीन्ह इकबारा। कल्प एकतेहिल
लि अवतारा॥ गिरिजा चकित भई सुनि बानी। नारद वि
ष्णु भक्त मुनि ज्ञानी॥ कारण कौन श्राप मुनि दीन्हा।
का अपराध रमापति कीन्हा॥ यह प्रसंग मोहि कह
हु पुरारी। मुनि मन मोह से अचरज नारी॥ दो॰। बोले बिहसि

160

महेश तव ज्ञानी मूढ़ न कोइ ॥ जेहि जस रघु पति करहिं

जव सो तस तेहि छण होइ ॥ सोरठा ॥ कहौं राम गुण गा

थ भरद्वाज सादर सुनहु ॥ भव भंजन रघु नाथ भजु तुल

सी तजि मान मद ॥ चौपई ॥ हिम गिरि गुहा एक अति पा

वनि । वह समीप सुर सरित सुहावनि । आश्रम परम

रा॰ पुनीत सुहावा। देखि देव ऋषि मन अति भावा॥ निरखि
रा॰स
सैल गिरि विपिन विभागा। भयेउ रमापति पद अनुराग
गा॥ सुमिरत हरिहिं आपगति बाधी। सहज विमल म
न लागि समाधी॥ मुनि गति देखि सुरेशउ राना। कामहिं
बोलि कीन्ह सन माना॥ सहित सहाय जाहु मम हेतू॥

161

चलेउ हरषि हिय जलचर केतू ॥ सुनासीर मन महं अति

त्रासा । चहत देव ऋषि मम पुर वासा ॥ जे कामी लोलुप

जग माहीं । कुटिल काक इव सबहिं डराहीं ॥ दोहा ॥ सू

ख हाड ले भाग शठ स्वान निरखि मृगराज । छीनि लेइ

जनि जान जड़ तिमि सुरपति हि न लाज ॥ चौपई ॥ तेहि ।

रा॰ आश्रम हिं मदन जब गयेऊ। निज माया बसंत निर्मयऊ॥
रा॰स कुसु मित विविध विटप बहुरंगा॥ कूजहिं कोकिल गुंजहिं
भृंगा॥ चली सुहावनि त्रि विधि बयारी॥ काम कृशानु ब
ढा वन हारी॥ रंभा दिक सुर नारिन बीना। सकल अ
सम शार कला प्रवीना॥ करहिं गान बहु तान तरंगा।

१६८

बहु विधि क्रीडहिं पानि पतंगा ॥ देखि सहाय मदन ह
रषाना । कीन्हेसि पुनि प्रपंच विधि नाना ॥ काम कला
कछु मुनि हि न व्यापी । निज भय डरे उमनो भव पापी ॥
सीम कि चापि सकै कोउ तासू । बड़ रखवार रमापति
जासू ॥ दोहा ॥ सहित सहाय सभीत अति मानि हारि

रा०

रा०म

मन मैन। गहेसि जाइ मुनि बर चरण कहि सुठि आरत बैन॥ चौपाई॥ भयेउ न नारद मन कछु रोषा। कहि प्रिय वचन काम परितोषा॥ नाइ चरण शिर आयसु पाई। गयेउ मदन तब सहित सहाई॥ मुनि सुशीलता आपनि करणी। सुरपति सभा जाइ सब बरणी॥ सुनि सब

163

के मन ग्रवरज ग्रावा। मुनिहिं प्रशंसि हरिहिं सिरनावा

तब नारद गवने शिव पाहीं। जीति काम ग्रह मिति म

न माहीं॥ मार चरित शंकर हिं सुनावा। ग्रति प्रिय

जानि महेश सिखावा॥ बार बार विनवउं मुनि तोही

जिमि यह कथा सुनायउ मोही॥ तिमिजनि हरिहि

रा॰ सुना बहु कबहूं। चलेहूं प्रसंग दुराय हु तबहूं॥ दोहा॥
रा॰स शंभु दीन्ह उपदेश हित नहि नारदहि सुहान। भरद्वाज
कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान॥ चौपई॥ रामकी
न्ह चाहैं सो होई। करै अन्यथा अस नहि कोई॥ शं
भु बचन मुनि मन हिन भाये। तब विरंचिके लोक सिधाये।
164

एक बार करतल बर बीणा। गावत हरि गुण गान प्रबीणा॥ छीर सिंधु गवने मुनि नाथा। जहं बस श्रीनिवास स्रुति माथा॥ हरषि मिले उठि रमा निकेता। बैठे आसन ऋषिहि समेता॥ बोले बिहंसि चराचर राया। बहुत दिनहिं कीन्ही मुनि दाया॥ काम चरित नारद सब

रा॰
रा॰स

भाषे। यद्यपि प्रथम बरग्नि शिव राषे॥ अति प्रचंड रघुप
ति की माया। जेहि न मोह अस को जग जाया॥ दोहा॥ रू
ख वदन करि वचन मृदु बोले श्रीभगवान। तुह्मरे सुमि
रण ते मिटहिं मोह मार मद मान॥ चौ॰॥ सुनि मुनि मोह हो
इ मन ताके। ज्ञान विराग हृदय नहि जाके॥ ब्रह्मचर्य्य ब्रतरत

16

मति धीरा। तुमहिं कि करै मनोभव पीरा॥ नारद कहे

उ सहित अभिमाना। कृपा तुम्हारि सकल भगवाना।

करुणा निधि मन दीख विचारी। उर अंकुरेउ गर्व तरु

भारी॥ वेगि सो मैं डारि हौं उपारी। प्रणत हमार सेव

क हित कारी॥ मुनि कर हित मम कौतुक होई। अव

रां
रा.म

शिउ पायकरव मैं सोई ॥ तव नारद हरि पद शिरनाई ।
चले हृदय अह मिति अधिकाई ॥ श्रीपति निज माया त
वप्रेरी । सुनहु कठिन कर नीनेहि केरी ॥ दोहा ॥ विरचेउ
म गुमहं न गरनेहि सत योजन विस्तार ॥ श्रीनिवास
पुरते अधिक रचना विविध प्रकार ॥ चौपई ॥

166

ता॰३॥ चौपई राग पंचम

बसहिं नगर सुंदर नर नारी। जनु बहु मनसिज रति तनु धारी॥ तेहि पुर बसै शील निधि राजा। अगनित हय गय सेन समाजा॥ शत सुरेश सम विभव विलासा। रूप तेज बल नीति निवासा॥ विश्व मोहनी तासु कुमारी। श्रीविमोह जेहि रूप निहारी॥ सोहरि माया सब गु

रा. णखानी। शोभानाम कि जाइ बखानी॥ करै स्वयं वर

रा.स सो नृपबाला। आये तहं अगणित महि पाला॥ मुनि

कौतुक कीन नगर तेहि गयेऊ। पुरवासिन सब पूजन भयेऊ।

सुनि सब चरित भूप गृह आये। करि पूजा नृप मुनि बैठाये

दोहा॥ आनि देखाई नारदहिं भूपति राज कुमारि॥

167

कहहु नाथ गुण दोष सब इहि कर हृदय विचारि ॥ चौ

पई ॥ देखि रूप मुनि विरति विसारी । बडी बार लगि र

है निहारी ॥ लक्षण नाम विलोकि भुलाने । हृदय हर्ष

नहि प्रगट बखाने ॥ जो इहि बरै अमर सो होई । समर

भूमि तेहि जीत न कोई ॥ सेवहिं सकल चराचर ताही

गं· बरै शील निधि कन्या जाही ॥ लछण सब विचारि उर

गं·स राषे । कछु कब नाइ भूप मन भाषे ॥ सुता सुलछण

कहि नृप पाही । नारद चले सोच मन मांही ॥ करौं जा

इ सोइ यतन विचारी । जेहि प्रकार मोहि वरै कुमारी ॥

जप तप कछु न होइ इहि काला । हे विधि मिलै कवन

168

विधि वाला ॥ दोहा ॥ इहि अवसर चाहिय परम शोभा
रूप विशाल ॥ जो विलोकि रीझै कुंवरि तव मेले जय
माल ॥ चौपई ॥ हरि सन मांगौ सुंदर ताई । होइहि जात
गहरु अति भाई ॥ मोरे हित हरि सम नहि कोऊ । इहि
अवसर सहाय सो होऊ ॥ बहु विधि विनय कीन्ह तेहि

रां
रा॰म

काला। प्रगटेउ प्रभु कौतुक की कृपाला॥ प्रभु विलोकि मु
नि नयन जुड़ाने। होइहि काज हिये हरषाने॥ अति आ
रत कहि कथा सुनाई। करहु कृपा प्रभु होहु सहाई॥ आ
पन रूप देहु प्रभु मोही। आन भांति नहिं पावउं ओही॥
जेहि विधि नाथ होइ हित मोरा। करो सो वेगि दास मैं तो

16

१६४

रा॥ निज माया बल देखि बिसाला। हिय हँसि बोले दीन

दयाला॥ दोहा॥ जेहि बिधि होइहि परम हित नारद सुन

हु तुम्हार। सोइ हम करब न आन कछु बचन न मृषा

हमार॥ चौपई॥ कुपथ माँग रुज ब्याकुल रोगी॥

बैद न देइ सुनहु मुनि योगी॥ इहि बिधि हित तुम्हार

रा॰
रा॰स

मैं ठयऊ। कहि ग्रस ग्रंतर हित प्रभु भयऊ॥ मायाविव
श भये मुनि मूढा। समुझि नही हरि गिरा निगूढा॥ग
वने तरत तहां ऋषिराई। जहां स्वयं वर भूमि बनाई॥
निज निज आसन बैठे राजा। बहु बनाव करि सहित समा
जा॥ मुनि मन हर्ष रूप अति मोरे। मोहि तजि आन बरिहि

170

नहिं भोरे ॥ मुनि हित कारण कृपा निधाना । दीन्ह कुरूप

न जाइ बखाना ॥ सो चरित्र लखि काहु न पावा । नारद

जानि सबहिं सिर नावा ॥ दोहा ॥ रहे तहां दुइ रुद्रगण

ते जानहिं सब भेउ । विप्रभेष देखन फिरहिं परम कौतु

की तेउ ॥ चौपाई ॥ जेहि समाज बैठे मुनि जाई । हृदय रू

रा॰
रा॰स॰

प अहह मिति अथि काई ॥ तहं वैठे महेश गण दोऊ । वि
प्र भेष गति लखैन कोऊ ॥ करहि कूट नारद हिं सुनाई
नीक दीन्ह हरि सुंदर ताई ॥ रीझिहि राज कुंवरिछ वि
देषी । इनहिं वरिहि हरि जान विशेषी ॥ मुनिहि मोह
मन हाथ पराये । हंसहि शंभ गण अति सचु पाये ॥

१७

१७

यदपि सुनहि मुनि अटपटि वानी। समझि न परै बुद्धि
भ्रम सानी॥ काहु न लखा सो चरित विशेषा। सो सरूप
नृपकन्या देषा॥ मर्कट वदन भयंकर देही। देखत
हृदय क्रोध भा तेही॥ दोहा॥ सखी संगलै कुवरि तव
चलि जनु राज मराल। देखति फिरै महीप सब कर सरो

रा॰ रा॰म

जजय माल ॥ चौपई ॥ जेहि दिशि बैठे नारद फूली ॥ सो दिशि तेइन विलोकी भूली ॥ पुनि पुनि मनिउक सहिं अकुलाहीं । देखि दशा हरि गण मुसकाहीं ॥ धरि नृपतन तहं गयउ कृपाला । कुवरि हरषि मेलिउ जय माला ॥ दुलहि लिले गोलदि निवासा । नृप समाज सब भयेउ

172

निरासा ॥ मुनि अति विकल मोह मति नाठी । मणिगिरि गई छूटि जनु गांठी ॥ तब हर गण बोले मुसकाई । निज मुख मुकुर विलोकहु जाही ॥ अस कहि दोउ भागे भय भारी । वदन दीख मुनि वारि निहारी ॥ भेष विलोकि क्रोध अति बाढा । तिनहिं स्राप दीन्हा अति गाढा ॥ दो॰

रा॰ होइहि निशाचर जाइ तम कपटी पापी दोउ। हंसेहु हम जेहिं
रा॰स सो लेहु फल बहुरि हंसेउ मुनि कोउ॥ चौपाई॥ पुनि जल
दीख रूप निज पावा। तदपि हृदय संतोषन आवा॥ फर
कत अधर कोप मन माहीं। सपदि चले कमला पति पा
हीं॥ देहौं श्राप कि मरिहौं जाई। जगत मोर उपहास क

173

१७३

राई ॥ बीच हिं पंथ मिले दनु जारी। संगर मासोइ रानकु
मारी ॥ बोले मधुर वचन सर साँई। मुनि कहं चले बि
कलकी नाँई ॥ सुनत बचन उपजा अति क्रोधा। माया
बसन रहा मन बोधा ॥ पर संपदा सकहु नहि देषी। तुम
रे ईष्षा कपट विशेषी ॥ मथत सिंधु रुद्र हिं बौरा येउ।

रा॰
रा॰स

स्वरन प्रेरि विघन करायेउ ॥ दोहा ॥ असुर सुरा विष शंक रहिं आपुर मामगएि चाह । स्वारथ साधक कुटल तुम सदा कपट व्यव हारु ॥ चौपई ॥ परम स्वतंत्र न सिर पर कोई । भावै मनहिं करहु तुम सोई ॥ भले हि मंद मंद हिं भल करहू । विस्मय हर्ष न हिय कछु पर हू ॥ उहकि उह

174

१७४

कि परिके सबकाहू । अति अशंक मन सदा उछाहू ॥

कर्म शुभाशुभ तुमहिं न बाधा । अब लगि तुमहिं न काहु साधा ॥ भले भवन अब बायन दीन्हा । पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥ बंचेहु मोहि जवन धरि देहा । सोइ तन धरहु श्राप मम एहा ॥ कपि आकृति तुम कीन्ह

रा॰ हमारी। करिहहिं कीस सहाइ तुम्हारी ॥ मम अप का

रा॰स॰ र कीन्ह तुम भारी। नारि विरह तुम होव दुखारी ॥ दोहा।

आप सीस धरि हरषि हिय प्रभु सुर कारज कीन्ह। निज

माया की प्रबलता करषि कृपा निधि लीन्ह ॥ चौपाई ॥

जब हरि माया हरि निवारी। नहि तहं रमान राजकुमा

175

१५४

री ॥ नव मुनि आनि सभीत हरि चरणा । गहेपाहि प्रण

ता रति हरणा ॥ मृषाहोउ मम श्राप कृपाला । मम इच्छा

कहू दीन दयाला ॥ मैंउ वचन कहेउ बहु तेरे । कहु मुनि

पाप मिटहिं किमि मेरे ॥ जपहु जाइ शंकर शत नामा ।

होइहि हृदय तुरत विश्रामा ॥ कोउ नहि शिव समान प्रि

रा॰ यमोरे। अस प्रतीति त्यागेहु जनि भोरे॥ जेहि पर कृपा न

रा॰स॰ करहिं पुरारी। सोन पाव मुनि भक्ति हमारी॥ अस उर

धरि महि विच रहु जाई। अब न तुमहिं माया निय

176

राई॥ दोहा॥ बहु विधि मुनि हि प्रबोधि प्रभु तब भये

अंतर्ध्यान। सत्य लोक नारद चले करत राम गुण गान॥

अथषट् रागस्य रामायण परिछेदमाहताल ॥

ताल २॥ २म २ग २म २धै २प २नि २प २धै २म २ग २म २ग २रे २सै २म २प
दोहा ॥ जब प्रताप रवि भयेउ नृप फिरी दोहाई देश । प्रजा

२नि २सै २ग २सै २नि २प २धै २म २प २रे २सै ताल २॥ २ग
पाल अति वेद विधि कतहुं नही अघ लेश ॥ चौपई ॥ नृ

२म २धै २प २धै २म २ग २रे २सै २प २धै २म २ग २रे
पहित कारक सचिव सयाना । नाम धर्म रुचि शुक्र समाना ॥ सचिव सयान बंधु बल वीरा । आउ प्रताप पुंज

२सै २म २प २नि २सै २रे २सै २नि २प २धै २म २ग २रे २ग
माना ॥ सचिव सयान बंधु बल वीरा । आउ प्रताप पुंज

२रे २सै २म २प २नि २सै २रे २सै २नि २प २धै २म २ग २म
रणधीरा ॥ सेन संग चतुरंग अपारा । अमित सुभट

रा॰ सब समरज्ज कारा ॥ सेन बिलोकि राउ हर षाना । अरुवा

रा॰म॰ जे गहगहे निसाना ॥ बिजय हेत कटकाई बनाई । सुदि

न साधि न्रप चले उबजाई ॥ जहं तहं परी अनेक लराई

जीते सकल भूप बरि आई ॥ सप्त दीप भुज बल बस की

न्हा ॥ लै लै दंड छाडि न्रपदीन्हा ॥ सकल अवनि मंडल

193

तेहि काला । एक प्रताप भानु महि पाला ॥ दोहा ॥ स्व
बस विश्व करि बाहु बल निज पुर कीन्ह प्रवेश । अर्थ
धर्म कामादि सुख सेवहिं सवैन रेश ॥ चौपाई ॥ भूप प्र
ताप भानु बल पाई । काम धेनु भै भूमि सुहाई ॥ सब दु
ख वर्जित प्रजा सुखारी । धर्म शील सुंदर नरनारी ॥

रा०   सचिव धर्म रुचि हरि पद प्रीती। न्रप हित हेत सिखा व

रा०म   ननीती॥ गुरु सुर संत पितर महि देवा। करै सदा न्रप स

बकी सेवा॥ भूप धर्म जै वेद वखानै। सकल करै सारद

सुखमानै॥ दिन प्रति देइ विविधि विधि दाना। सुनैशा

स्त्र वर वेद पुराना॥ नाना वापी कूप तड़ागा। सुमन वाटि

९४

१५४३

का सुंदर बागा ॥ बिप्रभवन सुरभवन सुहाये। सबनी

रचन विचित्र बनाये ॥ दोहा॥ जहं लगि कहे पुराण श्रु

ति एक एक सब याग। बार सहस्र सहस्र न्रप किये स

हित अनुराग ॥ चौपई ॥ हृद यन कछु फल अनु संधाना

भूप विवेकी परम सुजाना॥ करै जो धर्म कर्म मन बानी

रा॰ वासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी ॥ चढि बर बाजि बार इक राजा

रा॰स॰ मृगया कर सब साजि समाजा ॥ बिंध्याचल गंभीर बन ग

यऊ । मृग पुनीत बहु मारत भयऊ ॥ फिरत बिपिन नृ

प दीख बराहू । जनु बन दुरेउ ससिहिं ग्रसि राहू ॥ बड़ बि

धु नहिं समान मुख माहीं । मनहुँ क्रोध बस उगिलत ना

195

१५४३

ही ॥ कौल कराल दशन छबि गाई । तनु बिशाल पीवर अ
धिकाई ॥ घुरुघुरात हय आरव पायें । चकित बिलोकत
कान उठायें ॥ दोहा ॥ नील महीधर शिखर सम देखि बि
शाल बराह । चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हांकि न होइ
निबाह ॥ चौपई ॥ आवत देखि अधिक रव बाजी । चलाब

रा० राहमरुत गति भाजी ॥ वरत कीन्ह नृप शर संधाना । महि

रा० म० मिलि गयेउ विलोकत वाना ॥ तकि तकि तीर महीश च

लावा । करिछल सुअर शरीर बचावा ॥ प्रगटत दुरत

जाय मृग भागा । रिसि बस भूप चलेउ संगलागा ॥ गा

गऊ हरि वन गहन बराहू । जहं नाही गजवाजिनि वा

196

१८६

हू॥ अति अकेल बन विपुल कलेसू। तदपि न म्रग मगत
जै नरेसू॥ कोल विलोकि भूप बड़ धीरा॥ भागि पैठ गि
रि गुहा गंभीरा॥ अगम देखि न्रप अति पछिताई। फि
रे उमहा बन परेउ भुलाई॥ दोहा॥ खेद खिन्न त्रषि त
त्रषित राजा वाजि समेत। खोजत व्याकुल सरित सर

रा·स

जल विनु भयेउ अचेत ॥ चौपई ॥ फिरत विपिन आश्रम इक देषा । तहं बस न्रपति कपट मुनि भेषा ॥ जासु देश न्रप लीन्ह छुडाई । समर सेन तजि गयेउ पराई ॥ समय प्रताप भानु कर जानी । आपन अति असमय अनुमानी गयेउ न गृह मन बहुत मलानी । मिला न राजहि न्रप अभिमानी

१९७

रिसि उर मारि रंकजिमिराजा। बिपिन बसै तापसके साजा।
तासु समीप गवन नृप कीन्हा। यह प्रताप रविते इतव
चीन्हा॥ राउ तृषित नहिं सोपहि चाना। देखिसु भेष महा
मुनि जाना॥ उतरितुर गतें कीन्ह प्रणामा। परम चतुर
न कहेउ निज नामा॥ दोहा॥ भूपति तृषित बिलोकि ते

रा॰ इ मर वर दीन्ह देखाइ। मज्जन पान समेत हय कीन्ह
रा॰स॰ नृपति हरषाइ॥ चौपाई॥ गो श्रम सकल सुखी नृप
भयऊ। निज आश्रम नाय सलै गयऊ॥ आसन दीन्ह अ
स्त रवि जानी। मुनि नाय स बोला मृदु बानी॥ कौतुक नि
आश्चर्य करहु मन मांही। सत नृपते दुर्लभ कछु नांही

198

१९८

तप बलतें जग सृजे विधाता। तप बल बिस्नु भये परित्राता॥ तप बल शंभु करहिं संहारा तपते अगम न कछु संसारा॥ भयउ नृपहिं सुनि अति अनुरागा। कथा पुरातन कहै सो लागा॥ कर्म धर्म इतिहास अनेका। करै निरूपण बिरति बिवेका॥ उद्भव पालन प्रलय कहानी

गो
रा॰स

कहेसि अमित आश्चर्य्य बखानी ॥ सुनि महीश तापस स
ब सभयऊ । आपन नाम कहन तबलयऊ ॥ कहु ताप
स नृप जानौं तोही । कीन्हेउ कपट लाग भल मोही ॥ सो
रठा ॥ सुनि महीश अस नीति जहं तहं नाम नकहहि न्र
प । मोहि तोहि पर अति प्रीति परम चतुरता निरखि

१९

नव ॥ चौपई ॥ नाम तुम्हार प्रताप दिनेशा। सत्य केतु
तव पिता नरेशा॥ गुरु प्रसाद सब जानिय राजा। क
हियन आन हिं जानि अकाजा॥ देखि तात तव सहज
सुधाई। प्रीति प्रतीति नीति निपुणाई॥ उपजि परी म
मता मन मोरे। कहेउ कथा निज पूछे तोरे॥ अब प्रस

रा॰
रा॰स

अब प्रसन्न मैं संशय नाहीं। मांगु जो भूप भाव मन माहीं
सुनि सु बचन भूपति हरषाना। गहि पद विनय कीन्ह
विधि नाना॥ कृपा सिंधु मुनि दरशन तोरे। चारि पदा
रथ करतल मोरे॥ प्रभुहिं तथापि प्रसन्न विलोकी। मां
गि अगम बर होउ अशोकी॥ दोहा॥ जरा मरण डख

700

२००

रहित तन समरन जीतै कोउ। एक छत्र रिपु हीन म
हि राज कल्प शत होउ॥ चौपई॥ कह तापस नृप ऐस
इ होऊ। कारण एक कठिन सुन सोऊ॥ काला तव पद
नाइहि सीसा। एक विप्र कुल छाडि महीसा॥ नृप ब
ल विप्र सदा बरि यारा। तिनके कोपन कोउ रखवारा॥

रा०
रा०स

जौ विप्र नवस करहु नरेशा। तौ तव बस विधि विष्णु महेशा॥ चलन ब्रह्मकुल से बरि आई। सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई॥ विप्र श्राप विनु सुनु महिपाला। तोर नाश नहि कवनिहुं काला॥ हरषेउ राउ वचन सुनि तासू। नाथन होइ मोर अब नासू॥ तव प्रसाद प्रभु कृपानि

२०

धाना। मोकहं सर्व काल कल्याना॥ दोहा॥ एक मस्तक

हि कपट मुनि बोला कुटिल बहोरि। मिल वह मार भु

लाव निज कहहु तो मोरि न खोरि॥ चौपई॥ ताते मैं तो

हि बरजैा राजा। कहे कथा तव परम अकाजा॥ छटे श्र

वन यह परत कहानी। नाश तुम्हार सत्य मम बानी॥

रा॰
रा॰म

घरु प्रगटे अथवा द्विज श्रापा। नाश तोर सनु भानु प्रतापा॥
आन उपाय निधन तव नाहीं। जौ हरि हर कोपहिं मन माहीं॥ सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा। द्विज गुरु कोप कहहु को राषा॥ राखै गुरु जो कोप विधाता। गुरु विरोधनहि कोउ जगत्राता॥ जौंन चल बहुम कहे तुह्मारे। होइ

२०४

२०२

नाश नहि सोच हमारे ॥ एक हि उर उर एत मन मोरा

प्रभु महि देव श्राप अति घोरा ॥ दोहा ॥ होंहि विप्र बस

कवन विधि कहहु कृपा करि सोउ । तुम तजि दीन द

याल निज हितू न देखौं कोउ ॥ चौपई ॥ सुनु नृप विवि

ध यतन जग मांही । कष्ट साध्य पुनि होहि कि नांही ॥

रा॰ अहै एक अति सुगम उपाई। तहां परंतु एक कठिनाई॥
रा॰स मम आधीन युक्ति नृप सोई। मोर जावन वन गवन होई
आजलगे अरु जबतें भयेऊं। काहूके गृह ग्रामन गयऊं॥ जोन जावतव होइ अकाज। बना आइ असमंजस आज॥ सुनि महीप बोले मृदु बानी। नाथ निगम अ

२०३

स नीति बखानी ॥ बड़े सनेह लघुन परकरहीं । गिरि
निज सिरन सदा तृण धरहीं ॥ जल अगाधि मौलि वह
फेणू । संतत धरणि धरत सिर रेणू ॥ दोहा ॥ अस क
हि गहेन रेशपद स्वामी होहु कृपालु । मोहि लागि
दुख सहिय प्रभ सजन दीन दयालु ॥ चौपई ॥ जानि

रां.
रा.स

न्रप हि आपन आधीना। बोला तापस कपट प्रवीना॥ सत्य कहौं भूपति सुनु तोही। जग महं नहिं दुर्लभ कछु मोही॥ अवशि काज मैं करिहौं तोरा। मन क्रम वचन भक्त तैं मोरा॥ योग युक्ति तप मंत्र प्रभाऊ। फलै तवहिं जब करिय दुराऊ॥ जौं नरेश मैं करउ रसोई। सोइ सोइ तव

२०४

२.८२

आयसु अनु सरई ॥ पुनि तिनके गृहजेवैं जोई । नव बस

होइ भूप मन सोई ॥ जाइ उपाय रचइ हनिप पेह । संवन

भरि संकल्प करेह ॥ दोहा ॥ नित नूतन द्विज सहस श

त बरेउ सहित परिवार । मैं तुम्हरे संकल्प लगि दिन

हिं कर वजैं वनार ॥ चौपई ॥ इहि विधि भूप कष्ट अति

रा॰
रा॰स

घोरे। होइहहिं सकल विश्व बस तोरे॥ करिहहिं होम वि

प्र सब सेवा। तेहि प्रसंग सहजहिं बस देवा॥ और एक

तोहि कहौं लखाऊ। मैं यहि भेषन आउब काऊ॥ तुम्हरे

उपरोहित कहं राया। हरि आनब मैं करि निज माया॥

तप बल तेहि करि आप समाना। रखिहौं इहां बरष पर

२०५

माना ॥ मैं धरि तासु भेष सुनु राजा । सब बिधि तोर सवार बकाजा ॥ गै निशि बहुत शयन अब कीजे । मोहि तोहि भूप भेट दिन तीजे ॥ मैं तप बल तोहि तुरग समेता । पहुँचैहौं सोवत हि निकेता ॥ दोहा ॥ मैं आउ वसोइ भेष धरि पहिचानेहु तब मोहि । जब एकांत बुलाइ

रा॰ सब कथा सुनाऊं तोहि ॥ चौपई ॥ शायन कीन्ह न्टप आ
रा॰स य सुमानी । आसन जाइ बैठ छल खानी ॥ भ्रमित भूप
निद्रा अति आई । सो किमि सोव सोच अधिकाई ॥ का
ल केतु निशचर तहं आवा । जेहि सूकर होइ न्टप हिं
भुलावा ॥ परम मित्र तापस न्टप केरा ॥ जानै सो अति

706

कपट घनेरा ॥ तेहिके सत सुत अरु दश भाई । खल अ
ति अजय देव दुख दाई ॥ प्रथम हिं भूप समर सब मारे
विप्रसेन सुर देखि दुखारे ॥ तेहि खल पाछिल वयर
संभारा । तापस नृप मिलि मंत्र विचारा ॥ जेहि रिपु
क्षय सोइ रचे सि उपाऊ । भावी वस न जान कछु राऊ

दो०
रा०म

दोहा॥ रिपु तेज सी अकेल अपि लघु करि गणिए यनता
हु॥ अजहुं देत दुख रवि शशिहिं सिर अव शेषित राहु

चौपई॥ तापस न्टप निज सखहि निहारी। हरषि मिले
उ उठि भयउ सुखारी॥ मित्रहि कहि सब कथा सुनाई
यातु धान बोला सुख पाई॥ अब साधेउं रिपु सुनहु नरे

207

षा। जौ नृप कीन्ह मोर उपदेशा।। परि हरि सोच रह

हु नृप सोई। विनु औषध हिं व्याधि विधि खोई।। कुल

समेत रिपु मूल बहाई। चौथे दिवस मिलव मैं आई।।

तापस नृप हिं बहुत परि तोषी। चला महा कपटी अ

तिरोषी।। भानु प्रताप हिं वाजि समेता। पहुं चायेसि

सोवनहि निकेता ॥ न्रपहिं नारि पहं शायन कराई । ह
यगृह बांधे सिवा जिबनाई ॥ दोहा ॥ राजा के उप रोहित
हिं हरि ले गयउ बहोरि । लै राखे सिगिरि खोह महं
माया करि मति भोरि ॥ चौपई ॥ आपु विरचिउ उरो हि
त नृपा । परा जाइ तेहि सेज अनूपा ॥ जागेउ न्रप अन

भयउ विहाना। देखि भवन अति अचरज माना॥ मुनि

महिमा मन महुं अनु मानी। उठे गवहिं जेहि जानन

रानी॥ कानन गयउ बाजि चढ़ि तेही। पुर नर नारि

न जानेउ केही॥ गयेयाम युग भूपति आवा। घर घ

र उत्सव बाज बधावा॥ उपरोहित हिं दीख जब राजा

रा० चकित बिलोकि सुमिरि सोइ काजा ॥ गए सम नृप हि
रा०स गए दिन तीनी । कपटी मुनि पद रह मति लीनी ॥ सम
य जानि उपरोहित आवा । नृप हि मते सब कहि समु
झावा ॥ दोहा ॥ नृप हरषे पहि चानि गुरु भ्रमव स रहा
न चेत । बरे तुरत सत सहस बर बिप्र कुटुंब समेत ॥

209

२०९८

गरवानौ। बहुत प्रपंच किये माया कौं तउ न अघ
नित अघानौ। जनन जतन करमाया जोरी लै
गयौ रंक न रानौ। सुन विन वनना मोह लगा
यौ झूठे भरम भुलानौ। लोभ मोह मैं चेत्यौं
नाही सपने ज्यौं उहकानौं। वृद्ध भये कफ के
ह वित रोध्यौ सिर धुन धुन पछितानौं। सूरदास

गु॰
सू॰

भगवेन भजन बिनुजनमके ह्यारेविकानौ ।।१।। रा
ग धनासिरी सूरदासजीकत । राग पंचम । ताल
। रामनाम सुमिरन बिनुजनम बादषायौ ।
सेवक सुषके कारनेतै ग्रतकाल बिगोयौ । सा
धसंगत भक्त बिनानन प्रकारषजाई । ज्वारी
ज्यौंहाथ कार चाले छूटकाई । सुतदारादेह गे

10

हु संपति सुषदाई । इनमैं कोउ नाहिं तेरो काल

अवध आई । काम क्रोध लोभ मोह विष्या मन

भायौ । गोविंदकौ चित बिसारकौननी दसे

यौ । सूरकहै मन विचार भ्रम भूल्यौ अंधा

रामनाम लै तजिकै और सकल धंधा । २ ।

राग कल्यान सूरदासकृत । राग पंचम ।

रा
सू:

नाल । भक्तबिन बैल बिरानौ ह्वैहो । पारिपा
उ सिर सींग गुंग मुख तब कैसैं गुन गैहौ । चार
पहर दिन चरत फिरत बनन ऊन पेट अघैहौ ।
टूटे कंध फूटे नाकनि कौं लौं धौं भुस षैहौ ।
लादत जोतत लकुट बाजहै तब कहां मूंड दुरै
हौ । सीत घाम घन बिपत बहुत बिधि भार तरे

न मरजैहौं । हरि संतनकौ कह्यौन मानत कि
यौ आपनोपैहौ । सूरदास भगवंत भजनविनुमि
थ्या जनमगवैहौ ।२। रागसारंग सूरदासकृत ।
राग पंचम । ताल । काहेमनहरै विमुषन
कौं संग । जिनके संग कुबुद्ध उपजतहै परत भ
जनमैं भंग । कहाहोत पय पानपिवाये विष

ग.
सू.

नहीं तजत भवंग । कागहि कहा कपूर चुगाये स्वा
न न्हवाये गंग । खर कौं कहा अरगजा लेपन मरकट
भूषन अंग । गज कौं कहा न्हवायौ सलिता बहुर
धरै वहै ढंग । पाहन पतित बान नहीं वेद नरीतो
करत निषंग । सूरदास खल कारी कामरि चढ़
नन दूजो रंग । राग सोरट सूरदासकृत । रागपे

12

बम। जाल । रेमनजनम अकारथ षोइस हरि
कीभक्त कबहू नहीकीनी उदरभरे परमोइस।
निसदिन रहत फिरत मुषबाधें अहंकार करि
जनम बिगोइस गो उप स्वारिथहौ दोऊनीकें अब
केकहे किथें कहा है रस। काल जनम निसो
आन बनैहै देषि देष मुषरो रस। सूर स्याम बिन

रा कौन कुराबै चलै जाइ भयपोरस । ५ । राग सारंग

स्व सूरदासकृत । राग पंचम । ताल । नवनै गोवि

द कौन संभारे । भूमि परैनै सोचन लागो महा क

ष्ट न उघभारे । अपने पिंड षोषवे कारन कोटि सह

स्र जियमारे । इहि पापिन नै कैसा उवरोगे दामन

गीरतमारे । आपलोभ लालचके कारन कइ

13

न पापनैं हारे। सूरदास जमकंठ गहेतैं निकस

न प्रान उधारे।९। रागधनाश्रिरी सूरदासकृत।

रागपंचम। ताल । रेमन मूरष जनम गवा

यौ। करिअभिमान विषैरस गीध्यौ स्याम स

रन नहिं आयौ। यह संसार सुवासेंवर ज्यौं सु

दरदेषि लुभायौ। चाषन लाग्यौ रुई उडगई हा

रा॰ पाकब्रु नहीं आयौ । कहा होत अबके पछुतायें

सू॰ जबके पाप कमायौ । सूरदास भगवंत भजन वि

नु मर फन फनपछुतायौ ।७। रागमारू सूरदा

सकृत । राग पंचम । ताल । अबमेरहा हौं रे

नौं हा हौं । मानुष जनम पाइन वौरे हरि कौ भज

न विसाहौ । रुधिर बूंदते साजकियौ तन सुंदर

१४

१७

रूपसेवाह्यौं । जटर अग्नि अंतर करय सुभजिन
दसमास उवाह्यौं । जवते जनम लियो जगभी
तर तवते प्रभु प्रतिपाल्यौ । अंध अचेत मूढमन
बौरे सोप्रभु कौन संभाल्यौ । पहिरय— वरकर
अंबर यहतन जूठ सिंचाल्यौ । काम क्रोध मद
लोभ नियारनि बहुविधि काम बिगाह्यौं । मर

गा. स.

न भूलि जीवन थिर जानौ बहु उद्दम जियपाहौ।
सुतदारा के मोह अहै विषहरि अमृत फल डाहौ।
झूरि सांचकरि माया जोरी रचि पचि भवन उ
साहौ। काल अवधि पूरन भई जादिन ननहूं सा
ग लियाहौ। ऐते ऐन नेरो नावपहौ जवजेवरी
बंध लिकाहौ। जिह सुत हितवे सुषगोविंदने

प्रथम तिनहि सुष जानौं । भाईबंधु कुटंब सहे
दर सब मिलयहि बिचारौ । जैसेकर्मलहै फल
तैसो तिनका लोर उचारौ । सत गुरको उपदेस
हिरदैधर जनभ्रम सकल निवारौ । हरिभज
न विलंब छाडि सूरज प्रभके चेटर पुकारौ ।८
। रागबिलावल सूरदासकृत । राग पंचम । ताल

रा॰
स॰

। याविधि राजा करै विचारि। राज साज स
भर्हूकोशारि। जीरन पट कुपीन तिन धारि। चलै
सुरसरी सीस उचारि। पुत्र कलित्र देषि सब रोवैं
राजा तिनके ओर न जोवै। राजा चलत न चले स
ब लोग दुषित भये सब नृपति वियोग। नृप
ति सुरसरी के तट आइ। कियो असनान मन

| 6



अथ सूरसागरपरिच्छेदमाह रागिनी धना

सिरी सूरदास कृत ताल ॥ रागिनी

२ग २रे २सं २म २प २नि

बंगाली ताल ३ ॥ नैंऊ चाहत कृपा ।

२प २म २म २प २नि ३सं २नि २म २ग २रे

तुमारी ॥ नैंह केवल अब मिष अनेक गनु ।

२सं २म २प २नि २प २म २म २प २नि ३सं २नि २प

अनवर अता कारी ॥ वहत पवन भर मतु ।

रागिनी धनासिरी ताल ३ सूरदासकृत सरगम ॥ निसगमगरेस ॥ मगमपपनिसनिध पमगरेस ॥ मगमप ॥

रागः

दिन मणि पति किरन डुलावै ॥ दाहक गुणत

जमक तन पावक लैधुन सलल बहावै ॥ सिव

विरंच सुरपत समेत सव सेवत प्रभ पद चा

यैं ॥ जो कछु कारन कहत सोकी जगत करत

है प्रीत प्रकलायैं ॥ नम अनादि अवि गति अने

पनिसनिपपमगरेस ॥ मगगमपपपनिसनिपपमगरेस ॥ मगगमपपनिसनिपपमग

रेस ॥ मगगमपपनिसनिपपमगरेस ॥ मगगमप ॥

न गुन पूरन परमा नंद॥ सूरदास पर कृपा करो

ग्रव श्री वृंदावन चंद॥ ९८॥ राग॥ मलार॥ रागि

नी बंगाली॥ ताल॥ तीन॥ हमनाजि कौन रूपत

पै जाऊं॥ काको द्वार जाइ सिर नाऊं॥ पर हाथ।

कहा बिकाऊं॥ ऐसो को दाता है समरथ।

पनिसेनिधपमगरेस॥ मगमपधपनिसेनिधपमगरेस॥ राग मलार सूरदासकृत सर

गम ताल तीन॥ निसरेमगरेस॥ निसरेमगरेपधे॥ पमगरेस॥ निसरेमगरे॥

गा॰ सू॰

२म २प २म २ग २म २प नि २प २म २ग २सै

जाके हिये प्रचाऊं।। अंतकाल तुमरे सुमरन

२म २प २नि २प २म २प२म २म २प २म २ग

गति अनंत कहु नहि पाऊं।। रंक अजाची कि

२रे २सै २म २प २म २ग २म २प

ये सुदामा दियो अभै पदठाऊं।। कामधेन

२नि २प २म २ग २सै २म २प २नि २प २म २म

चिंतामन दीनो कलपवृक्ष तरुछाऊं।। भव

२प २म २ग २रे २सै २म २प २म २ग २म २प २म

समुद्र अतिदेखि भयानक मनमे अधिक।

पमगरेस।। निसरेमगरेपपमगरेस।। निसरेमगरेपपमगरेस।। निसरेमगरेपपमग

रेस।। निसरेमगरेपपमगरेस।। ⁘ ।। ⁘ ।। ⁘ ।।

डराऊं । कीजै कृपा स्रीमिरत अपनो प्रन सुरदा ।

स बलजाऊं । ५७ । रागमारू रागिनीबंगाली ।

मेरीतो गति पति तुम अनतहिं दुखपाऊं । तिहा ।

रो हौ कहाइकैंव कौन कौ कहाऊं । कामधेनु

छाडकै कहा अजा जाइहाऊं । हथग यंद उतर ।

निसरेमगरेपधमगरेस ।। राग मारू सूरदासकृत सरगम ताल तीन ३ ।। मपधनिधपमगरेसा ।।
धपमगरेसमपनिधपमगरेसगरेस ।। धपमगरेसमधनिधपमगरेसगरेस ।। धपमगरेसमध
निधपमगरेसगरेस ।। धपमगरेसमधनि ।।

ग॰
स॰

२प २म २ग २रे २सं २सं २म २प २म २ग २रे

कह्लागरथ बंविफिथाऊं । कंचन मनीबोल डार कोंच

२ग २रे २सं २म २प २नि २सं २नि २प २म २ग २रे २सं

गरबधाऊं । ऊंऊम कौतिलक मेट काजर मबला

२सं २म २प २म २ग २रे २ग २रे २सं २म २प २नि

ऊं । पाटेंवर ग्रेंवर तज गूदर पहिर गऊं । ग्रेंवकौ फ

२सं २नि २प २म २ग २सं २सं २म २प २म २ग

ल क्काड कह्लामैं भरकौं धाऊं । सागर कौंल हर ।

२म २प २म २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २नि २प २म

क्काड क्कारकत ग्रन्हाऊं ॥ सूर क्रूर ग्रोधरो हौं दार ।

पधमगरेसगरेस ॥ पधमगरेससमपनिपधमगरेसगरेस ॥ पधमगरेससमपनिपधमगरेसगरेस ॥
पधमगरेससमपनिपधमगरेसगरेस ॥ पधमगरेससमपनिपधमगरेस ॥ पधगरेससमपनिपधमगरे
सगरेस ॥ पधमगरेससमपनिपधमगरेस ।

3

3

पहौं गाऊं । ५८ । राग असावरी राग बेंगाली ताल ॥तीन॥ । स्याम बल नाम गुन सदा गाऊं । स्याम । बलराम बिन हमरे देवको स्वप्न्ह मोहन हि ह्रदय लाऊं ॥ यहै जप यहै तप ममने महत ~~यहै~~ । यहै मम प्रेम फल यहै पाऊं । यहै मम ध्यान यह

गरेसा ॥ राग आसावरी सूरदासकृत सरगम ताल तीन ॥ ३ ॥ सरेमपपपमगरेस ॥ गरेसनिपमरे मपनिपपमगमगरेस ॥ मपनिसगरेसनिपपमगमगरेसरेस ॥ गरिसनिप ॥

रा॰ सू॰

२ध २म २ध २नि २सा २नि २ध २म २ग २म २ग २रे २सा
ध्यान सुमरन ध्यैहै सुर प्रभु देहु मैं ध्यैहै पाउं । १९ ॥

२म २ध २म
राग मारू रागिनी बंगाली ताल ॥ तीन ॥ । मेरेजी

२ग २रे २सा २म २ध २नि २सा २नि २ध २म
अैसी येजुवनी ॥ छाडि गुपाल औैर जो जावै तौ

२ग २रे २सा २म २ग २रे २सा २ध २प २म
लाजै जननी । कहा कांचको संग्रह कीजै त्या ।

२ग २रे २सा २म २ग २रे २सा २म २पे २म
गि अमोल मनी ॥ बिषको मेरु कहाले कीजै अमर

सरेमधनिधधमगरेसा ॥ राग मारू स्वरदासकृत सरगम ताल तीन ॥ ३ ॥ मधधनिधधमग ॥
धधमगरेससमगरेम ॥ मधधनिधधमगरेगरेम ॥ मधधनिधधमग ॥

२ग २रे २सै २म २ग २रे २सै २प २पे २म २ग २म
त एक कनी ॥ मन वच क्रम सत भाव करत हैं मै

२ग २रे २सै २म २ग २रे २सै २प २पे २म २ग
रै स्यामधनी । सूरदास प्रभु तुमरी भक्ति लगित

२म २ग २रे २सै
जै जात अपनी । १०० । राग देव गंधार रागिनी

बंगाली ताल । मेरो मन अनत कहां सचु

पावै जैसे उडिज हाज कौ पंछी फिर जहां जपै

मगरेस ॥ मपपनिपपमगमगरेस ॥ मपपनिपपमगमगरेस ॥॥ इतिसूरदासकृतसंगीमः

गा॰ आवै कमल नैन को छाड़ि महा तम ओर दे।
सू॰ व कौं धावै परम गंग हित छाड़ पिपासो ड्र
मति कूप खनावै जिन जिन मधुर अंबर सचा
ख्यो क्यो करीर फल भावै सूरदास प्रभु काम
धेन तज छेरी कौन दुहावै।१०१। हमरे भक्त

5

हमारे प्रान छूटगयें कैसें जनजीव तज्यौ पा
नी बिनपान जैसे मगन नाद सुन सारंग व
ध करत धतन बान ज्यौचितवै सस शोरच को।
री देषत है सबमान जैसे कमल होत पर फू
लत देषत दर मन भान सूरदास प्रभु हरि गुन

रा॰
सू॰

मीठे नित प्रति सुनि यत कोन ।२। रागधनासि
री रागिनी बंगाली ताल ॥ जो हम भले
बुरे तौ तेरे तुम्है हमारी लाज बडाई बिनय सुनो
प्रभु मेरे, सबन जित सु सरनागत आपो निज क
र चरन गहेरे तुम प्रताप बल बद तन काहू ।

6

निउरभय चरचेरै ग्रौर देव सवरंक विषारी त्या

गे बहुत ग्रनेरै सूरदास प्रभु तुमरी कृपाते पा

ये सुख सघनेरै । ३ । राग विलावल ताल

॥ हम नेंदन मोल लिये जमकी बंदकाट

मुकराये ग्रभै ग्रजात किये । भाल तिलक स्र

रा॰

सू॰

वन नि तुलसी दल भेटे अंक लिये। मुद्रो
मुड कंठ वन माला मुद्रा चक्र दिये सभको
ठकुरत गुलाम स्यामको सुनत सिरातहिये
सूरदासको और वडो सुष फूटन पाइ जिये
।४। राग विलावल चाली ताल ॥

स्र सनत चित लाइ। श्याम पुत्र हित वहुत
तप कियो। तव नारायण यह वर दियो।
हैहै पुत्र भक्ति प्रति ज्ञानी। जाके जगमै च
लै कहानी। यह हिरदै हरि कीयो उपाइ।
नारद मनमैं सै उप जाइ। तव नारद गिर
जापै गए। तिनि सो इहि विधि पूछत भए।

रा
म

रुंड माल शिव ग्रीवा जैसे। मोसो बरण सुनावो
तैसें। उमाकायौं मैंतो नहीजानी। ग्रौर सि।
वहूं मोसों नवषानी। नारदकही ग्रव सुछौं
जाइ। विन सुछे नहीं देह वनाइ। उमाजा
इ सिवकों सरनाई। कहोे सुनो विनती।
सुराइ। मुंड माल कैसे तुम ग्रीवा॥।

8

तोकी मोहि बनावो सीवा। सिव तव बोले व

चन रसाल। उमा ग्राहि यह सुन रुंड माल।

जब जब जनम तुमारो भयो। तब तब रुंड

माल मै लियो। उमा कह्यौ सिव तुम ग्रभि

मानी। मै तुमरी चरननि के दासी। मेरे हि

त इतनो दुष भरत। मोहि ग्रमर कहि नही

रा
स॰

करत। तब सिव उमागणपता ठौर। जहां न
ही दुतीयाकौ अउौर। सहंस नाम तहां तिनै
सुनायो। जातै आप अमर पद पायो। तहां
इतोइक सुककौं अंड। तिन यह सुन्यौ स॰
कल परसंग। ताकौं सिव मारनकौं धायौ।
तिनउड अपनौ आप बचायौ। उड॥

9

तउ उत सक पड्यौ जहां। नारी व्यासकी वैठे
तहां। शिव हंताके पाछे धाए। पैताको मा
रन नही पाये। व्यास नारि तव ही सखव ना।
यौ। तव तन तजि मव महिममायौ। द्वाद
स वरख गरव मै रह्यौं। व्यास भाग वत ति
हिं सो कह्यौं। वडरौं जव जउ पति समझा

रा
म

यो। तेरी माता बहुदुष पायो। तुजिहि दि
नवाहरनही आवत। सोहम सो कहियौं।
न सुनावत। प्रभु तवमाया मोह संता वत।
तांतैहौं वाहरनही आवत। हरिकह्यौं अव
न व्यापिहै माया। तव वहि गरव छाडिजग
आया। माया मोहि ताहिनहि गह्यौं। सुनौं

१०

ज्ञान सो सुमिरन रहेयौं। जैसे सुक को बा

स पढायौं। सूर दास तैसे कहि गायौ।७।

राग बिलावल। रागिनी बंगाली ताल

व्यास देव जब सुकहि पढायौ। सुनकै सु

कसो हृदै बसायौ। सुक सो नृपत परी

छित सुन्यौ। तिन पुन भली भांत करि गुन्यो

सूत सौनक निसौ मुनि कह्यौं। विदुर मैत्रेय सौ सुन लह्यौं। हरि भागौत सभन सुष पायौ। सूरदास सो बरन सुनायौ। ८। राग बिलावल। रागिनी बंगाली। ताल।

सूत व्यास सो हरि गुन सुने। बहुरो तिन निज मति मैं गुनें। बहुरो नीम षारमै आयौ।

तहां रिषन को दरसन पायौ। रिषन कह्यौ
हरि कथा सुना। बहु भली भांत हरिके
गुन गावहु। प्रथम कह्यौं तिन ब्यास स्र
वतार। सुनो सुर सो स्रव चित धार। ९।
राग बिलावल। रागिनी बंगाली। ताल
हरि हरि हरि हरि सुम रन करौ। हरि च



रा
मः

रनार बिंद उर धरौ । व्यास जनम भयौ जा
पकार । कहोसौं कथा मनो चितधारि । स
त्यवती मछोदरी नारी । गंगातट ठाढी ह
कवारी । पारा सारिषतहां चल आए । वि
विवस होइ तिन पार लंगाए । रिष कह्यौं
ताहि दानरति देऊ । मै वर दीनो तोहि

हलीउ। तें कमारका वडुरो होइ। तो कोना

वध रैनही कोइ। मेरो कह्यौ जोन न करि।

है। देउ सराप मह्रा उग्र भरिहै। सत्य वती

सराप भय मान। रिषको वचन कियो प

रमान। व्यास देव तांको सुत भए। होन

जनम वड़ रोवन गये। जो जन गंधा मा

रा
स:

ताकरी। मछ्व वास ताकी सभ हरी। देषोका
म प्रताप अधिकाइ। वस कियौ पारा सर रि
ष गाइ। प्रवल सत्र आदि यह मार। यातें स।
नौं चलौ संभार। याविधि भयौ यास अवता
र। सरकहौं भागौत अन सार।।१०।। राग वि
लावल। रागिनी बंगाली। ताल ।भयोभा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग बत चारि परकार। कह्यौ सनौ सो अब चि
त धारि। सत जुगला षरष की आई। त्रेता
दस सहंस्रक हेगाई। द्वापर सहंस एकही
भए। कलि जुग सत संवत रहि गए। सो
सोई कहन सनन के भार। कलम रुजा
द कही नहि जाउ। ताते हरि करि बास

भा
स

अवतारा करी संहिता वेद विचार। बहुर पुरान
न अठार हिंगाय। पैनो उचित संतन पाई। त
व नारद तिनके ढिग आय। चार स्लोक कहे
समझाय। व ब्रह्मा सो कहे भगवान। ब्रह्मा
मो सौ कहे वषान। सोई मै अवतम सो भाषै।
कायो भाग वत यहि ॥

14

ही गावै । श्री भागौत सुनै जु कोइ । ताको
हरि पद प्रापति होइ । ऊंच नीच कौ हार ब
ड़ाई । ताको साषीमै सुन भाई । जैसे लो
हा कंचन होई । व्यास भई मेरी गति सो
ई । दासी सुतते नारद भयौ । दोष दास
पनको मिट गयौ । व्यास देव तव करि

रा
सू:

हरिध्यान। कियो भागवतको व्याख्यान।
सुनौ भागवत जो चित लाइ। सूरस हरि
भजभवन रिजाइ।।१।। रात सारंग। रागिनी
बंगाली। ताल । कह्यौं सुक श्री भागौ
त विचार। जात पातकोउ पूछत नाही श्री
पतिकेदरवार। श्री भागौत जौरहत के दरवार।

श्री भागौत कहै जो हित करि तरै सभव
जल पार। सर सुमिर गुन रट निरवाससदा नाम
नाम निजसार॥१३॥ राग कानड़ा। रागिनी
बंगाली। ताल । वडीहै राम नामकी।
ओट। सरन गये प्रभुका ढेवतन हिंकरति
कृपाके कोट। वैटन सवै सभाहरि जकी

रा
सू:

कौन बडौके छूट सूरदास पारसकें परसे मि
टत लोहके खोट ।१३। राग धनासिरी । रागि
नी बेंगाली । ताल । सोई भलो जगमाहि
गावै । सुपच परसिहोइ बडसेव कविन गो ।
पाल द्विजजनमन भावै बाद विवाद जज्ञ ब
तसाधे कतहूं जाइ। [illegible] ॥

16

१८

जनम उदकावै । होइ ग्रटल जगदीस भज
नमै सेवा तास चारि फलपावै । कहूं ठौर
नहीं चरन कमल बिनु भृंगी ज्यौंदस हूंदि
सधावै । सूरदास प्रभु संत समागम ग्रान
द ग्रभय निसान बजावै । ५ । राग सारंग ।
रागिनी बंगाली । ताल । काहूके वेर क

राम

हामरै। तांके मर कर करै म फ़ठौं जाहि गपा
ल वडै करै। सरि मन मघ जोधुर उठावै।
उलट नाही के मघ परै। चिरिया कहां सम
द्र उलीचै पवन पवन कहा पर्वत टरै जाकी
कृपा पतित होइ पावन पगमत पाहन।
तरै। हरके मन हिं ॥

टारिसकै कांऊ दांत पीस जो जग मरै।१५

राग केदारा। रागिनी बंगाली। ताल

है हरि भजन कोपर वाना नीच पावैऊंच

पदवी वाजती निसान। भजनको परवान

ऐसो जलतरे पाषान। अजामेल भील।

अह गनका चढे जात विमान। चलत ता

रा
सू॰

रे सकल मंडल चलत तासि ग्रह भान।
भक्त ध्रुवकों अटल पदवी रामकी दिवा
न। निगम जाको सुजस गाव सुनत संत
सुजान। सूर हरिके सरन आयौ राखलै भग
वान।१९। राग बिलावल। रागिनी वेंगा
ली। ताल । हरि हरि हरि सुमिरो सबकोई।

18

ध्रुव नीचहरि गनतन दोई। विदुर गेह हरि भो
जन पाइ। सूरस्याम भक्त निमन आइ।१७।रा
ग विलावल। रागिनी बंगाली ताल। ।
भए पंडवनि के हरि हत। गए जहां कौरव
पति धृत। उन सो जोहरि वचन सुनाए। सूर
त कहत सुमनो मन लाए।१८। राग विला

रा
मः

वल। रागिनी वंगाली ताल । हनराजपा झरजो
धना हम तमपै आये। पंडव हत जीवत मिलेदे
ऊमल पराप। षेम ऊमल अरु दीनता देखौत म
लाई। करि जोरे विनते करै डरवल मघ टाई। पं
व गाव पांचो जनाकिर पाकरि दीजै । प
तमरे ऊल वंसहै ॥

हमरे मनलीजै। उनकी हमसों दीनताको क
करन मनावै। पांडव सत और द्रौपदीकोमा
र कडावै। राजनीत जानौ नही गोमत व
रवारे। पीवड़ छाल्ह अचाइकै कवके रैवारे।
गई गांवके वट लामेरे आद महार। इहिकी
हमल जानहीं नम राज वडाई। भीषमद्रोन

गा.
सू.

करन सबै कोऊ मुष हून बोलै। येपांडव कौं। काफीये धरनी डग डोलै। हम कछु लैनन दैन है पचीर तिहारे। सूर प्रभु उठि चले कौरव सतहा रे।१५। राग धनासिरी। रागिनी बेंगाली। ता ल । ज्यौ चलौ विदरकै जाईये। डर। यो धनको कौनकाज ॥

७०

जजहो आदर भावन पाइये। गुरु मखनही व
डी अभिमानी कापैसेव कराईये। हूटेछान
मेहजल वरषत हूटो पलंग विछाईये। च
रन दोइ चरनोदक लीनो तिया कहै प्रभ
आईये। सकुचत फिरत जवदन छिपाईये
भोजन कहामें गाईये। हमतो तिहूंलोकके

रा
सू:

ठाकुर तुमसों कहा डराईयै । हमसो प्रेम
प्रीतके गाहक भाजी सँग चषाईयै । हँसि
हँसि हँसि वात कहत सब महेया प्रेम प्री
त अधि काईयै । सूरदास प्रभु भक्तिनके व
स भक्तन प्रेम वढाईयै । १२० । राग धनासि
री । रागिनी बेंगाली । ताल । । हरि ।

२५

ठाढेहै रथचढे द्वारे। तमदारक आगै ह्वै दे

खौ भक्त भवन किधौ अनत सिधारे। सुनि

सुंदरी उठ उत्तर दीनो कौरव सुत कछुका

जेह कारे। तहे आई जदुपति कहि यतहै

कमल नैन हरिहित हमारे। तिनके मि

लन गयो मेरो पतितो ठाढ़रहै प्रभ पियारे।

रा
सू.

सूरज प्रभु मन संभ्रम पाय प्रेम मगन तन बा
सन विसारे ।२। राग धनासिरी । रागिनी बे
गाली । ताल । प्रभुजू तुमहों अंतर जामी
तुम लाइक भोजन नहीं घरमें अरु नाही ग
हस्वामी । हरि कहौं सांग पत्र मोहि प्रिय प्रे
मत यासम नाही । बारं बार सराहि सूर प्रभु ।

72

सागर विदुर जरघाहीं ।२२। राग सोरठा । रागि
नी बंगाली । ताल । कौदासी सुतके पो
ड्यारे । भीषम करन द्रोण मंदिर तजि समग्र
हितजि मरारी । सानि घंत दीन हीन सुषली
सुत जान पंतने म्यारे । तिनकै जाइ कियो तम
भोजन जड वेसी तम लाजन मारे । हरिजूक

रा
स्र:

है मैनो दुर्जोधन सत्त्य वचन हमारे। सोई नि
रधन सोई कृपन दीनहै जिनमम चरन बिसा
रे। वेई भगत भागवते वेई रागदेषते न्यारे। सू
रदास प्रभु नंद नंदन कहि हम ग्वालन जाहि
हारे। २३। राग सारंग॥ रागिनी।
बंगाली। ताल॥

23

२३

हमतै विडर कहाहै नीको । जाके हवसौं भो
जनकीनो कहियत सत दासीकोहै विधिभो
जत कीजै राजा विपत करैके प्रीत । तेरेधतन
मोह प्रापदा वहै वडी विपरीत । ऊंचे मंदर को
नकामके कनक कलस जफराये । भक्तवन
मैहो जव मतहोजह पित्रण करि छाप । ३

रा सू॰

अंतर जामी नाम हमारो हो अंतरकी जानो नहपि सूर भक्त वत्सलहो भक्तन हाथ वि॰ कानो । ४४ । राग सारंग । रागिनी बंगा॰ ली । ताल । । हरिहम कौन हमारे आये । षट रस व्यंजन छाडि रसोई साग विदुर घर षाई । ताकीकुंरीया मैनमवैठे कौनवड पनपायो ।

जातपात हमलहुं तेन्यारो है दासीको जायो । मै

तोहि सत्यकहौं व दुरजोधन मनमन्त बात हा

मारी । विदुर हमारो प्रान पियारो तूविषया

अधिकारी । जात पांतिहौं सबकी जानो बाहर

क्षाक मगाई । ग्वालनिके संग भोजन कीनों

कुलकों लाजलगाई । जहां अभिमान तहांमैं ।

गा
स:

नाहीं यह भोजन विष लागै सत्य पुरुष बैठे घरही मैं अभिमानी को त्यागे जहां जहां भीर परै भक्त । निको तहां तहां उठि धाऊं । भक्तनिके हौं संग फिरतहौं भक्त निहाथ विकाऊं । भक्त वछल है विरद हमारो वेद समृत हू गावै । सूरदास प्रभु यह निज महिमा भक्त निहाथ विकावै ।२५।

इति सूर सागर परि छेदः ।।

हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ हरि चरनार
विंद उर धरौ, हरिके कथा होइ जवै जहां।
गंगाहूचलि आवै तहां। जमुना सिंध सरस
ती आवै गोधावरी विलं वन लावै सर्व तीर
थकोवासा तहां, हर हरि कथा होवै जहां।
१०५। श्रीभागौतवर्णने। राग सारंग ताल

२६

गा
सू

श्री मुष चारि श्लोक दिये ब्रह्मा को समुझा
इ। ब्रह्मा नारद सौं कही नारद व्यास सुनाय।
व्यास कही सुक देव सौं द्वादस स्कंद बना
इ सूरदास सोई कहै पद भाषा कर गाइ।
।६। राग बिलावल। राग बंगाली। ताल
व्यास कह्यौ जौं सुक सौं गाई। कहो सुनो

25

75

रा. ति बद्धरत्न भुवबलिग्रायें ।२१३। इति पंचमरा
र. गस्य रत्नसागरपरिच्छेदः ॥

~~276~~
27

के औरमलेन बकुलमैं सेतल मे ननविकोउ । सूरपति

नपावनपद अंबुज कौं सोहरिहरि जोउ ।६३॥ राग

सारंग॥ ॥दीन दयाल पतितपा

वन प्रभु विरद बुलावत कैसो । कहाभयो गज गन

कानारी जोजननारो औसो । जोकवहूं नरजन सपा

सू: रा.सु.

इनहि नाम निहारो लीनो । काम क्रोध मद लोभ मोह तजि
अननन हीं बिनहीनो । अकरन अबुध अजान अवज्ञा
मन मारग अनरीन । जाको नाम लेत अघ उपजै सो मैंक
री अनीन । इंद्री रस वस वकुन भ्रमन रह्यो जोइ कह्यो सो
ई कीनो । नेम धरम ब्रत तप नहिं संजम साध संग नहीं ची

60

नो। दरसम लीन दीन दुरबल ग्रनतिहिको मैं दुषदा।

मी। ग्रैसोसोर दास जन हरिको सबग्रथ मनमैं नामी

राग देवगंधार॥ ॥ मोहिप्रभुत

मसोहो दुपरीनाजानो करिहो जकहा नमनागरन बल

हरी। कुनीजिनीनिननी पतिनाई सोमैंसबैकरी। पतित

४७

स्र॰
रा॰स॰

सन्तहन उथावे कीतम जियजनकपकरी। मैजन्त रहैौं राजी
वनैन उर पापहारदरी। पावकऋगे महिकहं तारनकों
गूढ गंभीरघरी। एक अथार साथ संगन कोरविपवि
कैसंचरी। यहै सोचहीच विनराषी अपनेथरनधरी। मो
कोमक विचारनहो प्रभुसुक्खिनपहरवरी। अमनैनमै

61

पसीना ऐसैहै यहकनपैजकरी। सूरदास विनती कहा वि
नवै हृषन देहभरी। अपनो विरद संभारोगे तोयामै स
वनिवरी॥६५॥ राग धनासिरी॥
कव तममो सोपतिन उधासौं। पति तनमै विष्यात पति
हौ पावन नाम तमारौ। बडेपति तपा संगकूनांही अजा

सू॰ मिल कौन विचारौं। भाजैनरक नाम सुनमेरोजमनिदि
रा॰स॰ यो हठतारै। छुद्रपतित तुमतारे रमापत स्रव जनि
करौ जियगारौ। सूरपतितकौं ठौरकहूं नहींदै हरिना
मसहारौ ६५॥ राग धनासिरी॥
तुम कब मोसो पतित उधारो। कहेंकों प्रभु विरद बु

62

६२

लावन विनमसकन कोनासैा । गीधव्याध गज गैानम

कीतियतिनको कहा निहोरो । गनकानरी आपनी

करनी नामभयो मभुनेरो । अजामेलनो विप्रनमा

नमारो ह्वतो उरानननदास । ननक ह्वकनै यह गत

कीनी फिरि वैकुंठ हिवास । पतिन जानि नम सव ।

सू॰
रा॰स॰

जननतारे रहौानकाहूं षोट। नौजानौ जो मोहितारिहौ
सूरकूर कवि टोट।९९॥ राग धनासिरी॥ पतितपावन
हरि विरदतुमारौ कौनै नामधस्यौ। होतोदीन दुषित
अति दुरवल हारेगृह घरो। चारपदारथ दिये सुदामा
तंदुल भेटधस्यौ। द्रुपदसुता की तुमपतिराषी अंबरदा

९३

नकहैौं। संदीपन सुततम प्रभुदीने विद्यापाट रहैौ। सु
तकी विरया निठुरभए प्रभुमोते कछुन सहौं ९७ ॥

राग धनासिरी ॥ ॥ आजुहों

एकएक करिटरिहौ। कैंहमहीकै तुमही माधव अप
नेभरोंसेलरिहों। ह्लोंनेंपतित सात पीढीको पतितैह्लैतनि

सू॰ रा॰ स॰

स्तरहैं। अवहों उच्चरनचै चाहत होत मै विरद विन करिहों। कत अपनी परतीतन सावनमै पायो हरिहीरा।

सूरपतित नवही उठिहै जवहसिदै होवीरा। ९८ ॥ राग नट ॥

॥ कहावत ऐसीत्यागीदान।

चारिपदा रथ दिये सदामहि अरुगुरुके सुतआन। राव

नकेदसमस्तक छेदेकर गहि सारंगपान। विभीषन

कौलम लंकादीनी सर्वलीपहिचान। विप्रसदामा कि

यो प्रजाची प्रीत पुरानन जानि। सूरदास सों कहांलि

उरभए नैनहूंकी हानि ॥६९॥ राग धनासिरी ॥

॥ मोसोबातस कुचनजि कहीये। कर

सू॰ न भरमावत होत्तम मोकौं कहूकाके ह्वै रहियै। कैयौन
रा॰ स॰ म पावन प्रभुनाहीं कै कछुमोमै भोलो। तौहूं अपने फे
रि सुधारौ वचन एकजोबोलो। तीनोंपनमै ओर निवा
है यहै स्वांगको काछै। सूरदास कौं यहै बडोदुष पर
त सबन कै पाछै। ८०॥ राग सारंग॥ प्रभुहै बडीवेर

कोठाढ्यौ। औरपतितजे संततारे तिनही लिषकाढे।
जुगजुग विरदयहै चलआयौ टेरिकहतहै तातै। म
रियत लाज पांच पतिततनमै होवकहौ घटकातै। कै
प्रभुहारि मानकै वैठौ कै करौ विरद सही। सूरपतित
जौ झूठि कहतहै देषोषोल वही॥७१॥ राग सारंग॥

स्:
रा॰स॰

।।प्रभुहों सब पतित ततनकोटीको

औार पतित सब सब दिवस चारके हो जनमंतर हीको।

विधिक अजामिल गनकातारी औार सतनाहीको। मो

हिक्काडि तम औार उदारै मिटै सूल कैसा जीको। कऊन स

मर्थ अयकरवेको षैचकहिन हों लीकों। मरियत स्

66

रलाज पति तनमैं हमहूं मैं कोनीको ।७२॥ राग सारंग ॥

हौंतोपतनति सिरो मनमाधो । अजामेल वान नहीं नासौं

सनोज्ञमोते आधो । कैसभहार मानकै वैदोके अवही ।

निस्तासौं । सरपतिन कौं और ठौर नहीं है हरि नाम स

हारो ॥७३॥ राग सारंग ॥ ॥माधो ।

स॰ जन्मौनै औरन पापी। घातक कुटिलचवाईक पटी महाक्रूर
रा॰स॰ संतापी। लंपटधूत एत दमरी को विषय जापकोजापी।
भक्षअभक्ष अपीय पानकरिक बङ्गनमन माथापी। का॰
मी विवस कामिनीके रस लोभ लालसायापी। मनवचक
रमउसहिस सवहुन सो कटुक वचन अलापी। जेतक

६७

८६

प्रथम उधारे तम प्रभ तिनकी गति मैं नापी। सागर सूरभ

सैं विकार जल पतित प्रमिलवापी। ७४॥ रागकान्हरा।

हरि हौं सब पतित तन पतिनेस। औरन

सर करिवे कौं हजौं महा मोह ममदेस। आसाके सिंहा

सन वैठौ दंभ छत्र सिरतान्यौ। अपजस अतिनकी व

स्र॰
रा॰स

कहिदेखों सबसिर आउसमान्यो। मंत्रीकाम क्रोध निज
दोऊ अपनी अपनी रेन। उवथा उंडमहैहैनि सवासिर उप
जावत विपरीत। मोटीलोभषवास मोहके द्वारपाल अहं
कार। पाटअहं ममताहै मेरैं मायाको अधिकार। सेवक
त्रस्ना भ्रमतट हलहिनन छिन विसराम। अनाचार सेव

68

४८

क सो मिलकै करनचवाउनकाम। बाजमनो रथ गरव म

त्त गज असन ऊसन रथसून। पायक मनवा नैन अधीर

जसदा उष्ट मन हून। गफचै भयौ नरक पतिमोसौ दीनै

रहित किवार। सेनासाथ बऊन भौननकी कीनेपाप अपा

र। निंदाजग उपहास करत न मगावंदी जनजस गावत।

सू॰
रा॰स॰

छूट अगमाउ अधरम सूरन निजनौबत द्वार वजावत ।७५॥ रा

ग धनासिरी ॥ ॥ सांचोसो लिषदा

रकहावै । कायाग्राम मसाहनिकै जमावांधि वहरावै । म

नमथकरै कैद अपनी ज्ञानजहनियालावै । मांउमीउ परि

हान क्रोधको पोला भजन भरावै । चाहाकाटक सूर भरम

६९

६८

कोफरद नरैलैउरै । निहचै एक अमलपर राषैटरैनक

वहंटरै । करिअवारजा प्रेम प्रीतको अमलनहो घन

यावै । हजीफरद हरिकर हैपातनैकननामैआवै । म

जमिलजोर ध्यान जलको हरिसोंनहो लैराषै । निरभै

हप लोभ क्काडिकै सोइ चारिजारापै । जमाषरच एक

सू॰ रा॰म॰

करि समझैके लेषा समझ कहनावै। सूरदास प्रभु गुजरान म

हासबाले जवाब पहुचावै॥ ७६॥ राग धनासिरी॥

॥ प्रभुजीमै ऐसो अमल कमायो। सा

वकनज माफ़ती जोजोरी मिन जालिकनल कल्यायो।

वासलवाहाकीस्याहा मजमिल सव अधर्मकी वांकी।

१०

८.

विक्रम होतमसेलोफी मरनगहैंमैकाकी पांच महरे

रसाय करदीने तिनको वडी विपरीत जिम्मेंउनके मां

गैमोते वहतें वडी अनीत। पांचपचीस साथ अगवानी

सभमिलकाज विमारे। नेकज सोवत विसरगई मथि

मोतजि भए निरारे। वडोनमारव रामदही को लिष की

सू· नोहै साफ। सूरदासको यहै मुहासवादसकन कीजै साफ ८८

रा·सा· राग सारंग॥ ॥हरिहो सब प

ति तनको राजा। निंदापर मुष हरिरहौ जग यह निसान

नववाजा। त्रिस्नादेसरु सुभट मनो रथ इंद्री षडग हमा

री। मंत्रीकाम कुबुध देवे कों क्रोध रहित प्रतिहारी। गज

८१

अहंकार वजीर दिग विजई लोभ छत्र करिसीस । फौज

असत संगतकी मेरे ऐसो है मैईस । मोहमई वंदी गुन

गावत मागध दोष अपार सूरपापको गढ दृढ कीनो

महु कमलाइ कि वार ७८ ॥ राग धनासिरी ॥

॥ हरिहौ सवपति ननको राउ । को ।

सू॰ करिमकै वरावर मेरी सोधों मोहिवताउ। व्याधगीध अ
रा॰म रु पतित पूतना तिनमें वडो जु ग्रोर। तिनमै अजामेल
गानका पति उनमै मैसिरमोर। जहिं तहिं स्वनि यत
यहै वडाई मोसमान नहिग्रान। ग्रौरु है अज्ञ कालके
राजामै तिनमै सलतान। ग्रवलों तो तुम विरद वुला

यो भईनमो सों भेट। नजो विरहकै मोहिउ धारे सूर

गही कसिफेट ७९॥ राग सारंग॥

हरिहो सवनि ननको नायक। कोकरि सकै वरावर

मेरी ओर नहीकोऊ लाइक। जैसो अजामेल को दी

नो सोपाटो लिष पाऊं। नौविश्वास होइ मन मेरे ओ

सू॰ रा॰ स॰

रो पतित बुलाऊं। यह मारग कौ गुनो चलाऊं तौ हूरे बो

पारी वचन मानले चलौं गांठि दै पाऊं सष अति भारी।

अवकै तो अपने लैयो वेर वकुरकी ओर। पतित उधार

न नाम सुनो जब सरन गहीतक दौर। होड़ाहोड़ी मन

हि भावने किये पाप भरिपेट। सबै पतित नपा इन तरुञ

रो यहै हमारी भट। वरुन भरोसो जान तुमारो अघकी
ने भरि भाडो। लीजै वेगि निवेर तुरतहीं सूर पतितको
टाडो।८०॥ राग धनासिरी ॥
मोसो पतित न और गुसांई। औगुन मोपै अजहुं न छूट
त भली तजी अबतांई। जनम जनम यौंही भ्रमआयो क

सू॰ पि गुंजाकी न्याई। पर मन मीन जान नहीं कबहूं लैलै
रा॰स॰ निकट बनाई। मोहो जाइक नक कामनि सोम मना मो
ह बझाई। जीभ्या स्वाद मीन जौ उरफौ सूकै नहीं फंदाई।
सोवत मदिन भयो सपने मैं पाई निधिजु पराई। जाग
परे कछु हाथ न आयो यह जगकी प्रभु ताई ॥ ॥

परसे नाहि चरन गिरधर के वहुत करी अन्याई । सू

रपतिन को ठौर कहूं नषी राषले हु सरनाई । ८१ ॥

राग धनासिरी ॥ ॥ हरिहो

महा पतित द्रोही अभिमानी । तरुना पनसो वैठि वि

षे रति भाव भक्त नहीं जानी । निसदिन डुषित मनोरथ

सू॰
रा॰ स

करि करि पावत हू त्रसा न बुझानी। सिर पर काल
नीच नहीं चितवत आपु चटत जैसे अंजरी पानी। विम
घन मोर निजो रनदिन मत साधन सों नकहूं पहुचा
नी। तिहि विनु रहत नहीं निसवासर जहां सव दिन
रस विषय वषानी। माया मोह लोभ नहि जामै ऐसे

८५

वृंदा वन रज धानी । नव किसोर जलद नन सुंदर विस

सैयों सूर सकल सुषदानी । ८२ ॥ राग धनासिरी ॥

॥ माधव जू मोहि काहे की लाज । ज

नम जनम यौंही भिरमायौ अभिमानीवे काज । जल

थल जीव जिते जग जीवन निरष दुषित भए जदेव ।

स॰ गुन औगुन की समझन संका परी आइ यह देव। सब
रा॰म॰ बसषाइ रहौ बर वैसो करौन कछु विचार। सुरसा
नके पालन हारे आवन है निन गारि। ८२॥ राग सा
रंग॥ ॥माधवजू सो अपरा
धी। जनम पाइ कछु भलो न कीनो कहोम कैसो निवहो

७८

७५

सवसें रीत कहि नजम्र धरकी गज पीपल कालो।पा

प धुन्यको फल दुष सुष है भोग करो जोईगो।सोसा

पंथ वनायो सोई नरक कि सुर गलहो।काकें वल

हों नरो गुसाई कछुन भक्त रहों। हसि वोले जगदीस

जगत पति वात तुमारीयो।करुना सिंधु दयाल कु

स॰ पानिधि भजैा सरनकोकैा। वात सुनैनते वकृत हंसो ग॰
रा॰ म॰ चरन्न कमल कीसों। मेरी देह छुटत जमपठये जित
कहत चरसों। लैलैसव हथयार आपनें सान धराये
सैां। जेहिके दारुन दरस देषकें पतित करत मैांमैां।
दोत चवाते चलेजम घरते धामहमारेको। ढूंढिफिरेघरको

७७

८८

ऊन बनावै स्वपच कैा रियालैा। विसभ रिगये परम किंक

रनवप कसैां छूटन सकैा। लैलै फिरेन गरमैं हार ह्य

र जह्ना मरन कहोह्ैं। नारैंसलि मह्वि बङ्गन कमासैा

कह्नलें बरन कह्नें। हाइ हाइ मै पसैा पुकारैं राम

नाम नवकों। नाल वषा वजचले वजावत समधासै।

सू· रा·स·

भाको। सूरदासकी भली वनी है गाजी गई अपहयौ ८४

राग सारंग। थोरो जीवन वहुत न भरो। कियौन संत

समागम कवहूं लियो न नाम तुमारो। अति उन्मतमो

हू माया वसन ह्री कफवात विचारो। करनि उपा वन

श्रवन कवहूं गन नन घाटोघारो। इंद्री स्वाद विवस नि

78

सवासर आप अपनयो हारो। जल उन्मत्त मीन ज्यौं व
भरो पाऊं क्यहारो मारो। वांधी मोटप सार त्रिविधि ग
न कहूं नी वीच उतारो। देख्यौ सूर विचार सीस परी
नवनम सरन उकार्यो। ८४॥ राग धनासिरी॥
॥ अव मैं नाच्यौ बहुत गोपाल। का

स्र॰ सक्रोध का पहरि चोलना कंठ विषयकी माल। महा
रा॰स॰ मोह के नूपुर बाजत निंदा सब्द रसाल। भरम भर्यें म
न भयौ पषावज चलत कुसंगत चाल। त्रिस्नानाद क
रै घट भीतर नाना विधदे ताल। माया को कट फेंटा
बाध्यौ लोभ तिलक दियौ भाल। कोटि कलाका कां

८९

छि दिषराई जल थल सथि नहि काल। सूरदासकी स

वै अविद्या हरकरो नंदलाल। ७६॥ राग धनासिरी ॥

॥ ऐसी करत अनेक जनम गये म

न संतो षन आयौ। दिन दिन अधिक उरासालागैपा स

कल भर मायौ। सत सत स्वर्ग रसातल भूतल नहीं

सू॰ नहीं उडिधायौ। काम क्रोध मद लोभ अगनते काहू नज
रा॰स रत बुलायौ। स्रक चंदन वनिता विनोद सुष यह जरज
र निवनायौ। मैअज्ञान अकुलाइ अधिक लै जरत मांहि
घृतनायौ। भ्रमभ्रम हौं हार्यौ हिय अपनै देषि अनल ज
लकायौ॥ सूर दास प्रभु तुम री ॥

८०

८०

कृपा बिन कैसै जानन साये। ८७॥ राग धनासिरी॥

॥बादही जनम गयो सिराइ। हरिसि
मरन नही गुरकी सेवा मधु बन बसौ नजाइ। अबकी
वेर मनुष्य जोन धरम जौन ग्यान उपाइ। भटकत फिरौं
स्वानकी न्याई नैक झूठकी चाइ। कबहुन रिझयो मदन

सू० गोपाल हि विमल जस गाइ। प्रेम सहित पग बांध ९
रा० स घूंघरू सकौं न अंगन चाइ। श्रीभागोत सुन्यौ नहीं
स्रवननि नेकहूं रुच उपजाइ। अनन्य भक्तिन हरि भ
क्तन कौ कवहूं नहीं थोप पाइ। कहो कहो जो अन अद
भत है कैसै किहों वनाइ। भव प्रबोध नाम बिजनौका

[8]

८१

सुरहि लेहु चढाइ ८८ ॥ राग गौरी ॥

माधवजू नम कलि जिय विसरयौं । जानन सब अंतर

की करनीजो मै करम करयौं । पतितनसं सूह सवै न

मतारे हुतोजु लोक भरयौं । होउननै न्यारो करि डारयो

इहि डुष जानमरयौ । फिरि फिरि जोन अनंनन भरमयो

सू॰ रा॰ सा॰

प्रवसष सरन परौं। इहिं औसर कतवांहि छुडावन इह

उर अधिक डरौं। हौंपापी तुम पतित उधार तडारे हो

कतदेत। जोजानो यह सूरपति तनहीतो तारो निज

हेत। ८९॥ राग केदारा॥

जोपै तुमही विरद विसारौ। तोकहौं कहांजाइ करु

८२

रागमय कृपन कर्मको मासौ। दीन दयाल पतितपा
वन जस वेद बषानत चासौ। सुनियह कथा उरा न
न गनका आध अजा मिल नासौ। रागद्वेष विपि अ
विपि असच सच जहि प्रभ जह्नी संभासौ। कियो कि
योनकह्नं विलंब कृपा निधि सादरसोच निवासौ।

सू· सूरदास प्रभु चितवत काहे न करत करत स्रम हारयौं ॥९॥

रा· सा· राग सारंग ॥ ॥जैसे और बहुत

लषनारे। चरन प्रताप भजनमे हरि मा सुष सुषको कहि

सकै तुमारे। दुषित गयंद दुष्टमत गनका नि रग कूप उधा

रे। विप्रवजाइ चल्यौ सुत कै हित काटि महा अघभारे।

83

८३

आथ गीध गौतम की नारी कहो कौन व्रत धारे। केसे

केसज्ज वलया मष्टक मव सुष धामसि धारे। उरजन

कों विष बांट लगायो जसमति की गति पाई। रज कम

ल चानूर दावा नल दुष्ट भंजन सुषदाई। न्रप सिस पाल

महा पद पायो मर ग्रो सरन ही जानै। अनवक त्रिना

सू॰ ग॰स॰

वर्नथैन् कहन्ति गुण गहि दोषन मानै ॥ पंडवधू पटहीन

सभामैं कोटन् वसन भजाए । विपत काल सुमरन छि

न भीतरन हो नहीं नहीं उठ धापत ॥ गोप ग्वाल

गो सुत जल आसन गोवर धनकर थासौ ॥ सुनि

पत दीन महा अप रा धी कहै ॥ ॥

सूरकहै सूर विमाहैंं ९२ ॥ रागनट ॥

बऊरकी कृपाहूं कहा कृपाल। विद्यमान जन दुषित ज

गतमै तुम प्रभु दीन दयाल। जीवन जाचत कन कन निर

धन टन वेहाल। तन छूटीते धन मनहीं कछुज दीजै मन

कहा दानजोद्दवै नदिन कों देषि दुषित कलकाल। सूर

सू॰
रा॰स

स्याम को कहानि होरो चलत वेदकी चाल ९१ ॥ राग के
दारा ॥ ॥ कौन सुनै इह बात ह मारी।
समरथ और न देषौ तुम बिन कासौं कहौं बिथा बन
वारी। तुम अवगनि अनाथ के स्वामी दीन दयाल नि
कुंज निहारी। सदा सहाइ करी दासन कौं जो उर धर

85

धरी सोई प्रतिपारी। अब किहिं सरन जाँव जादव प
ति राषि लेहु बल त्रास निवारी। सूर दास चरननि पर
वलवलि कौन गुसा नें कृपा विसारी ॥९२॥ राग क
ल्यान॥ ॥जैसें राषो तैसे हीरहों।
जानत हौं सुष दुष सव जनके मुष कर कहा कहो।

सू॰ कबहूंकें भोजन लहों कृपा निध कबहूं कभूषसहों ।
रा॰स॰ कबहूंक चढों तुरंग महागज कबहूं क भारवहों । कम
ल नैन घन स्याम मनोहर अनुचर भयो रहों । सूरदा
स प्रभु भक्त कृपा निधि तुमरौ चरन गहों ९४ ॥ राग
धनाश्री ॥

86

८६

कवलों फिरहै दीन भयो। स्वरत मलिन भ्रम भोर परैयों

तन मन परवत नलसैं। वात चक्र त्रिसना प्रकित मि

लहों त्रिनत छगसैं। उरझौ विवस कर्म नरु अंतर

भ्रम स्वष चरन सहैं। विनती करत उरात कृपा नि

धिनाही परन रखौ। सूर करन वर रचौ जननिज क

कवसोकरनाहिगसैं ९५ ॥

171

87

वरबमव हूरहिं लागई । नम महित गिरितें गिरौं पाव
क नरौं जल निधि महं परौं । बर जाउ अपयश होउ ज
ग जीवन विवाहन हौं करौं । दोहा ॥ भयी विकल अव
लास कल डरिवत देवि गिरि नारि । करि विलाप रोद
ति विदति मता मनेह मभारि ॥ चौपई ॥ नारद करमैं

रा॰
रा॰स

कहा विगारा। भवन मोर जिन बसत उजारा। अस उप
देशउ महि जिन्ह दीन्हा। बौरें बरहिं लागि तप कीन्हा॥
सांचेहु उनके मोहन माया। उदासीन धन धामन जा
या॥ पर घर घाल कला जन बीरा। बांझ कि जान प्र
सव की पीरा॥ जननिहिं विकल विलोकि भवानी।

128

वोली पुन विवेक मऊ वानी। ग्रस विचारि सोचह्र मति

माता। सोनटरै जो रचै विधाता॥ करम लिखा जो बाव

र नाह्र। तोकत दोष लगाउ वकाह्र॥ तम सन मिटि

ह्हि कि विधिके ग्रंका। मात ब्यर्थ जनिलेह्र कलंका॥ छं॰

जनिलेह्र मात कलंक करुणा परि हरह्र ग्रव सरनही॰

रा॰ दुख सुख जो लिखा लिलार हमरे जाव जहं पाउ बतहीं॰

रा॰स सुनि उमा वचन विनीत को मल सकल अबला सोच

हीं॥ बहु भांति विधिहिं लगाइ दूषण नयन वारि विमो

चहीं। दोहा॥ तेहि अवसर नारद ऋषय ओ ऋषि सप्त स

मेत। समाचार सुनि तुहिन गिरि गवने तुरत निकेत॥

१२७

१२८

बंगाली रागिनी ताल ३।

चौपई ॥ कहेउ नीक मोरे मन भावा । यह अनुचित नहि
नेवत पठावा । दक्ष सकल निज सुता बुलाई । हमरे बयर
तुम्हऊँ बिसराई । ब्रह्मसभा हम सन दुख माना । तेहितें
अजहुँ करहि अपमाना । जौ बिनु बोले जाहु भवानी ।
रहेन सीलसनेहु नकानी । यदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा

126

रा॰ हा। जाइय बिन बोले न संदेहा॥ तदपि बिरो
रा॰स ध मान जहं कोई॥ तहां गये कल्याण न होई।
भांति अनेक शंभ समझावा। भावी बसम ज्ञान
उर आवा॥ कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बुलायें॥
नहिं भलि बात हमारे भायें॥ ॥ ॥

83

दोहा ॥ कहिदेखो हर यतन बहु रहैन दल कुमारि । दिये
मुख्य गण संग नव विदा किये त्रिपुरारि ॥ चौपई ॥ पिता
भुवन जवगयी भवानी । दत्त त्रास काहु नसन मानी ॥
सादर भलेहि मिलीइक माता । भगिनी मिली बहुत मुस
काता । दछन कछु पूछी कुशलाता । सतीहि विलोकिज

रा.

रा.म.

रे सब गाता ॥ सती जाइ देखेउ तब यागा। कतहुँन दी

ख शंभु कर भागा ॥ तब चित चढेउ जो शंकर कहेऊ।

प्रभु अपमान समझि उर दहेऊ। पाछिल दुखेन हृद

य असब्यापा। यशयह भये उपहा परितापा। यद्यपि

जग दारुण दुखेनाना। सबते कठिन जाति अपमाना·

१

रा॰ गे॰
सू॰

अथ राग गंधार सुरसागर परिछेदमाह ताल। ।राग
बिलावल। सूरदासकृत। श्रीमहाराजा रणबीरसिंह
कृत॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करो। हरि चरनार
बिंद उर धरो। हरि चरननि सुक देव सिर नाइ॥
राज्या सौं बोल्यो या भाइ॥ कहो हरि कथा सुनो चि
त लाइ। सूरदास हरि के गुन गाइ॥ १॥ सरगम सूरदासकृत ताल॥३॥

मपैधनिसैनिधपमगरेसै॥ गरेसैमगरेसैधपमगरेसै॥ मपैधनिसैनिधपमगरेसै॥ गरेसैमगरेसैधपमगरेसै॥ मपैधनिसैनिधपमगरेसै॥ गरेसैमगरेसैधपमगरेसै॥

गजमोचन अवतारनैं । राग बिलावल गधार

ताल ॥३॥ गज्या मोचन ज्यौं भयो अवतार । केहौं

सुनों सों अवचित यार । गंधर्व पकनदी मैं जा

इ देव लरिष कौ पकर्‍यो पाइ । देवल केहौं

ग्राहितं हौ ३ । केसों गंधर्व दयाकरि मोहि । जंव

मधपनिसैनिधपमगरेसै ॥ गरेसैमगरेसैधपमगरेसै ॥ मधपनिसैनिधपमगरेसै ॥ गरेसैमगरेसैधपमगरेसै ॥ मधपनिसैनिधपमगरेसै ॥ गरेसैमगरेसैधपमगरेसै ॥ मधपनिसैनिधपमगरेसै ॥ ग

स्रु:
रा.गं.

गजेंद्र कौ पग न्तु ग हि है। हरि ज्नु नाको ग्रा न छू

टि है। भय स पर सं देव त न न थ रि है। मैरो कहौं नै

ऊ न हिं टर है। राजा इंद्र उ स्न कियो ध्यान। ग्रा

यो ग्र ग स्त नहीं तिन जान। दीयो ग्रा प गजेंद्र

तु हे हि। कहौं न्त पदया करो रिष मोहि। कहौं

रेसैमगरेसैयपमगरेसै॥ मपैयनिसैतियपमगरेसै॥ गरेसैमगरेसैयपमगरेसै॥ मपैयनिसैतियपमगरेसै॥ गरेसैमगरेसैयपमगरेसै॥ मपैयनिसैतियपमगरेसै॥ गरेसैमगरेसैयपै रेमगरेसै॥
मपैयनिसैतियपमगरेसै॥ गरे

तो हि ग्राह ग्रान जै व थै रि हैं। हूं ना रा य न म्है मि रै न

क रि हैं। या ही वि धि तै री ग ति हो ई। भ यो वि ऊ ट

प र्व त ग ज सो ऊ। का ल हि पा ऊ ग्रा ह ग ज ग ह्यौं। ग

ज व ल क रि कै र कै थ क र ह्यौं। म्है न प न नी हूं व।

ल के र र हे। छूटै न ही ग्रा ह की ग हैं। तै स व भू षे ङः

सैमगरेसैधपैमगरेसै॥ मपैधनिसैनिधपैमगरेसै॥ गरेसैमगरेसैधपैमगरेसै॥ मपैधनिसैनिधपैमगरेसै॥ गरेसैमगरेसैधपैमगरेसै॥ मपैधे
निसैनिधपैमगरेसै॥ गरेसैमगरेसैधपैमगरेसै॥ मपैधनिसैनिधपैमगरेसै॥ गरेसैमगरेसैधपैमग

स्रू: गा.गं:

षितभये। गजकोमोह छाँडउडिगये। तेवगजह

रिकी सरनी आयौ। सूरदासप्रभुतोहछुडायौ २।

गगथनासिरीगंधारताल॥ ३॥ माथवजूगजग्रा

हिनेछुडायौ। निगमनिहूंमनवचनअगोचरम

गटरूपदिषायौ। सिवविरंचसवदेषनठाढेव

रेसै॥ मपैपथनिसैनिपपैमगरेसै॥ गरेसैमगरेसैथपैमगरेसै॥ मपैपथनिसैनिपपैमगरेसै॥ सरम पनासिरी सूरदासकृत ताल॥ ३॥ निसैगमपैम

गरेसै॥ गमपैपथनिसैनिपपैमगरेसै। गमपैथनिसैनिप

ऽन दीन उखपायौ। विन वदलै उपकारकरै कौ

काहू कहत न आयौ। वित वन ही विन मै चिंता

मन चक्र लिये करथायौ। अन करुणाकर

करुणामय गरुड हिं हूं छूटकायौ। हनि यनस

ज सह निजजन कारनकऽनग हरलगायौ।

पैमगरेसै॥ गमपैयनिसैनियपैमगरेसै॥ गमपैयनिसैनियपैमगरेसै॥ गमपैयनिसैनियपैमगरेसै॥ गमपैयनिसैनियपैमगरेसै॥

स्व॰ रा॰ गं॰

नाजानेजुमररइहिंश्रोसरकैं नादैषविसरायो २

राग विलावल । गेयारताल ॥३॥ हरि कर चक्र धरे के

वि था व न । ग रु ड स मे न स क ल सै ना प नि पा छे

लागे आ व न । च लि न हिं स क न ग रु ड म न उ र पं न

बु धि व ल व ल हिं व ढा व न । म नो प व न व स प त्र बु

गमपधनिसंनिधपमगरेस ॥ सर्गम रागविलावल ताल ॥३॥ मपधनिसंनिधपमगरेस ॥ मपधनिसंनिधपमगरेस ॥ मपधनिसंनिधपमगरेस ॥ मपधनिसंनि

4

गानेनग्रपनौचैरेनचैलावैत। कौजानेंप्रभ्रुक

ह्वाचलेहैकाहूकक्रुनेजनावैत। प्रतिथ्याऊलगं

तिदेषिदेवगानसोचसकलउंघपावैत। गज।

हितथावनजनमुकणावनवंदविमलजसगा

वैत। हूरसेमुफसमुफावश्रनाथनइहविधि।

पपमगरेसे॥ मपधनिसेनियपमगरेसे॥ मपियनिसेनियपमगरेसे॥ मपियनिसेनियपमगरेसे॥ मपियनिसेनियपमे

सू.
रा.सां.

नाथ छुडाँवैन ॥ राग सारंग ॥ गैयागरकविन ना थ

काँईनमिटन पाईआपहरि आँतरकै जवजो

नैांगजग्राहलियेजांतजलमैं । जांदवपनिज

ज़ुनाथषगपनी साथजनजांन्यों विहवल ।

तवछाडि दियो थलमैं । नीरहतेन्यागैकी नो

गरेसै ॥ सरगम राग सारंग सूरदासकृत कवित ताल ३ ॥ सैरेमपैनि सैरेसैनि पैमरेसैनिपैनिसैरेसै ॥ सैरेमपनिसैरेसैनिपैमरेसैनिपैनिसैरेसै ॥ सैरेमपनिसै

चकनकसीसदीनोदेवकीकेनंदलालअैचमूत

लमैं। कहैसुरदासदेषनैंननिकीमिटैआस

हृपाकीनीगोपीनाथआइगयेंपलमैं ॥ रागवि

लावलगंधारताल॥३॥ अवहौंसवदिसहेरहेरह्यों।

राषननाहिकोऊकरुणानिधिअतिवलगाहे

रेसैनिपैमरेसैनिपैनिसैरेसै ॥ सैरेमपैनिसैरेसैनिपैमरेसैनिपैनिसैरेसै ॥ सगमम रागविलावल ताल॥३॥ मपैयनिसैगरेसैनिपैमगरेसै ॥ मपैपनिसैगरेसैनिपैमगरेसै

सू.
ग.ग.

गहैां स्तर नेर मव स्वार थकै गा हककै न श्रमग्रा न

करै। उउ ग न उदि न ति म र न हि ता स न वि न र व।

6

हूपधरैं। उनना वा न स न न क रु ण म य च क्र गं

हैं क र धा यैं। ह नि गं ज म त्र स्त र कै स्वा मी ना क्षि न

स्त ष उ प जा ये॥ श्रीकूर्म अव ता र व र न न। विलावल.

मपैयनिसैंगरेसैनिपैमगरेसै॥ मपैयनिसैंगरेसैनिपैमगरेसै॥ मपैयनिसैंगरेसैनिपैमगरेसै॥ मपैयनिसैंगरेसैनिपैमगरेसै॥

जैसे भयौ कूर्म अवतार । कहो सु

नो सो अब चित्त धारि । नरहरि हिरन्यकसिपु

जब मार्यौं । अरु प्रहलाद राज बैठार्यौं । तांके

सुत बैराचन भयौ । तांकें बहुर पुत्र बल जयौ

बल सुर पति का बहु दुष दयौं । तब सुर पति ह

सू. सा
सा.गं.

रि सर नी ग यो। हरि जु अपनें बिरद संभा सैं। सूर जु प्रभु रू रम तन धा सैं॥ रामसाहू॥

सूर नि हित हरि कच्छप रूप धासैं

मथन कर जलध अमरन निका सैं। चन मेरव त्रि दि सि त

व विन य हरि सें करी। बल असूर सें सूर नि उष पा यो

दीन बंधु कृपा कर न असुर न सुरन मंत्र यह नि नै निज

मथ रचना यौ। वासु के ने नी अरु मंदारा चल र ईक म

ठ मैं आप नी पीठ धारौ। असुर सौ हे न कर करो सागर

मथ न न हों ने अमृतन कौं धोनि कारौं। रत्न चौद हन हो

ने बहुर प्रगट हों असुर कों सुरा नम अमृतन प्याऊं जिन हो

मू: न व महा असुर बल वंत कों मरै नही देव ना यो जि वाइ ॥

रा. गं. इंद्र मिल सुर निवलि पास आ यो व कूर उन कहौं कहौ क

8

हिं काज आप त्रि दिस नव समुद्र कै मथन की बात जो कृ

तीजि हिं सकल कहि कै सुना प॥ वल क ह्यौं विलंव अव

नेक न हिं की जिये मंद रा चल अचल चलै धाई। दोऊ द

क मंत्र करि जाइ पकुवे तहां कहेौ अब ली जिये इहिं उचाई।
मंदरा चल उपा रन भयौ श्रम बहुन बहु रलै चल न कौं
जब उगा यौ। सुर असुर बहुन नाठो रही मरगाह उहु न
को गर्व यो हरि नसा यौ। तब इहूं ध्यान भगवान को य
रि कह्यौं विनन्त मारी कृपा गिर न जाई। वाम कर सों पक

सू॰ रा॰ गं॰

र गरुड पर राषि हरि क्षीर के जलध तटय सौ जाई। कसौं भगवान अब वासु की ल्याई थैजा इति हिवासु की सौं स्तना यौ। मान भगवान अज्ञा स आयौ तहां नेति करि अचल कों समुद पायौ। मंदराचल सं मुद साहिं बूडन लगयौ तव बहुर सबन अस्तुत सुनाई। कूर्म को रूप धरि धरि अचल

पीठ पर असुर सुन् सकल मन भई वधाई। सुरकों तजि
असुर दौरके सब गहों सुर न तव इंछिकी ओर लीनी।
मथित भए छीन तव वकुर अस्तुत करी श्री महा राज ति
ज सक्र दीनी। भई हला हल प्रगट प्रथमही मथन जव
हरकों दई तिन कंठ धारी। चंद्रमा मथित जव वकुर आयो

सु॰
रा॰गी॰

निकसत सोऊकर कृपा दीनो मुरारी । कामनायेनु उनि ।
सम्म रिषकों दई लई उन बहुत आनंद कीने । अपसरा पा
र जानक धनुष अस्व गजसे त पांच सर पत हि दीने ।
संष अरु कौस्तुभ मनलई यह आ हरि वक्ष रउनि लछ्
मीदई दिषाई । परम सुंदर मनो नडिन है दरसनी कमल

१०

की मालकर लियें आई। सकल भूषन मनीके वने अंग

अरु वसन अरुन सुंदर सुहाए। देषसुर असुर सव दौ

र लागे गहन कह्यौं मै वर वरों आप भाये। जो मोहि चहै

तौ ताहि नांही चहौं असुरकौ राज थिर नाहि देषौं देषौं।

नप सि यन देषि कह्यौ क्रोध इनमें वकुर ज्ञानि यनिमे न

सू॰ रा॰ गं॰

आचार पेषै। स्वरन कैं देषि कहौं पराधीन सव देषवि

षि को कहौं वह दुषपायै। चिरंजीवन देषि कहौं नि

उ नये लोकतिहूं माहि को ऊ चिन न आयै। वहुरि भ

गवान को निरष संदर परम कहौं इहिं माहिं सव हैं

भलाप। पैन इक्षा इनै है काहू वस्त की अरु न ही देषि

कै म हिल भाप। कबहु कियें भक्त कें हू न परी कहैं कब

हूं कै बैर पही कहूं हीं। और गुन चाहि यें सो सकल

है इनै डारि दई माल गा हि गरे माही। हरि कह्यौ मम।

हृदय मांहि तू रहु सदा स्वरन मिल देव उडु भीव जाई

धन्य धन कह्यौं पुनि लक्ष्मी कौं सब नि सिद्ध गंधर्व जि

१२

सू॰ यधुनि सुनाई। वज्र धनं नशायो सु मुदतें निकसु सुराय्र

रा॰गं॰ रु असुरन दोऊ संग ल्यायौ। भयौ आनंद सुर असुर कों

देषि कैं असुर करि बल तवै असृत छिनायौ। सुरन भग

वान सों आइ विनती करी असुर सव असृन लै गये।

छिनाई कह्यौ भगवा चिंता न कछु मन धरौ मैं करो।

१२

अव तमारी सहाई। परस पर असुर सव जुद्ध लागे क
रन होइ वलवंत सोई लै छिनाई। मोहनी रूप धरि स्या
म आप नहां देषि सुर असुर सव रहे लुभाई। आइ।
असुर निकहों लेऊ यह अमृत तुम सवन देऊ वांट
मेटो लराई। हंसि कह्यौ नही हम तुम कछु मित्रता वि

स्व॰ ना विस्वास वाछै़ा न जाई। कहौं तम वांट पर हमै वीस्वा
गा॰गं॰ स है देऊ तम वांट ज्यौं धर्म होई। कहौ स्वर ग्रस्वर मि
ल कियौ दधि मथन देऊ सव वांटि है धर्म सोई। कहौं
जौ करो मोह मैं परवान है ग्रस्वर स्वर पांति करि तव।
वैठाई। ग्रस्वर दिस चितै मस काइ मोहे सकल स्वर न

13

कों दियो अम्रत पिवाई। राहु ससि सूरके वीच मे पीढि

कै मोहनी सो अम्रत मांग लीनो। सूर ससि कह्यों जव अ

सुर यह हाल लीजै सुदरसन सुकै टूक कियो। राहु।

सिर केत धर को भयों तव हितें सूर ससि को सदा दुष

दाई। करत भगवान रछ्या ससी सूरकी होत है तव सु

सू॰ दरस न सहाई। करि अंतर ध्यान प्रभु मोहनी रूप कों।
रा॰ग॰ गरुड असवार ह्वै तहा आए। असुर चकित भये कहां
गई मोहनी सुर असुर जुद्ध हित तहां धाए। सुरनि की
जीत भई असुर मारे वरुन जहां तहां गये सो सब प
ाई। सूर प्रभु जिहिं कहै कृपा जाइ उहि म हृयाई ॥

मोहनीरूपवर्नन। रागमाहू। करै कृपा हरि जीनै सोई
वाद अभि मान करो जिन कोई पाइ सुथ मोहनी की स
दा सिव चल जाइ। भगवान सो कहि सुनाई। अमर अ
जितेंद्रिय देषि मोहित भए। रूपसो मोहि दीजै दिषाई।
हरि कह्यौं ब्रह्म व्यापक निरंकार। सो निगुन ब्रम स।

स्०
रा० रा०

गुन लै कहा करि हौं। पुन कह्यौ विनती मान लीजे प्रभु उमा देख्यौ चहै कृपा करि हौ। हंसि कह्यौ न मैं दिष राइ हौ रूप वहु करौ विस राम इक ठौर जाई। वैठि एकांत जो हृन लगे पंथ सिव मोहनी रूप कवि दे दिषाई। होइ अंतर ध्यान हरि मोहनी रूप धरि जाहि वन मां।

15

हिदीनी दिषाई। सूर ससि कि योंच पला परम सुंदरी अं
ग भूषन निछ विक हिन जाई। हाव अरु भाव कर च
लन चिन चितै करि कौन श्रे सोज मोहिन न होइ। उ
मा करि छाडि अरु डारि म्रग चर्म कों जाइ कै रुद्र रहौं
निकट जोई। रुद्रकों देषि कर मोहनी लाज करि जियें

सू॰ रा॰गं॰

ग्रंचर रुद्र अधिक मोह्यो। उमाहूं देषि पुनि नारि मोहित। भई नारि सम रूप अपनो न जोह्यों। रुद्र धीरज नस्यों जा इ नाकों गह्यो निकम करनै तिही छुन पराई। रुद्र कों वी जे छूटके पर्यो धरनि पर मोहनी रूप प्रभु लियो दुराई। देषकें उमा कों रुद्र लजत भये कह्यो यह कौन में काम

16

कीनों। इंद्री जिन कहावन रु तो आप कौं समझकै रह्यौ ह्वै
आपषीनैं। चल भेज रूप हरि आइ दरसन दियौ कह्यौं
सिव सोच दीजे वहाई। समन मारे नही हूसरा जगनमें क
ह्यौं नम रूपजो दियो दिषाई। नारि के रूप को दिष मोहे
न जो सो नही लोक तिहू माहि जायैं। सूर स्वामी सब

सू॰ निहित माया सदा को जगत जो न कपिलों न चायों ९ रा

रा॰गं॰ गविलावल। अस्तर के

झने वल वंत भारी। सुंदर उप सुंदर इछा विहारी। भगव

नी नवे दीनी दिषाई। देषे सुंदर दोऊ रहे ल भाई। भगव

नी कह्यो तिनसें सुनाई। जब्द जीते सो मिहि वरे आई।

नव दोऊ जद्द किनो नह्लांई। करि मयेतबरन ह्ली दोऊ भाई।
देषि कै नारि मोहित जो होइ। आपनो मूल या विधि स
षोई। सष न्रपति पास जिहिं विधि स नाई। सूर जैसें ही
तिं ही भांत गाई।९। श्रीवामनअवतारवरननं। राग
विलावल। जैसेभयो वामन

सू॰ रा॰ गं॰

18

अवतार कहो सुनो सो अव चित धार। हरि जब अमृत सुर न पिवायो। तब बल असुर बहुत दुष पायो। सुक्र ताहि पुन जज्ञ करायो। सूर जय राज त्रिलोकी पायो। नित्या नवे जज्ञ पुनि किये। तव दुष भयो आदित के हिये हरि हित उनतव बहुत तप कस्यो। सूर स्याम बावन अवपुधस्यौ॥ ॥ इति राग गंधार सूरसागर समाप्तम्॥

ग्रथ ककुभ रागनी भक्तिमाल परिछेदमाह दोह
रा। ताल तीन ३। ग्रब ग्रङ्कत खेदर स्रावद यद
किंचित मति गाय। भक्ति महात्म करऊं मै ग्रक
ट अवण स्रावदाय। रागनी ककुभ ताल तीन
चौपई। खेदर देस विदत सेसारा। नाम गदाय
र भक्त उदारा। भट्ट प्रसिद्ध नाम नहि ग्राना ॥

रा॰ क॰ भ॰

तुज तैलंग जाति उपजाना। निवसि सदन सम भक्त प्रवीना। राधाकृष्ण भजन मन लीना। स दा भागवत रुचिर पुराना। रटत एकांत भक्त रुचिमाना। समय एक नहि विमल सुहावा। निज मति पद पावन विरचावा। तो कर रुचिर ग्रंथ प्रसलागा। मै प्रति रक्त स्याम वर रागा॥

सो पद मिल्यो कान्ह जन काही। गयो लेन हेदा-

बन माहीं। तहां जीव गोस्वामी भाये। तिन पै

कीन प्रकट तहि गाये। सुनि स्वामी प्रसवद-

न भलावा। इह पद ललित कवन विरचावा।

नाम वृतांत कथन सब कीना। रच्यो गदाधर

भक्त प्रवीना। सुनत श्रवण स्वामी प्रसकाहा

रा॰
क्र॰ भ॰

मथुरा एक कबिर घलरहा। घाली रंजन नामउ

जागर। तहो ग्राय बिन भक्त म नागर। भाकम

रक स्यामवर रागा। प्रम भाषत स्वामी मखवा

गा। देत पत्र सिख जगल पठाये। ते जगान॰

गर गदाधर श्राये। एकन लगे बदन हरषाई

सो कित प्रेहिं गदाधर भाई। रहा सोउ प्रमब

चन उचारा। को नहि मन जन काज हमारा। ति
नहूं युक्त कर वचन सुनावा। गोस्वामी इन ह
रु पठावा। पथिक दीन गदाधर काहीं। सोउ ह
नत स्वरछित नत माहीं। पठयो सुचेत चेत ज
ब आवा। लीन पत्र कल सीस चढावा। करत न
बहोरि भक्त प्रस्थाना। वृंदाबन आवा मनमा

रा॰
ऊ॰ भ॰
3

ना ॥ दोहरा । करि प्रणाम स्वामी चरन निज भ्रमो
न सब गाय । लाग्यो करन निवास तहो हृदय
भक्ति सरसाय ॥ कथा पुराण विचित्र वर सुनतन
श्रवण मनमान । बीति गयो कछु काल नहि॰
भजन कुसल भगवान । चौपई रामानीऊऊभना
ल नीन३ ॥ समय एक यौहर कल ग्रामा । न्रप

कल्यान सिंह प्रसनामा। तबी हरबीर बुध-

नागर। कुल भक्त विद्यागुण सागर। कथाश्र

वण करवे कर हेत्। सो आवत नित स्वामि-

न केत। नहि प्रभावतैं छिन पत सोई। भ

यो विरक्त सकल भ्रम खोई। नहि पतनी प

ति बिना सुहाई। तासर मन रुचि रह्यो नराई

रा॰

ऊ॰ भ॰

सो पीउत प्रति मदन लिलामा । करि विचार नि
ज मानस धामा । प्रमदा बोलि गरभ वनिका
ह्न । सादर देत बसन बिन ताह्न । प्रम प्रकार-
निज बदन सिखाई । भामनि स्वामि सदन-
लव जाई । तहो गदाधर कथा प्रसंगा । रटत
होहिं निज ह्रदय उमंगा । लगत लाज प्रस

करहु बखाना। रहा गरभ महि तोर खजाना।
अब इह संत भक्त नियरावा। जन्महुं कहो क
वन फल भावा। अस प्रकार निज बदन सिखा
ई। दीन पदाय वेग बियराई। दुरमति लोभ बि
बस गत लाजा। आई द्रुत जित संत समाजा। त
हो गदाधर भक्त प्रकासा। बाचत रहे कथा अ

रा·

ऊ· भ·

5

भिरामा। जेहि प्रकार शिष्या जढ लीना। तिमि·
सब कुमति कथन सब कीना। श्रोता सुनत मो
न सबराहा। सकहिं चकित कछु बचन न काहा
भक्त गदाधर रोदन कीना। रहे प्रसन्न बदन सु
दलीना। बोले बहुरि बचन सुखदाना। करहु
तनक धीरज सब माता। बाचत बेग कथा सु

खाये। मैं तोरे अबदेहूं बनाये। तब वैस्नव त
हि मारन काहीं। उठे तुरंत कोप मन माहीं
बहुरि त्रिये वध पाप बिचारी। भनत सकल
निज हृदय डुखारी। गुरु अपमान कलेक:
हमारे। मिटहिं कवन विध वदन उचारे। दो
हरा। तब वैस्नव एक कोपजुत राधावल्लभ

रा॰
क॰ भ॰

6

नाम। नहि त्रिमकारन विविध विधी कहत स
नहु श्रग धाम। करहू कथन श्रब सत्य सठको
करउ कत श्रलाई। हतहू श्रभागनिभावि श्र
मलीन्यो देउ उनाई॥ रागनी ककुभ ताल त्रि।
चौपई। तेउ परत श्रम बदन उचारी। न्रहि।
कल्यान सिंह न्रप नारी। बिनतै दीन सिखा

वन पह्न। तो मैं आई सेन सव गेह्न। हरषे मातु
सनन समदाई। नव कल्यान सिंह नर राई।
निज निय जिय वयलीन विचारा। सजनत गदा
यर कीन निवारा। इहन वदन भामिनि जग
जोग। करहिं नृप अपजस सव लोग। स्वराव
कर उरवाद वखाना। बुध जन करहिं न सेव

रा॰
ऊ॰ भ॰

तिकाना। हानि लाभ अप जस जस सारा। सेतजन
न जग तृन्य विचारा। जो अपमान भयो नहिं मो
ही। सोकस क्षोभ उपज उर तोही। करि प्रबोध
भ्रम नास निवारा। दारुण कोपदीन सब टारा॰
एस प्रकार कछु दिवस विहायो। तब साधु वै
सव एक आयो। लिये संग निज सिष समुदाई॰

बैठो सेन चरन सिरनाई। कथा अलाप होनज

व लागा। लागयो श्रवण करन अनुरागा। नव

स प्रेम श्रोतन समुदाये। आश्रु पात हरष ह

ग छाये। तास हगन कछु छयो नवारी। भ

यो लजित नव हृदय उदारी। कहत आज

महि बनो जोग। निरदय भनहिं वदन स

रा॰ वलोग। नव मारव हरण नहि लीना। हमर

कृ॰ भ॰ दिवस गवन जव कीना। तवहे न चल्यो ताम

हग वारी। लीन गोप हरण नवडारी। जान्यो

मर्म सेत एक एहा। कीन गवन जव वैसव।

तेहा। पाछे भन्यो सव नमन नामा। लागे कर

न सेत सव हामा। देखि गदाधर वदन उचारे।

इहन संत कछु उचित हमारे। ग्रैहिं भक्त इह।
संशय नाहीं। प्रेम रुची जोके मन माहीं। प्र
मिलावन सहृश हम तोरे। प्रेम प्रवाह चले
दृग मोरे। दोहरा। प्रम विचारि उर संत जन
करहु न कछु परिहास। भये मोन वैस्नव स
कल सुनत प्रबोधन नास। रागनी ककुभ।

रा०
ऊ० भ०

९

ताल तीन चौपाई। अवसर एक गदाधर आला।
पूवस्या चौर प्रथम निसि काला। तेबित नस
न भार नव बांधे। डरमति लगो उनावन को
धे। सोन उठहिं सठ कीन प्रनामा। देखे तब
हिं गदाधर नामा। कहिस करहु मज्जन उपा।
कारा। धरहु सीस मोरे इह भारा। ऐहु कवन

पुनि पूछन लागा। बोले भट्ट भक्त अनुरागा॰
तुमहिं कवन पूछन अस हेतू। निज कारन
करि लेहु सचेतू। श्रवननि आय आय आन
चित मोही। पकरहिं चोर जानि अस तोही।
तब निज हृदय चोर अस लाग्यो। इह तो विद
न गदाधर देख्यो। अस जिय जानि ततनय

रा॰
रू॰ भ॰

न सोई। लागेो चरन भक्ति रत होई। तबतें चौर
न करम प्रबीना। प्रथम जानि मानस तजि दीना।
सेवत रूप्त भक्ति रत होई। करि प्रणाम गवं॰
न्यो निज सोई। देखहु संतन शील सुभाऊ। नि
ज अपराध जानि निय नाऊ। सब विधी तमा
कीन तजि दीना। इच्छा लोभ कबु हृदय न॰

१०

कीना। तब एक समय यन कजन काहू। आ
वा सदन भक्त वरनाहू। सिष मन नाम वच
न अस काहा। तब हंसु कवन काज रत राहा।
भन्यो जाय गुरु मन सिष नाहू। महाराज आ
वायनि काहू। एकन्त दीनयाल अस मोरे। गु
रु वर कवन काज रत तोरे। नहि अब सर हवि

रा॰
उ॰ भ॰

भवन सुहावन। देत रहे उपलेपन पावन। बो
ले जछ तव जानि न लेवा। जिन कर दास कर
दास करहि तिन सेवा। तो लो आय गये थनिता
ही। देत रहे लेपन गुरु जाही॥ दोहरा॥ यती
देखे प्रस प्रीति हृढ दैखित कीन प्रणाम। बो
ले बहुरि सम भक्ति जुत बदन बचन अभिरा

म॥ रागनी ककुभ ताल सूल। चौपाई। तुम न
देहु उपलेपन स्वामी। मैं देहुं तव जन अनुगा
मी। भक्त रूप तव बदन उचारे। जन उपलेप
न देन तुमारे। इह मम दास भावना चाहु। हो
हिं न सिद्ध धन कमे साहु। धनि प्रभ स्वनतच
रन सिर नावा। बार बार भाव प्रसनति गावा।

रा॰
ऊ॰भ॰

12

करि सिव काई हरष मन लीना। होत विदा यग

वन मुनि कीना। भक्त गदाधर आनंद छाये। दि

न दिन भक्ति प्रीति सरसाये। दोहरा। तजत मा

न अपमान सब बिगत कपट जग नेह। लागे

निव सन भवन निज कुम्भ चरन रत नेह॥ रा

गनी ककुभ नाल तीन। दोहा। कल्ह कल्ह का

यष्यकुल पश्चम देस सुहाय। जंगल प्रांत तिनक
र विदित करहुं प्रकट अवगाय। चौपाई। कुल्ह
नेह रत संतन सेवा। कृस्नदेव पर भक्ति अमेवा।
हल्ह निकट मांस मद पाना। वेस्या रमन प्रीति
हचि माना। अवसर एक कुल्ह हरषावा। तजत
मदन द्वारावति आवा। हल्हूं नास प्रीति बस

रा॰
कृ॰भ॰

13

नाहीं। आवा सोपि द्वारिका माहीं। नवरण छोड

भवन घर रागा। कल्ह प्रसन्न बदन बड भागा।

निज कृत पद गुन भक्ति सहायन। लागेउ मधु

र मधुर स्वर गायन। कल्ह के नाम देखि हरषाये।

लागेउ सोपि बदन कछु गाये। पैनो कर निज कृ

त नरनाहा। इहिते सकुचित हृदय लजाना। त

ब तोपर भगवान सुहाये। भये प्रसन्न भक्त सुख
दाये। प्रेरत पवन केत कल ताला। परी माल
प्रभु भवन प्रकासा। ते प्रणाम करि बदन उचा
रा। जेष्ठ बंधु प्रभु भक्त तुमारा। मैं प्रभ भक्त कत
ण निधि राहा। मोहि सम दीन हेतु प्रभु काहा
कल्ह देखि निज हृदय लजाना। भयो मोर प्र

रा॰
उ॰ भे॰

15

पमान महाना। दीनी माल उरनरत काहीं। मेघ
व मरहु बूडि जल माहीं। अस कहि हृदय घोर
रिस छावा। आकुल नीर वार निथ आवा। मरण
हेत प्रवस्यो जल जाई। जानु पर्यंत वार गति॰
पाई॥ दोहरा॥ जिमि जिमि आगल जात तिमि
नजत जाउ जल नाहिं। जान्यो मरण न होत॰

तब भयो दुखित मन माहिं॥ रागनी ककुभमा

ल तीन चौपाई। दशा देखि अस नाथ खरारी

आय ललित बैलव बपुधारी। कर पकरत त

हि लीन निकारो। करि करि बदन प्रबोध

निवारो। पुनि लागे तहि पाक करावन। रा

खि पत्र सन मख मन भावन। देखत काङ्क

रा॰
ऊ॰ भ॰

15

ल्ह कहे भावा। इह जन पवकवन हितरावा। बो
ल्यो बदन कल्ह हित होई। ग्रस कहि उल्यो क्रु
पत उर सोई। इहां न करन पाक ग्रव मारे। तब
भगवान भक्त चित चोरे। वैसव भेष वसेष बना
ये। ताम्ह बदन ग्रस वचन सुलाये। सुन हो क्रु॰
ल्ह कल्ह सन कान्हु। करन न हेष उचित तोहि॰

गाहू। इह पूरब सुत भूप सुजाना। मोर भजन।
हित बिपुन महाना। गवन्यो भक्त सदन निज
त्यागी। मोर सुमरण करत बडभागी। कानन-
तहं प्राण तजि दीना। रह्यो मोर इह भक्त प्र
बीना। इहि सन करहु द्वेष जने भोरे। कुल्हास
नत जुगल कर जोरे। कीन प्रणाम चरन भग

रा॰
क॰मं॰

16

बाना। तन्यो द्वेष मानस हरषाना। श्रीमखदीन॰
नाथ पुनि काहा। ग्रबनहि कवन कल्ह रुविरा
हा। नाहि न केत नाथ ग्रभिलाषा। न्हदङ्ग नगल
नयन ग्रम भाषा। जब नहि कीनन मीलन लो
चन। दीन पुनाय सदन उव मोचन। नबक्क
ल्हा द्वारा वति जाना। मानस मनङ्ग स्वपनव

न माना। पुनि निज कल्ह बेपुबर काहीं। लग्यो
स्मरण करण मन माहीं। आवा सोऊ दिवस।
कछु पाये। देखत हृगन कुल्ह हरषाये। इस
प्रकार कछु दिवस बिहाने। कुल्हा हृदय भ
कि सरसाने। दोहरा। तजत ग्रस्थ निज सदन सु
म बेपुवर्ग परिवार। गवन्यो कानन भजन हि

रा॰
क॰ भ॰

15
17

तह्कम चरन उरधार ॥ रागनी ककुभ ताल तीन।
दोहरा। बीकानेर प्रसिद्ध थल मारवाड वरदेस।
जडपति भक्ति प्रबीन तहो पृथिवी राज नरेस ॥
चौपाई। नाम मदन हरि मूरति सोहा। दिव्य वि
चित्र भक्त मन मोहा। निसि दिन नाम्ह बचन म
न काया। पूजत प्रेम भक्ति जुत राया। जब कहुं

वहिर सदन तजि जाई । करहिं नाम मानसि सि
व काई । अवसर एक तजत निज ग्वाला । कीन्हो
वहिर गवन महि पाला । तहां करत पूजन ज
व लागा । तहां करत पूजन जब लागा । सेज्ञ
त भक्ति भूपवउ भागा । तब नहि होत वडउ व
सोई । कृपा सिंधु कर म्हानि जोई । भवना दिक

रा॰
कृ॰ भ॰

16

सेन्यासन बाहू। पठोन ध्यान भूपबत याहू। तब
मानस चिंतन करि राये। सुत पें पाछिल दूत प
ठाये। तास बिलोकि जनक निज पाती। लिख्यो
उतर ततलण इहि भांती। मैनू तन हरि भवन
सुहावन। दीनानाथ लाग्यो बिरचावन। प्रभु॰
मूरति राख्यो घल आना। जब इह बनहिं भवन

भगवाना। इहो ल्याय नवकरहु स्थापन। तज
हु नाथ चिंता उर आपन। इतन दीन पत्र जब
आई। भयो प्रसन्न बाचि नरराई। करि कारज।
मानस हरषावा। संजुत इतन भूप गृह आ
वा। समय एक दिल्ली पत पासा। कीन अति।
ता भूपति तासा। मै मथुरा तजहु निज थाना

रा·
ऊ· भ·

19

सो अवसर जबहीं नियराना। तब दलीस भूपति
सौं काहा। रिपु कहे नीति रुचिर करलाई। ले
हु भूप जग सुजस सबडाई। दोहरा। राऊ सुन
त उद विगत चित सुमरत श्री जडनंद। भनत
भयो उण भत मम अवसर प्राण निकंद॥ रा
गनी ककुभ ताल तीन चौपाई॥ अस विचारि

नर नाथ सुजाना। सुमरि कृपाल निज कीन प

याना। तहो जाय सेवत बल राई। विप्र कहे

विजय करत कर ल्याई। पठवा इंद्रप्रस्थ पति

काहीं। देखा श्राप सपन निसि माहीं। जड

पति भवन वेग नर राई। उदय ग्रहण मथुरा

तब आई। नहि घलदेख प्राण निज त्यागे।

रा·
ऊ· भ·

18
20

देखि स्वपन अस छिन पति जागे । मथुरा आय प्रा
ण परि हरयो । निज परलोक सिद्ध नृप करयो
तब तहि मरण माह सुनि लीना । पश्चा ताप वि
पुल उर कीना । बारं बार माह उत साहू । कीन·
विविध अस कृति नर नाहू । भूप पुत्र एक भक्त
महाना । तहि अण हृदय रुचिर अस ठाना ॥

जे द्वारावति दरसन जाहीं। देत द्रव्य मादिर ति
न काहीं। सब कर करहिं रुचिर अस सेवा। भू
प पुत्र जत भक्ति अभेवा। अव सर एक मलेछ म
हाना। नरक नरक सब लोक बखाना। द्वा
रावति लूटन हित आवा। प्रथम अनल पुरदी
न लगावा। भागे लोग ग्राम बस सारे। आहि दे

भ॰
रा॰ऊ॰

219

वचनसबदन उचारे। तव भगवान कीन निज॰
दाया। अकस्मात मुनि श्रवण पठाया। तास्रव
एक सबदीन बठारी। करि कौतुक सब शोनि
दिवारी। भई लपन सेना भगवाना। मर्मं अलो
किक काहुन जाना। निज निज हृदय सकल
बिसमाये। इह भ्रदभुत कछु जानि नजाये॥

दोहरा। तब बोले ग्रस बृहजन कृपा सिंधु भग

वान। हमपै करुणा कीन निज राखि लीन ज

न जान। हरण विपति उर दीन हित को प्रभु

सम संसार। विकट क्रूर ग्रस काल जहिं लीने

सकल उवार॥ दोहरा। ग्रब ग्रद्भुत मन हरन

कल कवहू कथन कछु ग्रान। भक्ति महात्म

म॰

रा॰ ऊ॰

72

दमन भ्रम कुल वर ण रति दान॥ रागनी ऊऊ॰

भ ताल तीन चौपाई॥ मान सिंह नृप प्रगु ज

ग्र हाया। माधो सिंह नाम जग(ग)या। ताम पतनि

रतना वलि नामा। प्रग्र गन्य पति ब्रता लिलामा

प्रेम सिंह तोकर सुत ताहू। समर प्रचंड वीरव्र

त याहू। भक्त जितेंद्र धरम रत तेहू। प्रतिष्ठि मे

नसेवन कवि जेहू। जननि नाम रतना बलि जो
ई। अब मर एक भवन निज सोई। निमि अव।
मर मिश्रा पौछानी। सावी चतर चापत पद्मपा
नी। हे हरि हे प्रभु नंद किशोरा। राधा कमलमु
ख चित चोरा। हे जदु पति केशव भगवाना।
हे नंद नंदन कृपा निधाना। मंद मंद अस ब

म॰
रा॰ऊ॰

23

दन अलानी। ते दासी वापत पग पानी। रानी ह
नत तास अस बानी। बोली उर प्रमोद छवि मानी
इह नव बदन नवन अस राहा। भामनि मेदमेद
धुनि काहा। कछु आनंद अहेतक देखो। जनु वि
लपत कथन नव लेखो। अभय मन्य निज बद
न उचारी। मोसों करहु प्रकट अब प्यारी। ते अ

स बचन सुनत अनुरागी। बोली बदन बिनय र

स पागी। स्वामिनि तुमहे कबन भ्रम सूझा॥

जो मोहि बार बार सब बूझा। कातु मोरे मान-

सहित लोगू। रहहु मगन आपन सुख भोगू

तब महिषी पुनि पुनि हरषाई। पूछन लगी

प्रीति सरसाई। मोसों हेतु कथन तब प्यारी॥

म॰
रा॰ऊ॰

करहु वेग निज सकुच निवारी। दासी देखि कवि

र कहि विरानी। बोली वदन मधुर मृदुवानी। सा

धु वदन उपदेस सुहावन। मै पायो महि बीज

ग पावन। रापाकृस्न मंत्र सुखदाई। हावन स्थि

दय डरन डरनाई। रटहु निरंतर मै मृदुवानी।

ध्यान हेत कछु नाहिन रानी। हरषी नाम वच॰

२५

न सुनि रागी। अब तें तुम सुनहौ बडभागी। क
रहु न भ्रम मोरी सिवकाई। तुव तो निरत भ
क्ति जउ राई। अस भाषत महिषी मन भावा।
लीन ललित उपदेस सुहावा। रायाक्रम मे
च उरधारी। भई सुभक्ति निरत न्रपनारी। दोहा
सेवन अतिथि संत जन कथा कीरतन गान।

म·

रा·कं·

25

सादिर परम सुकरम कल करहिं रुचि रुचि मान
गगनी ककुभ ताल तीन चौपाई। बहुरि हृदय
अभिलाषत होई। श्रीमन मदन महन प्रभु जाई
सो तिन कर दरसन मन हाहू। कब देखहुं भ
रि नैनन चाहू। अस उर गुणत शील मणिभावा
नाम कूल स्वाति विरचावा। अति विचित्र कछु

बरनिन जाई। नव सिव ललित मनो हरताई
तास दिवस निसि पूजन सेवा। लगी करन जु
न भक्ति अभेवा। कुल रूप उर संतन जानी। पु
जत काय करम मन बानी। समय एक कोउ
संत महाना। आवा सदन तास करि ध्याना।
सो हरि भवन भक्ति अनुरागा। गावन नृत्यक

म॰
रा॰ऊ॰
२६

रनकल लागा। मेन विरक्त भक्त भगवाना। जिन्हि
केचिन म्हन एक समाना। ताम्ह देखि मन्हिंखी
हरषाई। आई भक्ति प्रीति सरसाई। यद्यपि की
न निवारण दासी। तद्यपि मिटी न प्रेम पयास
सी। होत निमगण भक्ति नियवारी। विरचिण
क पावन ब्रत धारी। मेनन कहे रति दीन जि

माये। पुनि तोबोल ललित मुखवाये। करि प्र
णाम पुनि भवन सिधारी। देखि सचिव नहिं
सक्यो सहारी। नृप कहें लिख्यो पत्र अभिमा
नी। यवन नाथ रतनावलि रानी। वेस प्रयाद
सकल निज खोई। साधु समाज लाज गत हो
ई। करत नृत्य गायन मन सेकी। वरजित सि

भ॰
रा॰ ३॰

25
27

टहिंन निडर कलंकी। भूप देषि दारुण रिस॥
कीना। प्रेमसिंह सुत नाम प्रबीना। तौ लौ आ
य गये न्रप पासा। ते पत्रिक दीन्यो कर नासा॥
बहुरि रोष सब वचन उचारे। अधमति आप
जस दीन हमारे। बाचित प्रेमसिंह करि गवना
आवा वेग हरषि निज भवना। जननी कहुं पत्र

क कल लेखी। बीच कथं करि हरष बसेषी। दो

हा। मातु भक्ति लव देखि प्रम जो उपज्यो माव

मोहि॥ हरष विवस भासियल कर लेखि सक

ह्रे किमि तोहि॥ रागनी ककुभ ताल ३ चौपई

धन्य धन्य जननी बडभागी। जहि प्रम कुमल च

रन लवलागी। इह हरि भक्ति सरब सुखकारी

भ०
रा०ऊ०
26

सो तुव लीन मातु उर धारी। तो ते तुव समान।
कौ नाहीं। सुकृति रूप ग्यान जग माहीं। सुनतु
जननि कबहूं कि नर राई। तोपैं करहिं कोप
अधिकाई। तो न तजहु आपन ब्रत माता। अ
स प्रकार जब पत्र पठावा। मातु बांचि नयन
न उर लावा। भाषत आज धन्य इह माई॥ः

नहि अस पुत्र भक्त नउराई। अस कहि पठोए
त्र सुत काहीं। तात धन्य तव संसृति माहीं। अ
स उपदेस नाम मोहि दीना। गुरु सम जनन्हे कृ
तार्थ कीना। मैन तजहु सुत निज ब्रत धारा।
करहिं जनक किना कोप हमारा। हमहिं हो
व कल्यान सुहाई। अस उरै रहि सुमति नित

भ॰
रा॰ऊ॰

29

छाई। राधा कल प्रमाद कुमारी। होहिं तात ज
नगकीरति भारी। प्रेमसिंह हरि भक्त सुहावा।
बाचत जननि पत्र हरषावा। अति प्रमोद मे
गल कल ताहू। लाग्यो करन भवन उत्साहू॰
फैल गई पुर कर चहुं ओरा। धुनी महोन निसा
नन घोरा। राऊ सुनत प्रेम शबद अपारा। पु

दय चकित अस बचन उचारा। इह अकोड मे
गल कहि गेहा। देखहु जाय वेग भृत एहा॥
तब भृत प्रेम सिंह पैं आये। पूछत कवन हेतु
सुत गये। महारानि मुहि पत्र पठावा। सो उ
त साहकी नमन भावा। भृतन आन बरन्यो क
छु आई। महारानि जनम्यो सुत राई। प्रेमसिंह

भ०

रा०उ

~~28~~
30

उतसव नवकीना। मंगल मोद प्रमोद नवीना।
न्टपहिं सुनत दारुण रिस छैना। पठई तासव
यन हित सैना। प्रेमसिंह देषत परि यीना। उ
ध्यान भयो करण रणवीरा। नव प्रम सचिवक
हो समुझाई। पूरव कह्यो नाक जनि नर राई।
घव श्रोणन मन मारजन देहो। चुध्या कलेक।

लोक जनि लेहो। बोल्यो नव नरेश अस बानी।
इह कस मरहिं सचिव सब रानी॥ दोहरा॥ त
ब बोल्यो सब सचिव अस इहन अगम कछु।
नाथ॥ शार्दूल इहि भवन सब छेरित देहु प
नाथ॥ सो भावन मृगराज हुत करहिं आणह
न पहु॥ बिनु अजास नरनाथ उर मिटहिं सक

भ॰
रा॰ अ॰

३१
31

ल संदेहु॥ भूप सुनत आनंद जुत लाग्यो बदनब

खान॥ सुगम इह करहु नव यतन सुजान प्रधा

न॥ रागनी ककुभ ताल तीन। चौपाई। नव भूप

बोलि सचिव समुदाई। महिषी भवन प्रबल सु

गराई। दीन्यो प्रेरि बचन हित तासा। लगे बिलो

कन आगु तमासा। रही कमल पूजन रत रागी॥ पा

वन भक्ति प्रेम रस पागी। तब मृगराज भयंकर

भारा। मेद मेद तहि भवन सिधारा। आवत देषि

हृगन निज रानी। बोली बदन अलौकिक बानी

अहो धन्य मम भाग्य सुहाये। अस जहि भवर आ

ज अम आये। पूजा पकरण लेत उठि याई। मन

मरव राषि प्रबल मृगराई। अस निश्चय मानस

भ॰
रा॰ ऊ॰

32

निजधारा। जास स्मरन कशपशु जग मारा। जन प्र
ल्हाद कीन रखवारी। सोउ देव इह भक्त उवारी॥
आये महि तारन प्रभु चीने। प्रसम कहि चरन प
खारन कीने। केसर चंदन तिलक सुहावा। कं
ठ प्रसून माल पहिरावा। धूप दीप ज्युत आरति
कीने। मोदक मेज प्रचुर हित दीने। भोजन।

भक्ति भाव सब साथे। करि प्रणाम पद दीन जि
माथे। सिंह मृहण कीन्हो मनमाना। साधु सब
ल जनु दीन समाना। अनुचर सचिव भूप जन
देखी। भये चकित सब हृदय वसेखी। तिल
क माल भूषन मनभाये। आय बहिर जब होत
विदाये। तब गरजि सावन घन निंदा। प्रथम।

भ·
रा·ऊ·
33

सचिव संजुत भूपत खेदा। किये विदलन दसनन

त्व मारे। त्राहि त्राहि सब लोक पुकारे॥ दोहरा॥

उरपत भागयो भूपतब महिषी सरण विचार।

ग्रावा ने सूत धरणि तल धरत सीस बहुबार॥

रागनी ककुभ ताल तीन चौपाई। तबदासी स्र

सगिरा बखानी। करहिं प्रणाम भूप तहिंरानी·

महिषी स्हनन नास्यप्रसकहयौ। दासी नमहिं

कवन भ्रम भयसै। मै किंकरि चरननन अनुगा

मी। मोरे भूपकृमलवन स्वामी। श्रीराधा जादव

वर चरना। नावत नेम्व सीस पति यरना। भू

पसहनन महिषी अस वानी। मनवच करमभ

क्ति हृढजानी। विविय अनेसिबदन नरराये

म॰
रा॰कृ॰
34

आय भवन निज होत विदाये। एक दिवस हर

षत जग भाई। मायो सिंहमान हरि राई॥का

लिंदी सवना जल रूढे। चले जात जगनाथ अरू

ढे। अकस्मात आवत अतिनीरा। बूडन लगीत

रनि गतधीरा। तब कै बरत उचारण लागे। अ

ब जाहि जाहि तब भक्त सभागे। हृदय सुमरणि

करहु तिन काहीं। ननर नाव बूड़न सब चाहीं।
मानसिंह अस सुनत प्रबीना। रतनावलि सु
मणि उर कीना। अर्थ मगण नव नाव सुहाई।
लगी तरत मरना नठ जाई। मान सिंह आवा
निज गेहू। लखो करन अस ताति तिय तेहू ।।
दोहरा। यथा उचित यत ग्राम नहि हेत संतसि

भ·
रा·क·
35

व काई ॥ दीन्यो साहिब भक्तिजुत मानसिंह नररा
इ ॥ अमरत नावलि आजलौं विदत सकल संसा
र ॥ कीन्यो सिद्ध प्रलोक जहि कुसलचरन उर·
धार ॥ ❖ ॥ इति ककुभ रागिनी स्वरमागरात
भक्तिमाल परिच्छेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥

अथ रागनी ककुभ सूरसागर परि छेद माहा रा

गकल्यान सूरदासकृत रागनी ककुभ ताल

कहा भयो जो घर के लरका चोरी माषन षायो

इति अस्थाई। अहो जसोदा कहत वासत हैं य

है कृष्ण को जायो। इति अन्तरा। बालक अजो।

सू॰
रा॰ कृ॰
३४

अजानन जानै केतक दही लुटायौ। तेरो कहा
षायौ गोरस को गोकुल अंतन पायौ। लैलै ल
कुट त्रास दिषावत अबलनि पास बंधायौ। स
दन करत दोऊ नैन रषे है मनो कमल बन छा
यौ। पौढि रहे धरनी परतिकैं विलष बदनस

२

र छायौ। सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि हँसिक

र कंठ लगायौ॥ राग नट। रागनी ऊजुम ता॰

ऊवर जल लोचन भरि भरि लेत। इतिप्रस्याई

सुंदर बदन बिलोक जसोदा कत रिस करति

प्रचेत। इतिप्रेतरा। ओर उदर ते उसहदामरी

सू॰ रा॰ ऊ॰

डारि कठन वर बेन। कहियों मोहि करन कौं

आवे मिस पर नास मपन। सावे माषन अरु

आस्हू के कन निरष नैन छवि देन। मनु ससि

स्रवत सुधा कौं अंबुद उड गन अवलि समेत॰

नाजानो यह कौन पन्थ तैं ब्रज लालनि केत।

२

तन मन धन नौ छावर कीजै हरस्यामके हेत

राग केदार । रागनी ककुभ ताल हरि के

बदन तनयों चाहि ॥ इति अस्थाई ॥ तनकद

कारन जसोदोइ तो कहा रिसाहि । इत्येतरा ।

लकुटके डरडरत ऐसें सजल शोभित डोल ।

36

सू. नीर तीर जलद मनो अलि ओसकन कृत लोल

रा.कै. वात बस निस जानि जैसे प्रात पंकज कोस। न

3B

मित मुष इस अधर सोहै सकुच में कछु रोस।

कित गोरस दान जाकौं करत है अपमान। सू

र ऐसी बदन ऊपर वारी ये तन प्रान॥ राग।

अथरागिनी टोडी रामायण परिछेद माह ताल

चौपाई सुरन सुमंगल अवसर जाना। वरषहिं सुमन

वजाइ निसाना शिवब्रह्मादिक विवुधवरूथा। चढ़ि

विमानन्ह नानायूथा। प्रेमपुलकतन हृदयउछाह्

चले विलोकन राम विवाहू। देषिजनक पुरसुर अनु

रागे। निजनिज लोक सबहि लघुलागे। चितवहिं

बा॰टी॰

चकित विलोकि विताना। रचना सकल अलौकिक ना

ना। नगर नारि नर रूप निधाना। सुघर सुधर्म सुशी

ल सुजाना। तिनहिं देखि सब सुर सुरनारी। भयेन

खत जनु विधु उजियारी। विधिहि भयउ आश्चर्य्य वि

शेषी। निज करणी कछु कतहुं न देखी। दोहरा। शि

व समुझाये देव सब। जनि आश्चर्य्य भुलाहु। हृदय

९८

बिचारहु धीर धरि। सिय रघुबीर बिबाहु। चौपाइ। जिन

कर नाम लेत जग माहीं। सकल अमंगल मूल नसाहीं।

करतल होहिं पदारथ चारी। तेइ सिय राम कहेउ कामा

री। इहि बिधि संभु सुरन समुझावा। पुनि आगे बर ब

सह चलावा। देवन देखे दसरथ जाता। महामोद मन

पुलकित गाता। साधु समाज संग महिदेवा। जनु तनु

यरे करहिं सखसेवा। सोहत साथ सुभग ब्रतचारी। ज
नु अपवर्ग सकल तनु धारी। मरकत कनक बरण बर
जोरी। देखि सुरन भै प्रीति न थोरी। पुनि रामहि बिलो
कि हिय हरषे। नृपहि सराहि सुमन तिन्ह बरषे। दोहा
राम रूप नख सिख सुभग। बारहि बार निहारि। पुलक
गात लोचन सजल। उमा समेत पुरारि। चौपाइ। केकि

कंठ दुति श्यामल अंगा। तडित विनिंदक बसन सुरंगा।
विविध विभूषण विविधि बनाये। मंगल मय सब भांति
सुहाये। शरद विमल विधु वदन सुहावन। नयन नव
ल राजीव लजावन। सकल अलौकिक सुंदरताई। क
हि न जाइ मनही मन भाई। बंधु मनोहर सोहहि संगा।
जात नचावत चपल तुरंगा। राजकुंवर वर वाजि नचाव

रा॰टी॰

3

हिं वंशप्रशंस कविरद सुनावहिं। जेहि तुरंग पर राम विराजे। गति विलोकि खगनायक लाजे। कहि न जाइ सब भांति सुहावा। बाजि भेष जनु काम बनावा। छंद। जनु बाजि भेष बनाइ मनसिज राम हित अति सोहहीं आपने बय बल रूप गुण गति सकल भुवन विमोहहीं। जगमगत जीन जड़ाव जोति सुमोति मानिक ते

हिलगे। किंकिणि ललामल गामल लित विलोकि

सुर नर मुनिटगे। दोहा। प्रभुमन सहिलय लीनमन।

चलत बाजि छविपाव। भूषण उडु गण नडित घन।

जनुवर वरहि नचाव। चौपाई। जेहिवर बाजिराम असवारा। तेहि शारद कहि नवर नैपारा। शंकर राम रूप

अनुरागे। नयन पंचदश अति प्रियलागे। हरि हित

सहित राम जब जोहे। रमा समेत रमापति मोहे। निरषि
राम छवि विधि हरषाने। आठै नयन जानि पछिताने।
सुरसेन पउर बहुत उछाहू। विधि ते डेवढ लोचन ला
हू। रामहिं चितव सुरेश सुजाना। गौतम श्रापपर महि
त माना। देव सकल सुरपति हिसिहाहीं। आजु पुरंदर सम
को उनाहीं। मुदित देवगण रामहिं देषी। न्टपसमाज

दुंदुभी वाजहिंघनी। वरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जय

जय जय रघुकुल मनी। इहि भांति जानि बरात आव

त वाजने बहु वाजहीं। रानी सुआसिनि वोलि परिछन

हेत मंगल साजहीं। दोहा। सजि आरती अनेक विधि।

मंगल सकल सवारि। चली मुदित परिछन करन।

रा०दो० गजगामिनि वरनारि। चौपाइ। बिधुवदनी मृगसावलोचनि। सब निज तन छबि रति मद मोचनि पहिरे बरन बरन बरचीरा। सकल विभूषण सजें शरीरा। सकल सुमंगल अंग वनाये। करहिं गान कलकंठ लजाये। कंकण किंकिणि नूपुर वाजहिं। चाल विलोकि काम गज लाजहिं। बाजहिं बाजन विविध प्रकारा। नभ अरु नगर

सुमंगल चारा। शाची शारदा रमा भवानी। जे सुरतिय शु

चि। सहज सयानी। कपट नारि वर भेष वनाई। मिलि स

कल रनि वासहि आई। करहिं गान कल मंगल बानी।

हरष विवस सब काहु न जानी। छंद। को जान केहि आ

नंद वस सब ब्रह्म वर परिछन चली। कल गान मधुर

निशान वरष हिं सुमन सुर शोभा भली। आनंद कंद

रा॰वा॰

6

विलोकि हुलसहु सकलहि यह षिंत भई। अंभोज अंब
क अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छई। दोहा। जोसु
ख भासिय मातुमन। देखि राम वरभेष। सोनस क
हि कल्प शत। सहस शारदा शेष। चौपाइ। नयन नी
र हटि मंगल जानी। परिछन करहिं मुदित मनरा
नी। वेद विहित अरु कुल व्यवहारू। कीन्ह भली

विधि सब परिचारू। पंचशब्द धुनि मंगल गाना। प
ट पावडे परहिं विधिनाना। करि आरती अर्घ तिन्ह दी
न्हा। रामगवन मंडप तब कीन्हा। दशरथ सहित समा
ज विराजे। विभव विलोकि लोकपति राजे। समय
समय सुरवरषहिं फूला। शांति पढहिं महिसुर अनु
कूला। नभ अरु नगर कोलाहल होई। आपन पर का।

रा॰टी॰ छू सकै न कोई। इहि विधि राम मंडप हि आये। अर्घ देइ आसन बैठाये। छंद। बैठारि आसन आरती करि निरखि वर सुख पावहीं। मणि वसन भूषण भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं। ब्रह्मादि सुरवर विप्र भेष बनाइ कौ त क देखहीं। अवलोकि रवि कुल कमल रवि छवि सुफ ल जीवन लेखहीं। दोहा। नाऊ वारी भाट नट। राम नि

७

ह्याव रपाइ। मुदित अशीस हिं नाइ सिर। हर्षन हृदय स

माइ। चौपाइ। मिले जनक दशरथ अतिप्रीती करि वैदि

क लौकिक सवरीती। मिलत महादोउ राज विराजे। उप

मा खोजि खोजि क विलाजे। लहीन कतहुं हारि हियमा

नी। समधी देखि देव अनुरागे। सुमन वरषि यश गावन

लागे। जग विरंचि उपजा वाजव ते। देखि सुने व्याह वहु

रा॰दो॰

8

नवते। सकल भांति सम साज समाजू। सम समधी दे
खि हम आजू। देवगिरा सुनि सुंदर सांची। प्रीति अलौ
कि दुहु दिशि मांची। देत पावडे अर्घ्य सुहाये। सादर
जनक मंडप हिं ल्याये। छंद। मंडप विलोकि विचित्र
रचनारु चिरता मुनि मन हरे। निजपाणि जनक सुजा
न सबकहु आनि सिंहासन धरे। कुलइष्ट सरि सब

सिष पूजे विनय करि आशिष लहही। कौशिक कहि पूजन

परम प्रीति कीरी तितो न परै कही। दोहा। वामदेव आदि

क ऋषिय। पूजे मुदित महीश। दिये दिव्य आसन स

वहि। सब मन लही अशीश। चौपाई। बहुरि कीन्ह को

शलपति पूजा। जानि ईश सम भाव न दूजा। कीन्हजोरि

कर विनय बड़ाई। कहि निज भाग्य विभव बहुताई।

रा॰टी॰ पूजे भूपति सकल बराती। समधी सम सादर सब भाँ।
ती। आसन उचित दये सब काहू। कहौं कहा मुख एक
उछाहू। सकल बरात जनक सनमानी। दान मान वि
नती बरबानी। विधि हरि हर दिशपति दिनराऊ। जे जा
नहिं रघुबीर प्रभाऊ। कपट विप्र बर भेष बनाये। कौतु
क देखहिं अति सचुपाये। पूजे जनक देव सम जाने। द

रा
५

ऐसहु आसन विन पहिचाने। छंद। पहिचान को केहि जा

न सवहि अपान सुधि भोरी भई। आनंद कंद विलोकि दू

लहू उभय दिशि आनंदमई। सुर लखे राम सुजान पूजे

मानसिक आसन दये। अवलोकि सरल सुभाव प्रभुको

विबुध मन प्रमुदित भई। दोहा। रामचंद्र मुख चंदछवि

लोचन चारु चकोर। करत पान सादर सकल। प्रेम प्रमो

रा॰टी॰

10

हनघोर। चौपाइ। समय विलोक वसिष्ट बुलाये। सादर
सतानंद सुनि आये। वेगि कुंवरि अब आन हुजाई। चले
मुदित मुनि आय सुपाई। रानी सुनि उपरोहित वानी।
प्रमुदित सखिन समेत सयानी। विप्र वधू कुल वृद्ध बुला
ई। करि कुल रीति सुमंगल गाई। नारि भेष जे सुर वर
वामा। सकल सुभाय सुंदरी श्यामा। तिनहि देखि सुख

पांवहि नारी। विनपहि चानि प्रानतें प्यारी। वारवार स

न मान हिरानी। उमा रमा शारद समजानी। सीय सवा

रि समाज वनाई। मुदित मंडपहिं चली लिवाई। छंद

चलि ल्याइ सीतहि सखी सादर सजि सुमंगल भामि

नी। नव सप्त साजे सुंदरी सव मत्त कुंजर गामिनी। कल

गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं कामकोकिल लाजही

रा॰टी॰

मंजीर नूपुर कलित कंकण ताल गति वर वाजहीं। दो
हा। सोहति वनिता वृंदमह। सहज सुहावनि सीय।
छवि ललनागण मध्य जनु सुखमा तियकमनीय।
चौपाइ। सिय सुंदर तावरनि नजाई। लघुमति वहुत
मनो हरताई। आवति देखि वरातिन सीता। रूपराशि
सवभांति पुनीता। सवहिं मनहिं मनकीन्ह प्रणामा।

देखि राम भये पूरणकामा। हरषे दशरथ सुतन समेता।
कहि न जाइ उर आनंद जेता। सुर प्रणाम करि वर्षहिं फू
ला। मुनि असीस धुनि मंगल मूला। गान निसान कुला
हल भारी। प्रेम प्रमोद नगर नरनारी। इहि विधि सीय
मंडपहि आई। प्रमुदित शांति पढै मुनिराई। तेहि अव
सर करि विधि व्यवहारा। दुहुं कुल गुरु सब कीन्ह आचा

रा॰टी॰ न्ह खंडा आचार करि गुरु गौरि गणपति मुदित विप्र

पुजावहीं। सुर प्रकट पूजा लेहिं देहि असीस सुति

सुख पावहीं। मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय

मुनि मनमें चहैं। भरे कनक कोंपर कलश सोस व

लये परि चार करहैं कुलरीति प्रीति समेत रवि कहि

देत सब सादर किये। इहि भांति देव पुजाइ सीतहि

१२

सुभग सिंहा सन दये। सियराम अवलोकन परस्पर प्रेमकाञ्ज नलखपरै। मन बुद्धि वरवाणी अगोचर प्रगट कवि कैसे करै। दोहा। होम समय तन धरि अनल। अतिहित आञ्ज तिलेहिं। विप्र भेष धरि वेदसब कहि विवाह विधि देहिं। चौपाई। सीय मातु किमि जाइ वखानी। जनक पीठ मह्रिषी जगजानी। सुयश सु

रा॰टी॰ छोन छाव सुंदर नाई। सब समेटि विधि रची वनाई। स

मय जानि मुनि वरन बुलाई। सुनत सु आशिनि सादर ल्याई। जनक वाम दिशि सोह सुयना। हिमि गिरि

संग वनी जनु मयना। कनक कलश मणि को परछूरे।

छवि सुगंध मंगल जल पूरे। निज कर मुदित राउ अरु

रानी। धरे राम के आगें आनी। पढहिं वेद मुनि मंगल

13

बानी। गगन सुमन झरि अव सरजानी। वर बिलोकि
दंपति अनुरागे। पाय पुनीत पखारन लागे। छंद।
लागे पखारन पाय पंकज प्रेम तन पुलकावली नभ
न गर गान निसान जय धुनि उमगि जनु चहुं दिसि च
ली जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव बिराजहीं।
जे सकृत सुमरत विमलता मन सकल कलिमल

रा·टी·

भाजनहीं। जेपद सख्रुनि वनि तालही गनि वहीजो पानक मई। मकरंद जिनको शंभु सिर शुचिता अवधि सुर वर नई। करि मधुप मुनि मन योगि जन जे सेइ अभिमत गतिलहैं। तेपद पखारत भाग्य भाजन जनक जयज य सवकहैं। वरकुँ वरि करतल जोरि शाखो चारदो उ ऊल गुरुकरैं। भयो पाणि ग्रहण विलोकि विधि सु

र मनुज मुनि आनंद भरैं। सुखमूल दूलह देखि दंपति

पुलक तनु हुलस्यो हियो। करि लोक वेद विधान कन्या

दान नृप भूषण दियो। हिम वंत जिमि गिरिजा महे

श हिं हरि हिं श्री सागर दई। तिमि जनक रामहि सिय

समर्पी विश्व कल कीरति नई। कैसो करैं विनय विदेह

कियो विदेह मूरति सावरी। करि होम विधि वत गांठि

रा॰टी॰

15

जोरी होन लागी भांवरी। दोहा। जयधुनि वंदीवेद धुनि मंगल गान निसान। सुनि हरषहिं वरषहिं विबुधासु रतरु सुमन सुजान। चौपाइ। कुंवरि कुंवर कल भांवरि देहीं। नयन लाभ सव सादर लेहीं। जाइन वरणि मनो हरजोरी। जो उपमा कछु कहिय सो थोरी। राम सीय सुंदर परिछाहीं। जगमगाहिं मणि खंभन माहीं।

मनहुं मदन रति धरि वहुरूपा। देखहिं राम विवाह अ
नूपा। दरस लाल सास कुचन थोरी। प्रगट तदु रत
वहोरि वहोरी। भयेम गन सव देखन हारे। जनक स
मान अपान विसारे। प्रमुदित मुनिन भांवरी फेरी। नेग
सहित सवरी तिनिवेरी। राम सीय सिरसिंदुर देही।
शोभा कहि नजाति विधिकेही। अरुण पराग जलज

रा॰टी॰ 16

भविनीके। प्राशिहि भूवि अहिलोभ अमीके। बङ्कविव सिष्ट दीन्ह अनुशासन। वरडल हिनि वैठेइक आसन। छंद। वैठेवरासन रामजानकि मुदित मन दशरथभये। ननपुलकि पुनिपुनि देखि अपने सुकृत सुरतरु फलनये। भरिभुवन रहा उछाह राम विवाहभा सवहीकहा। केहिभांति वरणि सिनरानर सनाएक

८९

यह मंगलमहा। तवजनक पाइ वसिष्ट आयसु ब्या
ह साजसवारिके। मांडवी श्रुति कीर्ति उर्मिला कुंवरि
लई हंकारिके। कुशकेतु कन्या प्रथम जो गुणशील
सुखशोभामयी। सवरीति प्रीतिसमेत करिसो ब्याहि
नृपभरत हिदयी। जानकी लघु भगिनि जो सुंदरशिरो
मणिजानिके। सो जनक दीन्ही ब्याहि लखनहि सक

रा॰दो॰

17

ल विधि सनमानिकै। जेहिनाम श्रुतिकीरति सुलोचनि
सुमुखि सबगुण आगरी। सोदई रिपुसूदनहि भूपति
रूपशील उजागरी। अनुरूप वरदुलहिनि परस्पर ल-
खि सकुचि हिय हरषहीं। सब मुदित सुंदरता सराह
हिं सुमन सुरगण वरषहीं। सुंदरी सुंदर वरण सब
एक मंडपराजहीं। जनुजीव उरचारिउ अवस्था विभु

न सहित विराजहीं। दोहा। मुदित अवधपति सकल
सुत। वधुन समेत निहारि। जनुपाये महिपाल मणि
क्रियन सहित फलचारि। चौपाइ। जसरघुवीर व्याह
विधि वरणी। सकल कुंवर व्याहे तहि करणी। कहि
न जाइ कछु दाइज भूरी। रहा कनक मणि मंडप पूरी।
कंवल वसन विचित्र पटोरे। भांति भांति वहु मोलन।

घोरे। गजरथ तुरगदास अरुदासी। धेनु अलंकृत
कामदुहासी। वस्तु अनेक करियकिमिलेखा। कहि
न जाइ जानहिं जिनदेखा। लोकपाल अवलोकि सि
हाने। लीन्ह अवधपति सव सुखमाने। दीन्हयाच
कन्हजोजेहि भावा। उवरासो जनवासहि आवा। तव
करजोरि जनक मृदुवानी। बोलेसव वरात सनमानी।

छंद। सनमानि सकल वरात आदर दान विनय वडा
इकै। प्रमुदित महामुनि वृंदवंदे पूजि प्रेम लडाइकै।
सिरनाइ देवमनाइ सव सन कहत कर संपुट किये।
सुरसाधु चाहत भाव सिंधुकि तोष जल अंजलि दिये।
करजोरि जनक वहोरि वंधु समेत कोशलरायसों।
वोले मनोहर वयन सानि सनेह शील सुभावसों।

रा॰टी॰

19

संबंध राजन रावरेहमबडे अबसब बिधिभये। यहु
राज साज समेत सेवक जानिबे बिनु गथ लये। येदा
रकापरि चारिका करि पालबी करुणामयी। अपरा
ध क्षमिबो बोलि पठये बहुत हौं ढीठोदयी। पुनिभा
नु कुल भूषण सकल सन मान निधि समधी किये।
कहिजाततनहि बिनती परस्पर प्रेमपरि पूरणादिये।

हेदारिका गण हमन वरषहिंश उजन वासहिचले।
डेडुभीजय युनिवेद युनिन मनगार कौतहूलभले।
तवसखिन मंगल गानकरति मुनीश आय सुपाइकै।
डुलह डुलहि निसहित मंदरीचली अह वरल्याइकै।
दोहा। सुनिसुनि रामहि चितवसि थम ऊचति मन सऊ
वयन। हरति मनो हर मीनछवि। प्रेमपियासेनयन।

रा॰ टो॰ चौपाई। श्यामशरीर सुभाय सुहावन। शोभाकोटि मनोजलजावन। पावक युतपद कमलसुहाये। मुनिमन मधुपर हरतजंह छाये। पीतपुनीत मनोहर धोती। हरत बाल रविदामिनिजोती। कलकिंकिणि कटिसूत्र मनोहर। बाहुविशाल विभूषण सुंदर। पीतजनेउ महाछविदेई। करमुद्रिका चोरि चितलेई।

सोहतव्याह साज सबसाजे। उरआयत उर भूषणराजे।
पीतउपरनाकांखासोती। दुऊंआचरणलगे मणिमो
ती। नयन कमल कुंडल काना। वदन सकल सौंदर्य
निधाना। सुंदरि भृकुटि मनोहरनासा। भालतिलक
रुचिरतवि रनिवासा। सोहतमौर मनोहरमाथे। मंगा
लमय मुकुटा मणिगांथे। छंद। गांथेमहा मणिमोर

रा॰टी॰

मंगल अंगसव चितचोरहीं। पुरनारि सुरसुंदरीं वि।
लोकहिं निरखि छवि तृण तोरहीं। मणिवसन भूषण
वारि आरति करहिं मंगल गावहीं। सुरसुमन वरषि।
हिं सूत मागध वंदि सुयश सुनावहीं। कोहवरहिं आ
ने कुंअर कुंअरि सुआसिनिन्ह सुखपाइकैं। अतिप्रीति
लौकिक रीति लागीं करण मंगल गाइकैं। लहकौरि

21

गौरि शिखावरामहिसी यसन सारद कहैं। रनिवास
हास विलास रसव सजनमको फलस वलहैं। निजपा
णि मणिमहु देखि प्रति मूरति सरूप निधानकी। चा
लति न भुजवल्ली विलोकति विरह वसभइ जानकी
कौतुक विनोद प्रमोद प्रेमन जाइक हिजान हिंअली
वरकुंअरि सुंदर सकल सखिन लवाइ जनवास हि

रा॰टी॰

२२

चली। तेहि समय सनिय असीसजहं तहं नगरनभ

आननमह्ना। चिरजियहु जोरी चारुचारि उमुदित म

न सबही कहा। योगीन्द्र सिद्ध मनीश देव बिलोकि

प्रभु दुंदु भिहनी। चले हरषि वर विप्र सनिज निज

लोक जयजय जयभनी। दोहा। सहित वधूटिन कुं

वरसव। तवआये पितुपास। शोभामंगल मोदभरि

उमगी अवध जनवास। चौपाई। पुनिजैंवनार भयउ ब
हु भांती। पठये जनक बुलाइ बराती। परत पावडे ब
सन अनूपा। सुतन समेत गवन किय भूपा। सादर स
बके पाव पखारे। यथाजोग पीढन बैठारे। धोये जन
क अवध पति चरणा। शील सनेह जाइ नहि बरणा।
बहुरि राम पदपंकज धोये। जे हर हृदय कमल महँ

रा॰टी॰ 23

गाये। तीनौ भाइ राम समजानी। धोये चरण जनक नि
जपानी। आसन उचित सबहिं न्टपदीन्हे। बोलि सूप
कारी सबलीन्हे। सादर लगे परन पनवारे। कनक
खील मणि परण सवारे। दोहा। सूपोदन सुरभी स
रपि। सुंदर स्वादु पुनीत। छणमहु सबके परुसिगे।
चतुर सुआर विनीत। चौपाइ। पंचकोर करिजे वन

लागे। गारि गान सुनि अति अनुरागे। भांति अनेक

परे पकवाना। सुधासरि सनहिं जाहिं बखाना। पर

सन लगे सुआर सुजाना। व्यंजन विविध नामको जा

ना। चारि भांति भोजन विधिगाई। एकएक विधि ब

रणिनजाई। छरस रुचिर व्यंजन बहुजाती। एकएक

रस अगणित भांती। जेंवत देहिं मधुर धुनिगारी।

रा॰दो॰ लैलैनाम पुरुष अरुनारी। समव सुहावन गादि वि

राजा। हसत राउ सुनि सहित समाजा। इहि विधि स

वही भोजन कीन्हा। आदर सहित आच मन लीन्हा।

दोहा। देइ पान पूजे जनक। दशरथ सहित समाज

जनवासे गवने मुदित। सकल भूप सिरताज। चौपा

इ। नितिनृ नव मंगल पुर माहीं। निमिष सरिस दि

न यामिनि जाहीं। बड़े भोर भूपति मणि जागे। याचक
गुण गण गावन लागे। देखि कुंवर वर वधुन समेता।
किमि कहि जात मोद मन जेता। प्रात क्रिया करि गे
गुरु पाहीं। महा प्रमोद प्रेम मन माहीं। करि प्रणाम
पूजा करि जोरी। बोले गिरा अमिय जनु बोरी। तुम्हरी
कृपा सुनिय मुनिराजा। भयउ आजु मम पूरण काजा।

रा॰टी॰

अवसर विप्र बुलाइ गुसांईं। देहु अथेव सव भांति वनाईं। मुनि गुरु कहि महिपाल बडाई। पुनि पठये मुनि बृंद बुलाई। दोहा। वामदेव अरु देव ऋषि। वालमीक जावालि। आये मुनि वर निकर तव। कौशिकादि तप शालि। चौपाई। दंडप्रणाम सवहि नृप कीन्हा। पुजिसप्रेम वरासन दीन्हा। चारि लक्ष वरथेनु मगा

25

ई। कामसुरभि समशील सुहाई। सब विधि सकल

अलंकृत कीन्ही। मुदित महा ऋषिन कहदीन्ही। कर

त विनय बहु विधि नरनाहू। लहेउ आज्ञ जगजी वन

लाहू। पाइ असी समहीश अनंदा। लिये बोलि पुनि

याचक वृंदा। कनक वसन मणि - घय यस्यंदन देये

ह्रिकि हुचि रवि कुलनंदन। चले पढ़त गावत गुणगा

रा·टी·

घा। जयजय जयदिन कर कुलनाथा। इहिविधि रा
म विवाह उछाहू। शकैन वरणि सहस मुख जाहू।
दोहा। वारवार कौशिक चरण। सीसनाइ कह राउ।
यह सब सुख मुनि राजतव कृपाकटाक्ष प्रभाउ।
चौपाई। जनक सनेह शील करतूती। नृपसब भांति
सराह विभूती। दिनउठि विदा अवध पतिमागा।

28

ए
२८

गावहिं सहित जनक अनुरागा। निनिनू तन आद

र अधिकाई। दिनप्रति सहस भांति पहुनाई। निति

नव नगर अनंद उछाहू। दशरथ गवन सोहाइन

काहू। बहुत दिवस बीते इहिभाती। जनु सनेह र।

जुबंधे वराती। कौशिक सता नंद तवजाई। कही

विदेह नृपहि समुझाई। अव दशरथ कहू आय स

गा॰टी॰ देहू। यद्यपि छाडिन सकउ सनेहू। भलेहि नाथ क
हि सचिव बुलाये। कहि जय जीव सीस तिन नाये।
दोहा। अवध नाथ चाहत चलन। भीतर करहु जना
व। भये प्रेम वस सचिव सुनि। विप्र सभा सद राव।
चौपाइ। पुरबासी सुनि चली बराता। बूझत विकल प
रस्पर बाता। सत्य गवन सुनि सब बिलखाने। मनहु

साकसर सिज सझवाने। जहनह आवतव सेवराती।
तहनह सीथ वला वहुभाती। विविध भातिमेवा प
कवाना। भोजन साजन जाइ वखाना। भरिभरि वस
अपार कहारा। पठये जनक अनेक सुआरा। तुरंगला
खरथ सह सपचीसा। सकल सवारे नख अरु सीसा।
मत्तसह सदश सिंधुर साजे। जिनहि देखि दिशकुंज

रा॰टी॰

28

रलाजे। कनक वसन मणिभरि भरिजाना। महि।
षी धेनुवस्तु विधिनाना। दोहा। दाइज अमित नस
कियकहि। दीन्हविदेह वहोरि जोअवलोकत लोक
पति। लोकसंपदाथोरि। चौपाइ। सवसमाज इहि
भांति वनाई। जनक अवधपुरदीन्ह पठाई। चलि
हिव रात सुनत सवरानी। विकल मीनगण ज

न लखु पानी। पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं। देइ
असीस सिखावन देहीं। होइ रहहु संतत पियहि पि
यारी। चिर अहिवात असीस हमारी। सास ससर गुर
सेवा करहू। पतिरु खलखि आयसु अनुसरहू।
अति सनेह बस सखीं सयानी। नारिधर्म सिखवहिं
मृदुबानी। आदर सकल कुअरि समुझाईं। रानिन

रा॰दो॰ बारबार उरलाई। बहुरि बहुरि भेंटहि महतारी। कहहिं

२१

बिरंचि बिरची कत नारी। दोहा। तेहि अवसर भाइन सहि

त। रामभानु कुलकेतु। चले जनक मंदिर मुदित।

बिदा करा वन हेतु। चौपाई। चारि उभाइ सुभाय सु

भाये। नगर नारि नर देखन धाये। कोउ कह चलन

चहत हहिं आजु। कीन्ह विदेह बिदा कर साजु। लेहु

रा
२५

नयन भरि रूप निहारी। प्रियपाहुने भूप सुतचारी।
कोजानै केहि सुकृत सयानी। नयन अतिथि कीन्हे
विधिआनी। मरण शील जिमि पावपि ऊषा। सुरत
रुलहै जन्म कर भूषा। पावनारकी हरिपद जैसें।
इनकर दरसन हम कहूं तैसें। निरखि राम शोभा
उर धरहू। निजमणि फणि मूरति मणिकरहू

इहिविधि सबहि नयन फलदेता। गये ऊवर सब
राजनिकेता। दोहा। रूपसिंधु सब बंधु लखि। हरष
षि उठीर निवासु। करहिं निछावरि आरती। महामु
दित मनसासु। चौपाई। देखिराम छबि अति अनुरा
गी। प्रेमविवस पुनिपुनि पदलागी। रहीन लाज प्री
ति उरछाई। सहज सनेह बरनिकिमिजाई। भाइन

सहित उवटि अन्हवाये। छरस असन अतिहेत जें

वाये। बोले हमह अव सरजानी। शील सनेह सकु

च मयबानी। राउ अवध पुर चहत सिधाये। विदाहो

न हित हमहि पठाये। मातमुदित मन आय सदेह

बालक जानि करबति तनेहू। सुनत वचन विल

उर निवांसू। बोलिन सकहि प्रेमवस सासू। हृदय।

रा॰टी॰ लगाइ कुंवरि सव लीन्ही। पतिन सौंपि विनती अ

ति कीन्ही। छंद्। करिविनय सिय रामहि समर्पी जो

रिकर पुनिपुनि कहैं। वलिजाउ तात सुजान तुम

कहु विदित गति सवकी अहै। परिवार पुरजन मो

हि राजहि प्राणप्रिय सिय जानिवी। तुलसी सुशील

सनेहु लखि निज किंकरी करि मानिवी। सोरठा। तुम

रा
३१

परि सरण काम। जानशिरी मणिभाय पिय। जनस
ण माहकराम। दोष दलन करुणा यनन। चौपाइ
असकहि रही चरण गहरानी। प्रेमपंकज नुगि रा
समानी। सुनि सनेह सानी वरवानी। बहुविधि राम
सासु सनमानी। रामविदा मागत करजोरी। कीन्हप्र
णाम वहोरि वहोरी। पाइ असीस वहुरि शिरनाई।

रा॰टी॰

32

भाइन सहित चलेरघुराई। मंजु मधुर मूरति उरआनी। भई सनेह शिथिल सबरानी। पुनिधीरज धरि कुंवरि हकारी। बारबार भेटहिं महतारी। पहुंचा वहिं फिरि मिलहिं बहोरी। बढी परस्पर प्रीतिन थोरी। बढी पुनिपुनि मिलति सखिन बिलगाई। बाल वत्स जनुधेनु लवाई। दोहा। प्रेमबिबस नरनारि

सब। सखिन सहित रनिवास। मानहुं कीन्ह विदेहपु

र। करुणा विरह निवास। चौपाइ। सुक शारिका जान

कीजि आये। कनक पिंजर नराखि पटाये। व्याकुल क

हहिं कहा वैदेही। सुनिधीरजपरि हरैनकेही। भये

विकल खग म्रग इहि भांती। मनुज दशा कैसें कहिजा

ती। बंधुसमेत जनक तबआये। प्रेमउमगि लोचन

रा॰टी॰ जलछाये। सीयविलोकि थीरताभागी। रहेकहाँ व
33
तपर मविरागी। लीन्हराउ उरलाइ जानकी। मिटीम
हा मर्याद ज्ञानकी। समझावन सवसवि वसयाने।
कीन्हविचार अनवसर जाने। वारहि वार सुता उरला
ई। सजिसुंदर पालकी मगाई। दोहा। प्रेमविवस परि
वार सव। जानि सुलगन नरेश। कुंवरि चढाई पालकी
रा
33

सुमिरे सिधि गणेश।चौपाइ।बहुविधि भूपसुता स
मुझाई।नारिधर्म कुलरीति सिखाई।दासीदास दि
ये बहुतेरे।सुचिसेवक जे प्रिय सियकेरे।सीयचल
त व्याकुल पुरवासी।होहिशगुण शुभ मंगलरासी
भूसुर सचिव समेत समाजा।संगचले पहुंचावनराजा।
रथगज बाजिव रातिनसाजे।सुनिगह गहे बाजनेबा

रा॰दो॰

34

जो दशरथ विप्र बोलि सब लीन्हे। दानमान परिपूर

ण कीन्हे। चरण सरोज धूरि धरि सीसा। मुदित मही

पति पाइ असीसा। सुमिरि गजानन कीन्ह पयाना।

मंगल मूल शकुन भये नाना। दोहा। सुर प्रसून बर

षहिं हरषि करहिं अपसरा गान। चले अवधपति अ

वधपुर। मुदित बजाइ निसान। चौपाई। न्रपकरि बि

नय महाजन फिरे। सादर सकल मागने टेरे। भूषण

वसन वाजि गज दीन्हे। प्रेमपोषि ठाढे सव कीन्हे।

वारवार विदावलि भाषी। फिरे सकल रामहिं उररा

षी। वहुरि वहुरि कोशलपति कहहीं। जनक प्रेम

वस फिरा नचहहीं। पुनि कह भूपति वचन सुहाये।

फिरिय महीप दूरि वडिआये। राउ वहोरि उतरि।

रा॰टी॰ 35

भयेठाढे। प्रेमप्रबाह विलोचन वाटे। तबविदेह वोले करजोरी। वचन सनेह सुधाजनु वोरी। करौंक वन विधि विनय सुहाई। महाराज मोहि दीन वड़ाई। दोहा। कोशल पति समधी सजन। सनमाने सव भाति। विलन परस्पर विनयअति। प्रीतिन हृदय समाति। चौपाई। मुनिमंडली जनक सिरनावा। आ

शिरवाद सवहि मनपावा। सादर मुनि भेटे जामाता।
रूपशील गुणनिधि सवभ्राता। जोरिपंक रुहपा।
णि सोहाये। बोले वचन प्रेम जनुजाये। रामकरौं
केहिभाति प्रशंसा। मुनिमहेश मनमानस हंसा।
करहिं योगयोगीजे हिलागी। कोहमोह ममता मद
त्यागी। व्यापक ब्रह्म अलख अविनाशी। चिदानंद

रा॰टो॰ निर्गुण गुणराशी। मनसमेत जेहि जान न बानी। त

रकि न सकहिं सकल अनुमानी। महिमा निगम नेे

ति करि कहहीं। जो तिहुं काल एक रस रहहीं। दोहा

नयन विषय मोकहु भयउ। सो समस्त सुखमूल।

सबहि लाभ भजग जीव कहु। भये ईश अनुकूल।

चौपाई। सबहि भाँति मोहि दीन बडाई। निजजन

स
३६

36

ज्ञानि लीन्ह अपनाई। होइ सहस दश शारद शेषा

करहि कल्प कोटिक भरि लेषा। मोर भाग्य राउर

गुणगाथा। कहि न सिराहिं सुनिय रघुनाथा। मैं क

छु कहौं एक बल मोरें। तुमरीझ सनेह सुठि थोरें।

बारबार मागौं करजोरें। मनपरिहरै चरण जनि भो

रे। सुनि वर वचन प्रेम जनुपोषे। पूरण काम राम

रा॰ टी॰ परितोषे। कविवर विनय सहर सनमाने। पितुकौ॥

शाक वसिष्ठ समजाने। विनती वज्ञरि भरत सनकी

न्ही। मिलिस प्रेम पुनि आशिष दीन्ही। दोहा। मिले

ल षनरिपु सूदनहिं। दीन्ह अशीस महीश। भये प

रस्पर प्रेमवस। फिरिफिरि नावहिं सीस। चौपाइ।

वारवार करि विनय वडाई। रघुपति चले संग सव

37

९
३२

भाई। जनक गहे कौशिक पद जाई। चरणरेणु सि

र नयन न लाई। सुन मुनीश सब दर्शन तोरे। अ

गमन कछु प्रतीति मन मोरे। जो सब सुयश लो।

क पति चहहीं। करत मनोरथ सकुचत अहहीं।

सो सब सुयश सुलभ मोहि स्वामी। सब विधि तव

दर्शन अनुगामी। कीन्ह विनय पुनि पुनि सिर नाई।

रा॰टी॰

38

फिरे मही पति आशिष पाई। चलीव रा नननि सान वजाई। मुदित छोट वड सव समुदाई। रामहि निरखि ग्राम नरनारी। पाइन यन फल होइ सुखारी। दोहा। वीच वीच वर वास करि। मगलो गन सु खिदेन। अवध समीप पुनीत दिन। पहुंची आय जनेत। चौपाई। हनेनि सान पणव वह्वाजे। भेरि

शंख धुनि हय गय गाजे। झांझ मृदंग डिमडिमी ब

हाई। सहस राग बाजै सहनाई। पुरजन आवत अ

क निवराता। मुदित सकल पुलकावलि गाता। नि

जनिज सुंदर सदन संवारे। हाटवाट चौहट पुरद्वा

रे। गली सकल अरगजा सिंचाई। जहतह चौके चा

रु पुराई। बना बजारन जात बखाना। तोरण केतु

रा·टो·

39

पता कविताना। सुफल पुंग फल कदलि रसाला। रो
पेव कुल कदंवतमाला। लगे सुभगत रुपरसतधर
णी। मणिमय आल वाल कल करणी। दोहा। विवि
ध भांति मंगल कलश। गृहे गृहे रचे सवारि। सुरब्र
ह्मादि सिहाहिं सव। रघुवर पुरी निहारि। चौपाई। भू
प भवनतेहि अवसर सोहा। रचना देखि मदन मन

रा
३५

अथ राग ईराष रामायणपरिछेदमाह । ताला३ ।

चौपाई ।। ऊपरो हिन जेंवनार बनाई ।। छरस चा
रि विधि जस झनि गाई ।। माया मयनेइ कीन्ह वसो
ई ।। भोजन बहुभांति सकेन कोई ।। विविध मृगन
कर आमिष राधा ।। तेहि महं विप्र मांस खलसाधा
भोजन कहं सब विप्र बुलाये ।। पद पखारि साद

रा० ह०
रामा०

२ बैठाये। परुसन लागु जबहिं महिपाला। भई अका

श बाणी तेहि काला॥ विप्र बृंद उठि उठि गृह जा

हू॥ है बडि हानि अन्न जनि खाहू। भयउ रसोई

भूसुर मांसू। सब द्विज उठे मानि विश्वासू। भूप वि

कल मति मोह भुलानी। भावी बस न आव मुख

बानी॥ दोहा॥ बोले विप्र सकोप तब नहिं कछु की

न्ह विचार। जाइ निशाचर होहु नृप मूढ सहित परि

वार॥ चौपई॥ छत्रि बंधनें विप्र बोलाई॥ घालै लिये स

हित समुदाई॥ ईश्वर राखा धर्म हमारा। जेहसि तैं समे

त परि वारा॥ संवत मध्य नाश तव होऊ। जल दाता

न रहिहि कुल कोऊ॥ नृप सुनि श्राप विकल अति त्रा

गं. सा। भइ बहोरि वर गिरा अकासा॥ विप्रहु श्राप विचारि

रा.स न दीन्हा। नहि अपराध भूप कछु कीन्हा॥ चकित विप्र

सब सुनि नभवानी। भूप गये जहं भोजन खानी॥ तहं

न अशन नहि विप्र सुआरा। फिरेउ राउ मन सोच अपारा॥

सब प्रसंग महि सुरन सुनाई। त्रसित परेउ अवनी अकु

लाई ॥ दोहा ॥ भूपति भावी मिटै नहि यदपि न दूषण तो
र ॥ किये अन्यथा होइ नहि विप्र श्राप अति घोर ॥ चौपई
अस कहि सब महि देव सिधाये । समाचार पुर लोग
न पाये ॥ सोच हिं दूषण दैव हिं देही ॥ विरचत हंस का
क किये जेही ॥ उप रोहि तहि भवन पहुंचाई । असुर

रा. तापस महिं खबरि जनाई ॥ तेहिं खेल जहं तहं पठि पटा

रा.स ये। सजि सजि सैन भूप सब आये ॥ घेरिन्ह नगर निसा

न बजाई। विविध भांति नित होत लराई ॥ जूके सकल सुभट कै करणी। बंधु समेत परे नृप धरणी ॥ सत्य केतु कुल कोउ नहिं बांचा। विप्र श्राप किमि होइ असांचा

२१२

रिपुहिं जीति न्रप नगर बसाई। निज निज पुर गय जय जे

स पाई॥ दोहा॥ भरद्वाज सुनु जाहि जब होत विधाता

वाम। धूरि मेरु समजनक यम ताहि ब्यालस महाम॥

चौपई॥ काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा। भयउ निशाच

र सहित समाजा॥ दश शिर ताहिवीस भुज दंडा। रा

रा॰ वण नाम बीर बरि बंडा ॥ भूप अनुज अरि मर्दन नामा

रा॰स भयेउ सो कुंभकर्ण बलधामा ॥ सचिव जो रहा धर्म रु

चि जासू । भयेउ विमात्र बंधु लघु नासू ॥ नाम विभीषण

जेहि जग जाना । विस्नु भक्त विज्ञान निधाना ॥ रहे जेम

त सेवक न्रप केरे । भये निशाचर घोर घनेरे ॥ काम रू

प खल जिनिस अनेका । कुटिल भयंकर विगत विवे
का ॥ कृपा रहित हिंसक सब पापी । बरनिन जाइ वि
स्व परितापी ॥ दोहा ॥ उपजे यदपि पुलस्त्य कुल पाव
न अमल अनूप । तदपि महीसुर स्रापवस भये सकल
अघ रूप ॥ चौपाई ॥ कीन्ह विविध तप तीनौ भाई । परम

रा॰ उग्र सो बरणिन जाई ॥ गयउ निकट तप देखि विधाना

रा॰स मांगहु बर प्रसन्न मैं ताता ॥ करि विनती पद गहि दश

सीसा । बोलेउ बचन सुनहु जगदीसा ॥ हम काहू कर

म रहिन मारे । बानर मनुज जाति दुइ वारे ॥ एवमस्तु तुम

बड़ तप कीन्हा । मैं ब्रह्मा मिलि तेहि बर दीन्हा ॥ पुनि प्र

२१४

भ कुंभकरण पहं गयऊ। तेहि विलोकि मन विस्मय भ
यऊ॥ जौं यहु खल नित करव अहारा होइहि सबउ जा
रि संसारा॥ शारद प्रेरि तासु मन फेरी। मांगेसि नींद मा
स षट केरी॥ दोहा॥ गयेउ विभीषण पास तव कहा पु
त्र वर मांगु। तेहि मांगेउ भगवंतपद कमल अमल अनु

रा॰ रा॰स

रागा ॥ चौपई ॥ तिनहिं देइ वर ब्रह्म सिधाये। हर्षितते अप
ने गृह आये ॥ मय तनुजा मंदोदरि नामा। परम सुंदरी
नारिललामा ॥ सोइ मय दीन्ह रावणहिं आनी। भइ सो
यातु यान पति रानी ॥ हर्षित भयउ नारि भलि पाई। पु
नि दोउ बंधु विवाहेसि जाई ॥ गिरि त्रिकूट इक सिंधुम

6

२१५

फारी। विधि निर्मित दुर्गम अति भारी॥ सोइ मय दान
व बहुरि संवारा। कनक रचित मणि भवन अपारा॥
भोगवती जस अहि कुल वासा। अमरा वति जस श
क निवासा॥ तिनतें अधिक रम्य अति बंका। जगवि
ख्यात नाम तेहि लंका॥ दोहा॥ खाई सिंधु अगंभीर

रा
रा.स

अति चारिउ दिशि फिर आव। कनक कोट मणि खचित
दृढ वरणिन जाइ वनाव॥ हरि प्रेरित तेहि कल्पजोइ
जातु धान पति होय॥ सूर प्रतापी अतुल बल दल समे
तवस सोय॥ चौपई॥ रहे तहां निशचर भट भारे। तेस
ब सुरन समर संहारे॥ अवतहं रहहिं शक्रके प्रेरे।

रलक कोटि यक्ष पति केरे ॥ दश मुख एक बहुं खबरि सु
सपाई । सेन साज गट घेरे सि जाई ॥ देखि विकट भट
बड़ि कट काई । यक्षजीव लै गये पराई ॥ फिरि सबन
गर दशानन देखा । गयउ सोच सुख भयउ विशेषा ॥
सुंदर सहज अगम अनुमानी । कीन्ह तहां रावण रज

रा॰स

धानी ॥ जेहि जस योग बांटि गृह दीन्हे । सुखी सकल र
जनी चर कीन्हे ॥ एक बार कुवेर पहं धावा । पुष्पक या
न जीति लै आवा ॥ दोहा ॥ कौतुक कही कैलाश पुनि लीन्हे
सि जाइ उठाइ । मनहुं तौलि भट बाहु बल चला अधिक
सुख पाइ ॥ चौपई ॥ सुख संपति सुत सेन सहाई । जयप

२८५

ताप बल बुद्धि बड़ाई ॥ निति नूतन सब बाढ़त जाई । जिमि
प्रति लाभ लोभ अधिकाई ॥ अति बल कुंभकर्ण अस
भ्राता । जेहि कहं नहिं प्रति भट जग जाता ॥ करि मद
पान सोव षट मासा । जागत होइ तिहं पुर त्रासा ॥ जौं दि
न प्रति अहार करु सोई । विस्ववेगि सब चौपट होई ॥

रा० समर धीर नहिं जाइ बखाना। तेहि सम अधिक न कोउ ब
रा०स० ल बाना॥ वारि दनाद जेठ सुत तासू। भट महं प्रथम
लीक जग जासू॥ जेहि न होइ रण सन्मुख कोई। सुर
पुर नितहिं परावन होई॥ दोहा॥ कुमुख अकंपन कु
लि शारद धूमकेतु अति काय। एक एक जग जीति

सक ऐसे सुभट निकाय ॥ चौपई ॥ काम रूप जानहिं

सब माया । सपनेहुं जिनके धर्म न दाया ॥ दश मुख

बैठ सभा इक बारा । देखि अमित आपन परिवारा ॥

सुतसमूह जन परि जन नाती । गनै को पार निशा

चरजाती ॥ सेन विलोकि सहज अभि मानी । बोला व

रा.

रा.स.

चन क्रोध मद मानी ॥ सुनहु सकल रजनी चर यूथा।
हमरे वैरी विबुधव रूथा॥ ते सन्मुख नहिं करहिं
लराई। देखि सबल रिपु जाहिं पराई॥ तिन कर म
रण एक विधि होई। कहौं बुझाइ सुनहु अब सोई॥
द्विज भोजन मख होम सराधा। सब कर जाइ कर

10

२१५ | २

रू नम बाधा ॥ दोहा ॥ व्यथा छीण बल हीन सव सह
जहिं मिलिह हित्राइ । नवमारि हो कि छाडि हैं भली
भांति अपनाइ ॥ चौपई ॥ नारद मिले कहेसि मनका
ई । देव मनी देव रू दिषाई ॥ सनन अनच नारद नहि
भावा । सेन दीपने हितर नप ठावा ॥ सागर उतर पा

रा॰

रा॰स

र सोइ गयऊ। नारि हृंदतहं देषत भयऊ॥ तिन्ह सन
कहेसि पतिन्ह पति जाहू। कहेउ किआ वानिसि च
रनाहू॥ जब मैं तिन्हे जीति संग्रामा। लेजैहौं तुम क
हुं निज धामा॥ सुनत वचन इक जरठरिसानी। धा
इ चरन गहि गगन उडानी॥ गइ अंबर धरि धरि रुक

फेरा। उतरिसि सिंधु मध्य अति जोरा ॥ दोहा ॥ गयउ उप

ताल अचेत होइ मरैन विप्र प्रसाद। सावधान उठि ग

जि गत हियेन हरष विषाद ॥ चौपई ॥ जीतेसि नागन

गरु सबकारी। गयेउ बहुरि बलि लोक सुरारी ॥ वा

मन रावन आवत जाना। कियैंदेव ऋषि मन अभि मा

रां
रा॰स

ना ॥ खेलन रहे नगरसि सनाना । निज बलनिन्ह हि दीन भगवाना ॥ धाइ धरा निन्ह घरलै आये । नगर नारि नर देखन धाये ॥ बीस बाहु दश कंधर जाई । विधियह गछनि कहां के आई ॥ रावेन्हि बांधि वजावहि नारी । नाम नकहै सहै बहु मारी ॥ वामन दीष बहुत सकुचा

ना। तबकुड़ाइ दिये कृपा निधाना॥ चला तुरंत निशाच

र नाहों। लाज शंक कछु नहि मन माहीं॥ तव तुरंत पं

पा घर आवा। बालि नाम कपि पति जेहि ठावा॥ दीख

जाइ कस सर वर सोभा। जेहि मन महा मुनिन करछो

भा॥ तहां कपीस करै निज थाना। आदरसैं संध्यामन

रा॰ मना ॥ जाइ डाफ नहं भारज नीशा। होकेउ बाहु गार्जि

रा॰स भुज वीसा ॥ तव कपीस चिन बाम सुकाई। ध्यानके ग्र

व मरसथ विसराई ॥ तव रावन बोला करि क्रोधा। वक

ध्यानी कपि सठ खनबोधा ॥ दोहा ॥ मोहिजीते विन स

मर सब नकहू ध्यान कपीस। अंजलि देइन पावहू सप

13

२२२

य करौं अजईस ॥ चौपई ॥ नव बाली बोला भ्रमकाई । बल

नस्नार ऐसे है भाई ॥ रवि अंजलि मैं दैंउस प्रीती । वाप्लहे

हु जायेहु मोहिजीती ॥ नव निशिचर पति उठे उदिसाई ।

टेकपि युद्ध छाडु कद राई ॥ नवहि कीस पति मनहि

विचारा । द्विजवर दीन्हम रहि नहि मारा ॥ हेदश कंप

रा॰ जाइ विचारी। अजय तस्मारि छत्र भुजभारी॥ बहु भांती

रा॰स॰ वाली समझावा। कौनिहुं भांति वोध नहिं आवा॥ नव

14 ल कोप होइ उठा कपीसा। धरि तेहि कांध चो पद शसी

ला॥ अंजलि दीन्ह रवि हिमन वानी। अंचपउ सम उद

धि कै पानी॥ जपेउ आदि शंकर मन जानी। तेहिषन

२२३

संध्या वंदिसि रानी ॥ दोहा ॥ आवहिं चरहिं कपीस नव

काष रहेउ लंकेश । एहि विधि बीते मास षट पावा ब

हुत कलेश ॥ चौपई ॥ बहु प्रसीदक षरीम हुं जामा ।

अतिकु वासना कहु भैयामा ॥ कलम लाइ दिस दशान

न्हकाठा । कच कर जीव मनहु भ्रम छाटा ॥ एक दिव

रा॰ स रवि अंजलि साजा। काषते नि सरि सह्रा धुनि गाजा।
रा॰स सोञति धरि कपीसने बाथा। लैआपउ अंगदके साथा॥
15 बीस भुजा दश सीस स धारा। चरन उठौ पुनि धरि उर
मारा॥ धरि समेटि ऊमरि सम कीन्हा। बांधिसेज परि
शोभा दीन्हा॥ अंगद खिललात सिर मारा। किल कि
२२८

लाइ किल कै किल कारा ॥ दोहा ॥ नारा चीन्हेउ रावन

हि तेहि धन दीन्ह छोराइ । जाइ नरन लंकेश गृह बहु

रि परहि कपि राइ ॥ चौपई ॥ पुनि रावन आयेउ तेहि

ठांई । सहस बाहु तह रास बनाई ॥ जलक्रीडा करैं

संग सब नारी । विविध भांति शोभा अति भारी ॥

रां
रा॰म

आइरचा मंडल जलरेवा। सुरनर नाग करहिं सवसेवा॥ जाइदीख रावन सुखनाना। हरष समेत हृदय सुखमा ना॥ नहं लंकेश जाइ शिव देखा। विरचि रचेउ मनहूं ब हुरेखा॥ तुलसी अर्क पत्र सब आना। विल्वपत्र अरु पु ष्प प्रमाना॥ जाइकै जल छोभेउ दश सीसा। धोभेउ मं

16

२२४

उ सुमिति मोरीहा ॥ दोहा ॥ जब प्रचंड जल छोभेउ हुते

उ सवैं समाज । सहस बाहु मन शंक अति सकल त्रि

यैंउ वलाज ॥ चौपई ॥ तब राजा सन बोलहिं नारी । अ

ति सुंदरि सव राजकुमारी ॥ सुन नरपति आयेउ को

उ गापहा । अकस मात महा नद वापहा ॥ सुनि राज हिं

रा॰ भा क्रोध अपारा। जस त्रिनेत्र त्रिपुर कहं जारा॥ जाइदी

रा॰स ख रावन नहं राषा। जासु पत्र जननजल निधि बाषा॥

माया प्रबल महा बल भारी। लंकेश्वर कहहु परिसि

प्रचारी॥ लेइ उनि बांधि गयेउ त्रिय पासा। गष्ठनि दे

षि सब परम हुलासा॥ करि अस्नान पूज गौरीसा॥

हय माला बांधे दश सीसा ॥ दोहा ॥ कहइ भुसुंडि खगप
तसुनो अव यह कथा रसाल । हय माला ले वांधहूं बी
स भुजा दश भाल ॥ चौपई ॥ सकल आइ देषें हि नर
नारी । मारहिं लात हसें दें तारी ॥ नामन कहैं रहैं स
कुचाना । बहु विधि संकुत नृपति सजाना ॥ नत्यकर

रा॰ हिं रंभादिक नारी। दशाङ्ग साथ दश दीपक वारी॥क
रा॰स छुक दिवस यहि भांति गमावा। सो उलसत्य मनि जार
छुडावा॥ चला नरेंन महा अभिमानी। नल कूवरके
आप निसानी॥ मारग जात देषि विद्युधारी। अति से
दरि अनूप बर नारी॥ चंदन पुष्प पत्र कर धारी। सु

18

२२८ २४

जन चली जाय त्रिपुरारी ॥ देखि उर्वशी मनमक्कु वानी

नव रावन बोलेउ मदुवानी ॥ दोहा ॥ निकट जाइ दश

कंधनव गही अंक भरि लीन्ह । पुत्रवधू कुवेरकै नहि

विचार कछु कीन्ह ॥ चौपई ॥ चिन्हि त्रिपहि मन विस्म

य भयऊ । लंके श्वर लंका मह गयऊ ॥ चलिन उर्वशी

रा०म

आई तहां। अलका पुरि नल कूवर जहां॥ समा चार स
व पति हि सुनावा। सुनी कथा मन हूं दुख पावा॥ दीन्ह
श्राप करि क्रोध अपारा। रावन वंस होइं क्षय कारा॥
चली श्राप लंका मह आई। दश कंधर बैठे जेहि ठांई
आगे आइ ठाढ भया श्रापा। नवलंके स्वर अति भय ९

२२८

कोपा ॥ सउ रस कोप चित वतेहि घोरा। नल कुवर के
श्राप अति घोरा ॥ दोहा ॥ कहू भुसंडि खग पत सुनो
अब यह कथा रसाल। हय सालाले बांधहूं बीस भुजा
दशभाल ॥ चौपई ॥ सकल आइदेषैं हि नर नारी। मा
रहिंलात हसै देंतारी ॥ नामन कहै रहै सकु चाना।

रा.
रा.स

बहु विधि संकुल नृपति सजाना ॥ नृत्यकरहिं रंभादिक नारी । दश ज्ञ माघ दश दीपक वारी ॥ कछुक दिवस पहि भांति गमावा । सोप्रलय मनि जाइ छुड़ावा ॥ चला नरेश महा अभिमानी ॥ नल कू वरके श्राप नि रानी ॥ मारग जात देषि विद्युधारी । अति सुंदरि अनूप

२०

२२५

बरनारी ॥ चंदन पुष्प पत्र कर धारी । पूजन चली जाय

त्रिपुरारी ॥ देखि उर्वशी मनस कुचानी । नव रावन वो

लेउ मृदुवानी ॥ दोहा ॥ निकट जाइ दश कंध नव गही अं

क भरि लीन्ह । पुत्रवधू कुबेरके नहि विचार कछु कीन्ह ॥

चौपई ॥ चिन्हि त्रिप हि मन विस्मय भयऊ । लंके स्वर लं

रा॰
रा॰स॰

कामहं गयऊ॥ चलित उर्वशी आई तहां। अलका पुरि नल कूवर जहां॥ समाचार सब पतिहि सुनावा। सुनी कथा मनहं दुख पावा॥ दीन्ह श्राप करि क्रोध अपारा। रावन बस होइ लय कारा॥ चली श्राप लंका महं आई दशकंधर बैठेउ जेहि ठाईं॥ आगै आइ ठाढ भया श्राप।

२१

२३॰

तब लंकेस्वर अति भय कांपा ॥ मंडरस कोप चितव

तेहि ओरा। नल कुवरकै आप अति घोरा ॥ दोहा ॥

आपहि अंगी कार करि मनमहुं कीन्ह विचार। ऋषि

न दंडन हि दीन्हेहूं रावेउ लंक मझार ॥ चौपाई ॥ हन

चार तेहि पठए भवानी। भर द्वाज मुनि कथा बखा

रा॰
रा॰स

नी ॥ आये हन ऋषिन के गेहा । देखेत सबहिं भयेउ सं
देहा ॥ संबहिं ऋषि य कहो पगुधारा । अहहि कुशल
लंकेश भ आरा ॥ नान कुशल अबभई बिपरीता । नम
सन मागिन्हि दंउ अभीता ॥ देहो दंउ अस कहेउ रिसाई
कैगिरि कंदरन्हि जाहु पराई ॥ सुनि अस बचन सबहिं

22

डव पावा। नरन वेगिएक पात्र मगावा॥ सब मिलिक

र विचार एक काये। भरि चरट हधिर ऋषियले आये॥

हतन कहैं सोया मन जानी। होइसकोप वोले मडवानी

दोहा॥ चरट चरन नय हो यही सकल सहित परिवार

लेर हत जहं आपकें। नहं लंकेश भु आर॥ चौपई॥ आ

रा०

गे आर यरा छट भारी। देव सकल लंका पति धारी॥
बोलेन्हि बचन कहा है भाई। सकल कथा तिन्ह न्रपहि
सुनाई॥ यहि छटने लंका पति नासा। सब हनन असि
बचन प्रगासा॥ यह छट लेइ उत्तर दिशि जाहू। जनन
समेन देहू लैकाहू॥ सुनि न्रप बचन चले सब केसे

23

२३२

जनक राजदे महिंगे पैसे ॥ देव कुंभ धरि चले विचारी

तहां प्रगट भइ दिव्य कुमारी ॥ जग जननी को बर

नै पारा । राजा जनक तहां पगुधारा ॥ कन्या देखि अ

नूप भवानी । स्वना भांति राजा गृह आनी ॥ नाम जा

नकी परम पुनीता । नारद आनि कहेउ पुनि सीता

दो.
रा.स.

दोहा ॥ सकल कथा नृप जनक सौं नारद कहा बखानि
सकल सु लछन लखि गुण जग देवा मन जानि ॥ चौ
पई ॥ कहि ते कथा ऋषिराउ सि धाए । बहुरि हन लंका
पुर आये ॥ कहिन्ह जाइ आप हम राषी । सो संकर गि
रि परम कृपाला ॥ मुनि मनि कहेउ कथा उपदेसा ·

२५

जग जीते सब लंक नरेशा ॥ चारि ठाउहारेसि भयत्रा
सा । सकल देव कीन्हे निज दासा ॥ मेघ नाद कह
पुनिहं कराबा । दीन्ह सीख बल बयर बढावा ॥ जे
सुर समर धीर बल वाना । जिनकेलरि वेको अभि
माना ॥ तिनहिं जीति रणआनसि बांधी । उठि स

रां
रा॰म॰

25

नपित अनुशासन साथी । इहि विधि सबही आत्तादी न्हा । आपुन चलेउ गदा कर दीन्हा ॥ चलत दशानन डोलत अवनी । गर्जत गर्भ स्रवत सुर रवनी ॥ रावण आवत सुनेउ स कोहा । देवनन केउ मेरु गिरि खोहा ॥ दृग पालन के लोकनि धाये । सुने सकल दशानन

२३४

आये ॥ सुनि सुनि सिंह नाद करि भारी । देइ देवतन

गारि प्रचारी ॥ रण मद मत्त फिरै जग धावा । प्रतिभट

खोजत कतहूं न पावा ॥ रवि शशि पवन वरुण धन

धारी । अग्नि काल यम सब अधिकारी ॥ किन्नर सिद्ध

मनुज सुरनागा । हठि सबही के पंथहि लागा ॥ ब्र

रा॰

रा॰म

२८

ह्म स्रष्टि जहँ लगि तनु धारी। दस मुख बस वर्ती नर ना
री॥ आयसु करहिं सकल भय भीता। नवहिं आइ नि
ति चरण विनीता॥ दोहा॥ भुज बल विस्व वश्य करि
राखेसि कोउ न स्वतंत्र। मंडलीक मनि रावण राज क
रै निज मंत्र॥ देव यक्ष गंधर्व नर किन्नर नाग कुमार

जीतवरी निजबांह बल बङ्क सुंदर बर नार ॥ चौपई ॥

इंद्र जीत सनजो कछु कहेउ । सोसब जनि पहिले करि

रहेऊ ॥ प्रथमहिं जिन्ह कहु आय सुदीन्हा । तिन्ह कर

चरित सुनहु जो की ॥ देखत भीम रूप सब पापी । नि

शाचर निकर देव परि तापी ॥ करहिं उपद्रव असुर

रा॰ निकाया। नानारूप धरहिं करि माया॥ जेहि विधि हो

रा॰स इ धर्म्म निर्मूला। सोसब करहिं वेद प्रति कूला॥ जेहि

२७

जेहि देश धेनु द्विज पावहिं। नगर ग्राम पुर आगि ल

गावहिं॥ सुभ आचरण कतहुं नहि होई। वेद विप्र

गुरुमा नन कोई॥ नहि हरि भक्ति यज्ञ जप दाना॥स

१२६

पनेहु सुनि यन वेद पुराना ॥ छंदः ॥ जपयोग विरागा

तप मख भागा श्रवण सुनै दश सीसा । आपुन उठि धा

वै रहैन पावै धरि सब घालैखीसा ॥ अस भ्रष्ट अचारा

भा संसारा धर्म सुनिय नहिं काना । तेहि बहु विधि

त्रासै देश निकासै जो कह वेद पुराना ॥ सोरठा ॥ बर

ग्री. रा.स

गान जाइ अनीति घोर निशा चरजो करहिं। हिंसापर अति प्रीति तिनके पापहि कवन मिति॥ चौपई॥ वा ढे बहु खल चोर जुआरी। जेलंपट पर धन पर नारी मानहिं मातु पिता नहि देवा। साधुन सों करवा वहि सेवा॥ जिनके यह आचरण भवानी। तेजानहु नि

२८

२३८

शाचर सम प्रानी ॥ अति शाय देखि धर्म्मकी ह्लानी ।

परम सभीत धरा अकुलानी ॥ गिरि सरि सिंधु भार

नहि मोही । जस मोहि गरुअ एक पर द्रोही ॥ स

कल धर्म देखहिं विपरीता । कहि न सकै रावण

भय भीता ॥ धेनु रूप धरि हृदय विचारी । गई तहाँ

दो॰ जह्न स्रर मनि कारी ॥ निज संताप सुनायेसि होई ।

रा॰म॰ काह्न ते कछु काजन होई ॥ छं॰ ॥ सुरमुनि गंधर्वा

मिलि करि सर्वागये बिरंचिके लोका । संग गोतनु

धारी भूमि बिचारी परम बिकल भये शोका ॥ ब्रह्मा

सब जाना मन अनुमाना मोरो कछु नब साई । जा ।

29

२३८१३

करिहैं दासीहो अविनाशी हमरो तोर सहाई॥ सो॰

धरणि धरहु मन धीर कह बिरंचि हरि पद सुमि

रि। जानत जानकी पीर प्रभु भंजहिं दारुण विपति

चौपई॥ वैठे सुर सब करहिं विचारा। कहं पाइय

प्रभु करिय पुकारा॥ पुर वैकुंठ जानकहु कोई॥

रा० कोउ कहइ पय निधि महं बस सोई ॥ जाके हृदय भ
रा०स क्ति जस प्रीती । प्रभुतेहिं प्रगट सदा यहरीती ॥ तेहि
समाज गिरिजा मैं रहेउं । अवसर पाय वचन इक
कहेउं ॥ हरि व्यापक सर्वत्र समाना । प्रेमतें प्रगट
होहिं मैं जाना ॥ देश काल दिशि हु माहीं । कहहु

30

सो कहां जहां प्रभु नाहीं ॥ अग जग मय सब रहित वि
रागी । प्रेमतें प्रभु प्रगटैं जिमि आगी ॥ मोर वचन सब
के मन माना । साधु साधु करि ब्रह्म बखाना ॥ दोहा
सुनि बिरंचि मन हर्ष तन पुलक नयन बहनीर ।
अस्तुति करत सजोरि कर सावधान मति धीर ॥ छं·

रा॰ जय जय सुर नायक जन सुख दायक प्रणत पाल
रा॰म भगवंता। गोद्विज हितकारी जय असुरारी सिंधु सुता
31 प्रिय कंता॥ पालन सुर धरणी अद्भुत करणी मर्मन
जानै कोई। जो सहज कृपाला दीन दयाला करो अनु
ग्रह सोई॥ जय जय अविनाशी सब घट वासी व्याप

२८

के परमा नंदा। अमित गति गोतीता चरित पुनीता मा
या रहित मुकुन्दा॥ जेहि लागि विरागी अति अनुरा
गी विगत मोह मुनि वृन्दा। निसवा सर ध्या वहिं ह
रि गुण गावहिं जयति सच्चिदा नंदा॥ जेहि सृष्टि उपा
ई त्रिविध वनाई संग सहायन हजा। सोकरहु अ



धारी चित्त हमारी जानिय भक्ति न पूजा । जो भव

भय भंजन जनमन रंजन गंजन विपति बरूथा ॥ मन

वच क्रम वाणी छाडि सयानी शरण सकल सुरयू

था । शारद श्रुति शेषा ऋषय अशेषा जाकहं कोउन

जाना ॥ जेहि दीन पियारे वेद पुकारे द्रवोसो ९

श्रीभगवाना ॥ भववारिधि मंदर सब विधि सुंदर गुण
मंदिर सुख पुंजा । मुनि सिद्ध सकल सुर परम भया
तुर नमत नाथ पद कंजा ॥ दोहा ॥ जानि सभय सुर
भूमि सुनि वचन समेत सनेह । गगन गिरा गंभी
र भर हरणि शोक संदेह ॥ चौपई ॥ जनि डर पहु ९



रा०
रा.स.

मुनि सिद्ध सुरेशा। तुमहिं लागि धरि हौं नर भेषा॥
अंशन सहित मनुज अवतारा। लेहौं दिन कर बंस उ
दारा॥ कश्यप अदिति महा तप कीन्हा॥ तिन
कहुं मैं पूरब बर दीन्हा॥ ते दश रथ कौशल्या रूपा।
कोशल पुरी प्रगट नर भूपा॥ तिनके गृह अवतरिहौं

जाई। रघुकुल तिलकसो चारिउ भाई॥ नारद वचन
सत्य सब करिहौं। परम शक्ति समेत अवतरिहौं।
हरिहौं सकल भूमि गरु आई। निर्भय होहु देव
समुदाई॥ गगन ब्रह्म धरणि हि सम फावा। अभ
य भई भरो सजिय आवा॥ दोहा॥ निज लोकहिं

सं. विरंचि गये देवन्ह इहै सिखाइ। बानर तनु धरि धरणि
रा.स. महं हरि पदसे वहु जाइ॥ चौपई॥ गये देव सब निज
निज धामा। भूमि सहित पाये विश्रामा॥ जो कछु आय
सुबसे दीन्हा। कर्षे देव विलं बन कीन्हा॥ बनचर दे
ह धरी छिति मांहीं। अतुलि तबल प्रताप तिन पांहीं॥

34

२४३

गिरि तरुनख आयुध सब बीरा ॥ हरि मारग चित
वहिं रणधीरा ॥ गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी ॥
रह निज अनीक रचि रूरी ॥ यह सब रुचिर चरि
तमैं भाषा । अवसो सुनहु जो बीचहि राखा । अव
ध पुरी रघुकुलमणि राऊ । वेद विदित तेहि दश
रथ नाऊ । धर्म धुरंधर गुण निधि ज्ञानी । हृदय भ

रा॰ ह॰
रामा॰

कि मति सारंग पानी ॥ दोहा ॥ कौसल्यादि नारि
प्रिय सब आचरण पुनीत ॥ पति अनुकूल प्रेम
दृढ़ हरि पदकमल विनीत ॥ इति राम हृदय
रामायण परिच्छेदः समाप्तः ॥ शुभम ॥

35

70

२४८
३५

अथ रागरत्नस्य सूरसागर परिच्छेदमाह ॥

रागविलावल ताल। । सूरदासकृत। रागरत्न

ष ताल ताल। । श्रीरामवीरसिंहकृत ॥ कामक्रोध

लोभ परहरै। छंदरहित उद्यम तिनकौ। प्रेमे

लक्षन रहै जिहि मांही। माता तिनकौ साथ करै

सरगम ॥ रागविलावल ॥ सूरदासकृत ॥ ताल ॥ ३ ॥ मपधनिसैनिधप ॥ गरेगरेसैमगरेसै ॥ मपधनिसैनिधप ॥
गरेगरेसैमगरे

गा॰ ह॰
ह॰

हौ। तौ को काम क्रोध नित व्यापै। अरु अन लोभ

मदा सतापै। नाहि असाधकरहत सब कोई। साध

भेष पर साधनहोई। सेवा सदा हरिकि गुण गावै

सन सन लोक भक्त कौ पावै। भक्त पाइ पावै हरि

लोक। तिनेन व्यापै हर्ष अरु सोक। देव हन के

सै ।। मपैपयनिसैसैनियपै ।। गरेगरेसैमगरेसै ।। मपैपयनिसैसैनियपै ।। गरेगरेसैमगरेसै ।। मपैपयनिसैसैनियपै ।। गरेगरे
सैमगरेसै ।। मपैपयनिसैसैनियपै ।। गरेगरेसैमगरेसै ।। मपैय

हौं भक्त सौं कहियै । जाते हरि भरवा मालहियै ॥

भ्रत ख्य भक्त कौजे किहि भाइ । सोउ सौं कौ देहु व

ताइ । माता भक्त चार परकार । सत रज तम गुणाइ

नको मार । भक्त एक पुन बहु विधि होई । ज्यौं ज

ल रंग मिल रंग सम होई । भक्त सात्विकी वारह तर भक्त

निसंनिधपपे ॥ गरेगरेसंमगरेसं ॥ मपपनिसंनिधपपे ॥ गरेगरेसंमगरेसं ॥ मपपनिसंनिधपपे ॥ गरेगरेसंमगरेसं ॥

मपेपनिसंनिधपपे ॥ गरेगरेसंमगरेसं ॥ मपेपनिसंनिधपपे ॥

गा॰ हू॰
सू॰

रंज गुनी धन ज्ञानदेव अनंतरंक। नमो गुनी चाहै याभा
३। मम वैरी वैगहू मरि जाइ। निरगुण भक्त मोक्ष
कौ चाहै। भक्त हू को धन नहि अवगाहै। मन वच
क्रम मम सेवा करै। मन तें सब आसा परहरै ॥
ऐसो भक्त सदा मोहि प्यारो। इक छिन नासौ द

गरेगरेसैमगरेसै ॥ मपधनिसैनिधपै ॥ गरेगरेसैमगरेसै ॥ मपैधनिसैनिधपै ॥ गरेगरेसैमगरेसै ॥ मपधनिसै
निधपै ॥ गरेगरेसैमगरेसै ॥ मपैधनिसैनिधपै ॥ गरेगरेसैमग

हौं नन्यारो । ताकैं मैं हिन मम महिन सोई । तासम मै

रै औरन कोई । त्रिविध भक्त हैं मेरो जोई । जो मांगै

मैं तिहि दिजे सोई । भक्ति अनन्य कछू नहिं मांगै

तातै मोह सउव अनलागै । ऐसो भक्त तानी है

सोई । जाको शत्रु मित्र नहि दोई । हरि माया सै

रेसे ॥ मपधनिसंनिधप ॥ गरेगरेसंमगरेसे ॥ मपधनिसंनिधप ॥ गरेगरेसंमगरेसे ॥ मपधनिसंनिधप ॥
गरेगरेसंमगरेसे ॥ मपधनिसंनिधप ॥ गरेगरेसंमगरेसे ॥ मपधनिसंनि

रा॰ हू॰ म॰

3

वजग सैनापै । नौको माया मोहन आपै । कपि

ल कहे हरिको निज रूप । ब्रह्मन माया कौन

स्वरूप । देवहूत जब या विधि कहौं । कपिल दे

व मन अति हर्ष लहौं । कहौं हरिके भय रवि

ससि उरे । वायु वेग अति मैन हि करे । अगिन र

धपि ॥ गरेगरेसमगरेसे ॥ मपधनिसेनिधपे ॥ गरेगरेसमगरेसे ॥ मपधनिसेनिधपे ॥ गरेगरेसमग

रेसे ॥ मपधनिसेनिधपे ॥ गरेगरेसमगरेसे ॥ मपध

है जाके भय मोहि । सो हरि माया जीवस नाहि ॥
माया कौ त्रिगुण नम जान । सत रज तम ताके
गुण मान । तिन प्रथमहि सर तत्व उपायो । तो ते
अहंकार प्रगटायौ । अहंकार किये तीन प्रकार ।
सतते रिष मनसा नह चार । रजगुण ते इंद्री वि

निसंनिपपं ॥ गरेगरेसंमगरेसं ॥ मपंपनिसंनिपपं ॥ गरेगरेसंमगरेसं ॥ मपंपनिसंनिपपं ॥ गरेगरेसंमगरेसं
मपंपनिसंनिपपं ॥ गरेगरेसंमगरेसं ॥ मपंपनिसंनिप

रा॰ रू-
म॰

म्हारी । नेमगननैं नेम माया म्हारी । तिननें पाँचनव
प्रगटाये । इन सबको इक ठौड बनाये । ठौड हू जड
चेतन नहीं होइ । नव हरि पद माया मन पोइ । ऐ
सी विधि विनती अब म्हारी । महाराज विन म
क तुम्हारी । यह ठौडा चेतन नहिं होइ । करो उपा

पि ॥ गरेगरेसैमगरेसे ॥ मपिपनिसैनिपपि ॥ गरेगरेसैमगरेसे ॥ मपिपनिसैनिपपि ॥ गरेगरेनिसैमगरेसे ॥ मपिपनि
सैनिपपि ॥ गरेगरेसैमगरेसे ॥ मपिपनिसैनिपपि ॥ गरेगरे

२ बैनन होइ सोई । तामैं मन अपनी हरि परी । च
क्रादिक इंद्री विस्तारी । चौदहि लोक भये तामो
हि । तानी तिहि वैराटक रोहि । आदि पुरुष बैनन
कैं करन । जो है तिन्हि गुननतें रहन । जड मन रूप स
व माया जानो । ऐसो रूप हृदै मैं आनो । जब लों है

सांसंमगरेसं ॥ मपंपनिसंसंनिपपं ॥ गरेगरेसंसंमगरेसं ॥ मपपनिसंसंनिपपं ॥ गरेगरेसंसंमगरेसं ॥ मपपनिसंसंनिपपं ॥
गरेगरेसंसंमगरेसं ॥ मपंपनिसंसंनिपपं ॥ गरेगरेसंसंमगरेसं ॥ मपंपनि

रा-ह:
सू:

5

जियके अज्ञान । तिनन कौं सो मैं कैन जान । सुनकलि
त्रकौं अनौं मानै । अहनैनसौं ममत्व वेड्डठानै ॥ जौं
कोऊ सुष डुष अपनैं जोई । सत्य मानलै तिनकौं सोई ।
जब जागै तब मिथ्या जानै । ज्ञान भये यौं ही जग मा
नै । चेतन घट घटहै या भाइ । ज्यौं घट घट रवि प्रभाल

सनियप ॥ गरेगरेसमगरेस ॥ मपयनिसनियप ॥ गरेगरेसमगरेस ॥ मपयनिसनियप ॥ गरेगरेसमगरेस ॥
मपयेनिसनियप ॥ गरेगरेसमगरेस ॥ मपयनिसनियप ॥ गरेगरेसमगरेस ॥

२ मै

षाइ। घटउपजै वडरौं नसजाइ। रवि नितदैहै पक

स्रौ भाइ। जडतनकौंहै जन्म अरु मरना। चेतन अरु

षि अमर अजवरुना। तांको ऐसो जानै जोइ। जांकौं

तिनसौं मोहन होइ। जवलो ऐसो ज्ञान न होइ। वनि

यमिको नजैन सोई। संतनकी संगति नितकरै॥

पापकर्म मनतैं परहरै। अरु भोजन सोयहिं विय

गा॰ह॰
स॰

6

करै। आपौउदर अन्नसौंभरै। आधैमै जलवायसमा

वै। नवतिहि आलस कबहुन आवै। औरजो पराल

व्यसौं आवैं। ताहीकौं सुषसौं बितावै। बहुतेको

उद्दम परहरै। निरभयदौरवसेरो करै। तीरथहू

मै जोभय होई। ताहुकौंउर परहरै सोई। बहुरौंपरै

हृदयमें ध्यान। रूपवननर्भजस्याम सुजान। अथ

महीं चरन कमल कों ध्यावै। नाम महातम मन
मैं ल्यावै। गंगा परस उनहि कों भई। सिव सिव
नाउं नहीं सोल ई। लछमी इ हि कों सदा पलावै। वा
रं वार प्रीत करि जोवै। जें चरन कों सदली सम जानै।
अथवा कनक के षंभ समानै। उरु प्रह ग्रीव वङ्ग
वि द्विय धारै। तापर कौ सभ मनि विचारै। ८८३

ग॰ ह॰
स॰

कीलनता श्रीनहरी जान। नाभ कमल चितयौ रे ध्या
न। सुष मरड ह्राम देषि सुष पावै। नासौ प्रेम सहि
त मन लावै। नैन कमल दलसे मन यावे। दरसन
तिनै कटै दुष भारे। नासा कीर परम प्रति सुंदर। द
रसन नाहि मिटै दुष डंदर। रूप समान प्रोगादो
दोऊ जानै। सुषको ध्यान प्रेसी बिधि प्रानै। केस

र तिलक रेष अति सोहै । ताके पटतर कों जग को

है । म्रगमद बिंदा तामें राजे । निरषत ताहि काम

सत लाजे । मोर मकुट पीतांबर सोहै । जो देषै ता

को मन मोहै । श्रवणनि कुंडल परम मनोहर ॥

नष सिष ध्यान करै पाउ र यरि । क्रम क्रम करि प

हु ध्यान बढावै । मन कहूं जाइ फेर तहां ल्यावै ॥

ऐसे करत मगन होइ सोई। वडरो ध्यान सहजहींहो
ई। चितवन चलनन चितवै तौरे। खंजनिपचपनकी
स्वरन विसारै। नव आतम घटघटदूर सोवै। मग
न होइ तन सुधि विसरावै। सुख ध्यान तोको नही
व्यापै। दुखसुख तनको निहिन संतापै। जीवनमु
कत है याभाइ। जो जल कमल अलिमरहाइ। देवहू

नपद्म स्वनश्रुन कहौं। देहममनवैराग्यमहनर
हौं। कर्दम मोहन मननैजाई। तोनेकहियैस्व
गम उपाई। कपिल कह्यो तोहि भक्त सुनाऊं॥
श्रुतनाकोघोरी समझाऊं। मेरी भक्तचन्नरवि
यकरै। मनैसनै नै सब निसनरै। जोकोऊ हर
वर लनकौंकरै। क्रम क्रम करि उगाउगापगाय

वा॰ हृ॰
सृ॰

है। एकदिन सोउन्हो पञ्चै जाई। त्यौ सम भक्ति
लै मढि आई। चलन पंथकोऊ याकौ होई। क
है द्वारउर मरइहै सोई। जोकोऊ ताको निकटव ना
वै" धीरज धरि सठ काने आवै। नमगुनी रिपु
मारिबै चाहै। रजोगुनी धन ऊवव गाहै। भक्त
सात्विकी सेवा संत। लखैं न वैहि सुहृद भगवंत॰

भक्त मनोरथ मनमैं ल्यावै । मम प्रसाद ते सो वह
पावै । निरगुन भक्ति हूं कौं नहिं चहै । मम दरस
न होते सफल है । ऐसो भक्त सो भक्त कहावै ॥
सो वड़ो भव जल थन आवै । क्रम क्रम करि सब
की गति होई । मेरो भक्तन मैं नहिं सोई । हरि ते
विमुख होइ नर जोई । मरकै नरक परत है सोई ।

ग॰ द्र॰ म॰

ताहां जातना वहु विधि पावै। वहुरौ चौरासी मैं

आवै। चौरासी भ्रमन रतन पावै। पुरुष विर्ज मिल

निय गर्भ आवै। मिलि रज वीजे पोयसी होई। इति

य मास सिर धरै सोई। तीजै मास हस्त पग होवै॥

मास चतुर कटि पंसुरी सोवै। पान वाउ पुनि आ

न समावै। ताको इत उत पवन डुलावै। पंच मसा

10

९०

स संप्रर न होई। नीचे सिर अरु ऊंचे पाइ। जठर अ

गन को व्याप नाइ। कष्ट बहुत सो पावै उहां। पूर्व

जन्म सुध आवै जहां। नवम मास प्रभ विनती क

रै। महाराज यह दुख मम टरै। त्यांने जो मै बाहर प

रौ। अह निसि भक्त तुम्हारी करौं। अब मो पर प्र

भु किरपा कीजै। भक्त ग्यान आपनी दीजै। अरु

ग॰ तृ॰
सू॰

यहज्ञानन चितनेटरै। बारबार पै विनती करै। द
समम्मास पुनि बाहर आवै। तव यहज्ञान सकलवि
सरावै। बालापन दुष वहु विधिपावै। जीभविना
कहकहा सुनावै। कवहूं विष्ठामें रहिजाई। कवहू
माषी लागै आई। कवहूं जो वेदे हिं दुष भारी। तिन
कौ मुष नही सकै निवारी। पुनजव षष्ट वरषको होइ

इनउन खेलैयो चाहै सोई । मातापिता निवारे जवही
मनमै दुष पावै सोतवही । मातापिता पुत्र हितजा
नै । कहहुं जिवसो नातो मानै । वर्ष दसम वितीत
जव होइ वड्डर किसोर होइ पुनसोई । सुंदरनारी
नाहि विवाहे । असन वसन वहु विधि सो चाहैं ।
विना भाग सुकरो तेआवे । नववह मनमै वहुदुष

रा.ह.
म.

पावै। पुनि लक्ष महिन उदिम करै। अह जब उदि
म घाली परै। तब बहु मन मे बहु डष पाइ। कहां
लौ कहौं कहीं न हि जाइ। बहुरौ ना हि उहा पो आवे-
रे ढ्ढी सक्र सकल मिटजावै। कानन सुनै आषिन
दी सूझै। बान कहे ते कछुन बूझै। षैवे हूं कौ ज
व नहि पावै। तब विहु विधि मन मैं पछितावै॥

१२

पुन दुष पाइ पाइ सो मरै। बिन हरि भक्त नरक मै
परै। नरक जाइ पुन बहु दुष पावै। पुनि पुनि यो
ही आवै जावै। तो हू हरि सुमरन नहीं करै। तोते
वार वार दुष भरै। भक्त सकामी है जो होइ। क्रम
क्रम करिकै उधरै सोई। सनै सनै विधि पाछै जाइ
ब्रह्मा संग हरि पद हि समाइ। निहकामी वैकुंठ

रा.ह्रे.
स्तु.

13

सिखावै। जनम मरन सो वछूटन आवै। त्रिविधि भ
क्ति अब सुनहु सोई। जाते हरि पद प्रापत होई। एक
करम जोग कौ करै। वने आश्रम धरम विस्तरै। ए
क भक्त जोग कौं करै। हरि सुमरन पूजा विस्तरै।
हरि पद पंकज प्रीत लगावै। जो हरि पद को या
विधि पावै। क्रम क्रम कर हरि पदहि समावै॥

तेहरीपदकौं याविधिपावै। एकज्ञान जोग विस्तारै
ब्रह्मज्ञान सबकौं हित करै। कपिल देव बहुरौ यौं
कह्यौ। हमै तुमै संवादजु भयौ। कलजुगमै यह
सुनहै सोई। सो नर हरिपद प्रापति होई। देवहूत
ज्ञानकौं पाइ। कपिल देवकौं कह्यौ सिर नाइ। आ
गे मै तुमकौं सुत माग्यौं। अब मै तुमकौ ईश्वरजा

रा॰ ह॰
सू॰

१४

मैं। तुमरी कृपा भयो मोह ज्ञान। श्रवन व्याप है
मोह अज्ञान। पुनि वन जाइ देउ तन त्यागि। याहि
कै हरि पद सौं अनुराग। कपिल देव सांख्य जो गायौ
सो राजा मैं तुमहि सुनायौ। याहि समुझि जो रहै लौ
लाइ। सूर बसै सो हरि पुर जाइ॥ इति राग हराष
सूरसागर परिच्छेद:॥ समाप्तम्॥ शुभं॥

अथ राग हरष भक्तिमाल परिछेद माह ताल

सोरठा। श्रीगुरदेव कृपाल। चाहू भक्ति वर वि

डरजीये। जहि विधि कीन सि घाल। सो वरण

न शुभ पै करहु। चौपई॥ प्रथम सरपत्र विडर मटह

त्यागी। गयो वहिर कारज हित लागी। रही स

दन एकल तिय नासा। परम प्रवीन शील गुणरा

रा॰ ह्रं॰
भ॰

सा। एक दिवस उठि प्रात हि काला। सौमेत्र ल नि

ज अंजर र माला। प्रमदित करन मार जन लागी।

करि कुत सकल मदन अनुरागी। बहुरि निशा

निज अंड न सोई। मज्जन लगी नगन मन होई। ता

ही समय कुल हत हषिण। हरि प्रसिद्ध त्रैलोक वि

भूषण। आये तरन ढाटि नहि हारा। विहर विहु

र रव वदन उवारा । आवहु वहिर भवन सव भाई ॥
वारवार वोलत जडराई । नव नहि पतनि सतनत र
रि वानी । प्रेम प्रीति करुणा रस सानी । ननत द
ण वहिर भवन चलि आई । नगान सरीर चीर वि
सराई । भगवत रूप देखि अनुरागी । ववन वा
नीन भवन साव लागी । गद गद गिरा प्रीति नदी

रा॰ कृ॰ मं॰

२

गोरी। मनभावत ठाढ़ि जुगल कर जोरी। करहु कृ
पाल सदन मम पावन। धारि चाह निज चरन सु
हावन। आवहिं नाथ सोकहे पति मेरो। जहि पर कृ
पा रहि प्रभु तेरो॥ सोरठा। करि बिनती मृदु बा
नि। भक्ति प्रीति मन मानत जेत। गहि प्रभु कर नि
ज पानि। लै आई भीतर भवन॥ २॥ चौपाई॥

२

हरि आगमन देखि घटहू माही। भई उनमन प्रेम

सुधी नाही। पुनि पुनि छवि विलोकि चैन बरना॥

परम दंडवत चरनन परना। प्रेम मगन नहि कु

छु निहारी। पीतांबर निज रुचिर उतारी। तासु

करत प्रभु दीन उपाई। बोले बहुरि बचन जदुरा

ई। सुनहु सुशील भक्ति रत नेहा। जेकछु बसत

राग·
भ·
3

भोजन तव गेहा। ऐही जो अधीन वड भागी। लाय
देऊ व्यथा मोहि लागी। सुनि प्रेम वचन वदन भ
गवाना। हरषी विदुर पतनि सुख माना। उठि
तुरत निज भवन सिधाई। अमिय सरस कदली
फल ल्याई। सनमुख वैठि कृपा भगवाना। भ
क्ति प्रीति सज्जन निज पाना। मूल पदारथ देन

३

नयोगी। नकहिं लैन मानस अनुरागी। सादि
र प्रभुहिं जिमावन सोई। प्रेम मगन हरि मारन
कोई। प्रीति प्रतो किक नाम बिलोकी। तै भग
वान नाथ त्रैलोकी। खोवत तिनहिं अमिय सम
जानी। विविध प्रसंग बदन मृदु बानी। ताही।
समय रटत जडताई। विदुर अगम मन भमन किय

रा॰ हि॰
भ॰

आई। निज पेंउन नव देखि विराजे। कुसुम कोटि छबि
मन मथ लाजे। पुनि देखी मन भाव निज भामा
ओढ़े पीन वसन वन स्यामा। आल रसाल कदलि
फल जोई। हरिहि प्रसाद करावत सोई। ऐसे दे
खि विडंरगति नामा। हृदय अनसे उदवेग घ
कामा॥ सोरठा॥ लाग्यो वदन वखान। करि

५

८

२य २पै २म २ग २रे २मै १य १नि २मै २रे २ग

वहु विधि विस्मकारन नही । कारीय मूढ़ मेरान ।

२म २ग २रे २मै

मति मोरी भोरी भई । २। चौपई । कदली माकरु

हार करावहु । मंद मूढ़ नहिं हृदय लजावहु । रु

रुपट पीन रुचिर भगवाना । लीन श्रोफि नव

कमति महाना । कामूरव श्रापन लखताई ॥

कै उनमत दीन विमराई । जोगीश्वर ऋषिराज

रा॰कृ॰
भ॰

गयानी। सेन देव उजनपम अमानी। जाकर व
रन रेणु सुविजोई। जाविन रहहिँ दीन गति होई
तवनिन कर जफ लीन सियारा। पीनो वर नहिँ
कीन विचारा। पति मावे समो ववन अस जवहीं
भई चेन जन भामति नवहीं। आपन दशा देखि
अकलाई। उठि लाजन निजभवन सियाई। की

5

न बिबिध आपन त्रिसकारा । भीतर जाय बसन

निजधारा । पीतांबर भगवान उतारी । राख्यो क

रि आगम संभारी । नव इन बिदुर मोद जन होई ।

लेत रुचिर रंभा फल सोई । नवक उनारि सेजन स

न कारा । प्रभुहिं करावन अमिय अहारा । मनश

मन्न पावत भगवाना । देखि रुचिर रुचि प्रीति

रा.हे.
भ.
6

महाना। पूछत विदुर नाथ फल पहु। ऐहि मधु
र कछु दीन सनेहू। विहसे कृपाल कमलपति वा
नी। बोले वचन मधुर हितसानी। सुनहु विदुर त
म यद्यपि दीना। अमिय सरस फल रुचिर नवीना।
सोरठा॥ तद्यपि नहिं सम नाहिं। तव प्रिय दीन सि
साक जे। हरि प्रेम मन माहिं। सो मोरे बिसरत कहां

३॥ चौपाई॥ अस कहि कृपासिंधु मम कावहीं।
हरषित तासु बहुबार बुलावहीं। नेउर सकुच लाज
बस होई। हर हिंहर जस कर दोई॥ विनय प्रणा
म करत गति दीना। प्रेम अलौकिक जाय न ची
ना। अस प्रकार नहि प्रीति सुहाई। मै मैलपन
वदन कछु गाई। अब आगे हमर इतिहासा॥

रा॰ हृं॰
भ॰

करऊं यथा मति वदन प्रकासा। प्रथम सरूपक कल
ह्नर नाहीं। मंजल इंद्रप्रस्थ पुर माहीं। दुरजोधन
कर भवन सुहाये। पांडव हूत विदत वनि आये।
तहीं कृपाल विविध विधि नीती। कौन कथन
सब मंजन प्रीती। कुसल उक्त जोई विविध प्रका
रा। कौनन पक तिनऊं सुईकारा। नवम थान

काल नहे आवा। करन रुचिर संवाद सुहावा। ता
ही समय पाक गृह आई। भोजन बन्यो विविध वि
धि आई। तब आये कौरव मिलि सारी। कहिसब
दन तिन विनय उचारी। हमरे वदन चारु निज
पर ह्वै। चलहु नाथ कछु भोजन करह्वै। दरजो
यन भनि विनय बखानी। बहु विधि वदन रुचि

रा॰ कृ॰
भ॰

8

रसहु बानी। धनराष्ट्र न्रप बिबिध प्रकारा। यद्य
पि दीन बचन उच्चारा। जदपि कृष्ण देव नरहि माने
नब कौरव निज हृदय लजाने॥ सोरठा॥ जब भो
जन नहीं न। भगवन डुख दारद हरन। नब नेस
न मख दीन। विनय कीन धनराष्ट्र न्रप॥ ४॥
चौपाई॥ हे हरि महा बाल जन पाला। दलन

दोष दारिद राखेउ शाला। कृपासिंधु पूरन सबका
मा। बिनवउँ नाथ जोरि जुग पामा। यद्यपि प्र
भु सदृश हम नाहीं। तदपि प्रभु लालस मन मा
हीं। बिनु भोजन कीने राखे सिधु। जाहु नाहि
तब जादव इन्द्र। इह हम कहं प्रभु देहु बड़ाई।
सब बिधि जानि नाथ अपनाई। जब प्रभु भूपक

रा॰ कृ॰
भ॰

9

ध्यन सख कीना। तब हरि उत्र वदन नहि दीना॥
सुतन्ह नृपति तब सन्म वखाना। कय इम कय त
म नाहिं समाना। पै तोरे सख वचन वनीती। होत
जोति मैं वंध प्रतीती। प्रीति परम चरखा कछु नाहीं
करत प्रकट कछु मनहित काहीं। होत सरस भोज
न रूप ताहीं। प्रीति भाव हरगा मन जाहीं। प्रेम श्री

५६

नि बिन अरघ न एका। यद्यपि व्यंजन होहिं अने
का। हरि नेमै भोजन नहिं करहीं। तुम यद्यपि मा
न सीस भरहीं। कछु आपदा व्यापे नहिं मोरे॥
जो मैं करहुं पाक अदहन तोरे। सदा स्वतंत्र अमल गत
मासा। अस कृपाल माधव वचन प्रकासा। सोरठा
नव कौरव समदाय। धृतराष्ट्र नृप सहित तनसं।

रा॰ कृ॰
म॰

मौनत हृदय लजाय। करि चिंतन निज निजक
रन॥ चौपाये। अह भगवान सभा तिन त्यागी।
आये भवन विदुर बडभागी। बोले वदन मधुर मृ
दुवानी। परम प्रेम प्रीती रसमानी। सुनहु विदु
र छुधा मोहि लागी। देहु वेग कछु विलम न या
गी। जो तव भवन जोग आहारा। सो अब करहु

मोर मनकाम्। सुनि अस वचन वदन भगवाना।
परम आनन्द विदुर मन माना। रहा निनङ्के निज
देन वनावा। शाक मात्र कटुपाक सुहावा।। से
जन भक्ति प्रीति सुख मानी। देत ललित उपले
पन पानी। सादिर आसन दीन विछाई। पाणि
स काष्ठ पीठ हरषाई। प्रभु मन भाव जगा जो रत

पाना। विदुर दीन मति विनय बखाना। कृपानि
धान आज मम गेहा। शाक मात्र कछु भोजन दे
हा। सो मोहि देत लाज जीय परहीं। जो बिलंब क
रता निधि करहीं। सो नवीन भोजन कछु आना
वनहिं देरा पावहु भगवाना। सुनि सुभ वचन वि
दुर सावेपहू। विहसि बोले प्रभु दीन सनेहू॥

सुनहु विदुर तव नाहिन जाना। मोहिन प्रीये क
छु शाक समाना। तोते देह भक्त तुम सोई। पावहुं
मै प्रसन्न मन होई। प्रीति भक्ति जन शाक तुम्हा
रा। अमिय सरस मोहि मानस प्यारा। विरचे जब
हिं विदुर हृज घरना। अन्न कूट व्यंजन वहु वरना
तव मै तहां शाक मुख राखा। प्रीये प्रधान वदन

रा॰ह॰
मे॰

निज भाखो । जब प्रस भने बचन भगवाना । उठे
बिदुर सेजन मन माना । लेत सलिल कर चरन
पखारयो । प्रभुहि रुचिर आसन बैठारयो ॥ सो
रठा । नव सुपननि इत नास । राखि शाक पाव
न परम । मन सखि कृपा प्रकास । भई नवेदन
करन सो ।६। चौपाई ॥ सजल नयन कल पुलक

१२

सरीरा। प्रेम मगन तापी गात थीरा। वतसल भ
क्त दीनजन पाल। करत शाक भोजन सुख शा
ल। कसो कृपाल प्रेमजन रवाई। आज विदुर ति
पनी हम पाई। सो प्रणाम करि पानन जोरी। क
हत वदन उर प्रीति नथोरी। भयो सिध्यान कृता
रथ्य दीना। जास भवन भोजन प्रभु कीना। शाक

रा·कृ·
भ·

मात्र मै पाक बनावा। अमिय जानि करुणानिधि
पावा। केवल दीन दीन करै स्वामी। बडो बडाई
भक्त अनुगामी। दुरजोधन कर विविध प्रकारा॥
भोजन रुचिर अमिय आहारा। परिहरि सो कृपा
ल मम गेहू। पावा शाक कछु दीन सनेहू। धन्य
न आज मोर सम आना। जहि अस दीन सजन स

13

भगवाना। भाषि विदुर अस संजन प्रीती। लेत
सलिल सुंदर सुभ रीती। प्रभु कर चरन भक्ति स
नमाना। करन पखारि प्रेम फल पाना। वदन
शुद्धि कारण अचवाये। देखि भक्ति भगव हरषा
ये। इमि श्रम दिन प्रभु कीन पयाना। सीय समेत
नव विदुर सुजाना। चले अग्र पहुंचावन हेतू

हरषि बिदाय कीन भव सेन्ह । करि प्रणाम नव
भवन पराये । उन कृपाल निज धाम सिधाये ॥
रहा उच्छिष्ट पाक प्रभु जोई । नारद मुदित मन देष
ति दोई । पावन लगे परम हित मानी । पावन सु
या मरम जीय जानी । इन्द्र देव बहु जग भक्ति प्रभा
वा । अति अदभुत मन हरन सुहावा । कहो रमीस

लोक वे नाशे। शोक प्रहार विडर सदा कारे॥
रहितै भक्ति सरव स्ववे साधन। करहिं निरन्तर
जवन आराधन। सब जीवन कहे अनि स्ववे दाई
उदय भाग जहि संस्कृति पाई। दोहा। सजस व
पावन भय हरन देन शरण श्रीकन्त। भक्ति म
हातम इमन जग कहिन सकहिं कति सन्त॥ ७

रा॰ह॰
भ॰

इति रामहरष भक्तिमाल परिच्छेदः सेहरी
समाप्तम् ॥ शुभं ॥ कथाविडरकी ॥ ॥

15

अथ राग हरषस्य प्रबोधचंद्रनाटकपरिछेदमाह

रागहरष ताल गीत ३ । श्रीरणबीरसिंहकृत

सवैया ॥ सुनिकै यह बात हदेम वली मनभी

नर अति सबै सुन साते । द्विजन्हू निज ऊजलता

अपनी जग भीतर याविधि मोह बषानै । सुन

मोह महात्म लोककै द्विज राइन तोह सबै वषका

गा॰ह॰ ना॰

नै। कबहु आहि अरुवे उजलना मम भीतर सो चत
गानन जाने। हम एक समे पिय लोक गए। भूति
मोपिछ आसनते सउठाए। इह ठौर वसो मति
विर करे वह आसन नाहमेरे मन आए। पिय
आप सगाय करे मछते भूति गोबरसो निज जाउ
लिषाए। करजोर भली पियके तिन ऊपरि मो

हू बिरंच बिलापै । ६ । दोहा । बहुर हंकार रु बोल

यो दांभिक आलमगा मान । कहि बिरंच पुन नरक

हों कीनो कूटि बषान । अथवा यह दिज दंभ है ता

ही कीन उचार । ऐसे मनै बिचार कर भयो क्रोध

हंकार । ४३ ॥ राग हरष प्रबोधचंद्र नाटक सवैया

ताल । । कौन मरे मरको बिधि है रिष कौंन ह

रा॰ कृ॰
ना

२

नो किह्नते उपजाये। मैनपको फल जानतना सन
वामन नै मनमै गरवाये। कोटिसरै सविवेव म
नी पद पंकज मोह्र परे उरपाये। रिषकी उत्पति
की भूमिकही सवरातन माहि सनो मनलाये॥
रिष शृंग भयो जसकौं सकडौ राजनीह सनाम
लजू उपजाये। नारि वधू सब सिसटिजपेंड हिता

२

इति जीव रभ्रम उपावे । सखिनारि विषै रिष वैगो

तमजु इति मोऊव मेऊकीने निकसावे । ततयो

ह्वंउल परा सवजु रिषवैंउर मतेग मतेवानीजा

पे ॥ राग हुरष प्रबोधचंद्रनाटके सवैया ना-

नव रंभ विलोक अनंद भयो पर अवय मोहि

पिना महि आपे । नाम हे कार करे जिनको इन

प्र॰ ना

पेषन जे मन मे थिरता पे। अर्थ लोभ को मे म
नहो मम देश कहे नव लागन पाप॥ राग द्वेष
प्रबोध चंद्र नाटके नाम। ।सवैया॥ हंकार
धर्यो सिर हाथिनके सन दीरघ आउ बडे सुष
पावे। हाथरि श्रेन मोह पिषे नव वालऊ ने नम
श्रेष्ठ मलाने। काल विलीन भयो वडतो सनया

३

जगमें हमहैं स्वप्नकाने। नैनन मेद स्वरूप भए
यह कारणने सतनों हि पक्काने। प्राज्ञ अनंतुभ
यो पिषने सभ अंगानसो नमको विलकाने। नव
श्रहि ऊमार सरूप वडो कहो आनंद सो जगभी
नर सोई॥ नव देभ कहो इह दौर वसे विन नाहि
नमे जग जीवन होई। नवि मात पिता त्रिशाना

अति लोभ कह्यो सब सो जग भीतर होई ॥ राग द्वेष
प्रबोध चंद्र नाटके सवैया नाल। । हंकार कह्यो
सुत मोह महीप को गोप संदेस सु है हम लाये। आ
हित नाहि विवेक हूते निज कान सुने सभ लोक
उलाये । ताहूं तात सुना वनके हित आवन मोह
भयो सम जाये ॥ तब दंभ कह्यो सब सब संग आये

नव पेषनते मम देह सिवानी । सोइ महीप सिरोम
णि जु शिव की नगरी सुंदरी रजथानी । सोइ म
हीपस थाहि रहा सब लोक इथे जन पढ़ वषानी
सभ लोक कहै मम पंकज मै मम आप सुनी यह
बानि सुकानी । हेकार कहो किह कारणने वह
लोक पती उह ठौर वसावे । देस कसो रह कारणते

रा॰ह॰
ना॰

5

सविवेक कहूं जग होन न पावै। बोध उदे यह भ्र
म वनाश्रम वेद पुराण इहै सब गावै। कुल नासि
क बोध निवारण कौं इह दौर निवास सु मोह ठ
रावे॥ इह कारउदे मति वात इहै शिव के सुव बो
ध कौन मिटावे। जिन दौर वसे सब जीव विजि
ते सब सौ शिव नाहि के बंध छुडावे॥ जेनसमेक

५

हणा करिकै सभकानन नारकमैव रहनाए ॥
सभपाप मिटै शिव पेषनते षिन भीनव जीव
न वीय उपाए ॥ नव देभकहो इह वात महो
घरहो वनन सभ जीव मजारा । तिनको न
हिवाय कदा विनहैं जिनके उरकामह कोय
विकारा । जिनके करपाद मनो वसहै नप कीर

रा॰ कृ॰
ना॰

6

तसो जग है उज्यारा । वह तीर्थ कों पावत है य

ह भारत और पुरान उचारा । वेन पाणि आये

नवै ऊंचक पाग अनूप । नागर जन आयो

हुनो महा मोह जग भूप ॥ इति राग हरष

प्रबोध चन्द्रनाटक परिछेदः समापतम् ॥

६५

अथ राग गंधार भक्तिमाल परिछेद मात्र ताल

दोहरा ।। विप्र सुदामाकी कथामैं एरव संछेप । की

न वैष्या मनि कथन कछु मलय भक्त उलेप । पर

म मोद प्रद रस भरी मैं रहनि वारद वैरि । ध्रुवमोक

र विस्तरन हित उमचि हचिर हचि मेरी । श्री रघु

वेर जउवर कलित केंज चरन उर धार । वरनउं

ग्रा॰ जे॰
भ॰

सो सुख करन मन हरन नरन सें सार। चौपाई॥ श्री

उज्जैन सामीप सुहावा। रम्य रुचिर ग्राम इक भा

वा। वसिहैं नरहो मोदमन छाये। सकल लोक सुख

संपति पाये। निरध विप्र एक तहि ग्रामा। कुलम

क सुसिल नाम सुदामा। दम्पति वसहिं सदन निज

दीना। गिर पर चरन चारु रति लीना। जव निसि

नाथ ज्रमद जडवेसा। निज प्रचंड बल कंस विध्वंसा

पठन हेत विद्या उतसाहा। गुरुपै गवन भवन म

द वाहा। आगम निगम नेति जहि वरना। सो प्र

भु हृदय गुनन उरव हरना। फिरि आवेंति हरष उर

छाये। सांदीपन गुरु सदन सहाये। जीव चराचर

कर सुख दाता। आये राम कृष्ण दोउ भ्राता। एरव गु

रा. गं.
भ.

रूपै सोऊ सुदामा । रहे पठत विद्या अभि रामा । दोहा

नेहा हृदय कर विप्र वर बने मीत हित कारि । ससि

कल सदृश होन गई अधिक प्रीति नित भारि । २ ॥

चौपाई ॥ जब गुरु वर प्रभु सासन पाये । श्रीमायो

निज भवन पराये । तब सुशील सुंदर गुण धामा ।

आय सदन निज विप्र सुदामा । दीन्यो कंचुक का

ल जव नेहा। करत निवास रुचिर निज गेहा। भयो

न रुण अति दारद वेरा। पर हित सदन गव्न कछु

हेरा। भिक्षाटन उज परम सदाही। सो विचारि नि

ज मानस माही। जस बनि रे तस करहि निवाहू:

हृस्स भजन संतोष उछाहू। तन परि यतन वीर

प्राचीना। यद्यपि अति दारिद उजलीना। तयपिक

रा० ग०
भ०

रम परम निज मारी। विपिवन करहिं विश्रवन धारी·
कुलरजाय सीस परिनीके। लखेहिं नउज कलेश
कछु जीके। विषय विरक्त सचिव अभिमाना। सेन
ने निरत भजन भगवाना। एक दिवस मिता टन
लागी। गवनन केत विश्र निज त्यागी। कुल कुल
रव वदन उचारत। विहरत सदन सदन त्वयारत·

गा० ३

ऐस उज भूमन विपुल गढ़ हृदिना। पावन नैनक स
दन किन मिना। तब निवास निज बास पठावा॥
दूसर दिवस प्रात उठि आवा। तब ई ग्राव कूके निज
गेहा। कुल कुल भाव रटन सनेहा। ऐस प्रकार ब
न तीन समाने। उज मैं तोष निरत नहि माने। दोहा।
अर्थ निसा बन राय दिवस विप्र पतनि अंजलाय॥

रा.गे.
भ.

कहत बदन आरत बचन कृपा सहित प्रभु जाय। दो

रट ज्वरसु जगाव उर कवन कौन हम पाप। जहिं ते

मैं रति लीन प्रेम प्रबल नाथ मैं नाप ॥२॥ चौपाई।

श्रीय उरब सुनत श्रवगा उज नाथा। बोले मंजु मधुर

सुरब गाथा। भामिनि सुनहु सत्य जिय धारी। जैउ

उबेस तिलक हितकारी। सोनो मैं मटनि दार दलीना.

सदा रहत आरत पन हीना। यानै करि सुमरण भगवाना। लैन विमल पद कृपा निधाना। सोग्रस हरन गरस उरवदासा। भक्त वनज उरभान विकासा। मोरे परम मीत हितकारी। दारद उरनदै भजन हारी। लोक पाल दिग पालन पाला। सकल सबद प्रभ दीन दयाला। पै मोरे श्री यगरव नम

रा॰ गे
मे॰

ऐसे । यद्यपि मीत भवन पति रहेऊ ॥ दोहा ॥ जस
गावेव करुणायतन कृसदेव भगवान । नम हम
रे संतोष भीयायरन उचित गत मान । विश सुजान
सुज्ञान मय यद्यपि वचन सुनाय । तद्यपि नाम न
भयो शरण भामनि अरण सुभाय । ४ ॥ चौपई ॥
बोली सुनऊ प्राण पति मोरे । जो प्रभु कृपा परम

गे
५

धीयनोरे । हरन ईदद्ड्खेदारद मारी । नोन जाङक
स वेग सिधारी । मन बांछित नेज काम सहाई ॥
कसन लेउ ग्रव स्वामिन जाई । मिव नमारवि भव
सख भोगरु । नमङ्क निरत दारद ङरव सोगरु । मो
रे हृदय भूरि संदेहु । कस विधीन भाग पनि पहु ।
प्रवसर परे मित्र हित कारी । तन मन धन सदेत

रा.गं.
भ.

6

सवकारी। तोनि जाइ वेग नम माहं। राजे कुमस द

मन उरवे जाहं। उजवर कहि सवचन सुनिनारी

प्रभुपैं जाइं भ्रातेमे प्यारी। पै ग्रम हृदय होत संदे

हा। जोगन कृपा नाथ्य कछु गेहा। जोमे यरइं

उपारन जाई। मन माखे दीन पाल जउयाई॥ कू

के मिलन मीन मनरीती। मो प्रनीन भीय होत प

नीती। अस विचारि कछु नमहिं सनेही। त्याग दे
ऊ मोहि अवसर पही। राग गंधार भक्तिमाल ना
ला। ॥दोहा॥ सुनि निज पति मुख वचन अस
भामनि वदन उचारि। भवन विभूती विदन निज
प्राण नाथ तोहि सारि।५॥ चौपाई॥ अस कहि सो
पति देवन नारी। भिक्षाटन हित ग्राम सिधारी॥

रा॰रे॰
भ॰

कल कल भ्रम वदन उचारी। आरत अटन करत गदह
वारी। वारि मूंदि वावर ननकाला। ल्याई विजन के
न उज पाला। अनमे प्रीति उनि इश्क बनाई। सादि
र दीन पति हि निज जाई। कहिहौ वदन राम वलभैया
पढे इश्क रहु तोर भजैया। सपन परन नव चिर कूट
वीरा। कवि हद बैंध लीन उज धीरा। कामरि हद म

लन नन रवेउ। पट प्राचीन सीस कर देउ। नहिं पद
त्राण पात्र कछु वारी। चल्यो द्वारिका द्विज सिधारी।
दोहा॥ हृदय जात अस गनत उज कृपन कोटि जइ वे
स। नाकर पति प्रीय मीत मम कुल करन हत केस·
६॥ चौपाई॥ नाम दमन दारद संतापा। जानि प
रन मोहि अगम मिलापा। कस हग करउं सफल

अब देखी । भाग अलप अभिलाखे बसेखी । निरय
न दीन मलन ननचीरा । दशा विवरन देखि जडवी
रा । चीनन किन चीनन मोहि माई । असम संदिग
थ विभ्रमन माई । नट जल धीम शोभ्रन तर आऊ । पा
या रौन मिलन उरचाऊ । नावकी मनऊ मधर अ
मबानी । विभ्र दीन वन वदन वखानी । मैथन हीन

देक उज जाती । जडपति मोर मित्र धीय नाती । उन
कर मिलन मोद मन छैय्या । मैतजि आव सदन नि
जे भैय्या । अब कस होऊ पार न दाई । नहिन छोर
मोरे उतराई । करन पार हाथा नवधारी । जो मोहि क
रऊ पार निधवारी । तोन मार कल्यान सहाई । मोर
असीस नाव कन भाई । नम्र वचन सुनि उज वर काना

परम प्रसन्न नावकन माना। नरन पार नियवार उना
रा॥ चल्यो समरि उज कुल उदारा॥ पुर विस्तार ह
रान जब आये। देखो विप्र चकत उरछाये। दोहा॥
कोट कोस है बीस षट् केहठ कनक वडे ओर। वारि
द्वार वाहर रवे जनडे मेर गिरि कोर॥ चौपई॥६
जहे तहे ठाउ मजगारव बोरे। साधुद वीर धीर भटि

भीर। चढ़ें किन नगार नवल जनु सोभा। अति बचि
त्र उपवन मन लोभा। बीच बीच बर सुभग अरामा·
द्रुमन बेलि छबि छयो बनामा। सुभ्रन ललिन
अवलि अमराई। रंभन कदलि कलित तन छाई
बिरचत कुंज बीच बरनी के। सुखद बचित्र परम श्री
घजी के। चारु प्रसून बाटिका भारी। गुंजत मधुप

रा· मं·
भं·

10

मधुर स्वर प्यारी। बापि तडाग कूप चहुं ओरा। कोक
ल कैकि मखर चित चोरा। सीतल ललित त्रिबिध बयबर
ब्यारी। रचना देखि बिप्र मन हारी॥ दोहा॥ चहुं दि
सिन बन चकन चित नगर हारउज थाय। नाथ सीस
भीतर चल्यो हुल बरन मन लाय॥ ७॥ चौपाई॥
काउन कीन बिप्र बर बारन। हमरन जान सिंधुम

वनारन। देखिस नगर रम्यता नीके। छबि लावन्य
वनत श्रीयजी के। धाम उतंग धवल मट मारी। चा
रु विचित्र चित्र कृत सारी। बरन बरन बर धजा सजीली
कनक कलस उनि ललित छबीली। हाट बजार बै
क बनेरंगा। कनक धनक जनु धनद उमंगा। भ्रमर
भ्रमर जीय तिमि नर भामा। नित नव नगर मोद अभि

रा॰ गं॰
भ॰

रामा। चितवत चकत चित्र वत जाहीं। लागे रहत वि
प्रहग ताहीं। अस प्रकार इज देखत नगरी। जनु इंद्र
पुरि अमरावति नगरी। आवा कोट द्वार जउ वेसन
लगये मनहि मन। विविध प्रसंसन॥ गोपुर सरसव
चित्र अनेगा॥ उरगम उरग चित्र रंगा। रचना अनसे
अलोकिक देखी। चंद्र किन चितवन चकत वसेखी

उरपन यरत वरन नहिं आगे। धीरसरीर विग्रनिज

न्यागे ॥ दोहा ॥ बरन शोकामानि जीये विग्र सक

वन्स होय। मंदमंद वरवस वल्योमिलन मीत हि

त रवोय। ५ ॥ चौपाई ॥ जब कफि गयो द्वार अजरा

ई। देखे भीर भवन समुदाई ॥ जड वेसिन करपर

हिंनपारा। अति अनुपम नवलाख अगारा। चारु

रा॰गे॰
भ॰

92

रबिचित्र बनत बरनारी। मुनि मन बिरत जोग रत
हारी। बिरचित जनहु गगन सोपाना। कबिन
ग्राम किमि जाय बपाना। ललित मातंग तुरंग
न शाला। उष्ट्र बृषभ बिसद बर शाला। बाँट नि
बैक बीच बिरचावे। इंद्र ब्रह्म जम भवन लज्जा
वे। गायो बिप्र जब दुनिय प्रचरना। कुबरन भवन

मं॰
९२

मोद मन भरना। देखि दरपन नाक डोनि निंदा। कंच
न मणिन खचित छबि हैं दा। ललित प्रद्युमन श्रा
दि भट राजे। ऊपर आभरन बसन नन साजे। नह
ए नवल निजरूप रसीले। मनहु सकल छबि म
दन करीले। गयो निकसि जबतेऊ प्रवेशना। से
किन चरन परत उज परना। इत उत चकितथी

रगान होई। बोलिन सकत वदन कछु सोई॥ दोहा॥

ग. गं

भ.

भवन भूरि लावन्नता रुचिर राम वल जाई। देखि

13

स जहि पर विधि मम मति पति विराम विसमाई ९

चौपाई॥ देखे पुनि वसुदेव अनंगा। भवत भानजत

लखन सुरंगा। सुमन नउ सयन कर सैना। इकटक

लाभा देखि उज नैना। मदन मदन मम सरिन शोभा

गं

बाम बचित्र चित्र मनलोभा। हृदय ग्यान ग्रस विप्र
समीना। सुंदर सदन मोर किन मीना। सो किन स
जन सावद किन जाऊं॥ आनंद कंद दरस किन पाऊं·
ईश्री राज भवनन ग्रवसेखो। मै ग्रगामन निज उरल
भ लेखो। ग्रवलौं ग्राव कठिन हठ धारी। काहु रंक
नकि देहिं निकारी। चित्र जड वंस तिलक मोहि ग्रा

गा॰ ग॰
भा॰

नै। रंकभेष अस कवन पछानै। अवन परहुं आगा

ल पग जेहैं। मांगा मीन मिलन किमि पैहैं। पैबि

न मिले डमरु डारवेदाहा। धन पछव करिहैं। नव

काहा। दोहा। अस चिंतत दिज उचित मित सोमिल

न निरधार। इनउत शंकित चकेन किन चिनवन

वलयो सिधार।२॰। चौपाई॥ मंद मंद उर त्रास वढा

वा। भीतर भवन द्वार जब आवा। नव द्वारप महिमा
उदिथाये। वारन हेत निकर रिसछाये। कोनम
कहें जान किन भागा। उजस भीतनतन कंपन ला
गा। पै निरयन तिन देखि उखारी। नज्यो जानि
जिय रंक भिखारी। खोउस महस भेद नकिनाहे।
इकटक लाग नयन उजनाहे। कहिन जाय शोभा

रा॰ गी॰
भ॰

15

सटिनीकी। प्रभा मयंक कोटि सत फीकी। होतनभ
वन छोटवड भाना। एक सरस गिर मेरु समाना। चौं
कित द्वार दखि रकोष्ठि गयऊ। चितवत चकित श
कन गन भयऊ। भवन भवन किम भवन राऊ। जा
दव कंज किरन विकसाऊ॥ भोरेहं भ्रमत भवन ज
निजाऊं। नहोंन मिलन मीत निज पाऊं। लोक भे

रा॰
१५

ख कोउ देखि बसेखा। बारन करत नलाहिं न मेखा
दीन उबारन दीनन हारा। दीननाथ बिनु कवन ह
मारा। दोहा। सोउ मीत सजन सुहृद सखा सखेद
हित बंधु। जन मंडिन दारद दहन निरधन धन ज
डु नंद ॥५॥ चौपाई॥ श्रवन भवन आगल पग
धरहै। बैठि द्वार श्रम सुमरण करहै। काहु नोक

रा॰ गी॰
भ॰

रहिं मीन मन जाई। निरखत विप्रद्वार नव आई॥
वारत हृदय हरन संतापा। अखिल भवन पति मो
र मिलापा। अस कहि पाय भजन सुखदाई। आय
चलव मोहि संग लिवाई। अस प्रकार अनाथ द्वारा
रह्यो दाउ उज करन विचारा। नव मन भावे इक भव
न सुहावो। जनु वहिं विनिज करन रखावा॥ घोतन

16

प्रकाश कोटि छबि छाजे। तहां पर्यंक मणिन प्रभु
राजे। क्रीडत करि विलास बहुरंगा। रुकमणि सह
सखि सहचरि संगा। दोहा॥ पीय प्यारी नैन सौंय पीये
मोद प्रमोद समेत। इत उत चित वत परस्पर ससि
चकोर छबि देत॥२॥ कवित्त। प्यारी मन मान सौं
महान मोद मान प्रान नाथ हेत पान कंज पान छया

ग-गं-
भ-

रकर। लोचन विलोलसों कलोल मीन खंजनसे रे
जनसे वैन दैन रंजन उचारकर। भावभरि भजसो
पसार दीन पान प्यारी ऊंजन विहारी लीन लोचन
उचारकर। एकै बार टूटी जूटी डीठ लाल लोपन
की थैचकसी गाड़ढाड़ जौनै उजहारपर॥ भूल
गयो धन धाम खोन पान प्यारी भाम भूलगयोभा

गं
८

नै रैन जाम काल कान वीर। भूल गयो भवन प्र

मोद मोद भूरी भोग भल्यो योग भजन संजोग लो

ग राम वीर। भूल गयो मात भूल गयो तात भ्रात

भूल भूल गयो बात पीत गात अभि राम वीर ॥

भूल गयो आभरन भनन स्रनन नन भूल्यो स्रपि

मनन मनन सीन नाम पीर। सहिसा उठि त्यग

रा.गे.
भ.

18

त अनेक भाव कें बिन को साजन सनेह साने स्याम
ल सरीर वार। मानस मगन मानो रंक पायो भूरी
धन तन मो प्रफुलित प्रमोद वस चीर फार। आये
मीत आये मेरे बदन अलाये नाथ कुसल खेद काये
लटराये ज्ञान धीर हार। भज सो मराये उरकाये उ
रलाये लीन दीनन दयालजू दयान प्रेम नीर फार

जूटी गये जगाम जोवन तन स्रम स्वेद कन कल वि
मल वदन उभराई वर। सीस मौली कंठ ग्रीव श्रान
न वदन वक्र छुती छके प्रेम दृग लोचन लिलाई
पर। भुजसों उरज भुज केस कच कटि कट पटपी
न कामर कलिन लपटाई वर। गावर न जान्यू मैनो
तन मन धन प्रान वार डारहूं ऐसे मीत मीनको मि

गा॰गे
भ॰

19

नाईपर। कीट लटगायो मणि मकमान टूटी लरी
वेसरि परी यरन सूपना सरीर स्याम। गदगद वा
नि बैन बोल नन दन बोल नोलन अमोल प्रेम नै
न नीके नीर स्याम। लोम हरषाने जटहोत तन ज
गाने जग जीवन जिताने पीत पीरष सरीर स्याम।
आये मेरे भौन मैं मीनबोले गाथा बैन मोसों अग

गा॰
२६

गात घत्त घत्त कौन धीर धाम ॥ सवैया ॥ वादिन

के विछुरे वरसानसौं आज मिले मोहि मीत पयारे ।

लोचन चाह विलोकनकी कस लालस होत विरा

म हमारे । साजन भेटसौं काज सरेसव आज उदय

जगा भाग विचारे । मोसम धन्य न आन महान मिले

जहि नीत मजान पसारे । सेस महेस गणेस सराह

रा.गं.
भ.

र देव दनेस सरेस लो सारी । गंधर्व किन्नर नाग मनि
द्र सिद्ध जोगिंद्र ज्ञान रनारी । जास प्रसाद तैं धन्य व
लाए सो होत कठिन महा व्रत धारी । ते निज धन्य
लहै वट भेट सुगमा प्रेम की रीति नियारी ॥ इति
श्री राम गंधार भक्तिमाला परिच्छेदः समाप्तं

20

43

अथ राग गंधार रामायण परिछेद माह। ताल

चौपाई॥ एकबार भूपति मन माहीं। भै गलानि

मोरे सुत नाहीं। गुरगृह गये तुरत महिपाला। चर

ण लागि करि बिनय बिसाला। निज दुख सुख सब गुर

हि सुनायउ। कहि बसिष्ठ बहु बिधि समझायउ। धर

हु धीर होइहहिं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भगत भयहारी

रा॰ गे॰
रामा

शृंगीरिषिहि वसिष्ठ वोलावा। पुत्रकाम शुभ यज्ञ करा
वा। भक्ति सहित मुनि आहुति दीन्हे। प्रगटे अगिनि च
रू कर लीन्हे। जो वसिष्ठ कछु हृदय विचारा। सकल
काज भा सिद्ध तुम्हारा। यह हवि वांटि देहु नृप जाई।
यथा योग जेहि भाग वनाई। दोहा। तव अदृश्य भए पावक
सकल सभहि समझाइ। परमानंद मगन नृप हर्षि

न हृदय समाई ॥ चौपाई ॥ तबहिं राउ प्रिय नारि बुला
ई । कौशल्यादि तहां चलि आई ॥ अर्द्ध भाग कौश
ल्यहिं दीन्हा । उभय भाग आधे कर कीन्हा ॥ कैक
यी कहं नृपलै दयऊ । रहेउ सोउ भय भाग पुनि भ
यऊ ॥ कौशल्या कैकयी हाथ धरि । दीन्हसुमित्रहि

रा

रा.म

मन प्रसन्न करि ॥ इहि विधि गर्भ सहित सब नारी ॥
भयेउ हृदय हर्षित सुख भारी ॥ जा दिन तें हरि गर्भहिं
आये । सकल लोक सुख संपति छाये ॥ मंदिर में सब
राजहिं रानी ॥ शोभाशील तेज की खानी ॥ सुख युत
कछुक काल चलि गयेउ । जेहि प्रभु प्रगट सो अव

सुर भयऊ ॥ दोहा ॥ योग लग्न ग्रह वार तिथि सकल भ
ये अनुकूल । चर अरु अचर हर्ष युत राम जन्म सुख
मूल ॥ चौपाई ॥ नवमी तिथि मधु मास पुनीता । शुक्ल
पक्ष अभिजित हरि प्रीता ॥ मध्य दिवस अति शीत न
घामा । पावन काल लोक विश्रामा ॥ शीतल मंद सुर

रा
रा.स

भि बह बाऊ। हरषित सुर संतन मनचाऊ॥ बन कुसुमि
त गिरि गण मणि आरा। स्रवहिं सकल सरिता म्रत
धारा॥ सो अवसर बिरंचि जब जाना। चले सकल सु
र साजि बिमाना॥ गगन बिमल संकुल सुर जूथा।
गावहिं गुण गंधर्व बरूथा॥ हर्षहिं सुमन सुअंजलि

साजी। गहगह गगन दुंदुभी बाजी॥ अस्तुति करहिं
नाग मुनि देवा। बहु बिधि लावहिं निज निज सेवा॥ दो॰
सुर समूह बिनती करी पहुंचे निज निज धाम। जग
निवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक बिश्राम॥ छंदः॥
भये प्रगट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हित कारी

रां. हर्षित महतारी मुनिमन हारी अद्भुत रूप निहारी॥

रा.स. लोचन अभि रामा तनु घन श्यामा निज आयुध भुज

चारी॥ भूषण बन माला नयन विशाला शोभा सिं

धु खरारी॥ कहुजरु कर जोरी अस्तुति तोरी केहि वि

धि करौं अनंता॥ माया गुण ज्ञाना तीन अमाना वेद

२४८

पुराण भनंता ॥ माया गुण ग्यानातीत अमाना वेद पुरा
ण भनंता ॥ करुणा सुख सागर सब गुण आगर जे
हि गावहि श्रुति संता ॥ सोममहित लागी जन अनु
रागी प्रगट भये श्रीकंता ॥ ब्रह्मांड निकाया निर्मित
माया रोमरोम प्रति वेद कहै ॥ मम उरसोवासी यह

रा
रा.म
5

उपजहासी सुनत धीर मति थिर नरहै ॥ उपजा जब ज्ञा
ना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत विधि कीन्ह चहै ॥
कहि कथा सुनाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम
लहै ॥ माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात य
ह रूपा ॥ कीजै शिशु लीला अति प्रिय शीला यह सु

२४५

व परम अनूपा ॥ सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ

य बालक सुरभूपा ॥ यह चरित जे गावहि हरि पद

पावहिं ते न परहिं भव कूपा ॥ दोहा ॥ विप्र धेनु सुर

संत हित लीन्ह मनुज अवतार ॥ निज इच्छा निर्मित

तनु माया गुण गोपार ॥ चौपई ॥ सुनि शिशु रुदन प

रा॰
रा॰स

रम प्रिय बानी। संभ्रम चलि आइ सब रानी॥ हर्षित
जहं तहं धांई दासी। आनंद मगन सकल पुरवासी॥
दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना। मानहुं ब्रह्मानंद स
माना॥ परम प्रेम मन पुलक शरीरा। चाहत उठन
करत मति धीरा॥ जाकर नाम सुनत शुभ होई। सो

२५

रे गृह आवा प्रभु सोई ॥ परमानंद पूरि मन राजा । कहा बुलाइ बजा बहु बाजा ॥ गुरु वसिष्ठ कहं गयउ हंकारा । आये द्विजन्ह सहित नृप द्वारा ॥ अनुपम बालक देखिन जाई । नृप राशि गुण कहि नसि राई ॥ दोहा ॥
नव नांदी मुख श्राद्ध करि जात कर्म सब कीन्ह । हाट

गं
रा॰स

क धेनु बसन मणि नृप विप्रन कहं दीन्ह ॥ चौपई ॥
ध्वजपताक तोरण पुर छावा । कहि न जाइ जेहि भांति ब
नावा ॥ सुमन वृष्टि आकाशते होई ॥ ब्रह्मानंद मगन
सब कोई ॥ वृन्द वृन्द मिलि चली लुगाई । सहज सिं
गार किये उठि धाईं ॥ कनक कलश मंगल भरि थारा ।

गावत पैठहिं भूपद्व आरा ॥ करि आरती निछा वरि कर

हीं । वारवार शिष्ठ चरणन परहीं ॥ मागध सूत वंदी

गण गायक । पावन गुण गावहिं रघुनायक ॥ सर्व

सदा नदीन्ह सब काहू । जेहिपावा राखा नहि ताहू ॥

मृग मद चंदन कुंकुम सीचा । मची सकल वीथिन ।

रां
रा॰स

विव कीन्हा ॥ दोहा ॥ गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटभ
ये सुखकंद। हर्ष वंत सब जहं तहं नगर नारि नर वृ
न्द ॥ केकय सुता सुमित्रा दोऊ। सुंदर सुत जनमत
भैओऊ ॥ वह सुख संपति समय समाजा। कहि न
सकै शारद अहि राजा ॥ अवध पुरी सोहै इहि भांती।

प्रभुहि मिलन आई जनु राती ॥ देखि भानु जनु मन स

कुचानी । तदपि बनी संध्या अनु मानी ॥ अगर धूप

जनु बहु अंधियारी । उडै अबीर मनहु अरुणारी ॥

मंदिर मणि समूह जनु तारा । नृप गृह कलश सो

इंदु उदारा ॥ भवन भेद धुनि अति मृदु बानी । जनु

रा॰ खग मृखर समय सुखमानी ॥ कौतुक देखि पतंग भु

रा॰स लाना एक मासतेहि जातन जाना ॥ दोहा ॥ मास दिव

सका दिवसभा मरमन जानै कोइ । रथ समेत रविथा

केऊ निशा कवन विधि होइ ॥ चौपई ॥ यह रहस्य काहू

नहि जाना । दिन मणि चले करत गुण गाना ॥ देखि

२५२

महोत्सव सुर मुनि नागा। चले भवन बरनत निजभा

गा॥ औरौं एक कहौं निज चोरी। सुनु गिरिजा अति

दृढ मति तोरी॥ काक भुसुंडि संग हम दोऊ। मनु

ज रूप जानै नहि कोऊ॥ परमा नंद प्रेम सुख फूले।

बीथिनफिरहिं मगन मन भूले॥ यह सब चरित जा

रा॰ नवै सोई। कृपा रामकी जापर होई॥ तेहि सब सर जो
रा॰म जेहि विधि आवा। दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा॥ गज
10 रथ तुरग हेम गो हीरा। दीन्हे नृप नाना विधि चीरा॥
दोहा॥ मन संतोष सब निके जहं तहं देहिं असीस।
सकल तनय चिरजि अहु तुलसी दासके ईस॥ चौ॰

२५४

कछुक दिवस बीते इहि भांती। जातन जानहि दिन अ
रु राती॥ नाम करण अव सर जानी। भूप बोलि पठये
मुनि ज्ञानी॥ करि पूजा भूपति अस भाषा। धरिय ना
म जो मुनि गुनि राषा॥ इनके नाम अनेक अनूपा॥
मैं न्रप कहव स्वमति अनरूपा॥ इनके नाम अनेक

रा.
राम

अनूपा ॥ जो आनंद सिंधु सुख रासी । सीकरते त्रैलोक

सुपासी ॥ सोसुख धाम राम अस नामा । अखिल लो

क दायि कवि आमा ॥ विस्व भरण पोषण करु जोई । ता

कर नाम भरत अस होई ॥ जाके सुमिनते रिपु नासा ।

नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा ॥ दोहा ॥ लक्षण धाम राम

२५५

प्रिय सकल जगत आधार। गुरु वसिष्ठ तेहि राषा ल
छमण नाम उदार॥ चौपई॥ धरे नाम गुरु हृदय विचा
री। वेद तत्व नृप तव सुत चारी॥ मुनि जन धन सर्व
सशिव प्राना। बालकेलि रस तेहि सुख माना॥ बार
हि ते निजहित पति जानी। लछ्मण राम चरण रति

रां.
रा.स.

मानी ॥ भरत शत्रुहन दोनौं भाई । प्रभु सेवक जस प्री
ति बड़ाई ॥ श्याम गौर सुंदर दोउ जोरी । निरखहिं छ
वि जननी त्रण तोरी ॥ चारिउ शील रूप गुण धामा ।
तदपि अधिक सुख सागर रामा ॥ हृदय अनुग्रह इं
दु प्रकासा । सूचत किरण मनो हर हासा ॥ कबहुं

उछंग कबहुं वर पालन। मातडुला रहिं कहि प्रिय

लालन॥ दोहा॥ व्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुण विग

त विनोद। सोअज प्रेम भक्ति बस कौशल्या की गोद

चौपई॥ काम कोटि छवि श्याम शरीरा। नील कंज

वारिद गंभीरा॥ अरुण चरण पंकज नख जोती। क

मल दलन बैठे जन मोती ॥ रेख कुलिश ध्वज अंकुश
सोहैं । नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहैं ॥ कटि किं
किणी उदर त्रय रेखा । नाभि गंभीर जानिजेहि देखा
भुज विशाल भूषण युत भूरी । हिय हरिनख शोभा
अति रूरी ॥ उर मणि हार पदिक की शोभा । विप्र चर

ए देखत मन लोभा ॥ कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई । आ

नन अमित मदन छवि छाई ॥ उरइउर दसन अधर

अरुणारे । नासा तिलक को वरनै पारे ॥ सुंदर श्रव

ण सुचारु कपोला । अति प्रिय मधुर सुतो तरि वोला

नील कमल दोउ नयन विशाला । विकट भ्रकुटि ब

रा॰
रा॰स॰

ट कन वर माला ॥ विक्रमा कच क्रुचित गभु आरे । ब
हु प्रकार रवि मात सं वारे ॥ पीतफिं गुलि यातन
पहि राये । जान पाणि बिचरत महि भाये ॥ नृप स
कहिं नहिं कहि प्रकति शेषा । सोजानै सपने हु जिन्ह
देषा ॥ दोहा ॥ सखसं दोह मोह पर ज्ञान गिरा गोती

१४

२५८

न ॥ दंपति परम प्रेम बस कर शिसु चरित पुनीत ।
चौपई ॥ इहि बिधि राम जगत पितु माता । कोशल
पुर बासिन सुख दाता ॥ जिन रघु नाथ चरण रति
मानी । तिनकी यह गति प्रगट भवानी ॥ रघुप
ति बिमुख यतन कर कोरी । कवन सके भव बं

रा॰म

धन छोरी॥जीव चराचर बस कै राषे।सो माया प्रभु सो भय भाषे॥भृकुटि बिलास नचावै ताही।अस प्रभु छाडि भजिय कहु काही॥मन क्रम वचन छाडि चतुराई।भजत कृपा करिहैं रघुराई॥इहि बिधि शिशु बिनोद प्रभु कीन्हा।सकल नगर बासिन सुख

२५

दीन्हा ॥ लेउ उछंग कबहूं हलरावै । कबहूं पालन घा
लि झुलावै ॥ दोहा ॥ प्रेम मगन कौशल्या निशदिन
जात न जान ॥ सुत सनेह बस माता बालचरित क
रि गान ॥ चौपई ॥ एक बार जननी अन्हवाये । करि सिं
गार पलना पौढाये ॥ निज कुल इष्टदेव भगवाना ।

रा॰ प्रजा हेत कीन्ह पकवाना ॥ करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा
रा॰स आपु गई जहँ पाक बनावा ॥ बहुरि मातु तहँ बोचलि
आई । भोजन करत दीख रघुराई ॥ गइ जननी सिसु
पहँ भय भीता । देखा बाल तहाँ पुनि सूता ॥ बहुरि
आइ देखा सुत सोई । हृदय कंप मन धीर न होई ॥ इ

16

२९०

हां उहां उह बालक देखा। मति भ्रम मोरि कि आन विशे
षा॥ देखि राम जननी अकुलानी। प्रभु हंसि दीन्ह म
धुर मुसकानी॥ दोहा॥ दिखरावा मातहि निज अ
द्भुत रूप अखंड। रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्र
ह्मंड॥ चौपाई॥ अगणित रवि शशि शिव चतुरानन

रा.
रा.म

बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन ॥ काल कर्म गु
ण दोष सुभाऊ। सो देखा जो सुना न काऊ ॥ देखी मा
या सब बिधि गाढ़ी। अति सभीत जोरे कर ठाढ़ी।
देखा जीव नचावै जाही। देखी भक्ति जो छोरै ताही।
तन पुलकित मुख बचन न आवा। नयन मूंदि चर

17

२८१

गन सिर नावा ॥ विसमय वंत देखि महतारी । भये
बहुरि शिसु रूप खरारी ॥ अस्तुति करि न जाय भ
य माना । जगत पिता मैं सुत करि जाना ॥ हरिजन
निहि बहु विधि समझाई । यह जनि कतहुं कह
सि सुनु माई ॥ दोहा ॥ वार वार कौशल्या विनय

रा॰ करै कर जोरि । अब जनि कबहूं ब्यापै प्रभु मोहि माया

रा॰स नोरि ॥ चौपई ॥ बाल चरित हरि बहु विधि कीन्हा ॥

अति अनंद दासन कह दीन्हा ॥ कछुक काल बीते

सब भाई । बिप्रन पुनि दक्षिणा बहु पाई ॥ परम

मनो हर चरित अपारा । करत फिरत चारिउ सकु

१८

२६२

मारा ॥ मन क्रम वचन अगोचर जोई। दशरथ अजि
र विचर प्रभु सोई॥ भोजन करत बुलावत राजा।
नहिं आवहिं तजि बाल समाजा॥ कौशल्या जब बो
लन जाई। ठुमकि ठुमकि प्रभु चलहिं पराई ॥
निगम नेति शिव अंत न पावा। ताहि धरै जननी ।

रा॰
रा॰म॰

हरिधावा॥ भ्रमत भ्रत भरे तन आये। भूपति विहंसि
गोद वैठाये॥ दोहा॥ भोजन करत चपल चित इत
उत अवसर पाइ। भाजि चले किलकात मुख दधि
ओदन लपटाइ॥ चौपई॥ बाल चरित अति सरल
सुहाये। शारद शेष शंभु श्रुति गाये॥ जिन कर ।

19

१६३

मन इन मन नहि राता॥ तेजग बेवित किये विधा
ता॥ भये कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ ग
रु पित माता॥ गुरु गृह गये पढ़न रघुराई। अल
प काल विद्या सब पाई॥ जाके सहज स्वास श्रुति
चारी॥ सो हरि पढ़ यह कौतक भारी॥ विद्या वि

रां
रा.स

नय निपुण गुण शीला। खेलहिं खेल सकल नृप लीला॥ करतल बाण धनुष अति सोहा। देखत रूप चराचर मोहा॥ जिन्ह वीथिन्ह बिहरहिं सब भाई॥ थकित होहिं सब लोग लुगाई॥ दोहा॥ कोशल पुर वासी नर नारि वृद्ध अरु बाल। प्राणहुते प्रिय ला

२०

२६४

गले सब कहं राम कृपाल ॥ चौपई ॥ बंधु सखा संग लेहिं बुलाई । बन मृगया नित खेलहिं जाई ॥ पावन मृग मारहिं जियजानी । दिन प्रति नृपहिं देखा ब हिं आनी ॥ जो मृग राम बाणके मारे । तेतनु त जि सुर लोक सि धारे ॥ अनुज सखा संग भोजन

रा॰
रा॰म

करहीं। मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं॥ जेहि विधि सु
खी होहिं पुर लोगा। करहिं कृपा निधि सोइ संयोगा॥
वेद पुराण सुनहिं मन लाई। आपु कहहिं अनुजहि
समुझाई॥ प्रातकाल उठिके रघुनाथा। मातु पिता
गुरु नावहिं माथा॥ आयसु मांगि करहिं पुर काजा

(21)

२६५

देखि चरित हरषहि मन राजा ॥ दोहा ॥ व्यापक ब्र
ह्म अनीह अज निर्गुण नाम न रूप । भक्त हेत
नाना विधि करत चरित्र अनूप ॥ चौपई ॥ यह सब
चरित कहा मैं गाई । आगिल कथा सुनहु मन
लाई ॥ विश्वा मित्र महा मुनि ज्ञानी । वसहि विपिन

रा॰स॰

शुभ आश्रम जानी ॥ तहं जप यज्ञ योग मुनि करही अति मारीच सुबाहुहि डरहीं ॥ देखत यज्ञ निशाचर धावहिं । करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥ गाधि तनय मन चिंता व्यापी । हरि बिनु मरहि न निशचर पापी ॥ तब मुनि वर मन कीन्ह बिचारा ॥

२६८१

प्रभु अवतरेउ हरण महि भारा ॥ इहि मिसि देखौ प्र
भु पद जाई । करि विनती आनौ दोउ भाई ॥ ज्ञान वि
राग सकल गुण अयना । सो प्रभु मैं देखब भर न
यना ॥ दोहा ॥ बहु विधि करत मनो रथ जातन
लागी वार । करि मज्जन सरजू जल गये भूप दर

रां
रा स

93

वार ॥ चौपाई ॥ मुनि आगम सुना जब राजा । मिल
न गयउ लै विप्र समाजा ॥ करि दंडवत मुनी सन
मानी । निज आसन बैठा रिन आनी ॥ चरण पखा
रि कीन्ह अति पूजा । मोसम आज धन्य नहि दूजा
विविधि भांति भोजन करिवावा । मुनिवर हृदय

हर्ष अति छावा ॥ पुनि चरणन मेले मन चारी । रा
म देखि मुनि विरति बिसारी ॥ भये मगन देखत
मुख शोभा । जनु चकोर पूरण शशिलोभा ॥ तब
मन हर्षि वचन कहराऊ । मुनि अस कृपा कीन्ह
नहिं काऊ ॥ केहि कारण आगन तुम्हारा । कहहु

रा॰ रा॰स

सो कर तन लाउब बारा ॥ असुर समूह सता वहि मोही । मैयावन आयेउं नृप तोही ॥ अनुजसमेत देहु रघु नाथा । निसचर बध मैं होब सनाथा ॥ दोहा

देहु भूप मन हर्षित तजहु मोह अज्ञान ॥ धर्म सुय श नृप तुम कहुं इन कहुं अति कल्यान ॥ चौपई ।

इति रामगेधाररामायणपरिच्छेदः समाप्तः ॥ शुभं

२९८

२५

ॐ अथ पंचम रागस्य स्वरसागर परिच्छेद माह ।

श्रीरणवीरसिंहकृत

सूरदासकृत । राग गौरी रागपंचम ताल ३ ।

२ग २म २प २नि ३सं २प २म २ग २ग २म २प २नि ३सं

बौरे मन समुझ समुझ कछु चेत । इतनो जन

२नि २प २म २ग २रे २ग २म २प २म २ग २म

म अकारथ षोयो स्याम चिकुर भये सेत ।

२ग २म २प २नि २सं २नि २प २म २ग २रे २ग २म

तबलौं सेवा करि निहचै सो जब लौं हरुवा

राग गौरी सूरदासकृत सरगम ताल ३ ॥ सरेगमपधपमगरेस ॥ मपधनिसंरेंसंनिधपमगम गरेस ॥ मपधनिसंरेंसंनिधपमगमगरे ॥

राम बैन । सूरजदास भरम निरख्यो खोयो स्याम वि
छुर भये सेन । नवलो सेवा करि निहचै सों
जब लो हरु वाषेन । सूरज दास भरम जिन
भूलो करि बिपनासो हैन ।५४। रागधनासि
री सूरदासकृत । राग पंचम । ताल ३ । रेसव
रेम ॥ मधनिसरेमनिधधमगरेम ॥ राग धनासिरी सूरदासकृत सरगम ताल ती
न ॥ राम ॥ ✤ ॥

बिनु गोविंद सुष नांही। तेरे दोष हर करिबे

कों बिद्ध सिद्ध फिरजांही। सिव बिरंच सन

कादि मुनी जन उनकी गत अव गांही। ज

गत पिता जगदीस सरन बिनु सुष तीनों

पुर नांही। और सकलमें दोष छूटे बादरकें

धरेपधमगरेस ॥ मपनिसनिधपमगरेस ॥ मपनिसरेसनिधपमगरेस ॥ मपनिस

रेसनिधपमगरेस॥ मपनिसरेसनिधपमग ॥

गः से क्याहीं। सूरदास भगवंत भजन विन दुष क

सः है नहीं जाहीं।१६। राग कान्हरा सूरदासकृत

राग पंचम। ताल ३। मनतौ सौं कोटि कवार

कहीं। सकुन न चरन गहे गोविंदके उर अघ सू

ल सही। सुमिरन ध्यान कथा हरिजूकी यह

रेस।। मपनिसरेसनिधपमगरेस।। राग कान्हडा सूरदासकृत सर्गम ताल तीन।।
सरेगमगरेस।। मपनिसरैसनिधपमगरेस।। मपनिसरैसनिधपमगरेस।। मपनिसरैस
निधपमग।।

एकोन भई। लोभी लंपट विषय न मोहत यह मेरी निवही। छाडि कनक मणि रतन अमोलक कांचकी किरच गही। ऐसो नहै चतुर विवेकी पैनज पीयत मही। ब्रह्मादिक रुद्रादिक रवि ससि देषे सुर सबही। सूरदास भगवे

रेस ॥ मपनिसरेसनिपपमगरेस ॥ मपनिसरेसनिपपमगरेस ॥ मपनिसरेसनिपप

मगरेस ॥ मपनिसरेसनिपपमगरेस ॥ मपनिसरे ॥ ∴ ॥

रा.
स.

न भजन विउहषनि हू लोकनहीं ।९७। रागप
रज सूरदासकृत । राग पंचम । ताल २ । मनारे
माधव सौं करि प्रीत । काम क्रोध मद लोभ मो
ह तू छांडसबै विपरीत । भौरा भोगी वनभ्रमै
मोदन मानै ताप । सब कुसुम निमिल रस करै

सनिधपमगरेस ॥ राग पंजे सूरदासकृत सरगमताल २ ॥ मपनिधपमगरेस ॥ गमप
निसरेसनिधपमगरेस ॥ गमपनिसरेसनिधपमगरेस ॥ गमपनिसरेस ॥ ∴ ॥

२प २धु २म २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २नि २प

कमल वंधावै प्राप । हनिपर मिन पिप्रेम की

२धु २म २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २नि २प

चातक विनवन चारि । घनप्रासा डंषमहै स

२धु २म २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २नि

वष्रन नन जावैवार । देषो करनी कमल

२प २धु २म २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २नि

की जलसौं कीनौ हेत । प्रानतजै प्रेमन न

२प २धु २म २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २नि

नै सकैं मरहि समेत । दीपक पीरन जान

नियधपमगरेस ॥ गमधनिसंरेंसं नियधपमगरेस ॥ गमधनिसंरेंसं नियधपमगरेस । गमधनि

संरेंसं नियधपमगरेस ॥ गमधनिसंरेंसं नियधपमगरेस ॥ गमधनिसंरेंसं ॥ ❖ ॥

ग. स्र.

२प २ध २म २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २नि २प
ई पावक पवन पतंग । तनतो निहिं ज्वाला ज

२ध २म २ग २रे २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २नि
ह्यौं चितन भयो रस भंग । मीन वियो गन स

२प २ध २म २ग २रे २सं २म २प २नि २सं
हसके नीरन छूके बान । देखिजे तनाकी गत

२नि २प २ध २म २ग २रे २सं २म २प २नि २सं
हि रतिन घटै तन जान । श्रीनपरे वाके गतो

२नि २प २ध २म २ग २रे २सं २म २प २नि २सं
बाहन चढन प्रकास । निहिं वधि नियहि जे

नियधमगरेस ॥ गमपनिसरेसनिपधमगरेस ॥ गमपनिसरेसनिपधमगरेस ॥ गमपनिस
रेसनिपधमगरेस ॥ गमपनिसरेसनिपधमगरेस ॥ गमपनिस ॥ ⁘ ॥ ⁘ ॥

२नि २ध २प २म २ग २रे २सा २म २ध २नि २सा २नि
देखियै परत ब्याडु उरमास । सुमिन सनेह ऊरे

२ध २प २म २ग २रे २ग २रे २सा २म २ध २नि २सा २नि
गको श्रवननि गयौ राग । यरन सकत परग

२ध २प २म २ग २रे २ग २रे २सा २म २ध २नि २सा
पिक मनु सरसन्ध्य मुरलाग । देखन जरन

२नि २ध २प २म २ग २रे २ग २रे २सा २म २ध २नि
जड नारिके जरत प्रेतमके संग । विनान वि

२सा २नि २ध २प २म २ग २रे २सा २म
नफीको भयौ रचौज पीयके रंग । लोक

रेसानिधपमगरेस ॥ गमधनिसारेसानिधपमगरेस ॥ गमधनिसारेसानिधपमगरेस ॥ गम
धनिसारेसानिधपमगरेस ॥ गमधनिसारेसानिधपमगरेस ॥ गमधनि ॥ ॥

गा· वेद वर्जत सबै नैन निदेषत जास। चोरत जिय

स्र: चोरीतजै सरवस सहै विनास। सब रस कोरस

5

प्रेम सहै विषयी छैले मार। नेन मन पनजो वन

वैटे नरुन माने हार। नैं जरनन पायो भलो

जागो साथ समाज। प्रेम कथा अनुदिन सुनी

सरेमनिपधमगरेम ।। गमपनिसरेसनिपधमगरेस ।। गमपनिसरेसनिपधमगरेम ।। ग
मपनिसरेसनिपधमगरेम ।। गमपनिसरेसनिपधमगरेम ।। गमपनिसरेसनिपधमग

न ऊन उपजी लाज । सदा संघाते आपनो जीय
कौ जीवन प्रान । ताहे बिसाऱ्यौ सहजही हरि
ईस्वर भगवान । वेद पुरान स्मृति सबै सुरनर
सेवन जाहि । महा मूढ़ अज्ञान मति क्यौंन से
भवन ताहि । खग मृग लीन पतंगलौ मोसो
ये सब ठौर । जलथल जीव जेते तिते कहूं क

गा॰ सु॰

होलो घोर। प्रभु पूरन पवन सखा प्रानन हूं कों
नाथ। परम कृपाल दयाल प्रभु जीवन जाके
हाथ। गर्भवास अति त्रासमैं जहां न एको अंग।
सुनति रो तहं प्रान पति नै ऊन राख्यौं संग।
दिन राती पोषत रह्यौं जैसे चोली पान। वाउ
यातै तोहि काढिकै लै दीनो ये पान। जन जउतैं

6

चेतन किधौं रज्ज गुन तत्व विधान । चरन विहू
र करन षट पंचैन नासिका कान । श्रवनब
सन बहु विधि दिये औसर औसर आन । मात
पिता भैया मिले नई रुचन पहि चान । सज्जन
कुटंब परजन बढे सुत दारा धन धाम । महा
मूढ विषये भयो चित्त श्रा करष्यो काम । षान

ग
सू

मान परथान रस जोवन गयो विलीन। जोवि
ट पतिपर तीय बस भोर भयौं भयौ भीन। जैसे
सुषही धन बढ्यौं तैसे अनन अनंग। सुमबढ्यौं
लोचन गहैं सषान सुषयौं संग। जबजान्यौं
सभ जग सुन्यौं बाढ्यौ अजस अपार। बीच
नका हू नव किये हनि दीनी मार। कहा

जानै कई बार सुधौ ग्रैसे ऊमत्त ऊमीच। हरि
सौं हेत बिसारकै सुष चाहत है नीच। जौ पै
जियल जानही कहा कहौ सौ बार। एकहू ये
कन हरिभजे रेसठ मूढे गवार।९८। राग
कल्यान सूरदासकृत। राग पंचम। ताल ।
थोषैंही योषे उहकायो। समुकनपरी विषयर

रा
म

सुगीयो हरिहीरा घरमाहिं गवांयौं। ज्यौंकुरंग
जलदेषि अवनकौ प्यासन गई चहूंदिस धायौ।
जनम जनम बहू कर्म कियेहैं तिनमैं आपुन आ
पु बंधायौ। ज्यौंसुक सेंवर सेव आलस निसि
सवारहित चित लगायौ। रीतो पर्यौ जबै फल
चाख्यौं उडिगयो तूल तांवरौ आयौ। ज्यौं कपिडो

8

र बांधबाजी गरकनकनकौं चौहटैन चायौ ।
सूरदास भगवंत भजनबिन कालब्यालपै आ
पडसायौ ।५५। राग धनासिरी सूरदासकृत।
राग पंचम । ताल । जनम गवायौ ऊआबाई
भजेनचरन कमल जदुपतिके रह्यौं बिलोक
तछाई । धनजीवन मद्यौं ऐंठो ताकत नारपराई।

रा॰ लालचलव स्रान कृदिन ज्यौं मोहे ह्राथन आई।
सू॰ ऐक कांच सषलागि सृष्फिमन कंचन गमगवा
ई। सूरदास प्रभु क्रारि सपारस विषय परम वि
षयाई। २००। राग धनाश्री सूरदासकृत।
राग पंचम। ताल । भक्त कविकरहो जनम
सिरानौ। बालापन षेलत ही षोयो तरुनापे

ॐ श्रथ सूरसागर परिच्छेद माह ॥ रागसारंग रागिनी सैंधवी ॥ ताल तीन ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ ॥ हरि चरनारबिंद उरधरौ ॥ हरि वियोग पंडतन राज ॥ गाये वन कियो परीछत राज ॥ कहै सूर कथा सुनो चित ॥

राग सारंग सूरदासकृत सर्गम ॥ ताल तीन ॥ मरेमपमरेस ॥ निपानिसमरेस ॥ मपानिसनिपम ॥ निपमरेमरेस ॥ निपमरेमरेस ॥ ❖ ॥

रा॰ धार। सुरकैहू भागौन ग्रनुसार। गगावि

सु॰ लावल मैंथपी।। ताल तीन ।। राग्यासौ ग्रज

न सिरनाइ। कह्यौ सुनौ विनती सुरराइ।

बहुदिन भये हरि सुधि नई पाई। आज्ञा

होइ तौ देखौजाई। यह कहि पायथ हरि ९

निधमरेमरेस ।। ❖ ।। राग बिलावल सरगम सूरदासकृत तीनताल ।। मधपनिसनिधप ।।
मगरेगरेस ।। मधपनिसनिध ।। पमगगरेरेस ।। मधपनिसनिप ।।

२सं २नि २ध २प २म २ग २रे २सं

र गए । मेरो सकल जादव ब्रय भए ।

२म २प २नि ३सं २ग ३रे ३सं २नि २ध २प

अरजुन सुनत नैन जलधार । परो पर

२म २ग २रे २सं २म २प २नि ३सं ३ग ३रे

नि परषार पछार । तव दारक संदेस सु

३सं २नि २ध २प २म २ग २रे २सं

नायो । कह्यो हरिजूने गीतागायो ।

२म २प २नि ३सं २ग ३रे ३सं २नि २ध २प

सो सरूप ममहिरदै आन । रह्यो सदा

पमगगरेरेस ॥ मपधनिसंनिध ॥ पमगगरेरेस ॥ मपधनिसंनिध ॥ मपगगरेरेस ॥

मपधनिसंनिध ॥ मपग ॥ ❖ ॥

२म २ग २रे २स २म २ध २नि २स ३ग ३रे

गा॰ करत मम ध्यान । नव अरजन मम धीर

२स २नि २प २ध २म २ग २रे २स २म

स्॰ न धरि । चल्यो मेगलैजे नरनारि । न है

२ध २नि ३स ३ग ३रे ३स २नि २प २म २म

का वनमो भई लगाई । ल्हटेसम विन स्या

ग २रे २स २म २ध २नि ३स ३ग ३रे

म सहाई । अरजन बहुत डुषित नवभ

३स २नि २प २ध २म २ग २रे २स २म

ए । यह अपम गुना होन निननये । तेवै

गरेस ॥ मधपनिसनिध ॥ पमगगगरेरेस ॥ मधपनिसनिध ॥ मधगगगरेरेस ॥ मध

पनिसनिध ॥ मधगगगरेरेस ॥ म ॥

वृषभ तुरंग ग्रह नाग। स्याल दिवस नि

स बोलै काग। कैधे भुव वरषा नहि होइ।

भयो सोच नृप चित यह जोइ। इहि ग्रन्तर

ग्ररजुन फिरि ग्रायो। राजा के चरनन सि

र नायो। राजा याको कैहन लगाई। क

पधनिसनिध ॥ पमगगरेरेस ॥ मपधनिसनिध ॥ मपगगरेरेस ॥ मपधनिसनिध ॥

मपगगरेरेस ॥ मपधनिसनिध ॥ ॥ ॥

२प २ध २म २ग २रे २सं २म २ध २नि २सं
गा॰ हौं कमल है जादवराई। बल वसुदेव कम

२ग २रे २सं २नि २प २ध २म २ग २रे २सं
स्र॰ ल सबलोइ। अरजुन यहसुन दीनोरोइ।

२म २ध २नि २सं २ग २रे २सं २नि २प २ध
राजा कहौं कहाभयो तोहे। तूकौ कह

२म २ग २रे २सं २म २ध २नि २सं २ग २रे
न सुनावत मोहे। काहू ग्रसन कारनव

२सं २नि २प २म २ध २ग २रे २सं
कियौ। कैकहिं दानन द्विजकौं दियौ।

पमगगरेरेस ॥ मधपनिसनिध ॥ पमगगरेरेस ॥ मधपनिसनिध ॥ मधगगरेरेस ॥
मधपनिसनिध ॥ मधगगरेरेस ॥ ❖ ॥ ⁘ ॥

२म २पै २नि २सं २ग २रे २सं २नि २ध

कैसर नागन कौनहि राषौ । कैनोसो

२पै २म २ग २रे २सं २म २पै २नि २सं २ग २रे

काहू कटुभाषौ । कैहरिजू भये ग्रेनरध्या

२सं २नि २ध २पै २म २ग २रे २सं २म २पै

न । मोसोंकहि ते प्रगट वषान । नवप्रर

२नि २सं २ग २रे २सं २नि २ध २पै २म २ग

जुन नैननि जलधार । राजासो कहेंगे व

२रे २सं २म २पै २नि २सं २ग २रे २सं

चन उचार । सूरजू प्रभु वैकुंट सिधारै ।

मपधपनिसनिध ॥ मपधगगरेरेस ॥ मपधपनिसनिध ॥ मपधगगरेरेस ॥ मपधपनिसनि
ध ॥ मपधगगरेरेस ॥ मपधपनिसनिध ॥ ❖ ॥ ❖

२ति २प २पै २म २ग २रे २सै

रा॰ तिहि बिनकौ ममकारज सारै ।५८। राग

स॰ धनासिरी रागिनी सैंधवी । ताल ॥तीन॥ । हरि

बिनकौ पूरवै मेरो स्वारथ । मूंड फनन सी

मकर मारुत रुदन करत नृप पारथ ।

धकेहस्त चरननि गनिष्याकी ग्रहयाकौ

पमगगरेरेसा ॥ इति सूरदास कृत सरगमः ॥ ❖ ॥ १० ॥

पुरषा रथ। पांच बाण लेकर मोह
दीने ले ऊगये प्रकारथ। जाके से
ग लेन वेधकीनौ जीन्यौ महा
भारथ। गोपी हरी हरके प्रभु
बिन छूट तन प्रान पदारथ। राग

रा॰ बिलावल रागिनी सैंधवी। ताल ।
स्थ॰ यहसुन राजा रोइ पुकारे। भीमा दि
क रोये पुन मारे। रोवन सुन ऊंता
नहा आई। कहौं ऊमल जादव जइ
राई। अर्जुन कहौ सवै लरमुए। हरि

45

बिनु हम अनाथ सब भूप। कुंता प्रा
न तजे पथ्यान। जीवन मरन उनहि
भल जान। राज परीक्षित को नृप
दीनो। वज्रनाभ मथुरा पति कीनो।
द्रुपद सुता समेत सब भाई। उत्तर

रा· स्ते·

दिसा गए हरि ध्याई । जोग पंथ कर
उन तन तजे । सुर सबैते हरिपद भजे
।।८। रागबिलावल । सैंधवी ताल
। हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ ।
हरि चरनार बिंद उर धरौ । हरि परी

छिनको गर्भमंझार राषिलियौ निजरूपा अ
पार कहैं सुकथ्या सुनो चितधार जेहरिभजै न
हैंभवपार भारथ जइ विलीन नवभयौ उरजो
धन अकेलो रहिगयौ अस्मनयामाता पैजार
हैसीभांनकसौं समुझार हमसौं नमसौं बाल
मिताइ हमसो कछून भई मिताई अवकोआसा

गा॰ मोकोहोर ख्वारि विलेबकरो अवसोर राजगये
सू॰ को इषनसोर पोरवराजभयेजोहोर जनको स
नकोहो हषहोर नोकरसको करो अवसोर ह
रिसर्वेस वानयहजान पोडुसननसो कसोव
ष्यानि आजसरहनी नरवेहोसोर पैयहवानन
जानैकोर पोरव हरिको आज्ञापार नजिगह

बसे सरस्वतीजाइ काहूसौं यह कहन सुनाई
उहांतें जाइ नवरैन बिताइ ग्रसम्यामा नवरहोग्रा
प डुपरासनन सोवनेपाप उनके सिरलै गयौ
उनाहि कह्यौ उस्नोपन ग्रायौमाइ विनदेषे
कौ सुषभयौ देषैते हनौउषलस्यौं येवाल
कैते स्यानमारे धनऊरपनि ननषानसि ।

गा
स

यारे अश्वत्थामा भयंकरभगयौ इहांलोग स
बासोवननजगयौ द्रुपदादेषि सुनन दुषसषपायौ
अर्जुनसौं यहवचन सुनायौ अश्वत्थामा ज
वलौंमारौं नवलग अननसुषसैंडारौं हरि अ
र्जुन रथपैचढिआप अश्वत्थामापै चलआप
अश्वत्थामा अस्त्रचलायो अर्जुन हून ब्रह्मास्त्र।

चलायो उनउह्नेन सोभईलनाई नव अर्जुन दे
षलियेकुलाई अश्वत्थामाको गर्हिल्याई द्रुपदा
सीस मुण्डकराए यंकोमारे ह्स्याहेर मसौ
जियन नहीदेषौंकोई अश्वत्थामा बङ्कषिसा
इ बल अस्त्रकौं दियो चलाई गारव परीक्षित ना
रनगयेपे नव हरिनाई जनननह्री दयौं रूपवनर्थ

रा॰ न गरमैंकार नाकोनासो लियेउवार जन्मपनी
स॰ छनको नवभयो कहींवनर्धन अवकहागयो
पुनजवहारको रेषोजोर पारसंतोष सषीसो
हेर राजाजनम समेकोदेष मनमैपायोहरष
विसेष गरव परीक्षित रक्षाकरी सोरकथा स
कल विस्तरी श्रीभगवान कृपानिहिंकरै ।

सरसमारै कोकेमरै । ८८ । रागविलावल ता
ल । हरिहरि भक्तनको सिरनाऊं हरिहरि
भक्तनको सिरनाऊं । हरिहरि भक्तनको गुन
गाऊं । हरिहरिभक्त एकनहीदोइ । पैयह जा
नत बिरलाकोइ । भक्तिपरीछ्यन हरिकोपण्या
रो । गर्भ माहिहोतो नवकरो । त्रास प्रसुने

ग.　नाहिवचायौ । जग जग विरद यहै चलिग्रायो ।
स.　बहुर गजनाको जबभयो । सिसदिग विजय च
हे दिसलयौं । परजा सकल धरम रनिदेषी ।
ताको मनभयो हरष विसेषी । ऊसकेउमै पुन
जबग्रायो । गाइ वृषभ नहे उपिनपायौ । तास
वृषभके पगहैनाहि । सेवन गाइ देषकैनाहि ।

वृषभ धरम रूपी सोगाइ। वृषभ कस्यौंना
सौषणाभाइ। मेरेहैन ड्यानंहोन। कै श्रधरम
लोक परहोन। गोकस्यौं हरिवैकुंठ सिधारे।
समदम उनही संगपधारे। दयाह नप संतो
षहूगयौ। ज्ञानजमादिक सवलैभयौ। ज्ञ
ज्ञ सतायन कोऊकरै। कोई धरमन मनमे

ग्र· यौं श्रोकृस्नोको विनपाइनदेषि । सोहिहेन

स्कं· है दुषविसेषि । इहि श्रेनरराजा सुद इकश्रा

यो । वृषभ गाइकों पाऊं चलायौ । ताहि

परीछित षड्ग उठाई । कहरोवचन कसौ

पाभाई । तूको कौन देसहैतेरो केवलगा ।

यो राज सबमेरो । या विधि नृपति ।

परीक्षित कह्यौं । पै उनकछु उत्तर नहीं दयौ ।
कह्यौं ऋषभसौं को उषदाइ । तासना ममदे
हू बनाई । ईश्वर होइ ताहू कोमारैं नमरोहो से
ताप निवारैं । ऋषभ कह्यौं नमत्रेमोताव ।
पै मैले हू कौन कौ नांउ । कोऊ करौ हरि इच्छा
उषहोइ । इतिया उषदायक नहीं कोई । को

रा॰ उ कहै दुष कर्मन के दाता। काहू दुष नहीं देत
स॰ विधाता। कोउ कहै सत्रु होइ दुषदाई। सत्रोमे
न कौनी भलाई। काको नाउं बताकै तमसौ।
दुषदायक अरिह ममसो कौ लहन अपने दुषा
दातार नमंही दषौ करौ विचार। नव विचार
करि राजा देषौ सुद नृपति कलजुग करालि

को । वृषभ धरम ग्रहस्थी गाइ । बुद्धि कौ भयौ
रहै उषदाइ । ताहि कसौं लवउै अधमी । तो
समान नहीं और ऊकरमी । क्षमा दया नव
पग मैं कातौं । क्षमाऽदि सम इहि कहि उातौं ।
तिन कही मो मैं एकभलाइ तुमसौं कहौं स
नो तिन लाई । धरम विचार तम तमै हौर स

रा
स

नसापाप नलागतकोई राजाजमारौ हैसवहै
र नमविन नृपतिन इतियाश्रौर । जौनहैरमो
हि आज्ञाहोइ ताहीठौर रहौमैजोइ । हरिवेशुष
अरुवेस्याजहो छुरापान वहुक गटहतहो ।
जुवाज षेलत जहो जुवारी । यमावोहै सो
र नमारी । पांचो हो हि नृपति जहो ।

13

१३५

मोको हैर वनावौं नहूं । नव रुपजोको कन
कवनायौ । कनक मुकुट लखिसोल परायौ
१कदिनराव ग्रखेटकगायौ । तावनमांहि पि
यासोभयौ । रिषसमेकके ग्राश्रमग्रायौ । रि
षहरि पदह्वेर ध्यानलगायौ । राजाजलना
रिषसोमाग्यौ । ताकोमनहरि पदसौंलाग्यौ ।

रा॰ राजाको उत्तर नहिं दियौ। नव मनमाहिं को
सू॰ प्र पुन कियौ। यह सब कलजुग परभाव।
14 ओन्रपको मनभयौ उछाव। रिषके कपट स
माप विचार। दियौ भुजंग मनक गरडार रिष
समाधमैं सौहीरह्यो। सिंगीरिषसौं लरकन।
कह्यौं। सिंगीरिष नव कियो विचार। प्रजाउ
८७

षित कौ रैन पनि गुहार । नपति डीषिकि हिये ।
किहिं जार । दियो मराप जतनक कपार । दैक
विश्राप पिता पै श्रापौ । देखौ मराप पिता गर
नायौ । रोवन लगे मुमरि नकजान । हृदन
मुनन बृलो रिषध्यान । मुनमों कसों कहा
भयो नोहि । कौन मुनावन निज उघमोही ।

रा॰ स॰

तिंगीरिघनव कहिसगुकायौं । लपभुजंग
सो श्रीबालायौ । यह अपराध बडोउन कीनो
नक्षकठसन आपमैदीनो । ममसरापने म
रिहैसोई यह अपराध मोहिसबहोई । ह्वषसो
बसन राजउनकेसब उषपैहेसो सकल
प्रजाअब । ताकी रक्षा हरि जू करी ।

हरिश्चन्नागर नमश्रुमती यहांनाजामनमै प
बुनाइ । मैयह कियौ वहौश्रन्याइ । जाकौ हृदव
यि यहश्रावै । तांकोफलसौं भलोनपावै । रि
षिसिषकौं परयौसमुकार । न्रपसौंकहै नम
हैसोजाइ । ममसन श्रापदियौयाभाइ । समम
दिन नवननुककषाइ । सिंगीरिष यह्यकियौ विन

रा.
स्तु.

16

जाने । होतकहा श्रवकेपछताने । जाहैतेम

पायसोंकरौ । जातेभव सागरकोंतरौ । रूपस

तिलागयौ करति विचार । समसदिन मरवौ नि

रधार । जनदान कीरहा पुरनैये । तहाजायकै

तपबहलैये । बहरकहौं सारथ कछुनाही पु

त्रबिननैतेहि सेरगतिनाही । जातेंसतनकलित स

वन्पागा। गहैपक हरिपद अउरागा। बह्नरिक
हौं अवको कहांन्पागा। खोई जनम विषयसु
षलागि। हरत हरिपद सो चितलाये।
इनउनदेषत जनमगवायौ।८। रागधना
सिरी नाल   इनउनदेषत जनमगायौ। या
मायाके झूठे लालच उह्रै दग अंधभयौ। ज

रा॰ नमकहूमै पाप उधिनमप अनिउष प्रानसदौं।
सू॰ वेविभवन पनिविसरगये नोहिहसिरन कौपा
नरहौं। श्रीभागौत सनौनहीं कबहूं वीचही
भटकयुरौं। सूरदास कहि सबजगबूझौं ज
ग जग भक्ति नियो ८३ रागनट ना
ल ॥ जनम सिरानौ अटकें अटकें

राजाका जमन विनके दौरैविन विवेक फि
हौभटके कटिनन ग्रेघपरी मायाकीनारी
जाननफटके। नाहरि भजनन साफसमा
गम रहौं वावहीलटके। ज्यौं बहु कलाना
च दिषावै लोभन कोटननटकैं। सूरदा
ससौंभाकैी पावै पिय विहीन यनमटके।

रा· ८४ राग सारंग ताल । जबमसिरानौं से

सं· सैंग्रैसैं कैबरबरभरमतनजइपनिबित्रकै सो

बनकैवैसे कैकहूं घानपान रमाकाबैना

टिककै कहूंबादयनैसैं । कैकहूंरंककहूं

ईस्वर नानटवा जोगरतैसैं वेत्यौंनहूंगयोट

र श्रैसर मीन बिना जलजैसैं । यहगतभ

18

ई स्वरकी श्रैसेग्याम मिलैथोकैसे ८५ रागदे
वगेधार नाल । विरघा जनमलियौ सेसा
र। करीन कवहूं भक्त हरिकी मारी जननी
भार। जत जपतप नहिकियौ अलपमति
विस्तार। प्रगट वस्त उरसौंमही तेदेषिनैं
विषमार। प्रबल अविघाटग्यौ सवजग जन

रा
स

मन्नवाहार स्वरहरिको सनम गावइ जाति
सिर मवमाए। ८८। रागसोरठ ताल ।का
याहरिको कामनिधाई भावभक्तिजहां हरि
नम सनियत नहोजानत्रसाई। लोभानवाहै
काममनोरथ नहासनन उत्थाप। वरन कम
ल हेरसजहां हरिकेकौहूंन जाननिवाई। ज

19

बलोस्याम अंगनहि परसत आगै जेभरमा
ई। सूरदास भगवंत भजन नमिविषय पर
म विषखाई ।९०। रागधनासिरी ताल ।स
बै दिनगये विषैकेहेत तीनोपन खैमेही बने
के सभये सिरसेत। अंषिनअंध श्रवननहिं
सुनियत नथाके चरन समेत। गंगाजल म

रा
म

नपीयत कूपजल हरिनाम रजनवेत । रा
म नाम विनकौ छूटेगे वेदगहै ज्यौकेत ।
सूरदास कछुषावनलागनरामनाम सुष
लेत ९८ राग सारंग ताल । ज्यौंतूरामना
म विन परजौ श्रवकोजनम अगलौनेरो दे
ऊ जनम हुयरानो नमकीत्राम सबैमिल्लाना

20

भक्तनामभनेरोपरतो नेंदुलहन सेवारिहागेजे
कौ सेनपरौसो करनो। हेलोनफा साध्यको
संगत मूल गांदने नटरनो। सूरदास बैकुंट
पंथमैको गुनफेटपकरनो। ८९। रागमला
र नाल । हैमैपको हैनमई नाहरिभजेन
सहसषपायो वृथा विहाइगई। सानीहूती।

रा
म

21

औरकछु मनमैं औरै आनठई अविगतगति क
छु समुझ परै नही जो कछु करत दई। सुतसने
ह तियसकल कुटंब मिलि निसदिन होतष
ई। पटनष चंद चकोर वि[illegible]मुष मनषान अंग
र मई। विषय [illegible] विकार दवानल उपजी मो
ह बयार बई। भ्रमत॰

२१

भ्रमत बहुतै दुषपायौ अजहूं न टेवगई । कहाहे

न अबके पछिताइ होनी सिरनिवही । हरराम

सेयेन कृपानिधि जो सुषसकलमई । १० । रा

गसारंग ताल । यह सब मेरैये कुमति । अ

पनने ही अभिमान देष दुषपावत हौं मै अति ।

जैसे केहरि झकक कूपजल देषे आपपराति ।

रा: कृपपरो भुनसरमन ज्यामेमोभई ग्राईसोईगोत ।

सू: जोगज फटक सिलामैं देषत दसनति जारत्र

रत जोतन्हरानषद्दि चाहत्नहै जोकोगविषयपर

न ७। रागकेदारा ताल ।कृष्टैंहीलगि जन

मगवायौ। भूलोकहू समके सुषको विनन

लगायौ। कवहूकबैसौ रहसि रहसि कोरिको

रागोदषिलायौ । कवहू कहल सभामैं वै
सो मूक्षानिनावदियौ देफौचाल पाग सिर
देफौदेफरयायौ । सूरदास प्रभुकौनहीं वे
ननजवलोकालनघ्रायौ ७२ रागकान्हरा ना
ल । जगमैं जीवनहीकोनातो । मन वि
छुरेननकार होइगोको उनवातपुछातो मै

रा
म

मेरी कबहूं न हीकी जै कीजै पंचसहानो विष
य प्रसक्ति रहत निवाम्हा मषसिरो डुषनानो ।
सोच फटिकरिमाया जोरी प्रापन हृषाषानो
। सूरदास कछु विरनरहाई जोप्रायैं सोजानो
७३ ॥ इति सूरसागरे रागिनी भैरवी परिक्षे
दः ॥

23

कालाइ। कलिमेकल्प अन्न जल त्यागौ। केव
ल हरिपदमौं अनुरागयौं। अव वसिष्ठा दिक न।
ह्रो आप। नारदादि मुनिवहुर सिधाये। ऊमा
आसन दैतिन्हि वैठायौ। मुनिकाहियौं तिन कौं
सिरनायौ। धनभागौ तुम दरसनपाप। मम
उद्धारकारन तुम आप। तुमदिषन हरि समर

रा-
स:

न होइ औरु प्रसंगचलै नहीकोई। आशा होइकरो
अबसोई। जानेमेरे मदगानिहोई। कोउकहै नीर
पासेवनकरो। कोउकहै दान जस विस्तरो। का
हूकहो मंत्रजप करना। काहूकछू काहूकछु
वरना। राजाकह्यौं सभ दिनमांहि। होत रहि
को ग्रहि सफल नाहि। रहि अंतर ऋषदेव नहां

श्रार। राजा देषिनोरिन उठिधाई। करि दंडौत कुसा

सन दीनो। पुन सनमान विषन सब कीनो। सुक

कोउ रूप कह्यौं नहीं जाई। सुकहि परह्यौ कुसल

रस बुझाई। सुक कोस हिमा सुकही जानै। सूर

दास कहि कहा वषानै।४।राग विलावल सूरसा

सकुन। राग पंचम। ताल । हरिकी जनकी

रा
म

प्रतिटह्करांई। महाराज रिषराज मुनि देखनरहे लजा
ई। निरभय देसराज करिनाको लोकन मन उजसा
हि। काम क्रोध मद लोभ मोहए भये चोरनै साह।
हफि विस्वास कियौ सिंघासनना परवैठैभूप।
हरिजस विमल छत्रसिर ऊपर राजत परम अनू
प। हरिपद पंकज प्रेम षियावर नाहीके रंगराजै।

मेत्रीज्ञानन ग्रौसर पावन कहन वान सक्रवानो ।
ग्रर्थकाम दोऊ हरर है डर धर्म मोक्ष सिरनावैं ।
त्रुप विवेक वलग्रौर यौ त्रिया समान कवहूं पावैं ।
ग्रष्टसिद्धि नवनिधि द्वारे दासी करजोरै भय
लीनी । क्रीडा वैराग विनोदी करिक वाह
विकीनी मायाषलनहीं व्यापै जांकौं जोयहि

ग॰ रीनहिंजानैं। सूरदास यह बात ग्रपटी गुरुषना

सू॰ प पहिचानै।२९। राग बिलावल। सूरदासकु

न। राग पंचम। ताल । सकन्त्प ग्रोर कृपा

करि देषौ। परम भागनिन ग्रपनो लेष्यौ। बि

नती करी चरन सिरनाई। सम दिवस सबमेरी

ग्राइ। तक्तं ऊटेब मोह नही जान। उनपन लो

19

म आरलपटान । ज्ञानवृक मैहोन अज्ञान । ३५

जतनाही मनमैज्ञान । अकतन न्यूट नवदृ ३४

होइ । ताते सोचरहत नहिंकोइ विनाद्नवासि

मरनकौं होइ । अज्ञा होइ करै अवसोइ ।

सकककहियौं तन धनकटेव विहाई । हरिप

द भजौन और उपाई । आगभय घटजल ज्यौं

ग· स·

कीजै। अहिनिसहरि हरि सुमरन कीजै। रूप
चहुंरंग सर्वयभयौ। सोनौ है हरी मैनर गयौ।
तेरीनौ है सप्तदिनाआउ। कहौ भागौत सुनो
चितलाउ। सुनिहरिकथा धरौ धरिध्यान। जग
सबजानौ सुपन समान। याविधिजो हर पद
उरधरिहै। निःसंदेह भवनवतरिहै। ११।

20

रागविलावल सूरदासकृत । राग पंचम । ताल । हरिजस कथा सुनो चितलाइ । ज्यौं षट्वंग नरेशौ गुनगाइ । नृपषट्वंग भयौ भुवमाहीं । ताके सम दुतिया जग नाहीं । एक दिन ताके द्वार आयौ । राजा उठिकैं सीस निवायौ । धन मम गृह धनभाग हमारे । जो तुम चरण कृपा

रा. कसिधारे। अवसोकों जो अज्ञा होइ। आपुसमान

स. करो अब सोइ। इंद्र कह्यौ मम करौ सहाई। अस

रन सौं है सोहल गाई। इंद्र पुरी तेहांग सिधारे।

21

नाम सनत्त सो सकल प्रताप। स्वरूपसो नृप श्री

न्ता मांगी। उन कह्यो लेहु कछु वर मागी। नृप

नि कह्यौं कछु मेरी आय। वर लेहौं पुन सीस चढ़ा

२। दोऊ महूरत आइ बनाइ। नृपबोल्यौ नवसी
स बढ़ाई। नरनदेहु मोहु घर पहुचाई। तेरो
जाइ तहो हरि गुनगाई। एक महूरत मैरफि
र आयौ। एक मुहूरत हरि गुन गायौ। हरि
गुन गाइ परम पदलहोौं। सब नृपन मनन
धीरजगहौ।२९२। राग सारंग सूरदासकृत।

रा० राग पंचम। ताल । जोसुष होत गुपालहिगा
सू० ये। सोन होत जपतपके कीनैं कोटिक तीरथ
कन्हाये। दिये लेन नहीं चारपदारथ चरन कम
ल चितलायें। तीनलोक तरन समकरलेषत
नंदनंदन उरआये। वंसीवट वृंदावन जमुनातट
व वैकुंठन जायें। सूरदास हरिकौं सुमिरनक

२२

अथ राग पंचम भक्तिमाल परिछेद मा

ह । राग पंचम ताल ३ । चौपाई । वडूरि

आगु जत सकल समाजा । भोजन कीन

मुदित ऋषि राजा । तजि विकार सब भूप

सुजाना । हरि मय विश्व चरा चर नाना ।

देखत लागे भक्ति रत होई । अभय अम

ग
भ

ल चित संशय खोई। सरव भूमी मंडल

परतासा। भई प्रचलत जहं तहं ग्रन्थसासा।

सोरठा। अस धमज महि राय अंवरीष व

रुहु कती। जास एक ब्रतताय कह्यो ज

था मति नाथमैं। ॥२॥ सोरठा। गुर वर दीन

निवाज। इहु वखानमैं अंवरीष ऋषिराज।

कीन जथा श्रवणन कह्यो। चौपाई ताल २।

अब तेहि चरित चाह वर आना। करहु मो

र ममति जथा वखाना। अदभुत सावद स

भ मन भावन। हृदय भक्ति रिति प्रेम वढा

वन। परम पुनीत भीत भ्रम हारी। जथा पु

निइ लोक जग मारी। रहा एक मंडिल १

रा
म

पति काहू । अलप न्रपति सेवता जग जाहू ।
पुत्री एक रुचिर रह नामा । अति सुशील सु
भत गुण नामा । सुतते अधिक आनतें प्यारी ।
जननि जनक जन जियत निहारी । समय
पाय पुत्री न्रप सोई । जबा वैस करहे आपत
होई । मंडलीस नव नाम कहावा । सदिन सो

यि उदवाह रचावा। लागे विविध बाजनै बा
जे। मंगल मंजु मनोहर साजे। करहिं गान
कल कोकिल बैनी। सुन्दर बदनि ललित
मृगनैनी। उत सभ भयो भूप गृह भारा॥
साज समाज विविध परकारा। निज बिवा
ह रचना वर जोई। देखि दृगन तनयो नृप

मोई। त्यागत लाज संकोच विहाई। भोषन
लगी जनक पै आई। विनय मोर पिता रह
नऊ सजाना। अंबरीष छित पति विन आ
ना। सोरठा। मैन वरउं जगकोय। सत्य
मोर प्रण जनक इह। संशय नाहिन होय।
इहिमै कछु किंचन भ्रम।।। चौपाई ताल

कवडं किनिदरि मोर श्रण पद्मा। वला त
कार आन नकि गेहा। करङ्ग विवाह मो
र नाहि संगा। तव विलोकि आपन श्रण
भंगा। इह काया निज देइं तयागी। म
हि पति संबरीष हित लागी। हनि अस
वचन श्रवि निज गाई। भयो सोच वस ह

रा
भ

रथ बिहाई। चिन्तन करत विषियन जिय मा
ही। कछु विचार बनि आवत नाहीं। नव
निज पतनि निकट नृप जाई। लख्यो क
हन श्रम वदन उघाई। हता तोर मति
भई बौरानी। अन हित विकट करत रुख
बानी। महा नरीम लान जग लारी। लक्र

ति अवरीष उपकारी। चक्रवर्ती भूप वर होई। आज जास सदृश नहीं कोई। मै ए षु मंडलीस धन हीना। समता जाय ता स किमि कीना। कहि विधि करहिं ग हण मम होई। पुत्रि प्रवीन राज ऋषजो ई। इह संकोच सोच मोहि भारी। यद्यपि

रा
भ

वनहिं वान सब प्यारी। तदपि कहहिं क
वन तहिं जाई। कन्या वरउ अमक नृप
आई। पति सन सुनत वचन अस रानी।
विथत सोच बस उर विसमानी। प्रीति
पूर्वक सुता बुलाई। विविध भांति साद
र समझाई। सुनउ पुत्रि गुण सील सवी

ना। हम इं अमल दीन धन हीना। ते उदार

त्रैलोक उजागर। महांभूप संपति गुण सा

गर। हमरी उन मन कम बानि आई। कहो

मेह गौरव कहं राई। सोरठा। मन नहिं रा

गज कुमारि। निज जननि मवे वचन

अम। संजन समय उचारि। कहत मनइ

रा
भ

6

कहत हनउ शरण मातु मम।२। चौपाई। ता
ल ---- । अंबरीष निश्चय पति मोरा जेतव
करहु मातु वर जोरा। मरहुं नतहिं उद वंध
न लाई। ननतर मरहुं हाला हल खाई। अंब
रीष बिनु प्रान न रहहीं। मातु सपथ तव
चरनन करहीं। हानि अस राज कु वरि मव

वानी। ड़ीवत जननि मानस अकुलानी।
पति पैं आई विथत मन मारे। करि रोद
न म्राव वचन उचारे। नाथ अनि दाहरा
हठ धारा। किये यतन नहीं होत निवारा।
तोते तजहु ताम उदवाहा। मानहु प्रा॰
ए पती मम काहा। रचना लमझे जवन

रा
म

विरचाई। साज समाज आज समदाई। प॰
रिहरि औरइं जनत विचारइं। मोर कथन
निश्चय जिय धारइं। पतनि वचन सुनि भू
प सह जाना। परम शोक मानस निज ।
माना। कीन जवन प्रारंभ विवाहा। सोम
न मानि पतनि निज काहा। तहिते भा

न होति पति धरना। चिन्ता सोच जाय नहीं
बरना। अति प्रीय सुता जवन सुखदाई। प्र
प्रीय लाग उखद अधिकाई। निस दिन सो
च विवस गत धीरा। भयो उखित अति कृ
ष सरीरा। रह्योसि लपत मरम इह जोई।
अकथो सहज सहज कछु सोई। इक हस

रा
भ

र कर श्रवणन परहीं। लोक परस्पर चरचा
करहीं। वफी बात ग्रामांतर छाई। श्रेवरीय
लग पहुंचिस जाई। इह वृतांत मंजुल सु
निराई। भयो प्रेम वस हरष अघाई। सोरठा।
सादिर लीन बुलाय। तासु जनक कहं न १
त्रि तव। सात कल समझाय। भन्यो वद

8

न मृड वचन भ्रम। ३। चौपाई तात ।
सुनहु भूप यद्यपि मम रानी। अधिक प
कतें एक सयानी। ललित रूप पति ब्रता
सुहाई। सब विधि निपुण शील सुखदाई।
तद्यपि तोर प्रिड वड भागन। संतत मो
र चरन अनु रागन। बिन मोरे पति आनन

रा
भ

चाहीं। हवि सनेह निश्चय मन माहीं। इ
ह्रितें तास मनोरथ जोई। प्रवडं मै भस
त्र मन होई। करडं हविर स्ता भए तासा।
संतत वचन मोर गुण गासा। सोरठा। ह
नडं वचन त्रव गाय। जे मोहितें कोई जा
चना। करहिं मनुज नप गाय। जे मोहि

तें कोई जाचना। करहिं मनुज नृप आय।
मै प्रखडं तहि काम सब। ४। चौपाई ता
ल । उचित तुमहिं अब हनडु रुजाना।
करडु चाह निज भवन पयाना। तहां जा
य तुम रचडु विवाहा। विविध भांति मं॰
गल उतसाहा। सदिन महूरत सुभ सुया

रा
म

ई। देहु हत मोहि ग्रोर पठाई। ग्रलप मति
सुनि भूपति वचना। सुन्दर सुखद परम
हित रचना। होत स्थित पानन ज्ञग जो
री। विनय करत उर प्रीति न थोरी। ग्रहो
भाग बड मोर सुहावन। जो मम सदन
चरन प्रभु पावन। परहिं सकल दारिद उ

10

ख हरता। यत्न हजस मम जाहिं न बरना।
पै कृपाल मै दास तुम्हारा। दीन हीन श-
ण सरब प्रकारा। प्रभ प्रताप जग सहशा
भाना। मै नविष्ट खद्योत समाना। सर
ता छुद नाथ मै दीना। तवन दीस प्रव।
गाह प्रवीना। ममता घाल कवन विधि

रा
मं

रसिहैं। मोर ढिठाई। देखि सब हसिहैं।
तातें विनय जोरि जगपाना। उचित न
तमहिं मोर गृह जाना। मैं मंदिर निज
जब न कुमारी। ईह्वा लागें प्रभु मरण न
मारी। तव कृपाल सब विधि हित जानी
करहु विवाह रुचिर मद मानी। इहि मे

नाथ मोर कल्याना। सु जस मोद किमि
जाय बखाना। अलप नृपति सब सुनि
अस बानी। परम बनीत प्रीत हित सानी।
कहा राउ तब नृपति प्रबीना। संतत स
त्य कथन सब कीना। पै नरेस तब सुन
हु बिचारा। मानऽपमान जुगल संसारा।

रा
भ

सोरठा। लोक करम मयदोय। प्रेम सुभक्ति
प्रसंगमै। इह कवहूं नहिं होय। निस्चय जा
नहु सत्य नृप ।५। चौपाई ताल ।जे भ
गवान लोक पति स्वामी। सदा दीन भक्तन अ
नु गामी। किन्नर नाग मनुज सुर राया।
चिदानन्द अनभव पति माया। कवजो।

गोपिन आदिक जोई। गनका शावरि भ
क्ति वश होई। तजिई सय मान अप माना।
इनपैं आय आप भगवाना। अव रिल भक्ति
प्रेम जहं देखा। ऊंच नीच नहं काइन ले
खा। तस तव हता माहिं नर गाई। प्रेम
प्रीति मोरी अधिकाई। ईहां मेंगावन ता

रा
भ

हु सुजाना। होत प्रतीत नृपति अपमाना।
चलहुं आपुमै सदन तुम्हारे। सब विधि १
होहिं रुचिर हित प्यारे। पूछौं तासु मनो
रथ जोई। करहुं विवाहु मुदित मन होई।
अब तुम जाहु भवन निज राजा। विरचहु
जाय विवाहु समाजा। सब विधि पठया।

13

घातक अन्त मारी। करइ काज उर सोच वि
चारी। कहा जवन तव भूप प्रवीना। तुम
धनउसै द्रव्य वहीना। इहि विवाह मे सह
घा नाई। कहि विधि मोर तोर बनि आई।
सो नृप हनइ द्रव्य इह जोई। जलथ छा
घ इव थिर नहिं होई। अह संपति ईस्वर्य

रा
भ

बड़ाई। सदा अनित्य नृपति चलि आई। त्व

एमैं नरत रंक ह्वै राया। लाविन जाय मा

या पति माया। सोरठा। अस विचारि क

छु नाहिं। इहि मे चिन्ता करहु नृप। जाय म

दित ग्रह माहिं। रचहु विवाह समाज सब।

।६। चौपाई नाल । अवरीष सब वचन

14

सुहावा। सुनि अस अलप नृपति सुख पा
वा। आयसु मानि भवन निज आना। की
न तुरंत परम मुदमाना। उहां जाय मंजुल
निज रानी। निकट बुलाय निपुण अति
स्यानी। सकल वृतांत ताहि समुझावा।
महिषी सुनत परम सुख पावा। बहुरि

रा
म

15

बंधु निज सचिव सुजानी। सादर बोलि ली
न जन नानी। अपरोहित मुनि बोलि प्रबी
ना। तेहि सन परम प्रकट सब कीना। ते
अनुसासन भूप वर पाई। लगन सुदिन स
भ डेढ सुधाई। देखि महूरत पत्रिक ले।
खी। मंगल समय सुगनत वसेखी। चा।

त्यो गौरि गण नाथ मनाई । अंबरीषपैं प
ठे विप्र जाई । प्रथम शरीर वाद भाव की
नी । मादिर वड़ीर पत्रिका दीनी । विधी
पूर्वक लेत सुहाया । वाचित परम हरष
उर छाया । तब बांधव मंजन महि राई । स
व विधि रुचिर बरात सजाई । हास विला

रा भ

स करत श्रुति गाना। बाजिन विविध प्रकार निसाना। पन्नव फोंज संख धुनि घोरा। भेर नफीर करत रव सोरा। सोरठा। श्रह बाजत सैनाई। नृत्य करत कल कंठनी। मंजुल भाव जनाई। गान तान नाना करैं। ६

चौपाई ताल । राज कुंवर तुरग

16

निचावहीं। बांधे विरद सूर छवि पावहीं।
विकरहिं नाग बाजि हैनाहीं। वाहन वि-
विध बरनि किमि जाहीं। धूम धाम मय
चली बरना। कौतुक करत जाहिं मग जा-
ता। महा विप्र वर संग सुहावहिं। सिव
कन पर श्रहफ छवि पावहिं। आई बरात

रा
भ

निकट पुर जवहीं खबर भर भयो नगर सब
तवहीं। वाहिन साजि मुदित मन नाना।
आय लेन मंदिर भगवाना। कुवर कलस
पयार भरि नीके। भोजन अमिय सरस श्री
य जीके। फल वर वस्त्र अनेक सुहाई। अ
ति विचित्र कछु वरनि न जाई। महो वस

न भूषण मणि चाहू। यथा उचित नृप वि
विध प्रकाहू। सादर संज्ञत प्रीति पठाये।
देवत श्रेवरीष सात पाये। सोरठा। नव
वर रुचिर वगान। अगवाथ वङ्क वरनल।
खी। कहत परम परवान। इह उपमा दे
खीन हगा। ९। चौपाई नाल। देख

रा
म

बरनत भाव भगवाना। हनेसि विविध ब
कार निसाना। भयो परम पर मेल सहा
वा। इत उत नृपति मगल हाव पावा। जो
डेरुक भलप नृपति नहें दीना। सादिर भे
वीष सब लीना। भई परसपर विनय वडा
ई। सील सनेह बरनि किमि जाई। रहे जवन

18

नाविक गण सारे। पाय इष्ट मन भये सुखा
रे। तब जन वासहिं संग लिवाई। सादर व
ले परम हरषाई। दीन वास वर सुभ सुवि
धाना। भई पञ्चनाई सुविर विधि नाना। जे
से कलप जाहिं मन कीना। सहु नहिं
सुलभ पाय नहि लीना। जेव नार बहु भो

रा
म

नि सुहाई। अमिय सरस कछु बरनि न जाई।
जेवन समय कंठ कल नारी। करहिं गान
सुख गारि उचारी। समय जानि तब विप्रन
आई। मंडलीस कहें लगन जनाई। सादि
र बोलि बेध जन नाती। करि प्रतोष सब
कर सब भाती। यथा उचित आसन बैठारी।

१५

विधी वेद जुत वेद सवारी। गाववहिं गीत

प्रीन मऊ वैनी। कोकिल केंदि कलित म

ग नैनी। अति वचित्र संघासन सोहा। स्फा

टिक मणिन खचत मन मोहा। तहि प

र अंबरीष वर राई। बैठे इजन चरन सिर

नाई॥ इति राग पंचम भक्ति माल परिछेदः॥

ग
म.

90

20

अथ राग पंचम प्रबोध चंद्रनाटक परिछे

दमाह । ताल ३ । चौपाई । बहु दिन

की बिछुरी है प्यारी । मोह ग्रह्या डर्यो है

भारी । धाम दम जो अनकुल है होई । तौ

उपनिषद संगम न होई । हेमंत ते जग

बिषै निवारे । एक महूरति मौन संभारे ।

रा
५

जाग्रत स्वपन सुखपति विलाई । मै प्रबोध

सत लेउ उपाई । दोहा । उपजत ही प्रबोध

सत केवेयमहान वेयन मकति विरा

जई परमातम भगवान । सवैया ताल २ ।

सत श्रावय जो प्रभदिफ वेयनदै दिफ ग्रे

घन सोई महा उघटाई । ताता थबला नब

संगमते सुत वीयभए वहू वैयमिटाई। प

तिनीत भजो तिन संगमको ग्रब वेग मि

लो किमवैरलगाई। सुत आरय नीत रमो

तिनसो ममचीत प्रसंन भयो इल साई।

सवैया ताल । भाम जो यह बात भई

तब सिय मनोरथ आज हमारे। है जग

गा
१

आदि रूपक विश्व परमातम जा स्रुति पुंज
उचारे। ताहि करे बहु षंड जिनो पुर देहन
मै बहु बंधन डारे। चिदईस दयो मन कोप
दहा अबतेई बने जग भीतर मारे।१४३।
कवित्त। ब्रह्म के ज्ञ भेद करै षेदक अनेक
विध प्राण अंत प्राह चित ताहि करवाईये।

विद्यामित्रपश्राह चिततो अनूप होई जीव अ
रूपकता रु नवी मोत्त गाईये। कारयके लि
य हित सांत श्रोर दमादि जेई। तांहि तांहि तो
रयमै वेग रूप वनायीये। श्रेसे मति मान मति
पतितो वषान करगण भोन श्रोर पिषजाहि
रूषपाईये। २४था सवैया। ताल । मति

गु
१

संगविवेक विचारकीयो जगभीतरि जो जन
को सुषदाई। जिह सो सभजीवनि बंधमिटे
परमातम संग सुवेग मिलाई। तपसा तट
तीरथ जोग भजे उपजे सत बोध वडे जस
दाई। कविसिंघ गुलाब सुपड कथा प्रथमे
यह ग्रंथ निरंतरगाई। २४। दोहा। गुलाब

सिंह मति पति मतो जान मोह भूपाल दं

भ कलादिकपरे गो तीरथ हनन विसाल।

दोहा। अमर विदारे जाहि जग देवनकी उ

धार ता रघुनाइक विमल पद बंदो वारं वा

र।१।सवैया ताल ।तब दंभको खां

ग बन्यो अति संदर जाहि पिषे जग सीस

ग्र
१

निवाधे। कारिसैननही समभावत है सभ
पेषत राजसभा महि आए। मषपेहु कही
महामोह वली सिरहा वधरे जगमाहि
पटाये। सत दंभ प्रमातन संग विचार
विवेककीयो वह होनन पाये। सवैया
ताल ।०८ विवेक विचारकीयो ॥

सप्रबोधवली मतलेहि उपाये। ताहि नि
मिति मतीरथमै सभ जैदम ग्राप विवेक
पठाये। हैहमरे ऊलनाशनि मिति इहै ज
गमाहि विंचवनाषोनम होइ मचेत उपा
इकरे जिहते इह नाश निमित मिटाये। इ
तिन तीरथ माहि वनारस जो वहि मोष नि

मिति विरंच बनाई।शिवकी नगरी हतदंभ

करो तम जाइकै पङ्कउपाई। चङ्क श्राश्रमकी

कलयान मिटै तिहते नहि मोघ सहोवन

पाई। बस मोह बनारस पङ्क करी सभ सा

मि कह्यो सकरयो समग्राई।।१।। दोहा। ज

हा निवास सबैकरो सनो तिनकीगाथ।

मन्मथके उत्सव भजे लोक निवावे माय।
कवित्त। वारिवधू भौन निस वास मदपा
नकरे। कामके कलोन नसो यामनी विता
इहै चांदनी सुगानि मनमथके हुलास।
भये नारिनके संग सुनेग सुघ पापहै
नाइ प्रातकालमै लै अक्षत लगाइ भाल

ग
४

धूरत सबडे सम लोगन विकाइहै। हम दी
षत सबग भनि तापसी ब्रह्म गया ह्व
बाह्र होमक दीन ब्रुकाइहै।६। इति राग
पंचम श्वबोद चंद्रनाटक परिछेदः ॥

6

अथ षट रागास्य प्रबोधचंद नाटक परिछेद मोह ॥

ताल तीन॥

दोहा। यौ दिनमै चेतन जगत निसमै तिम कर
माल। महा मोह भूपालको मै कृत कौन बिसा

ना॰ तीन॥

ल। कवितवाच दोहा। याम बनारस गंग तट
बैठे देम उदार। कौतुक आवत पेष कर बोले ब

ना॰ तीन॥

चन विचार देमउवाच सवैया। कौन उलेचम

ध·रा·
ना·

गी रघोको इनि आवनहै सरनो नट माही। ज्वा
ल मनोभ्रम मानहु की जन तीनहु लोक ग्रसै
सब माही। वाक करे इह भांति मनो सद भा
वनहै सभको जग माही। त्रपि वडी दमकै उ
रैम सभको उपहास करे मन माही

ताल·चार॥

कवित॥

वाफा प्रसिय हेम दषणा कलेस हर तिन हीते।

२पि २म २ध २पि २म २ग २रे २सा २म २ध २नि २सा २रे
आयो यह ऐसे मन आइहै । आरथ हेकार सह

२नि २ध २पि २म २ग २रे २ग २म २ग
मारो मह्रो नीति वसे समाचार लैउ कछु मोह

२रे २सा २ध २पि २म २ग २रे २ग २म २पि २ध २नि
को सुनाइहै । ऐसे मन देम सु विचार नीके क

२ध २पि २म २ग २म २पि २ध २पि २म २ग २रे २सा २म
रै नव आयो सु हेकार चाल हेसमी सुहाइहै । अ

२ध २नि २सा ३रे ३सा नि २ध २पि २म २ग २रे
हो वहो मराष जगन यह क्षायो सभ ऐसे सुहेका

२म २पि २ध २ग २रे २सा
रमष वैनन अलाइहै ।। कवित भटपाट मन

घ·रा·
ना

कौन जानत अजान लोक नाहि परमा करको

मरम म पछानिई । जो नानिकरी भीरमनथी

रनहि पारलहे सालिक कौननर जानकोऊ न

हिजानई । वेदव्यास वाकपति कपल कणा

दिमति औरजो महो दधिको मन्न कवि भानई ।

महा हनी नानिहारे श्रुति ब्रह्मको विचार कहा

2

नाम नर पसू सम ऐसे हम जानई ॥ कवित ।

पेजो पेषये महान मान तोऊ भरे अति महा प

म तृपि कछु अरथ कीन पाइहै । कोटिमै पितव

र अडंबर ते सबकै सामवेद श्रुति श्रुति ऊचे स्व

र गाइहै । सबकीये तवान नरि सान मन कोथ भ

पे फेर फेर मूढ वेद पारन सुनाइहै । वेमघ श्र

घ॰ग्रं॰
नां॰

वार रूनि वारको विचार कह्यो जीव काके हेत
मूढ वैस्नव ह्वाइहै । कवित । औरदौरगयो
छुति कौतुक मन यो पिछ वोल घोह्यकार स्नग्र
लाव परिछानिये । नामतो संन्यास मांगे भिक्षा
विलास करे यही यती नाम लोक माहिनो वखा
निये । मूढतो मडाये नाम पंडत कह्याये कछुवा

यान हेन पापे करे वेदभास हानिए । कीनेहै या
ख्ल विदांतके प्रकरण सभ आवतहै ह्रास महि
आहि हति हानिए । कवित । अनघने विहयत्र
रय भाषत विदांत सभ पेकही अखंड ब्रह्म हसरो
न गायोहै । ऐसे जो वेदांत शास्त्र मानन प्रमा
ण मूढ वऊथनके ग्रेथनमै पदार्थकोन आयो

स॰गा॰
ना॰

है । सेवरा संन्यास जथ भेखडो विदोत भिन्न भि
न्न नाम एक कुलके चलायो है । इन हेके सेगड
नि बोले महापाप चडे ऐसे सब भाव पाउ अगे स
उठायो है । कवित । पद्मी सईव पासपति आगम
समई वरन वाम भस्म मानन निभ समलगाइ है ।
पसहै अंदड लोक माहि स्वपडकरे इनसो प्रभा

४

ष नर नरक सजाइहै । सईव पास पनिके निद्रा
रे होइ पाप अनि पेषपे सुनाहि इन अैसे ठापि
गाइहै । गुलाब सिंह देषकै हंकारको विसाल
छवि लोगनके भंजि भनि आगेही पलाइहै ॥
कवित । डौर हौर गयो भनि पेष ससकानो अ
नि अहो वकथ्यान पठ ऊजल सुहाइहै । गंगा नी

ष-रा
ना·

र धार नट शीतल सिला सिवार श्रोषशोष श्राप कु

स आसन विछाइहै । लप श्रषमाल मृष मेत्रन

विसालज पैरे गलके मोहि ञस मेद्द वनापैहै ॥

पेही देभवंत यन वेननके वितहरे बीज मेत्र मा

सकर प्रेगली हलाइहै ॥ सवैया । हेकार नवै

प्रतिपार उदाय वत्यो मसकार पिषो जनश्रा ना·

5

५

है कर माहि त्रिदंड थोरे सब स्नान बके सलदे अभि
माना। देवन सनाहि गहे उरमें प्रति नारि अ
देवनको रंवपकाना। पंथ उभे इक्र सहभये
भनि आश्रम औरपिछे मुसकाना। किनको
यह आश्रम पावन है छिगा हारन उव सवेस ग
डाये। सुमनो तिन ऊपर नाचत है सित श्वेबर प्र

घ·ना
ना

6

ज हजार ननाये । इनहै कला जिन रूप मिला उ
नने चमसा बहुभांति सहाये । इन मखमल गैरस
ऊषलहै इनकेसर केभ सचीन वनाये । सैठेग
चून होम सगंध सधूम वढो तिन स्याम सभो न
भ मेडल केनो । यह गंग समीप सु आश्रमहै
पिष मोह सभो श्रम होवत षीनो । यह मेघ व

८

डो धर्मात्मको तिनको यह आश्रम आहिनवी
नो । सभलो यह आश्रम पावनहै दिन दोइ सु
तीन निवास सुधीनो ॥ दोहरा ॥ ऐसे यार हे
कार उर वरयो वहै तिह माहि । पुरुष निहारि
यो कतेहि रूप सुने जेमाहि ।२॥ इति षट्रा
गस्य प्रबोध चंद्रनाटके समापतम् ॥

भ·गी
ना